WATCHMAN NEE



1

वॉचमैन नी

मसीह के एक चीनी सेवक का जीवन, दुःख और आत्मिक दर्शन

Ochorus

साहस के चित्र – वॉचमैन नी

मसीह के एक चीनी सेवक का जीवन, दुःख और आत्मिक दर्शन

Ochorus Originals

पहली बार 2026 में प्रकाशित।

OCHORUS

Ochorus के बारे में

मसीही विश्वास की महान क्लासिक कृतियों को दुनिया भर के चर्च के लिए मुफ़्त उपलब्ध कराना — उनकी अपनी भाषा में, परमेश्वर की महिमा के लिए।

Ochorus एक मसीही सेवकाई है, जिसके केंद्र विक्टोरिया (कनाडा) और कम्पाला (युगांडा) में हैं। 2021 से हम अतीत की महान मसीही पुस्तकें खोजते हैं, आज के पाठकों के लिए उनका सावधानी से संपादन करते हैं, और उन्हें मुफ़्त देते हैं — पढ़ने के लिए भी मुफ़्त और रखने के लिए भी मुफ़्त।

हम केवल एक वेबसाइट नहीं हैं। युगांडा में छपी पुस्तकें पूरे पूर्वी अफ़्रीका में सीधे लोगों के हाथों में पहुँचाई जाती हैं — पास्टरों के सम्मेलनों में, और उन कलीसियाओं, विद्यालयों और जेलों में जहाँ हमें सेवा के लिए बुलाया जाता है।

ochorus.com पर पढ़ना जारी रखें

- सैकड़ों क्लासिक पुस्तकें, उपदेश और जीवनियाँ — निःशुल्क, बिना विज्ञापन और बिना खाते के।
- अनेक भाषाओं में पुस्तकें — अंग्रेज़ी और स्वाहिली से लेकर अरबी और हिंदी तक।
- पढ़ने की योजनाएँ, हाइलाइट और नोट्स जो एक डिवाइस से दूसरे डिवाइस तक आपके साथ चलते हैं।
- ऊँची आवाज़ में सुनें, या किसी पुस्तक को ऑफ़लाइन पढ़ने के लिए सहेज लें।
- इस जैसी निःशुल्क डाउनलोड। इन्हें खुलकर बाँटें।

"तुम ने सेंत मेंत पाया है, सेंत मेंत दो।"

मत्ती 10:8

विषय-सूची

प्रस्तावना — 6

भूमिका: पहरुआ और उसकी शताब्दी — 9

मसीह को समर्पित जीवन — 17

वॉचमैन नी का मन-फिराव — 29

विश्वास से चलना सीखना — 41

युवा प्रचारक और लिटिल फ्लॉक — 54

सामान्य मसीही जीवन — 71

बैठो: मसीह में हमारी स्थिति — 88

चलो: हमारे द्वारा जिया गया मसीह का जीवन — 105

खड़े रहो: आत्मिक युद्ध और विजय — 122

बाहरी मनुष्य का टूटना — 140

आत्मा, प्राण और देह — 159

कलीसिया और मसीह की देह — 174

विश्वास, प्रार्थना और निर्भरता का जीवन — 190

क्रान्ति, सताव और शिष्यता की कीमत — 205

बेड़ियों में बीस वर्ष — 220

वॉचमैन नी की विरासत 234
परिशिष्ट A: वॉचमैन नी की पच्चीस मूल शिक्षाएँ 252
परिशिष्ट B: अध्याय-दर-अध्याय अध्ययन और मनन मार्गदर्शिका 270
परिशिष्ट C: वॉचमैन नी के जीवन और समय का कालक्रम 287
परिशिष्ट D: ऐतिहासिक पद्धति और स्रोतों पर टिप्पणियाँ 296

प्रस्तावना

वॉचमैन नी उन मसीही व्यक्तियों में से हैं जो इतिहास का विषय बनने से पहले ही पाठकों के जाने-पहचाने हो जाते हैं। कोई विश्वासी *बैठो, चलो, खड़े रहो* (Sit, Walk, Stand) नाम की एक पतली-सी पुस्तिका, मसीह को जीवन के रूप में बताने वाला कोई उद्धरण, रोमियों 6 से कोई शिक्षा, या बाहरी मनुष्य के टूटने पर कोई संदेश बहुत पहले पढ़ चुका होता है, इससे कहीं पहले कि वह गणतन्त्रकालीन चीन, चीन-जापान युद्ध, चीनी साम्यवादी दल के उदय, या नी द्वारा जेल में बिताए गए बीस वर्षों के विषय में कुछ ठोस जान पाए।

खोज के इस क्रम के अपने लाभ हैं। नी की सर्वोत्तम शिक्षा चीनी इतिहास का कोई पाठ्यक्रम पढ़े बिना भी सीधे आत्मिक आवश्यकता से बात कर सकती है। परन्तु इससे विकृतियाँ भी उत्पन्न होती हैं। शिक्षक एक ऐसी भटकती भक्तिमय आवाज़ बन जाता है जो उन विवादों, सम्बन्धों, संस्कृतियों, युद्धों, कलीसियाई प्रयोगों, भूलों, दुःखों और राजनीतिक दबावों से अलग कर दी गई है जिन्होंने उसे गढ़ा था।

यह पुस्तक उस आवाज़ को फिर से उस जीवन के भीतर रखने का प्रयास करती है।

यह एक मसीही जीवनी के रूप में लिखी गई है, न कि आँख मूँदकर किया गया संत-गुणगान। यह मानकर चलती है कि पवित्रशास्त्र अधिकारपूर्ण है, और किसी मसीही अगुवे के जीवन को पवित्रशास्त्र के अधीन परखा जाना चाहिए, न कि उसके बराबर कोई दूसरा अधिकार खड़ा करने के लिए उसका उपयोग किया जाए। इसलिए नी के साथ कृतज्ञता, सहानुभूति और गम्भीरता से व्यवहार किया गया है, परन्तु उन्हें अचूक नहीं माना गया है।

यह दृष्टिकोण विशेष रूप से इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वॉचमैन नी की विरासत विवादित है। उनके प्रशंसक उन्हें एक साहसी चीनी कलीसियाई अगुवे, गहन भक्तिमय शिक्षक, स्वदेशी कलीसियाई जीवन के अग्रदूत और मसीह के लिए बन्दी के रूप में स्मरण करते हैं। आलोचक उनकी कलीसिया-विषयक शिक्षा में बहिष्कारवादी प्रवृत्तियों, प्रत्यायोजित अधिकार पर उनकी शिक्षाओं में निहित जोखिमों, आत्मा और प्राण के बीच

अत्यधिक कठोर भेद, साहित्यिक निर्भरता के प्रश्नों, और उन गम्भीर नैतिक तथा आर्थिक आरोपों की ओर संकेत करते हैं जो कलीसियाई संघर्ष और साम्यवादी राजनीतिक अभियानों के दौरान सामने आए।

ऐतिहासिक स्रोत सदा एकमत नहीं होते, और जिन राजनीतिक परिस्थितियों में कुछ आरोप लगाए गए, वे निर्णय को और कठिन बना देती हैं। एक उत्तरदायी जीवनी को न तो किसी नायक की रक्षा के लिए आरोपों को मिटा देना चाहिए, और न ही बलपूर्वक कराई गई क्रान्तिकारी निन्दा के परिणामों को ऐसे मानना चाहिए मानो वे किसी निष्पक्ष न्याय-व्यवस्था से निकले हों। जहाँ प्रमाण विवादित हैं, वहाँ यह पुस्तक निश्चितता गढ़ने के बजाय अनिश्चितता को स्पष्ट रूप से कहती है।

ऐसे दृष्टिकोण का सिद्धान्त स्वयं नी ही दे देते: धन तो मसीह है; बरतन मिट्टी का है।

"परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।" (2 कुरिन्थियों 4:7)

मसीही जीवनी का उद्देश्य बरतन को तब तक चमकाना नहीं है जब तक वह मिट्टी जैसा दिखना ही बन्द न कर दे। उसका उद्देश्य यह देखना है कि परमेश्वर का अनुग्रह मिट्टी के द्वारा क्या कुछ कर सकता है।

इस पुस्तक में पवित्रशास्त्र

इस हिन्दी संस्करण में पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण इंडियन रिवाइज़्ड वर्ज़न (IRV) हिन्दी से लिए गए हैं; अंग्रेज़ी मूल में 1901 के अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्ज़न (ASV) का उपयोग हुआ है। IRV को इसलिए चुना गया है क्योंकि यह एक औपचारिक और विश्वासयोग्य अनुवाद है जो बाइबल की विस्तृत व्याख्या के लिए भली-भाँति उपयुक्त है, और हिन्दी भाषी अधिकांश कलीसियाएँ यही पाठ पढ़ती हैं।

नी की सेवकाई पवित्रशास्त्र से सराबोर थी। वे अत्यन्त समन्वयकारी हो सकते थे और अनेक लेखकों से अवधारणाएँ ग्रहण कर लेते थे, परन्तु वे निरन्तर बाइबल के पाठों की ओर लौटते रहे। रोमियों 5-8, इफिसियों, यूहन्ना 12-17, 1 और 2 कुरिन्थियों, इब्रानियों, प्रकाशितवाक्य, तथा अब्राहम, याकूब, मूसा, दाऊद और पतरस के वृत्तान्त उनकी शिक्षा के बार-बार लौटने वाले क्षेत्र बन गए।

इसलिए यह जीवनी उनके सिद्धान्तों का उल्लेख भर नहीं करती। यह उन सिद्धान्तों को पोषित करने वाले अनेक बाइबल-खण्डों को कथा के भीतर रखती है और उन्हीं के प्रकाश में उनके प्रयोगों को परखती है।

पाठक देखेंगे कि पवित्रशास्त्र कभी नी की पुष्टि करता है और कभी उनके विचारों को लागू करने के ढंग को सुधारता है। यह जान-बूझकर किया गया है। किसी शिक्षक का सम्मान तब होता है जब उसकी अन्तर्दृष्टियाँ हमें परमेश्वर के वचन की ओर ले जाती हैं, न कि तब जब उसके सूत्रीकरण परख से परे मान लिए जाते हैं।

नी की पुस्तकों के विषय में एक टिप्पणी

वॉचमैन नी के नाम से प्रकाशित अनेक खण्ड मूल रूप से ऐसी पारम्परिक पुस्तकों के रूप में आरम्भ नहीं हुए थे जो अपने बाद के अंग्रेज़ी रूप में पहले पृष्ठ से अन्तिम पृष्ठ तक लिखी गई हों। कुछ बोले गए संदेशों, सम्मेलनों के नोट्स, पत्रिकाओं, पाण्डुलिपियों और सम्पादकीय संकलनों से संकलित किए गए। अंग्रेज़ी में परिचित शीर्षक ऐसी व्यवस्थाओं को दर्शा सकते हैं जो संदेशों के पहली बार दिए जाने के बाद की गईं।

यह बात इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बोली गई सेवकाई प्रायः पास्तरीय प्रभाव के लिए तीखे विरोधाभासों का उपयोग करती है। सम्मेलन का कोई संबोधन किसी बात को ऐसे निरपेक्ष रूप में कह सकता है जिसे एक व्यवस्थित धर्मविज्ञानी अनेक शर्तों से घेर देगा। इसलिए बाद के पाठकों को किसी एक प्रभावशाली वाक्य से विस्तृत सिद्धान्त खड़े करने से बचना चाहिए।

यह जीवनी कॉपीराइट वाले संस्करणों से लम्बे अंश उद्धृत करने के बजाय नी की शिक्षाओं को अपने शब्दों में प्रस्तुत करती है। छोटे, सुप्रसिद्ध शीर्षकों और अवधारणाओं पर ऐतिहासिक अभिलेख के अंश के रूप में चर्चा की गई है। उद्देश्य यह है कि उनके विचार का सार पहुँचाया जाए, और केन्द्र में नी का गद्य नहीं, बल्कि पवित्रशास्त्र रहे।

भूमिका: पहरुआ और उसकी शताब्दी

एक बुलाहट के लिये चुना गया नाम

वॉचमैन नी का जन्म 4 नवम्बर 1903 को ग्वांगडोंग प्रान्त के शान्तोउ नगर में नी शूज़ू के नाम से हुआ, जबकि उनके परिवार की जड़ें फ़ुजियान प्रान्त के फ़ूझोउ में थीं। स्रोतों में कभी-कभी नामों की भिन्न वर्तनियाँ और पुरानी तिथियाँ मिलती हैं, और उनकी समाधि-शिला के कारण भी उनके जन्म-वर्ष को लेकर कभी-कभार भ्रम उत्पन्न हुआ है। आधुनिक जीवनी-सम्बन्धी शोध सामान्यत: 1903 को ही मानता है।

मन-फिराव के बाद उन्होंने चीनी नाम नी तुओशेंग अपनाया। यह नाम रात के पहरेदार की खड़खड़ी की आवाज़ का स्मरण कराता था—एक ऐसा संकेत जो सोए हुओं को जगाने के लिये होता था। उनका अंग्रेज़ी नाम, वॉचमैन (अर्थात् पहरुआ), इसी चित्र को एक दूसरी भाषा में ले गया।

यह चुनाव प्रकट करता है कि वे अपनी बुलाहट को किस रूप में समझते थे। पहरुआ भोर को उत्पन्न नहीं करता। जब दूसरे सोते हैं, तब वह जागता रहता है, खतरे पर नज़र रखता है, और लोगों को तैयार रहने के लिये पुकारता है।

पौलुस इफिसियों से कहता है, “हे सोनेवाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी” (इफिसियों 5:14)।

नी की सेवकाई बार-बार यही चेतावनी सुनाती रही: विरासत में मिले धर्म से जागो; विदेशी ढाँचों पर निर्भरता से जागो; अपने प्रयास से जागो; साम्प्रदायिक घमण्ड से जागो; स्वाभाविक बल से जागो; मसीह की देह के प्रति जागो; भीतर वास करनेवाले आत्मा के प्रति जागो; आनेवाले राज्य के प्रति जागो।

परन्तु स्वयं इस पहरुए ने एक ऐसी शताब्दी में जीवन बिताया जिसके खतरे किसी भी किशोर की कल्पना से कहीं बढ़कर थे।

घायल चीन में मसीहियत

नी का जन्म ऐसे चीन में हुआ जो अभी भी छिंग राजवंश के अधीन जी रहा था, यद्यपि जब वे बालक ही थे तब शाही शासन ढह जानेवाला था। उन्नीसवीं शताब्दी अपने साथ विदेशी सैनिक दबाव, असमान सन्धियाँ, क्षेत्रीय रियायतें, मिशनरी विस्तार, आर्थिक उथल-पुथल और आन्तरिक विप्लव लेकर आई थी। मसीहियत यीशु मसीह का सुसमाचार लेकर आई, परन्तु वह उन मार्गों से भी होकर आगे बढ़ी जिन्हें पश्चिमी शक्ति ने खोला था।

मिशनरियों को केवल साम्राज्य के कारिन्दे कहकर नहीं समेटा जा सकता। बहुतों ने त्यागपूर्वक सेवा की, चीनी भाषाएँ सीखीं, विद्यालय और अस्पताल बनाए, पवित्रशास्त्र का अनुवाद किया, विनाशकारी प्रथाओं का विरोध किया, और अपने चीनी पड़ोसियों से गहरा प्रेम किया। कुछ ने साम्राज्यवाद की आलोचना भी की। फिर भी चीनी श्रोता उस राजनीतिक वातावरण की अनदेखी नहीं कर सकते थे जो विदेशी उपस्थिति को घेरे हुए था।

इसी दुविधा ने स्वदेशी चीनी मसीहियत के उदय को आकार दिया। अगुवे अधिकाधिक यह पूछने लगे कि क्या कलीसियाओं का संचालन, भरण-पोषण और प्रसार स्वयं चीनी विश्वासियों के द्वारा हो सकता है।

नी इसी व्यापक आन्दोलन का हिस्सा थे, पर साथ ही उन्होंने स्वतंत्रता के लिये असाधारण रूप से ठोस धर्मवैज्ञानिक कारण विकसित किए। वे केवल पश्चिमी नियंत्रण के स्थान पर चीनी नियंत्रण नहीं चाहते थे। वे इन दोनों में से किसी के भी स्थान पर मसीह का नियंत्रण चाहते थे।

तीसरी पीढ़ी का मसीही जिसे मन-फिराव की आवश्यकता थी

नी के परिवार में पहले से ही मसीही विरासत थी। उनके दादा एक चीनी मसीही सेवक के रूप में सेवा कर चुके थे। उनके माता-पिता कलीसियाई जीवन में भाग लेते थे। नी मिशन विद्यालयों में पढ़े और उन्हें बाइबल की शिक्षा मिली।

फिर भी पारिवारिक मसीहियत ने उन्हें अपने आप चेला नहीं बना दिया।

यही उनके जीवन के सबसे गहरे पाठों में से एक बननेवाला था: आत्मिक वास्तविकता दूसरों के हाथ से विरासत में नहीं पाई जा सकती।

यूहन्ना मसीह को ग्रहण करनेवालों के विषय में कहता है कि वे "न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से" उत्पन्न हुए हैं (यूहन्ना 1:13)।

एक मसीही दादा किसी बच्चे को कहानियाँ, प्रार्थनाएँ, पवित्रशास्त्र और उदाहरण दे सकता है। वह उसे नया जन्म नहीं दे सकता।

सत्रह वर्ष की आयु में डोरा यू से जुड़े प्रचार के द्वारा हुए नी के मन-फिराव ने विरासत में मिले धर्म को व्यक्तिगत समर्पण में बदल दिया।

स्रोत का महान प्रश्न

यदि कोई एक विचार नी की अनेक शिक्षाओं को आपस में बाँधता है, तो वह स्रोत का प्रश्न है।

मसीही जीवन कहाँ से आता है?

पवित्रता कहाँ से आती है?

सेवकाई कहाँ से आती है?

कलीसिया का जीवन कहाँ से आता है?

आत्मिक अधिकार कहाँ से आता है?

नी का बार-बार दोहराया गया उत्तर है: आत्मा के द्वारा मसीह, न कि स्वतंत्र स्वयं।

उन्होंने देखा कि मनुष्य निरन्तर स्वाभाविक साधनों से ईश्वरीय परिणाम उत्पन्न करने का प्रयास करते रहते हैं। बुद्धि प्रकाशन गढ़ने का प्रयास करती है। इच्छा पवित्रता गढ़ने का प्रयास करती है। व्यक्तिगत आकर्षण सेवकाई गढ़ने का प्रयास करता है। संगठन कलीसियाई जीवन गढ़ने का प्रयास करता है। धार्मिक परिश्रम वह गढ़ने का प्रयास करता है जो परमेश्वर अनुग्रह से देता है।

पौलुस के शब्द एक धर्मवैज्ञानिक दिशासूचक बन गए: "अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है" (गलातियों 2:20)।

नी ने उस एक वाक्य को खोलने में पूरा जीवन लगा दिया।

क्रूस का महान प्रश्न

दूसरा एकता देनेवाला प्रश्न यह है कि परमेश्वर उस स्वयं के साथ कैसे व्यवहार करता है जो स्वयं स्रोत बनना चाहता है।

नी का उत्तर है: क्रूस।

आरम्भ में उन्होंने क्रूस को प्रतिस्थापन के रूप में सीखा: मसीह पापों के लिये मरा। बाद में उन्होंने एकरूपता पर बल दिया: पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया। उसके भी बाद उन्होंने क्रूस को चेलापन में एक निरन्तर चलनेवाले सिद्धान्त के रूप में वर्णित किया, जिसमें परमेश्वर स्वाभाविक बल से निपटता है ताकि पुनरुत्थान का जीवन प्रकट हो सके।

यह क्रम—पापों से, स्वयं तक, और फिर सेवा तक—उनकी शिक्षा के विकास को समझाने में सहायता करता है।

"हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया" (रोमियों 6:6)।

"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले" (लूका 9:23)।

नी इन विषयों से कभी नहीं थके, क्योंकि उनका विश्वास था कि हर मसीही समस्या अन्ततः इस प्रश्न को उजागर कर देती है कि जी कौन रहा है: स्वतंत्र स्वयं या मसीह।

कलीसिया का महान प्रश्न

तीसरा महान प्रश्न सामूहिक है। कलीसिया क्या है?

नी ने कलीसिया को केवल रविवार की आराधना-सभा, सम्प्रदाय, मिशनरी संस्था, या अलग-अलग मसीहियों के समूह के रूप में देखने से इनकार किया। वह मसीह की देह है।

"क्योंकि हम सब ने ... एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया" (1 कुरिन्थियों 12:13)।

इसी दृढ़ विश्वास ने उन्हें विश्वासियों की सहभागिता, अनेक प्राचीनों, साप्ताहिक रोटी तोड़ने, स्वदेशी नेतृत्व, साम्प्रदायिक नामों के त्याग, और अन्ततः विवादास्पद एक-नगर-एक-कलीसिया सिद्धान्त की ओर अग्रसर किया।

इसी ने उन्हें तालमेल, अधिकार और अधीनता के विषय में दृढ़ता से बोलने की ओर भी प्रेरित किया।

यहीं आकर उनकी विरासत मिली-जुली हो जाती है। देह का दर्शन मसीहियों को व्यक्तिवाद से मुक्त कर सकता है, परन्तु यदि अगुवे अपनी दिशा को मसीह के सिर होने के साथ बहुत निकटता से एक कर दें, तो इसका उपयोग विवेक को दबाने के लिये भी किया जा सकता है। यह जीवनी बार-बार नी की सामूहिक अन्तर्दृष्टियों को नये नियम की सुरक्षा-व्यवस्थाओं के साथ रखकर देखेगी।

दुःख का महान प्रश्न

चौथा प्रश्न केवल अध्ययन के द्वारा नहीं, बल्कि अनुभव के द्वारा भी सामने आया: परमेश्वर दुःख के साथ क्या करता है?

नी ने बीमारी, आपसी सम्बन्धों के टकराव, सार्वजनिक आलोचना, सेवकाई से बहिष्कार, राजनीतिक उथल-पुथल, गिरफ़्तारी, कारावास, शोक, और हिरासत में मृत्यु को जाना।

दुःख ने उनके टूटेपन के सन्देश को आकार दिया। फिर भी यह पुस्तक यह कहने से बचेगी कि हर पीड़ादायक घटना किसी सरल आत्मिक पाठ के लिये सीधे परमेश्वर द्वारा भेजी गई थी। बाइबल इससे अधिक सावधान है। बुराई बुराई ही रहती है। अन्याय अन्याय ही रहता है। सताव की निन्दा की जाती है, तब भी जब परमेश्वर उसके द्वारा फल उत्पन्न करता है।

यूसुफ अपने भाइयों से कह सका, "तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया" (उत्पत्ति 50:20)। एक ही घटना में मानवीय बुराई और ईश्वरीय विधान दोनों थे, और दोनों को आपस में गड्डमड्ड नहीं किया गया।

नी के कारावास के वर्षों को पढ़ते समय यह भेद अत्यन्त आवश्यक है।

चीनी वस्त्रों में पश्चिमी धर्मविज्ञान नहीं

नी ने पश्चिमी मसीही लेखकों से, जिनमें ब्रदरन, केज़िक, पवित्रता-आन्दोलन, भक्तिपरक और भविष्यसूचक परम्पराएँ सम्मिलित हैं, बहुत कुछ ग्रहण किया। परन्तु इस कारण उन्हें केवल पश्चिमी धर्मविज्ञान का अनुवादक कहकर खारिज नहीं कर देना चाहिए।

हर प्रमुख धर्मविज्ञानी विरासत में मिली परम्पराओं के भीतर ही काम करता है। मौलिकता प्रायः चयन, संश्लेषण, बल, अनुवाद और प्रयोग में निहित होती है।

नी ने अनेक धाराओं से विचार लिये और उन्हें एक ऐसे चीनी मसीही आन्दोलन के भीतर रखा जो राष्ट्रवाद, विदेशी मिशनों, युद्ध, शहरी आधुनिकता, ग्रामीण सुसमाचार-प्रचार और क्रान्ति के बीच अपना मार्ग बना रहा था। उन्होंने एक ऐसी आत्मिक शब्दावली विकसित की जिसे लाखों पाठक विशिष्ट रूप से उनकी अपनी पहचानने लगे।

हाल के अकादमिक शोध ने ठीक इसी बौद्धिक विकास की ओर नये सिरे से ध्यान दिलाया है, और दिखाया है कि नी की अवधारणाएँ उनके जीवन-वृत्तान्त और ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ किस प्रकार बदलती गईं।

तीन ऐतिहासिक संसारों में एक जीवन

नी के जीवन को मोटे तौर पर तीन राजनीतिक संसारों में बाँटा जा सकता है।

पहला था उत्तर-शाही और गणतन्त्रीय चीन: छिंग का पतन, सरदारशाही, राष्ट्रवादी शक्ति का सुदृढ़ीकरण, बौद्धिक उफान, और स्वदेशी मसीही आन्दोलनों का उदय।

दूसरा था युद्धकालीन चीन: जापानी आक्रमण, विस्थापन, आर्थिक संकट और गृह-संघर्ष।

तीसरा था जनवादी गणराज्य: साम्यवादी विजय, धार्मिक पुनर्गठन, निन्दा-भर्त्सना के अभियान, गिरफ़्तारी, जेल, सांस्कृतिक क्रान्ति, और 1972 में मृत्यु।

उनका धर्मविज्ञान पहचानने योग्य रूप से निरन्तर बना रहा, परन्तु जिन परिस्थितियों में उसे जीना पड़ा, वे नाटकीय रूप से बदल गईं।

अधिकार पर कोई शिक्षा किसी सौम्य कलीसियाई प्राचीन के अधीन कुछ और सुनाई देती है, और एक क्रान्तिकारी राज्य के अधीन कुछ और। विश्वास पर कोई शिक्षा तब कुछ और सुनाई देती है जब यह तय करना हो कि वेतन स्वीकार करें या नहीं, और तब कुछ और जब कारावास की सज़ा अपनी अवधि से आगे खिंच जाए। देह पर कोई शिक्षा तब बिलकुल भिन्न सुनाई देती है जब विश्वासियों पर एक-दूसरे की निन्दा करने का दबाव डाला जाता है।

जीवनी सिद्धान्त को वज़न देती है।

नी आज भी क्यों महत्त्वपूर्ण हैं

वॉचमैन नी कम से कम पाँच कारणों से आज भी महत्त्वपूर्ण हैं।

पहला, उनकी भक्तिपरक शिक्षा आज भी संसार भर के मसीहियों को आकार दे रही है।

दूसरा, उनका जीवन स्वदेशी चीनी मसीहियत के उदय का हिस्सा है, जो आधुनिक कलीसियाई इतिहास के सबसे महत्त्वपूर्ण आन्दोलनों में से एक है।

तीसरा, उनके कलीसिया-विज्ञान ने विकेन्द्रीकृत कलीसियाओं, साधारण विश्वासियों की सेवकाई, मिशनरी निर्भरता और स्थानीय नेतृत्व के विषय में उन प्रश्नों का पूर्वाभास दिया जो आज भी प्रासंगिक हैं।

चौथा, उनकी खूबियाँ और कमज़ोरियाँ करिश्माई आत्मिक अधिकार का एक अध्ययन-उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। आधुनिक कलीसियाओं को यह समझने की तत्काल आवश्यकता है कि गहरी शिक्षा और सशक्त नेतृत्व किस प्रकार अति-केन्द्रीकरण के खतरों के साथ-साथ मौजूद रह सकते हैं।

पाँचवाँ, उनके कारावास के वर्ष समृद्ध मसीहियों के सामने एक कठोर प्रश्न रखते हैं: जब दिखाई देनेवाली उपयोगिता लुप्त हो जाए, तब क्या मसीह पर्याप्त है?

इस पुस्तक को कैसे पढ़ें

इस जीवनी को तीन स्तरों पर पढ़िए।

ऐतिहासिक दृष्टि से पढ़िए। नी एक विशेष चीन के थे, और उन्हें उससे अलग करके नहीं देखना चाहिए।

धर्मवैज्ञानिक दृष्टि से पढ़िए। उनकी शिक्षाएँ पवित्रशास्त्र और विरासत में मिली मसीही परम्पराओं के सम्बन्ध में विकसित हुईं।

भक्तिभाव से पढ़िए। इस जीवन को अपने चेलेपन के विषय में आपसे प्रश्न पूछने दीजिए।

परन्तु अधिकार का क्रम स्पष्ट रखिए। मसीह प्रभु है। पवित्रशास्त्र मानदण्ड है। नी एक गवाह हैं—वरदान-प्राप्त, सीमित, कभी-कभी विवादास्पद, और इसलिए इतने मानवीय कि वे सचमुच शिक्षाप्रद हों।

कहानी प्रसिद्ध पुस्तकों से पहले और जेलों से पहले, एक ऐसे युवक से आरम्भ होती है जिसने जाना कि मसीहियत की कीमत यह होगी कि वह अपने आप का होने का अधिकार खो दे।

मसीह को समर्पित जीवन

बदलते चीन में एक पहरुआ

वॉचमैन नी का जन्म 1903 में हुआ, ऐसे समय में जब चीन अपने लम्बे इतिहास की सबसे बड़ी उथल-पुथल में से एक से गुज़र रहा था। पुरानी शाही व्यवस्था अपने अन्त के निकट थी। पश्चिमी शक्तियाँ ज़बरदस्ती चीनी बन्दरगाहों और राजनीति में घुस आई थीं। मिशनरियों ने विद्यालय, अस्पताल, कलीसियाएँ और प्रकाशन-गृह स्थापित किए थे, जबकि चीनी मसीही एक कठिन प्रश्न से जूझ रहे थे: क्या मसीही विश्वास कैथोलिक (अर्थात् सार्वभौमिक) और बाइबल-आधारित रहना तथा विश्वव्यापी कलीसिया से जुड़ा रहना छोड़े बिना, गहराई से और निर्विवाद रूप से चीनी बन सकता है?

इसी परिवेश में एक ऐसा बालक आया जो आगे चलकर चीन से बहुत दूर-दूर तक जाना गया। उसका परिवार छोटे परन्तु महत्त्वपूर्ण चीनी प्रोटेस्टेंट समुदाय का भाग था। इसलिए मसीहियत उसके लिए कोई विदेशी धर्म नहीं थी जिससे उसका पहला सामना वयस्क होकर हुआ हो। वह उस संसार का अंग थी जिसमें उसका जन्म हुआ था। फिर भी विरासत में मिली मसीहियत और जीवित विश्वास एक ही बात नहीं हैं। नी की बाद की सेवकाई का एक बार-बार लौटने वाला विषय यह होगा कि आत्मिक वास्तविकता उधार नहीं ली जा सकती। कोई व्यक्ति मसीही शब्दावली, मसीही आदतें, यहाँ तक कि मसीही सम्बन्ध भी विरासत में पा सकता है, और फिर भी उसे मसीह से व्यक्तिगत रूप से मिलने की आवश्यकता बनी रह सकती है।

यही भेद उसकी बाद की गवाही की शक्ति को समझाने में सहायता करता है। नी केवल इसलिए प्रभावशाली नहीं बना कि उसने मसीही सिद्धान्त सीख लिए थे। वह इसलिए प्रभावशाली बना क्योंकि वह इस निश्चय पर पहुँचा कि मसीहियत मूल रूप से ईश्वरीय जीवन का प्रदान किया जाना और उसकी अभिव्यक्ति है। उसकी परिपक्व शिक्षा में सुसमाचार

पुराने मनुष्यत्व को सुधारने का कोई कार्यक्रम नहीं था। वह यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में पुराने मनुष्यत्व के लिए परमेश्वर का उत्तर था।

प्रेरित पौलुस ने इस वास्तविकता के केन्द्र को उन शब्दों में व्यक्त किया जो नी की आत्मिकता की नींव बन गए: "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आपको दे दिया" (गलातियों 2:20)।

नी की बाद की सेवकाई के बहुत बड़े भाग को उसी पद पर एक विस्तृत मनन के रूप में समझा जा सकता है। मसीही जीवन केवल यह नहीं है कि मसीह विश्वासी को अधिक बलवान बनने में सहायता करे। वह यह है कि मसीह स्वयं विश्वासी का जीवन बन जाए। इसलिए क्रूस केवल वह स्थान नहीं है जहाँ पाप क्षमा किए जाते हैं; वह स्वतन्त्र अहं पर परमेश्वर का न्याय भी है। पुनरुत्थान केवल इस बारे में एक सिद्धान्त नहीं है कि तीसरे दिन यीशु के साथ क्या हुआ; वह नए जीवन का वह क्षेत्र है जिसमें विश्वासी को लाया जाता है।

मसीही घर और बिना मन-फिराव का हृदय

नी मसीही प्रभावों के बीच बड़ा हुआ और उसने अच्छी शिक्षा पाई। उसकी युवावस्था के विवरण लगातार उसकी असाधारण बौद्धिक क्षमता का उल्लेख करते हैं। वह व्यापक रूप से पढ़ता था, जल्दी सीखता था, और उसकी स्मरण-शक्ति ऐसी थी जिसने बाद में उसे मसीही साहित्य के विशाल भण्डार को आत्मसात करने में समर्थ बनाया। ये वरदान महत्त्वपूर्ण थे, परन्तु आगे चलकर नी स्वाभाविक योग्यता को आत्मिक सेवकाई के लिए अपर्याप्त मानने लगा। बुद्धि सत्य को इकट्ठा तो कर सकती थी, पर आवश्यक नहीं कि उससे आत्मिक वास्तविकता उत्पन्न हो।

यह दृढ़ विश्वास उसकी शिक्षा के सबसे गहराई से जाँचने वाले स्वरों में से एक बन गया। एक मसीही सेवक में वाक्पटुता, संगठन-कौशल, ज्ञान और व्यक्तित्व हो सकता है, और फिर भी वह मुख्य रूप से स्वाभाविक बल से सेवा कर रहा हो सकता है। नी ने बाद में इस आवश्यकता की बात की कि "बाहरी मनुष्य" टूटे, ताकि आत्मा का जीवन विश्वासी के द्वारा व्यक्त हो सके। उस शिक्षा का बीज उसके अपने अनुभव में था: परमेश्वर ने केवल एक

प्रतिभाशाली युवक को भर्ती नहीं किया। उसने समर्पण का एक जीवन-भर चलने वाला कार्य आरम्भ किया।

यूहन्ना 12 में यीशु के शब्द इस सिद्धान्त के लिए एक महत्त्वपूर्ण बाइबलीय चित्र बन गए: "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

इस दृष्टि में फलवन्त होना मृत्यु के द्वारा आता है। दाना अपने छिलके को चमकाकर अपना उद्देश्य पूरा नहीं करता। उसका जीवन तब मुक्त होता है जब छिलका टूटता है। नी बार-बार इसी ढाँचे पर लौटता रहा: पुनरुत्थान से पहले मृत्यु, उपयोगिता से पहले समर्पण, आत्मिक सामर्थ्य से पहले निर्बलता।

इसका अर्थ यह नहीं था कि शिक्षा या व्यक्तित्व बुरे थे। नी ने स्वयं अपनी बुद्धि का असाधारण उपयोग किया। इसका अर्थ यह था कि स्वाभाविक क्षमताओं को परमेश्वर के शासन के अधीन आना चाहिए। जो कुछ परमेश्वर को अर्पित किया जाता है, उस पर पहले परमेश्वर से स्वतन्त्र होकर अपना अधिकार जताना बन्द होना चाहिए।

चीन, मिशन, और बाइबलीय कलीसिया की खोज

नी को जो मसीहियत मिली, उसे विदेशी मिशनरी संगठनों और साम्प्रदायिक ढाँचों ने गहराई से आकार दिया था। वह उस सुसमाचार के लिए आभारी था जिसे मिशनरी चीन तक लाए थे, फिर भी उसे अधिकाधिक निश्चय होता गया कि चीनी कलीसिया को पश्चिमी धन, नेतृत्व, संस्थाओं या साम्प्रदायिक पहचानों पर स्थायी रूप से निर्भर नहीं रहना चाहिए।

यह चिन्ता राष्ट्रीय होने के साथ-साथ धर्मवैज्ञानिक भी थी। नी ने नया नियम पढ़ा और देखा कि किसी नगर के विश्वासियों का वर्णन सीधे-सीधे उस स्थान की कलीसिया के रूप में किया गया है। उसे निश्चय हो गया कि कलीसिया की सबसे गहरी पहचान किसी मिशनरी संस्था, किसी सम्प्रदाय, किसी धर्मवैज्ञानिक परम्परा या किसी करिश्माई अगुवे से नहीं आती। वह मसीह का होने से आती है।

कुरिन्थियों को दी गई पौलुस की डाँट विशेष रूप से प्रासंगिक लगी होगी: "मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आपको "पौलुस का," कोई "अपुल्लोस का," कोई "कैफा का," कोई "मसीह का" कहता है। क्या मसीह बँट गया?" (1 कुरिन्थियों 1:12-13)।

मसीही विभाजन के प्रति नी का उत्तर क्रान्तिकारी था, और कभी-कभी विवादास्पद भी। उसका विश्वास था कि किसी स्थान के विश्वासियों को साम्प्रदायिक विशिष्टताओं के इर्द-गिर्द संगठित होने के बजाय मसीह में अपने साझा जीवन के आधार पर एक-दूसरे को ग्रहण करना चाहिए। इसी दृढ़ विश्वास ने आगे चलकर सभाओं के एक ऐसे जाल को जन्म देने में सहायता की, जिसे बाहर के लोग प्राय: "लिटिल फ्लॉक" (छोटा झुण्ड) कहते थे।

फिर भी किसी आन्दोलन के होने से पहले, एक युवक था जिसे यीशु मसीह के आमने-सामने लाया जा रहा था। कलीसिया-विज्ञान बाद में आया। क्रूस पहले आया।

महान विषय: जीवन के रूप में मसीह

पाठक कभी-कभी नी से पहली बार उसकी किसी पुस्तक के द्वारा मिलते हैं और मान लेते हैं कि उसकी सेवकाई अनोखे सिद्धान्तों का एक संग्रह भर थी: आत्मा, प्राण और देह; स्थानीय कलीसिया; आत्मिक अधिकार; जयवन्त जीवन; बाहरी मनुष्य का टूटना। परन्तु इन विषयों के नीचे एक सरल केन्द्र है: स्वयं मसीह।

नी की सर्वोत्तम शिक्षा विश्वासी को लगातार आत्मिक तकनीकों में उलझे रहने से हटाकर मसीह की पर्याप्तता की ओर वापस ले जाती है। प्रश्न केवल यह नहीं है, "मैं अधिक धीरजवन्त कैसे बनूँ?" बल्कि यह है, "क्या मसीह मेरा धीरज है?" केवल यह नहीं, "मैं पाप पर जय कैसे पाऊँ?" बल्कि यह, "परमेश्वर मसीह में पहले ही क्या कर चुका है, और मैं उस पूरे हो चुके तथ्य पर विश्वास के द्वारा कैसे जीऊँ?" केवल यह नहीं, "मैं परमेश्वर की सेवा कैसे करूँ?" बल्कि यह, "परमेश्वर क्या कर रहा है, और क्या उसका जीवन मेरे द्वारा व्यक्त हो सकता है?"

पौलुस लिखता है: "क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे" (कुलुस्सियों 3:3-4)।

यह वाक्यांश, "मसीह जो हमारा जीवन है," नी की परिपक्व आत्मिकता के हृदय को पकड़ लेता है। अन्ततः मसीहियत किसी श्रेष्ठ धार्मिक स्व का विकास नहीं है। जीवन के पुराने स्रोत का क्रूस पर न्याय हो चुका है; अब विश्वासी एक दूसरे ही स्रोत से जीना सीखता है।

यही उसकी पवित्रीकरण की समझ की व्याख्यात्मक कुंजी बन गई। आज्ञाकारिता में मानवीय संकल्प का स्थान है, परन्तु संकल्प मसीह का जीवन गढ़ नहीं सकता। विश्वासी

मन-फिराव के बाद अनुग्रह की कक्षा पार करके अपने प्रयास के बल पर आगे नहीं बढ़ता। जो मसीह धर्मी ठहराता है, वही मसीह पवित्र भी करता है।

प्रकाशन और दुःख की एक जीवनी

नी के जीवन को ज़िम्मेदारी से केवल आत्मिक खोजों के एक क्रम के रूप में नहीं बताया जा सकता। उस पर बीमारी, गरीबी, विवाद, ग़लतफ़हमी, राजनीतिक विपत्ति, कारावास और हानि की छाप भी थी। क्रूस का उसका धर्मविज्ञान पीड़ा से कटे किसी शान्त पुस्तकालय में विकसित नहीं हुआ था।

इसका अर्थ यह नहीं कि हर कठिनाई को रोमानी रंग दिया जाए। न ही दुःख अपने आप किसी व्यक्ति के धर्मविज्ञान को सही बना देता है। परन्तु नी के जीवन में शिक्षा और दुःख गहराई से एक-दूसरे में गुँथ गए। वह इस निश्चय पर पहुँचा कि परमेश्वर परिस्थितियों का उपयोग केवल यह बदलने के लिए नहीं करता कि विश्वासी क्या करते हैं, बल्कि उस स्रोत को उजागर करने और बदलने के लिए भी करता है जिससे वे जीते हैं।

2 कुरिन्थियों में पौलुस के शब्द एक बाइबलीय ढाँचा प्रदान करते हैं: "परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे" (2 कुरिन्थियों 4:7)।

धन ईश्वरीय है; बरतन मिट्टी का है। इसलिए मसीही सेवकाई में एक विरोधाभास निहित है। परमेश्वर स्वर्गीय धन नाज़ुक लोगों को सौंपता है। बरतन को कभी भी धन समझने की भूल नहीं होनी चाहिए।

नी की कहानी आगे चलकर इस विरोधाभास को असाधारण कठोरता के साथ प्रकट करने वाली थी। एक प्रतिभाशाली शिक्षक अपने जीवन के अन्तिम दो दशक अधिकतर चुप कराया हुआ बिताएगा। कलीसियाओं के निर्माण को समर्पित एक व्यक्ति कलीसियाओं से अलग कर दिया जाएगा। एक विपुल लेखक प्रकाशित करने की स्वतन्त्रता खो देगा। पुनरुत्थान-जीवन का एक प्रचारक सांसारिक महत्त्वाकांक्षा, प्रतिष्ठा, संगति और स्वतन्त्रता के प्रति मृत्यु के एक लम्बे अनुभव से होकर गुज़रेगा।

फिर भी सन्देशवाहक को चुप कराने से सन्देश चुप नहीं हुआ।

एक मसीही जीवन का माप

वॉचमैन नी को किस प्रकार मापा जाए? उसे एक अचूक शिक्षक मानकर नहीं। वह ऐसा नहीं था। उसके कुछ सूत्रीकरणों की सावधानीपूर्वक बाइबलीय जाँच आवश्यक है। उसका कलीसिया-विज्ञान उसके अनुयायियों के हाथों कठोर बन सकता था। आत्मा और प्राण की उसकी श्रेणियों पर बहस हुई है। सौंपे गए अधिकार से सम्बन्धित शिक्षाओं का दुरुपयोग हो सकता है, यदि उन्हें सेवक-नेतृत्व, जवाबदेही, विवेक और मसीह की सर्वोच्च प्रभुता पर नए नियम की उतनी ही दृढ़ शिक्षा से अलग कर दिया जाए।

न ही उसे केवल उसकी सेवकाई से जुड़ी कलीसियाओं की संख्या या उसके नाम वाली पुस्तकों के प्रसार से मापा जाना चाहिए। मसीही फल का अन्तिम निर्णय परमेश्वर का है, हमारा नहीं।

नी को पढ़ने का सबसे फलदायी तरीका उन प्रश्नों को सुनना है जो उसका जीवन कलीसिया के सामने रखता है। क्या मसीह हमारे जीवन का केवल एक भाग है, या वह हमारा जीवन है? क्या हम परमेश्वर के साथ संगति से सेवा करते हैं या स्वाभाविक ऊर्जा से? क्या हम क्रूस को केवल क्षमा के रूप में समझते हैं, या पुराने स्वतन्त्र जीवन पर परमेश्वर के दण्डादेश के रूप में भी? क्या हमारी कलीसियाएँ मसीह की देह की एकता को प्रकट करती हैं? क्या हम तब भी परमेश्वर की आज्ञा मानने को तैयार हैं जब आज्ञाकारिता महँगी पड़ती है? क्या हम तब भी उस पर भरोसा कर सकते हैं जब दिखाई देने वाली उपयोगिता छीन ली जाती है?

यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपका इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 16:24)।

वह आज्ञा नी की कहानी में प्रवेश का एक उपयुक्त द्वार है। उसका जीवन इसलिए महत्त्वपूर्ण नहीं था कि उसने कोई अधिक आसान मसीहियत खोज निकाली। वह इसलिए महत्त्वपूर्ण था कि उसने दृढ़ता से कहा कि मसीही जीवन वहाँ आरम्भ होता है जहाँ स्व-शासन समाप्त होता है।

बीसवीं सदी के आरम्भिक वर्षों में एक मसीही परिवार में जन्मा वह बालक अभी नहीं जानता था कि उन शब्दों की क्या कीमत चुकानी होगी। परन्तु उसके सामने का मार्ग अधिकाधिक समर्पण का मार्ग बनता जाने वाला था। निर्णायक मोड़ 1920 में आया, जब

सुसमाचार केवल उसके विरासत में मिले संसार का एक भाग न रहकर उसके सम्पूर्ण जीवन पर एक व्यक्तिगत दावा बन गया।

वह घर जिसमें उसका जन्म हुआ

नी की मसीही वंश-परम्परा इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि वह उसे प्रोटेस्टेंट चीनी परिवारों की आरम्भिक पीढ़ियों में से एक में रखती है। उसके दादा ने एक मसीही सेवक के रूप में सेवा की थी, जिससे यह परिवार एक ऐसे समाज में असामान्य था जहाँ प्रोटेस्टेंट मसीहियत अभी अपेक्षाकृत नई थी और प्रायः विदेशी उपस्थिति से जोड़ी जाती थी। परन्तु नी की पीढ़ी तक आते-आते, जो धर्म कभी भारी सामाजिक कीमत चुकाकर अपनाया गया था, वह इतना परिचित हो सकता था कि उसे सहज मान लिया जाए।

यह ढर्रा केवल चीन तक सीमित नहीं है। जागृति-आन्दोलन प्रायः संस्थाएँ बन जाते हैं; दृढ़ विश्वास रीति-रिवाज बन जाते हैं; बलिदान विरासत बन जाता है। अग्रदूतों के पोते-पोतियों के पास विश्वास की शब्दावली तो हो सकती है, पर वह भीतरी संकट नहीं जिसने उस शब्दावली को अर्थ दिया था।

इसलिए नी की कहानी बाइबल की एक बार-बार दोहराई जाने वाली चेतावनी से आरम्भ होती है। इस्राएल वाचा के चिह्न विरासत में पा सकता था और वाचा की वास्तविकता को भूल सकता था। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने धार्मिक श्रोताओं से कहा कि वे यह न कहें, "हमारा पिता अब्राहम है," मानो वंश पश्चाताप का स्थान ले सकता हो (मत्ती 3:9)।

यही ख़तरा मसीही परिवारों में भी है। बच्चे आराधना करने से पहले भजन सीख सकते हैं, विश्वास करने से पहले सिद्धान्त, और मसीह से प्रेम करने से पहले कलीसिया में उचित व्यवहार। इनमें से कोई भी वरदान बुरा नहीं है। ये बड़े विशेषाधिकार हैं। परन्तु विशेषाधिकार उत्तरदायित्व को बढ़ाता है।

आगे चलकर नी मसीहियत के हर उस रूप के प्रति सशंकित हो गया जो मुख्यतः बाहरी विरासत पर टिका था।

शिक्षा और एक मन का गठन

नी ने मिशनरी संस्थाओं के द्वारा शिक्षा पाई, जिन्होंने उसे चीनी विद्या के साथ-साथ अंग्रेज़ी से भी परिचित कराया। यह भाषाई योग्यता रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। इसने उसे पश्चिमी मसीही लेखन के एक विशाल भण्डार तक पहुँच दी जो बहुत-से चीनी पाठकों के लिए उपलब्ध नहीं था।

उसके बाद के धर्मविज्ञान को उसके अध्ययन से अलग करके नहीं समझा जा सकता। वह पुस्तकें इकट्ठी करता, व्याख्याओं की तुलना करता, अवधारणाओं का अनुवाद करता, और ब्रिटेन, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में फैले आन्दोलनों की धर्मवैज्ञानिक शब्दावली को आत्मसात करता रहा।

फिर भी उसकी शिक्षा ने एक जीवन-भर का तनाव भी उत्पन्न किया। नी बुद्धि को अत्यधिक महत्त्व देता था, और साथ ही प्रकाशन के स्थान पर स्वाभाविक बुद्धि को रख देने के विरुद्ध चेतावनी भी देता था।

यह तनाव बाइबलीय है। पौलुस उच्च शिक्षित था और सावधानी से तर्क करता था, फिर भी उसने यह भी कहा, "हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है" (2 कुरिन्थियों 3:5)। मसीहियत सोचने और निर्भरता के बीच किसी एक को चुनने की माँग नहीं करती। वह निर्भर होकर सोचने की माँग करती है।

नी के सर्वोत्तम पाठक उसके हर निष्कर्ष की नकल किए बिना पवित्रशास्त्र के प्रति उसकी भूख की नकल करते हैं।

नवीनीकरण की खोज में चीन

नी की किशोरावस्था गणतन्त्र-काल में बीती, जब चीनी बुद्धिजीवी विज्ञान, लोकतन्त्र, राष्ट्रवाद, परम्परा, आधुनिकीकरण और विदेशी शक्तियों के साथ देश के सम्बन्ध पर बहस कर रहे थे। चार मई आन्दोलन के दौर ने विरासत में मिली संस्थाओं को चुनौती दी और युवाओं को आमूल सामाजिक परिवर्तन की कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित किया।

ऐसे वातावरण में मन-फिराव केवल एक निजी धार्मिक निर्णय नहीं था। इसमें एक ऐसी संस्कृति के भीतर, जो चीन के भविष्य पर तीव्र बहस कर रही थी, वास्तविकता की एक दृष्टि को चुनना शामिल था।

हाल के शोध बताते हैं कि मन-फिराव से पहले नी की रुचियाँ राजनीतिक लेखन से जुड़ी थीं और उसकी मसीही प्रतिबद्धता ने उसकी महत्त्वाकांक्षाओं की दिशा बदल दी। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि बाद में उसने आत्मिक बुलाहट को राजनीतिक पहचान से इतनी पूर्णता के साथ अलग रखने का प्रयास क्यों किया।

उसकी इस स्थिति की बार-बार परीक्षा होनी थी। कोई भी केवल राजनीति को महत्त्वहीन घोषित करके राजनीति से बाहर नहीं रह सकता। युद्ध, कराधान, विदेशी मिशन, क्रान्ति और कारावास आगे चलकर उसके जीवन में प्रवेश करने वाले थे, चाहे उन्हें बुलाया जाए या नहीं।

यह सबक उन मसीहियों के लिए उपयोगी है जो स्वयं को "अराजनीतिक" समझते हैं। सुसमाचार को राजनीति तक सीमित नहीं किया जा सकता, परन्तु शिष्यता ऐसे समाजों के भीतर ही घटित होती है जिन पर सत्ता का शासन है। प्रश्न यह है कि किसी दल, राष्ट्र या विचारधारा को बपतिस्मा दिए बिना मसीह के प्रति निष्ठावान कैसे रहा जाए।

वॉचमैन (पहरुआ) नाम का अर्थ

वॉचमैन (पहरुआ) नाम आगे चलकर नी की पहचान से अविभाज्य हो गया। बाइबल के संसार में पहरुए पर उत्तरदायित्व होता है, क्योंकि जब दूसरे सोते हैं तब वह ख़तरे को देखता है।

यहेजकेल सुनता है, "हे मनुष्य के सन्तान मैंने तुझे इस्राएल के घराने के लिये पहरुआ नियुक्त किया है" (यहेजकेल 3:17)। यह चित्र चमक-दमक वाला नहीं है। पहरुए को जागते रहना, ठीक-ठीक परखना, और तब भी बोलना होता है जब सन्देश अप्रिय हो।

नी के प्रचार में यही गुण था। वह मसीहियों को यह कहकर तसल्ली देने से सन्तुष्ट नहीं था कि सब कुछ ठीक है। उसने आत्म-छल, विभाजन, शारीरिक सेवा, आत्मिक निष्क्रियता, सांसारिक उलझाव और मसीह के लौटने के लिए तैयारी की कमी के विषय में चेतावनी दी।

पहरुए भूल भी कर सकते हैं। वे परछाइयों को शत्रु समझ सकते हैं या वहाँ ख़तरे की घण्टी बजा सकते हैं जहाँ कोई ख़तरा नहीं। इसलिए यह चित्र नम्रता की माँग करता है। एक मसीही शिक्षक को जो कुछ वह देखता है उसे पवित्रशास्त्र से परखना चाहिए और व्यापक देह की बात सुननी चाहिए।

नी की विरासत में दोनों पक्ष हैं: असाधारण आत्मिक सजगता, और ऐसे सूत्रीकरण जो कभी-कभी आवश्यकता से अधिक निरपेक्ष हो गए।

क्रूस: नी के जीवन का व्याकरण

वॉचमैन नी को यादगार आत्मिक सूत्रों के संग्रहकर्ता के रूप में पढ़ना सम्भव है: बैठो, चलो, खड़े रहो; जानना, मानना, सौंपना (Know, Reckon, Present); आत्मा, प्राण और देह; बाहरी मनुष्य का टूटना; जीवन के रूप में मसीह। फिर भी जब इन वाक्यांशों को उस बड़े व्याकरण से अलग कर दिया जाता है जिसने इन्हें एक साथ बाँधे रखा, तो ये भ्रामक हो जाते हैं। वह व्याकरण था यीशु मसीह का क्रूस और पुनरुत्थान।

नी के लिए क्रूस सबसे पहले इतिहास की एक वस्तुनिष्ठ घटना था। यीशु पापियों के लिए मरा। कोई भी भीतरी अनुभव मसीह के पूरे किए गए कार्य का स्थान नहीं ले सकता था। परमेश्वर के साथ विश्वासी का मेल पश्चाताप की तीव्रता, समर्पण की गुणवत्ता, भावनात्मक विजय या आत्मिक परिपक्वता पर टिका नहीं था। वह उस पर टिका था जो किसी और ने पूरा किया था। "क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल है" (रोमियों 5:1)। सुसमाचार विश्वासी के बाहर, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में आरम्भ हुआ।

परन्तु नी ने पौलुस में एक दूसरा आयाम भी देखा: विश्वासी को मसीह की मृत्यु में सम्मिलित कर लिया गया था। "हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया" (रोमियों 6:6)। इसलिए क्रूस ने केवल उसी से नहीं निपटा जो पापी ने किया था, बल्कि स्वयं पापी से भी, जो स्वतन्त्र जीवन का एक पतित स्रोत है। यहीं से नी का यह जीवन-भर का आग्रह आरम्भ हुआ कि मसीहियत आदम की मरम्मत का परमेश्वर का कार्यक्रम नहीं है। वह मसीह में परमेश्वर की एक नई मानवता की सृष्टि है।

यही अन्तर्दृष्टि समझाती है कि नी स्वाभाविक बल के विषय में इतनी दृढ़ता से क्यों बोल सका। एक प्रतिभाशाली मसीही यह मान सकता है कि मन-फिराव बस उसकी मौजूदा योग्यताओं को परमेश्वर की सेवा में भर्ती कर लेता है। नी ने एक अधिक गहराई से जाँचने वाला प्रश्न पूछा: सेवा किस स्रोत से उत्पन्न होती है? मन प्रखर हो सकता है, व्यक्तित्व आकर्षक, संगठन कुशल, और परिणाम प्रभावशाली, फिर भी हो सकता है कि सेवक मुख्यतः आत्म-विश्वास के बल पर काम कर रहा हो। क्रूस सराहनीय स्वाभाविक क्षमताओं को भी स्वतन्त्रता से बाहर बुलाकर समर्पण में ले आता है।

इसका सुधार पुनरुत्थान है। परमेश्वर मनुष्य को नष्ट करके उसके व्यक्तित्व के स्थान पर शून्यता नहीं रख देता। वह जिलाता है। पिन्तेकुस्त के बाद भी पतरस स्पष्ट रूप से पतरस ही

रहा, परन्तु वह आत्म-विश्वासी चेला, जिसने कभी डींग मारी थी कि वह मसीह का इन्कार कभी नहीं करेगा, पूरी तरह ढह जाने के अनुभव से होकर गुज़र चुका था। पौलुस बौद्धिक रूप से प्रबल बना रहा, परन्तु उसने गवाही दी कि उसकी योग्यता परमेश्वर की ओर से थी। पुनरुत्थान मानवीय क्षमताओं को ईश्वरीय जीवन के अधीन उनके उचित क्रम में लौटा देता है।

यही ढाँचा नी की जीवनी को उसकी भीतरी एकता देता है। मन-फिराव से पहला समर्पण आया। फ़ूझोउ के संघर्ष ने अपने को सही ठहराए जाने की उसकी इच्छा को चुनौती दी। क्षयरोग ने उसे शारीरिक सीमाओं के सामने खड़ा किया। व्यापार और सेवकाई को लेकर हुए विवाद ने उसकी प्रतिष्ठा को घायल किया। राजनीतिक क्रान्ति ने दिखाई देने वाले ढाँचों को ढहा दिया। अन्ततः कारावास ने उपयोगिता का लगभग हर सामान्य मार्ग छीन लिया। हर चरण पर प्रश्न और गहरा होता गया: जब एक और स्वाभाविक सहारा लुप्त हो जाता है, तब क्या मसीह पर्याप्त है?

कोई भी जीवनी-लेखक हर परीक्षा का ठीक-ठीक भीतरी अर्थ नहीं जान सकता, और दुःख को कभी भी रोमानी रंग नहीं दिया जाना चाहिए। परन्तु नी का अपना धर्मविज्ञान हमें यह समझने में सहायता करता है कि उसने अपने जीवन के स्वरूप की व्याख्या कैसे की। पौलुस ने लिखा, "हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो" (2 कुरिन्थियों 4:10)। पौलुस के लिए मृत्यु और जीवन एक के बाद एक आने वाले विषय नहीं थे, मानो मसीही पहले मरना पूरा करता है और फिर जीना आरम्भ करता है। वे साथ-साथ काम करते हैं। नाज़ुक बरतन को लगातार उजागर किया जाता है ताकि धन परमेश्वर का दिखाई दे।

इसीलिए "वॉचमैन" (पहरुआ) की उपाधि उस गहरे अर्थ में उपयुक्त सिद्ध हुई जिसे नी एक युवा विश्वासी के रूप में नहीं जान सकता था। एक पहरुए को न केवल कलीसिया के बाहर के ख़तरों के प्रति, बल्कि मसीह के स्थान पर मसीही गतिविधि को रख देने के अधिक सूक्ष्म ख़तरे के प्रति भी जागते रहना चाहिए। नी की सबसे सशक्त विरासत कोई प्रणाली नहीं है। वह इस प्रश्न को पूछने का आह्वान है कि क्या स्वयं मसीह ही मसीही जीवन का उद्गम, सार और लक्ष्य है।

यह प्रश्न आज भी प्रासंगिक है। कलीसियाओं के पास तकनीक, धन, रणनीति, धर्मवैज्ञानिक परिशुद्धता और सांस्कृतिक प्रभाव हो सकता है, और फिर भी वे निर्भरता में दरिद्र हो सकती हैं। व्यक्तिगत मसीही आत्मिक शब्दावली में निपुण हो सकते हैं, जबकि वे

चिन्ता, महत्त्वाकांक्षा, कड़वाहट या स्वयं को साबित करने की आवश्यकता से प्रेरित रहते हैं। नी का जीवन पाठक को पौलुस के केन्द्र की ओर वापस ले जाता है: “क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है” (फिलिप्पियों 1:21)।

यह वाक्य “मसीह मुझे जीने में सहायता करता है” से कहीं अधिक क्रान्तिकारी है। यह कहता है कि मसीह स्वयं जीवन को परिभाषित करता है। नी की कहानी की बाकी हर बात को इसी दावे के अधीन पढ़ा जाना चाहिए।

वॉचमैन नी का मन-फिराव

सुसमाचार प्रचारक डोरा यू

1920 में सत्रह वर्षीय नी का सामना चीनी सुसमाचार प्रचारक डोरा यू के प्रचार से हुआ। उनकी सेवकाई स्वदेशी चीनी सुसमाचार-प्रचार की उस लहर का हिस्सा थी जो एक महत्त्वपूर्ण सत्य को प्रकट कर रही थी: चीन में सुसमाचार अब केवल विदेशी मिशनरियों की सम्पत्ति नहीं रह गया था। चीनी मसीही आत्मिक अधिकार और सांस्कृतिक निकटता के साथ चीनी श्रोताओं को मसीह का प्रचार कर रहे थे।

नी का मन-फिराव इसलिए नहीं हुआ कि मसीहियत उनके लिए अनजानी थी। संकट ठीक इसके उलट था। वे मसीहियत के विषय में इतना जानते थे कि समझ सकें कि सच्चा मन-फिराव उन पर एक दावा करेगा।

सुसमाचार केवल यह नहीं पूछता कि कोई व्यक्ति यीशु की सराहना करता है या नहीं। वह यह घोषणा करता है कि यीशु मसीह प्रभु है। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने घोषणा की, "अत: अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" (प्रेरितों के काम 2:36)।

नी के लिए प्रभु शब्द निर्णायक बनने वाला था। उद्धार को केवल क्षमा पाने तक नहीं घटाया जा सकता था, जबकि अपने भविष्य को स्वयं दिशा देने का अधिकार अपने पास रखा जाए। उनकी समझ में मन-फिराव अनुग्रह ग्रहण करना भी था और स्वामित्व सौंपना भी।

अनुग्रह के भीतर छिपी कीमत

नया नियम दो ऐसे सत्यों को एक साथ थामे रखता है जिन्हें मनुष्य अक्सर अलग कर देते हैं। उद्धार एक ऐसा दान है जिसे कमाया नहीं जा सकता, और जो मसीह उद्धार देता है वह पूरे व्यक्ति पर अपना दावा करता है।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है; और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2:8-9)।

फिर भी अगला पद आगे कहता है, "क्योंकि हम परमेश्वर की रचना हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया।" (इफिसियों 2:10)।

नी ने बाद में अपने प्रचार में बार-बार बल दिया कि परमेश्वर का अनुग्रह स्वायत्त जीवन के लिए ईश्वरीय सहायता भर नहीं है। अनुग्रह हमें मसीह के साथ एकता में ले आता है। विश्वासी किसी और का हो जाता है।

इसलिए नी के मन-फिराव के इर्द-गिर्द का संघर्ष मसीही सिद्धान्तों को मान लेने से कहीं बढ़कर था। उन्होंने देखा कि मसीह उनसे उनका भविष्य माँग रहा है। इस युवक की महत्त्वाकांक्षाएँ थीं। उनके पास बौद्धिक प्रतिभाएँ और उज्ज्वल सम्भावनाएँ थीं। मसीह के प्रति समर्पण का अर्थ था यह तय करने का अधिकार छोड़ देना कि वे प्रतिभाएँ उन्हें कहाँ ले जाएँगी।

यह विषय उनके पूरे जीवन में बार-बार लौटकर आने वाला था। नी की सोच में समर्पण कोई नाटकीय भावुक क्षण नहीं था जो साधारण निर्णयों से कटा हुआ हो। वह परमेश्वर की दया के आधार पर सम्पूर्ण व्यक्ति को परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करना था।

"इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" (रोमियों 12:1)।

एक नये जीवन का आरम्भ

बाद में नी ने अपने मन-फिराव का वर्णन एक सचमुच नये जीवन के आरम्भ के रूप में किया। यह भाषा पूरी तरह नये नियम की है। मसीहियत केवल यह नहीं कहती कि पापी को एक नई नैतिक संहिता मिल जाती है। वह कहती है कि जो व्यक्ति मसीह में है वह एक नई सृष्टि का हिस्सा है।

"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।" (2 कुरिन्थियों 5:17)।

इसी दृढ़ विश्वास ने नये जन्म के विषय में नी की समझ को आकार दिया। मसीही जीवन उस काम से आरम्भ होता है जो परमेश्वर करता है। आत्मिक जीवन शिक्षा, संस्कृति, अनुशासन या नकल से उत्पन्न नहीं होता। जीवन परमेश्वर देता है।

यीशु ने नीकुदेमुस से कहा, "यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" (यूहन्ना 3:3)। फिर उसने आगे कहा, "जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।" (यूहन्ना 3:6)।

नी आगे चलकर इसी भेद पर बहुत कुछ खड़ा करने वाले थे। शरीर परिष्कृत शरीर, धार्मिक शरीर, अनुशासित शरीर और प्रभावशाली शरीर तो बन सकता है, पर शरीर आत्मा को उत्पन्न नहीं कर सकता। परमेश्वर का उत्तर है नया जन्म।

इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि नी केवल बाहरी मसीहियत के प्रति इतने कठोर क्यों हो सकते थे। उन्हें डर था कि धार्मिक गतिविधि भीतरी वास्तविकता के अभाव को छिपा सकती है। कलीसिया में उपस्थिति, सिद्धान्तों का ज्ञान, मसीही पारिवारिक पृष्ठभूमि, और यहाँ तक कि सेवकाई की गतिविधियाँ भी परमेश्वर को जानने का विकल्प बन सकती हैं।

उनके मन-फिराव ने उनमें उधार की आत्मिकता के प्रति जीवन भर का सन्देह उत्पन्न कर दिया।

क्षतिपूर्ति और शुद्ध विवेक

आरम्भिक सुसमाचारवादी जागृति-आन्दोलनों की एक उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि वे इस बात पर ज़ोर देते थे कि मन-फिराव का प्रभाव ठोस सम्बन्धों पर पड़ना चाहिए। अंगीकार, क्षतिपूर्ति, क्षमा और ईमानदारी आत्मिक अनुभव पर लगी वैकल्पिक सजावटें नहीं थीं।

नी के आरम्भिक मसीही जीवन में गलतियों को सुधारने का पीड़ादायक काम भी सम्मिलित था। यह उस सिद्धान्त के अनुरूप था जिसे वे बाद में ज़ोर देकर सिखाने वाले थे: परमेश्वर के साथ सहभागिता और शुद्ध विवेक साथ-साथ चलते हैं।

पौलुस ने फेलिक्स से कहा, "इससे मैं आप भी यत्न करता हूँ, कि परमेश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।" (प्रेरितों के काम 24:16)।

आत्मा के द्वारा कोमल बनाया गया विवेक परमेश्वर के मार्गदर्शन का एक साधन बन सकता है। नी का यह अर्थ नहीं था कि व्यक्तिपरक भावनाएँ अचूक होती हैं। पवित्रशास्त्र ही

वस्तुनिष्ठ मानदण्ड बना रहता है। परन्तु उनका विश्वास था कि लगातार की गई अवज्ञा आत्मिक संवेदनशीलता को कुन्द कर देती है।

यह एक निर्णायक सन्तुलन है। कुछ मसीही आत्म-निरीक्षण में डूब जाते हैं, और लगातार अपने आपको जाँचते रहते हैं जब तक कि उनका आश्वासन ही लुप्त न हो जाए। दूसरे अनुग्रह की चर्चा इस ढंग से करते हैं कि पश्चाताप के लिए बहुत कम स्थान बचता है। नी की सबसे सशक्त शिक्षा इन दोनों भूलों का विरोध करती है। मसीह का लहू परमेश्वर तक हियाव के साथ पहुँचने का मार्ग देता है, और परमेश्वर की ज्योति विश्वासी को ईमानदारी से चलने के लिए बुलाती है।

"पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं और उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" (1 यूहन्ना 1:7)।

क्रम पर ध्यान दीजिए: ज्योति में चलना लहू का स्थान नहीं लेता। शुद्धिकरण का आधार लहू ही है। परन्तु अनुग्रह एक ऐसी प्रजा उत्पन्न करता है जो ज्योति में आने को तैयार रहती है।

गवाही के लिए बुलाहट

मन-फिराव शीघ्र ही गवाही में बदल गया। नी अन्य युवा विश्वासियों के साथ सुसमाचार-प्रचार के कामों और बाइबल-अध्ययन में जुड़ गए। यह ढर्रा आरम्भिक कलीसिया जैसा है, जहाँ मसीह को ग्रहण करने वाले स्वाभाविक रूप से उसके विषय में बोलते थे।

नी की समझ में सुसमाचार कोई निजी सम्पत्ति नहीं था। यदि मसीह सचमुच जीवन है, तो विश्वासी परमेश्वर के उस उद्देश्य का भाग बन जाता है जिसके अनुसार वह जीवन दूसरों तक पहुँचाया जाना है।

रोमियों 10 में पौलुस का प्रश्न विश्वास के मिशनरी तर्क को सामने रखता है: "फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्यों लें? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्यों विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्यों सुनें?" (रोमियों 10:14)।

नी आगे चलकर यात्राएँ करने, प्रचार करने, सेवकों को प्रशिक्षण देने, पत्रिकाएँ प्रकाशित करने, पुस्तकें लिखने और पूरे चीन में सभाएँ स्थापित करने में सहायता करने वाले थे। परन्तु

यह विशाल सेवकाई एक सरल आरम्भ से बढ़ी: मसीह के विषय में बोलता हुआ एक मन फिराया हुआ विद्यार्थी।

यहाँ एक सीख है जिसे स्वयं नी भी सराहते। परमेश्वर का काम अक्सर उससे पहले आरम्भ हो जाता है जब कोई व्यक्ति अपने आपको पूरी तरह तैयार महसूस करे। आत्मिक उपयोगिता के लिए सर्वज्ञता आवश्यक नहीं है। इसके लिए उस ज्योति के प्रति आज्ञाकारिता आवश्यक है जो पहले से दी जा चुकी है।

साथ ही, उत्साह को ढाले जाने की आवश्यकता थी। नी में ऊर्जा, बुद्धि और दृढ़ विश्वास था, परन्तु ये गुण आसानी से एक ऐसा प्रबल धार्मिक कार्यकर्ता उत्पन्न कर सकते थे जो परमेश्वर से आगे दौड़ता। इसलिए उनके जीवन का अगला चरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होने वाला था। उन्हें एक सन्देश से अधिक की आवश्यकता थी। उन्हें परमेश्वर के मार्ग सीखने की आवश्यकता थी।

निर्णय से शिष्यता तक

मन-फिराव के आधुनिक वृत्तान्त कभी-कभी कहानी को निर्णय के क्षण पर ही समाप्त कर देते हैं। नया नियम ऐसा नहीं करता। मन-फिराव शिष्यता का द्वार खोलता है।

यीशु ने केवल यह नहीं कहा, "धर्म-परिवर्तन कराओ।" उसने कहा, "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ ... और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ" (मत्ती 28:19-20)।

1920 के बाद नी का जीवन शिष्यता की एक लम्बी शिक्षा बन गया। कुछ पाठ पवित्रशास्त्र और पुस्तकों के द्वारा आए। कुछ बड़े-बुज़ुर्ग मसीहियों के द्वारा आए। बहुत से पाठ असफलता, ताड़ना, बीमारी, निराशा और प्रतीक्षा के द्वारा आए।

वरदान और गठन के बीच का यह भेद उनकी शिक्षा में महत्त्वपूर्ण बनने वाला था। कोई व्यक्ति परमेश्वर के द्वारा सचमुच बुलाया हुआ होकर भी कुछ ज़िम्मेदारियों के लिए अभी तैयार न हो, ऐसा हो सकता है। आत्मिक वरदान शीघ्र प्रकट हो सकते हैं; आत्मिक परिपक्वता सामान्यतः शीघ्र नहीं आती।

कलीसिया अक्सर अदृश्य चरित्र से पहले दृश्य वरदान को देखती है। नी ने सीखा कि परमेश्वर मानवीय महत्त्वाकांक्षा की उलटी दिशा में काम करता है। हम पूछते हैं कि किसी

वरदानी व्यक्ति को कितनी जल्दी काम में लगाया जा सकता है। परमेश्वर पूछता है कि उस व्यक्ति को कितनी गहराई तक गढ़ा जा सकता है।

बड़ा प्रश्न केवल यह नहीं है कि परमेश्वर हमें उपयोग कर सकता है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या वह अपने हितों के विषय में हम पर भरोसा कर सकता है, बिना इसके कि हम उसके काम को अपना बना लें।

आरम्भ में ही क्रूस

क्रूस नी के मसीही जीवन के आरम्भ में खड़ा था और उनकी परिपक्व सेवकाई के केन्द्र में खड़ा रहने वाला था।

आरम्भ में हर मसीही यह सीखता है कि मसीह हमारे पापों के लिए मरा। "पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया।" (1 कुरिन्थियों 15:3)। यह नींव है, और इससे कभी आगे निकल जाना नहीं है।

परन्तु नी को पौलुस के लेखों में एक और आयाम अधिकाधिक दिखाई देने लगा: विश्वासी मसीह की मृत्यु में सम्मिलित है।

"हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर नाश हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों 6:6)।

यह उस पुस्तक के केन्द्रीय पाठों में से एक बनने वाला था जिसे अंग्रेज़ी-भाषी पाठक सामान्य मसीही जीवन (The Normal Christian Life) के नाम से जानते हैं। नी ने रोमियों 6 को मुख्यत: स्वयं को क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा नहीं, बल्कि इस बात की घोषणा के रूप में देखा कि परमेश्वर ने मसीह में क्या किया है। विश्वासी का काम है पहले तथ्य को जानना, फिर उसी पर भरोसा करके मानना, और अपने आपको परमेश्वर को सौंपना (Know, Reckon, Present)।

"ऐसे ही तुम भी अपने आपको पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।" (रोमियों 6:11)।

यह भेद गहरा है। स्वयं को क्रूस पर चढ़ाने का प्रयास आसानी से आत्म-प्रयत्न का एक और रूप बन जाता है। पौलुस यह नहीं कहता कि विश्वासी को पर्याप्त अनुशासन के द्वारा मसीह के साथ एकता उत्पन्न करनी है। वह कहता है कि परमेश्वर ने मसीह में कार्य कर दिया है।

नी के मन-फिराव से जीवन भर की यह खोज आरम्भ हुई कि मसीहियत मानवीय प्रत्युत्तर से पहले ईश्वरीय उपलब्धि पर टिकी है।

नये स्वामित्व के अधीन एक युवक

इस पहले निर्णायक काल के अन्त तक नी के जीवन की दिशा बदल चुकी थी। वे अभी भी युवा थे, अभी भी सीख रहे थे, और उस परिपक्व शिक्षक से बहुत दूर थे जिसे बाद की पीढ़ियाँ स्मरण करती हैं। परन्तु स्वामित्व बदल चुका था।

कुरिन्थियों से कहे गए पौलुस के शब्द इस तर्क को व्यक्त करते हैं: "तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।" (1 कुरिन्थियों 6:19-20)।

"मैं अपना नहीं हूँ" कहना तब तक दमनकारी लग सकता है जब तक इसे "दाम देकर मोल लिये गए" के साथ न जोड़ा जाए। मसीही समर्पण छुड़ाने वाले प्रेम का प्रत्युत्तर है। जो विश्वासी पर दावा करता है, वही है जिसने विश्वासी के लिए अपने आपको दे दिया।

नी का बाद का धर्मविज्ञान कभी-कभी आज्ञाकारिता, अनुशासन और अधिकार के विषय में कठोर माँग वाली भाषा का प्रयोग करता था। इन विषयों की व्याख्या सदा इसी केन्द्र से की जानी चाहिए। बाइबल आधारित समर्पण किसी धार्मिक व्यवस्था के भय से नहीं, बल्कि मसीह में प्रकट परमेश्वर की दया से आरम्भ होता है।

अब इस नये विश्वासी को ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता थी जो उन्हें आत्मिक वास्तविकता और धार्मिक उत्साह के बीच भेद करना सिखा सकें। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण थीं फ़ूझोउ के निकट शान्त जीवन बिताने वाली एक अंग्रेज़ मिशनरी: मार्गरेट ई. बार्बर।

उनका प्रभाव उनकी सार्वजनिक सेवकाई के आकार की तुलना में कहीं बढ़कर होने वाला था। वे नी को ऐसे पाठ सिखाने वाली थीं जो दशकों तक उनकी पुस्तकों में गूँजते रहे: परमेश्वर की प्रतीक्षा करो, स्वाभाविक बल पर भरोसा मत करो, बाहरी सफलता से ऊपर भीतरी वास्तविकता को मूल्य दो, और क्रूस को फलवन्त होने के लिए परमेश्वर के मार्ग के रूप में स्वीकार करो।

जब माँ का पश्चाताप एक द्वार बना

नी के मन-फिराव के वृत्तान्त उनकी माँ, लिन हपिंग, की भूमिका पर बल देते हैं, जिनकी डोरा यू की सेवकाई के अधीन नवीकृत हुई मसीही प्रतिबद्धता ने पूरे घराने को प्रभावित किया। इस परम्परा का एक सुप्रसिद्ध अंश यह है कि उन्होंने अपने बेटे से उसके साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करने के लिए क्षमा माँगी। बाद का हर विवरण पूरी सटीकता से स्मरण रखा गया हो या नहीं, इसके पीछे का आत्मिक सिद्धान्त गहराई से बाइबल आधारित है।

माता-पिता अक्सर सोचते हैं कि क्षमा माँगने से अधिकार कमज़ोर हो जाता है। सामान्यतः इसका उलटा सच होता है। अंगीकार नैतिक वज़न देता है, क्योंकि वह दिखाता है कि अधिकार स्वयं भी सत्य के अधीन जीता है।

याकूब कहता है, "इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो" (याकूब 5:16)। यह आज्ञा समान दर्जे के लोगों तक सीमित नहीं है।

युवा नी के लिए, मसीहियत को एक वयस्क में दीनता उत्पन्न करते देखना सम्भवतः सुसमाचार को किसी और तर्क की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय बना गया होगा।

जो विश्वास "मैं गलत था" नहीं कह सकता, वह क्रूस पर चढ़ाए गए प्रभु की सिफ़ारिश करने में बहुत कम सामर्थी होता है।

समर्पण और भविष्य

नी के मन-फिराव में जीवन-वृत्ति को लेकर संघर्ष सम्मिलित था। वे समझते थे कि मसीह को ग्रहण करना उनके भविष्य को नई दिशा दे सकता है, मान-सम्मान और सफलता का वादा करने वाली महत्त्वाकांक्षाओं समेत।

यीशु की बुलाहट में बार-बार यही गुण दिखाई देता है। पतरस और अन्द्रियास जाल छोड़ते हैं। मत्ती महसूल की चौकी छोड़ता है। उस धनी सरदार से वह सम्पत्ति त्याग देने को कहा जाता है जो उसके हृदय पर प्रभुता करने वाली वस्तु को प्रकट करती है।

विवरण भिन्न होते हैं, परन्तु शिष्यता स्वामित्व को छूती है।

"इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" (लूका 14:33)।

यह पद हर वैधानिक सम्पत्ति को तुरन्त हस्तान्तरित कर देने की कोई सार्वभौमिक आज्ञा नहीं है। यह अपने आप का स्वामित्व मसीह को हस्तान्तरित कर देने की एक सार्वभौमिक आज्ञा है।

समर्पण पर नी की बाद की शिक्षा सीधे इसी आरम्भ से निकलती है। मसीहियत किसी अन्यथा स्वायत्त जीवन का एक विभाग भर नहीं रह सकती।

प्रेम, विवाह और समर्पण

चैरिटी चांग के साथ नी का सम्बन्ध समर्पण की उनकी आरम्भिक शिक्षा का हिस्सा बनने वाला था। जीवनी-वृत्तान्त बताते हैं कि उनके उनके विश्वास में सहभागी होने से पहले ही नी के मन में उनके प्रति स्नेह था। नी का विश्वास था कि किसी अविश्वासी से विवाह करना पवित्रशास्त्र के विरुद्ध होगा, और इसलिए उन्हें एक पीड़ादायक चुनाव का सामना करना पड़ा।

पौलुस लिखता है, "अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो" (2 कुरिन्थियों 6:14) — एक ऐसा पाठ जिसे बहुत से मसीही विवाह पर लागू करते हैं, क्योंकि विवाह एक गहरी एकता उत्पन्न करता है।

अन्ततः नी ने रोमांस को आज्ञाकारिता पर प्रभु बनाने के बजाय उस सम्बन्ध को समर्पित कर दिया। बाद में, जब चैरिटी मसीही बन गईं, तो मार्ग फिर से खुल गया और 1934 में उनका विवाह हुआ।

यह कहानी उस सिद्धान्त को स्पष्ट करती है जिसे नी बार-बार सिखाते थे: समर्पण का अर्थ बलिदान के द्वारा परमेश्वर से अपनी बात मनवाना नहीं है। हम कोई वस्तु इसलिए नहीं छोड़ते कि परमेश्वर उसे लौटाने के लिए बाध्य हो जाए। अब्राहम किसी ऐसे गुप्त अनुबन्ध के बिना छुरी उठाता है कि इसहाक ठीक अपेक्षित ढंग से ही लौटा दिया जाएगा।

सच्चा समर्पण परिणाम को छोड़ देता है।

नी के लिए वह सम्बन्ध अन्ततः लौट आया। बहुत से विश्वासयोग्य विश्वासी ऐसी वस्तुएँ समर्पित करते हैं जो लौटकर नहीं आतीं। इसलिए आज्ञाकारिता की भलाई इससे नहीं मापी जा सकती कि कहानी का अन्त रूमानी हुआ या नहीं।

मन-फिराव के प्रमाण के रूप में क्षतिपूर्ति

गलतियों को सुधारने का नी का आरम्भिक अभ्यास उस व्यापक जागृति-परम्परा को दर्शाता है जो पश्चाताप को ठोस मानती थी। जक्कई ने केवल अपने पाप का बोध महसूस नहीं किया; उसने धन के साथ और उन लोगों के साथ अपना सम्बन्ध बदल दिया जिनके साथ उसने धोखा किया था।

"हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।" (लूका 19:8)।

यीशु उत्तर देता है, "आज इस घर में उद्धार आया है" (लूका 19:9)।

क्षतिपूर्ति से क्षमा मोल नहीं ली जा सकती। जक्कई की उदारता फल है, कीमत नहीं। परन्तु जो अनुग्रह कभी आचरण को नहीं बदलता, वह सन्देह के योग्य है।

शुद्ध विवेक पर नी का बल इसी दृढ़ विश्वास से उपजा। जहाँ सम्भव हो, मसीहियों को उस हानि की मरम्मत करनी चाहिए जो पाप ने पहुँचाई है।

इसमें बुद्धि की आवश्यकता है। हर पुरानी गलती को नई हानि पहुँचाए बिना सीधे नहीं सुधारा जा सकता, और पास्टरीय परामर्श की आवश्यकता हो सकती है। परन्तु जब किसी दूसरे व्यक्ति ने उसकी कीमत चुकाई हो, तो पश्चाताप को केवल भीतरी बनकर नहीं रह जाना चाहिए।

स्वामित्व के हस्तान्तरण के रूप में मन-फिराव

नी के मन-फिराव को अक्सर उसकी निर्णायकता के लिए स्मरण किया जाता है, परन्तु उसका महत्त्व इस बात में है कि उनके विश्वास के अनुसार क्या बदल गया था। सुसमाचार पहले से चले आ रहे जीवन में जोड़ दी गई नई मान्यताओं का समूह भर नहीं था। वह स्वामित्व का हस्तान्तरण था।

पौलुस लिखता है, "क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिये मरा तो सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिये मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।" (2 कुरिन्थियों 5:14-15)। यह तर्क प्रतिस्थापन से समर्पण की ओर

बढ़ता है। मसीह हमारे लिए मरा; इसलिए जो जीवन शेष है उसे निजी सम्पत्ति नहीं माना जा सकता।

यह विषय नी के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो गया क्योंकि वे युवा और प्रतिभाशाली थे। मन-फिराव ने केवल स्पष्ट पापों का ही नहीं, बल्कि उचित महत्त्वाकांक्षाओं का भी सामना किया। वे कौन-सा व्यवसाय अपनाएँगे? वे किससे विवाह करेंगे? वे कैसी प्रतिष्ठा बनाएँगे? वे अपनी बुद्धि का उपयोग कैसे करेंगे? मसीही दावा उन निर्णयों तक पहुँचता था जिन्हें अनैतिक कहकर टाला नहीं जा सकता था।

ऐसे समर्पण को आवेगशीलता नहीं समझना चाहिए। नया नियम लापरवाही की महिमा नहीं करता। यीशु ने चेलों को कीमत का हिसाब लगाना सिखाया। पौलुस ने यात्राओं की योजना बनाई, अपनी नागरिकता का सूझ-बूझ से उपयोग किया, अपने हाथों से परिश्रम किया, और परिस्थितियों के अनुसार अपनी पद्धतियाँ बदलीं। समर्पण का अर्थ है कि विवेकशीलता स्वयं आज्ञाकारी बन जाती है। विश्वासी अब भी सोचता है, योजना बनाता है, चुनता है, बचत करता है, सीखता है और परखता है, परन्तु अपनी निजी पसन्द को अब सर्वोच्च न्यायालय नहीं मानता।

नी की आरम्भिक क्षतिपूर्ति इस समर्पण के ठोस स्वरूप को स्पष्ट करती है। पवित्रशास्त्र में पश्चाताप के सामाजिक परिणाम होते हैं। जक्कई ने बेईमानी के विषय में केवल अलग ढंग से महसूस नहीं किया; उसने अपने आचरण से हुई हानि का उपाय किया। जब पौलुस ने इफिसुस में प्रचार किया, तो जादू-टोना करने वाले जिन लोगों का मन फिरा था, उन्होंने अपने पुराने जीवन से जुड़ी बहुमूल्य पुस्तकों को सबके सामने त्याग दिया। अनुग्रह भौतिक वास्तविकता में प्रवेश कर गया।

फिर भी क्षतिपूर्ति को बुद्धि और प्रेम के अधीन ही रहना चाहिए। किसी व्यक्ति को अपना अपराध-बोध इस प्रकार नहीं उतारना चाहिए कि दूसरों को अनावश्यक चोट पहुँचे या किसी और को खतरे में डाल दिया जाए। उद्देश्य आत्म-दण्ड नहीं है। उद्देश्य सत्य में चलना है। शुद्ध विवेक नाटकीय कामों से मोल नहीं लिया जाता; वह तब बढ़ता है जब विश्वासी परमेश्वर की दी हुई ज्योति के प्रति ईमानदारी से प्रत्युत्तर देता है।

समर्पण पर नी के बल ने एक अधूरे सुसमाचार से भी रक्षा की, जिसमें उद्धार केवल न्याय से बच निकलने का मार्ग बनकर रह जाता है। नया नियम निश्चय ही क्षमा और अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा करता है, परन्तु वह एक राज्य की घोषणा भी करता है। यीशु उद्धारकर्ता और प्रभु

है। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस की घोषणा इन दोनों उपाधियों को जोड़ती है: परमेश्वर ने यीशु को "प्रभु भी ठहराया और मसीह भी" (प्रेरितों के काम 2:36)।

आधुनिक पाठकों के लिए प्रभुता की भाषा को दो दिशाओं में विकृत किया जा सकता है। एक भूल आज्ञाकारिता को उद्धार कमाने के लिए चुकाई गई कीमत बना देती है। यह अनुग्रह के विरुद्ध है। दूसरी भूल उद्धार तो ग्रहण कर लेती है, पर मसीह की आज्ञाओं को वैकल्पिक सलाह मानती है। यह शिष्यता के विरुद्ध है। नी के मन-फिराव की कहानी तब सबसे सशक्त होती है जब वह उन बातों को एक साथ थामे रखती है जिन्हें पवित्रशास्त्र एक साथ थामे रखता है: उद्धार परमेश्वर का मुफ़्त दान है, और अनुग्रह उद्धार पाए हुए व्यक्ति को मसीह के प्रेमपूर्ण शासन के अधीन ले आता है।

इसका परिणाम दासों जैसा भय नहीं, बल्कि स्वतन्त्रता का एक नया केन्द्र है। जो व्यक्ति स्वयं का दास है, उसे लगातार अपना बचाव करना, अपने आपको सन्तुष्ट करना, अपनी तुलना करना और अपने आपको सुरक्षित रखना पड़ता है। मसीह के प्रति समर्पण उस अत्याचार को ढीला करने लगता है। यीशु कहता है, "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।" (मत्ती 16:25)। यह विरोधाभास मसीही मन-फिराव का केन्द्र है। जो मसीह को सौंप दिया जाता है वह अन्ततः खोता नहीं; वह उसके साथ एक नये सम्बन्ध में वापस प्राप्त होता है।

नी अपना शेष जीवन उस पहले पाठ को और गहरे स्तरों पर सीखने में बिताने वाले थे। मन-फिराव ने स्वयं के साथ हर लड़ाई का निपटारा नहीं किया। उसने लड़ाई की दिशा स्थापित कर दी। जिसने उन्हें बचाया था, उसे उनकी अगुवाई करने का अधिकार था।

विश्वास से चलना सीखना

मार्गरेट बार्बर और आत्मा की पाठशाला

मार्गरेट ई. बार्बर नी के आरम्भिक मसीही जीवन को गढ़ने वाले सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभावों में से एक बन गईं। वे किसी बड़े मंच के सुसमाचार प्रचारक की तरह प्रसिद्ध नहीं थीं। उनका महत्त्व आत्मिक गठन, व्यक्तिगत परामर्श, प्रार्थना और उस साहित्य में था जो वे युवा चीनी विश्वासियों के हाथों में सौंपती थीं।

नी और दूसरे उत्साही सेवक अपनी गतिविधियों और सफलताओं का समाचार लेकर उनके पास आते थे। बार्बर के उत्तर भीतर तक टटोलने वाले हो सकते थे। उन्हें केवल इस बात की चिन्ता नहीं थी कि उन्होंने क्या कर दिखाया, वरन् इस बात की भी कि उनकी गतिविधि का आत्मिक स्रोत क्या है। क्या वह काम परमेश्वर ने आरम्भ किया था? क्या उन्होंने उसकी बाट जोही थी? क्या वे दिखाई देने वाली सफलता खोज रहे थे, या आज्ञाकारिता?

यह भेद नी के विचारों में गहराई तक उतर गया। मसीही काम परमेश्वर के लिये किया जा सकता है, और फिर भी परमेश्वर की ओर से न किया गया हो।

यीशु ने कहा, "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन-जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है" (यूहन्ना 5:19)।

यदि सिद्ध पुत्र भी पिता पर निर्भर रहकर जीता था, तो मसीही सेवकों को स्वतन्त्र कार्य से और कितना अधिक इनकार करना चाहिए? आगे चलकर नी यह सिखाने लगे कि सेवकाई में सबसे बड़ा खतरा केवल बुरे काम करना नहीं है। सबसे बड़ा खतरा है अच्छे काम गलत स्रोत से करना।

स्वाभाविक बल और आत्मिक काम

नी के पास स्पष्ट स्वाभाविक बल था: बुद्धि, पहल करने की क्षमता, वाक्-कौशल, दृढ़ निश्चय और अध्ययन की भूख। इनमें से कोई भी वरदान पापपूर्ण नहीं था। फिर भी इनमें से हर एक पवित्र आत्मा पर निर्भरता का विकल्प बन सकता था।

यही उनकी सबसे विशिष्ट अन्तर्दृष्टियों में से एक बन गई। परमेश्वर केवल यह नहीं पूछता कि लक्ष्य सही है या नहीं। उसे स्रोत की चिन्ता है।

पौलुस ने अपनी सेवकाई का वर्णन जान-बूझकर विरोधाभासी शब्दों में किया: "जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ" (2 कुरिन्थियों 12:10)।

यह वाक्य नेतृत्व के बारे में साधारण धारणाओं को उलट देता है। मानवीय संस्थाएँ प्रायः दिखाई देने वाले बल को देखकर लोगों को चुनती हैं। परमेश्वर बार-बार ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है जिनमें उसके सेवक उस बल की सीमाएँ पहचान लेते हैं।

बाद में नी बाहरी मनुष्य का वर्णन उन स्वाभाविक क्षमताओं के समूह के रूप में करेंगे जिनके द्वारा स्वयं अपने आप को प्रकट करता है। लक्ष्य व्यक्तित्व का विनाश नहीं है। लक्ष्य यह है कि बाहरी मनुष्य आत्मा के मार्ग में बाधा बनना छोड़ दे।

यह चित्र किसी ऐसे विश्वासी का नहीं है जो निष्क्रिय या फीका हो जाता है। मन-फिराव के बाद भी पौलुस पौलुस ही रहा: बौद्धिक रूप से प्रखर, भावनात्मक रूप से तीव्र, साहसी, दूरदर्शी और स्पष्टवक्ता। परन्तु वे क्षमताएँ अधिकाधिक स्वामी के बजाय सेवक बनती गईं।

कलीसिया का पुस्तकालय

बार्बर और दूसरे सम्पर्कों ने नी का परिचय मसीही साहित्य की एक विस्तृत धारा से कराया। उन्होंने ब्रदरन परम्परा, पवित्रता आन्दोलन और केज़िक आन्दोलन, भक्तिपूर्ण परम्पराओं, मिशनरी जीवनियों, भविष्यद्वाणी के शिक्षकों और व्याख्याकारों के लेखकों को पढ़ा। एंड्रयू मरे, जेसी पेन-लुइस, डी. एम. पैंटन, रॉबर्ट गोवेट, जे. एन. डार्बी, टी. ऑस्टिन-स्पार्क्स, जॉर्ज मूलर, हडसन टेलर और अन्य लोगों ने ऐसी अवधारणाएँ दीं जिन्हें नी ने आत्मसात किया, अपने अनुसार ढाला, और कभी-कभी विशिष्ट ढंग से नए रूप में जोड़ा।

नी को पढ़ते समय यह बात महत्त्व रखती है। वे कोई धर्मवैज्ञानिक टापू नहीं थे। उनके लेख एक अन्तरराष्ट्रीय प्रोटेस्टेंट संसार से निकले, जिसे गणतन्त्र-काल के चीन के परिवेश में

ढाला गया था।

वे बहुत लगन से पढ़ते थे, परन्तु यह नहीं मानते थे कि केवल पढ़ने से प्रकाशन मिल जाता है। आत्मा को वचन पर प्रकाश डालना ही होगा।

पौलुस ने विश्वासियों के लिये प्रार्थना की कि परमेश्वर उन्हें "बुद्धि की आत्मा और अपने ज्ञान का प्रकाश दे। और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों" (इफिसियों 1:17-18)।

यदि प्रकाशन पर नी के बल को पवित्रशास्त्र से अलग करके देखा जाए, तो उसका गलत अर्थ लगाया जा सकता है। अपने सर्वोत्तम रूप में वे किसी ऐसे निजी प्रकाशन का समर्थन नहीं कर रहे थे जो बाइबल से ऊपर हो। वे इस बात पर बल दे रहे थे कि बाइबल का सत्य केवल जानकारी न रहकर आत्मिक दृष्टि बन जाना चाहिए।

कोई व्यक्ति धर्मी ठहराए जाने की व्याख्या कर सकता है और फिर भी दोषी ठहराए जाने के बोझ तले जी सकता है। वह मसीह के साथ एकता की परिभाषा दे सकता है और फिर भी ऐसे काम कर सकता है मानो सब कुछ अपने ही प्रयत्न पर निर्भर हो। वह मसीह की देह के विषय में सिखा सकता है और फिर भी अपने ही चारों ओर एक सेवकाई खड़ी कर सकता है। नी ने विश्वासियों को उस अन्तर की ओर बुलाया जो किसी सिद्धान्त को जानने और किसी वास्तविकता को देखने के बीच है।

विश्वास और परमेश्वर का चरित्र

विश्वास का जीवन एक और प्रमुख विषय बन गया। नी पर जॉर्ज मूलर की परमेश्वर पर निर्भरता जैसी गवाहियों का और व्यापक "विश्वास मिशन" परम्परा का प्रभाव पड़ा। उन्होंने व्यावहारिक आवश्यकताओं के लिये परमेश्वर की ओर देखना सीखा, बजाय इसके कि आर्थिक सुरक्षा को सेवकाई का नियन्त्रक सिद्धान्त बना दें।

फिर भी विश्वास का उपहास-चित्र बना देना आसान है। बाइबल का विश्वास प्रमाण से कटा हुआ आशावाद नहीं है। वह परमेश्वर के चरित्र और प्रतिज्ञा पर भरोसा है।

इब्रानियों में लिखा है, "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रानियों 11:1)।

फिर वह अध्याय उन पुरुषों और स्त्रियों को प्रस्तुत करता है जिन्होंने इसलिए काम किया क्योंकि वे परमेश्वर को भरोसे के योग्य मानते थे। विश्वास ने उनका आचरण बदल दिया।

नी की परिपक्व शिक्षा बार-बार भावनात्मक तीव्रता के द्वारा विश्वास उत्पन्न करने के प्रयास का विरोध करती रही। विश्वास अपने आप से दृष्टि हटा लेता है। यदि कोई व्यक्ति लगातार पूछता रहे, "क्या मुझ में पर्याप्त विश्वास है?" तो सम्भव है कि वह परमेश्वर को नहीं, बल्कि विश्वास को ही देख रहा हो।

मसीही की सुरक्षा विश्वास करने की मनोवैज्ञानिक शक्ति पर नहीं, वरन् उस पर टिकी है जिस पर विश्वास किया गया है—उसकी विश्वासयोग्यता पर।

बाट जोहना: विश्वास का एक कार्य

किसी ऊर्जावान युवा सेवक को बाट जोहना समय की बर्बादी लग सकता है। बार्बर ने नी को यह सीखने में सहायता की कि परमेश्वर की बाट जोहना अपने आप में आत्मिक काम है।

यशायाह लिखता है, "परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे" (यशायाह 40:31)।

बाट जोहने का अर्थ आलस्य नहीं है। इसका अर्थ है मार्गदर्शन के स्थान पर गतिविधि को रख देने से इनकार करना। कोई व्यक्ति इसलिए भी अत्यन्त व्यस्त रह सकता है क्योंकि वह परमेश्वर पर भरोसा करने से डरता है।

आगे चलकर नी बोझ और मात्र विचार के बीच भेद करेंगे। कोई विचार अच्छा हो सकता है, परन्तु आत्मिक काम के लिये परमेश्वर की पहल आवश्यक है। यह सिद्धान्त महत्त्वाकांक्षी मसीही अगुवों के लिये विशेष रूप से प्रासंगिक है। दर्शन, रणनीति और क्रियान्वयन मूल्यवान हैं, परन्तु वे अपने आप में प्रमाणित नहीं होते। कोई कलीसिया किसी योजना को शानदार ढंग से पूरा कर सकती है और फिर भी उस बात से चूक सकती है जिस पर परमेश्वर बल दे रहा है।

बाट जोहने का अनुशासन असहज प्रश्न पूछता है। यदि कोई इस परियोजना की प्रशंसा न करे, तब भी क्या हम इसमें लगे रहेंगे? क्या हम परमेश्वर की ओर से मिले बोझ का उत्तर दे रहे हैं, या किसी दूसरी सेवकाई से तुलना का? क्या हम तैयार हैं कि परमेश्वर समय-सारिणी बदल दे? यदि आज्ञाकारिता माँगे, तो क्या हम किसी योजना में निवेश कर लेने के बाद भी उसे छोड़ सकते हैं?

बीमारी और मानवीय सीमा

नी की आरम्भिक सेवकाई गम्भीर बीमारी से घिरी रही, जिसमें तपेदिक भी सम्मिलित था। शारीरिक निर्बलता उस पाठशाला का हिस्सा बन गई जिसमें उनका धर्मविज्ञान गढ़ा गया।

यह संकेत देना गैर-ज़िम्मेदाराना होगा कि बीमारी सदा परमेश्वर की ओर से सीधा पाठ होती है, जिसका अर्थ विश्वास के साथ खोला जा सकता है। पवित्रशास्त्र दुःख की सरलीकृत व्याख्याओं की अनुमति नहीं देता। फिर भी दुःख नियन्त्रण के भ्रम को उजागर कर देता है।

पौलुस ने अपने भीतर "मृत्यु की सजा" लिये फिरने की बात कही, "कि हम अपना भरोसा न रखें, वरन् परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है" (2 कुरिन्थियों 1:9)।

यह वाक्यांश नी की आत्मिकता के बड़े भाग का सारांश बन सकता है: अपने आप पर नहीं, वरन् पुनरुत्थान के परमेश्वर पर भरोसा रखना।

पुनरुत्थान का जीवन ठीक वहीं अर्थपूर्ण होता है जहाँ स्वाभाविक साधन चुक जाते हैं। यदि मसीहियत केवल मानवीय क्षमता को बढ़ाने का नाम है, तो पुनरुत्थान हाशिये पर चला जाता है। परन्तु यदि परमेश्वर मृत्यु में से जीवन लाता है, तो निर्बलता वह स्थान बन जाती है जहाँ परमेश्वर की पर्याप्तता को जाना जा सकता है।

इसलिए पुनरुत्थान पर नी की बाद की शिक्षा में जीवन का वास्तविक भार था। वह केवल ईस्टर पर स्वीकार करने योग्य सिद्धान्त नहीं था। वह उस ढाँचे का वर्णन करता था जिसके अनुसार परमेश्वर काम करता है: जो स्वाभाविक जीवन से उत्पन्न होता है, वह क्रूस से होकर गुज़रता है; जिसे परमेश्वर जिलाता है, वह उसके अनन्त उद्देश्य की सेवा कर सकता है।

समझ से पहले आज्ञाकारिता

बौद्धिक रूप से प्रतिभाशाली मसीही के सामने एक खतरा यह होता है कि वह समझ को आज्ञाकारिता की पूर्व-शर्त बना ले। पवित्रशास्त्र प्रायः इस क्रम को उलट देता है।

यीशु ने कहा, "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है" (यूहन्ना 7:17)।

इच्छुक हृदय को पूर्ण ज्ञान से पहले रखा गया है। नी ने सीखा कि आत्मिक समझ बौद्धिक होने के साथ-साथ नैतिक भी होती है। आज्ञा न मानना देखने की क्षमता को धुँधला कर

सकता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि मसीहियों को मानवीय अगुवों की आज्ञा आँख मूँदकर माननी चाहिए। अधिकार पर नी की बाद की शिक्षाओं को बिरीया के लोगों के उस सिद्धान्त के साथ मिलाकर थामे रहना होगा, जिसमें शिक्षा को पवित्रशास्त्र से परखा जाता है, और प्रेरितों की इस आज्ञा के साथ भी, "सब बातों को परखो जो अच्छी है उसे पकड़े रहो" (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)।

बाइबल की आज्ञाकारिता सबसे पहले परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता है। मानवीय अधिकार सदा परमेश्वर से प्राप्त, सीमित और परमेश्वर के वचन के प्रति उत्तरदायी होता है।

ठीक से समझा जाए तो नी का बल भीतर तक टटोलने वाला है: हमें पहले से मिली ज्योति को ठुकराते हुए अनन्त नई ज्योति की माँग नहीं करनी चाहिए।

क्रूस और जीवन का मुक्त होना

गेहूँ के दाने का चित्र आत्मिक फलवन्तता का वर्णन करने का एक सशक्त माध्यम बन गया। दाने के भीतर जीवन तो होता है, परन्तु बाहरी छिलके का टूटना आवश्यक है।

यीशु ने यह चित्र सबसे पहले अपनी निकट आती मृत्यु पर लागू किया: "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

नी ने इस सिद्धान्त को मसीही सेवा तक विस्तृत किया। भीतर वास करने वाला मसीह का जीवन एक खज़ाना है, परन्तु आत्म-रक्षा, घमण्ड, स्वाभाविक चतुराई, भावनात्मक आवेग और हठीली इच्छा उसकी अभिव्यक्ति में बाधा डाल सकते हैं।

यदि अगुवे व्यक्तित्वों को कुचलने या अधीनता की माँग करने के लिये "टूटेपन" का उपयोग करें, तो यह शिक्षा अस्वस्थ बन सकती है। यह नये नियम का ढाँचा नहीं है। मसीह आत्मिक शोषण की अनुमति नहीं देता। परमेश्वर जो तोड़ने का काम करता है, वह सत्य, अनुशासन, परिस्थितियों और क्रूस के द्वारा किया गया उसका अपना काम है, जो प्रेम करने और सेवा करने की स्वतन्त्रता उत्पन्न करता है।

सच्चा टूटापन व्यक्ति को यीशु के और अधिक समान बनाता है: दीन, परन्तु दास-वृत्ति वाला नहीं; साहसी, परन्तु दबंग नहीं; कोमल, परन्तु अस्थिर नहीं; परमेश्वर का आज्ञाकारी, परन्तु मनुष्यों के हाथ की कठपुतली नहीं।

उधार के सत्य से व्यक्तिगत वास्तविकता तक

नी के आरम्भिक वर्ष पवित्रशास्त्र और मसीही लेखकों से प्राप्त खोजों से भरे थे, परन्तु उनकी सबसे गहरी चिन्ता यह बन गई कि सत्य परमेश्वर के सेवक के भीतर व्यक्तिगत रूप से गढ़ा जाना चाहिए।

पौलुस कह सकता था, "मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिये फिरता हूँ" (गलातियों 6:17)। उसका सन्देश दुःख से होकर गुज़रा था।

नी अधिकाधिक यह मानने लगे कि सेवकाई केवल सही जानकारी पहुँचाना नहीं है। सेवक स्वयं सन्देश का हिस्सा बन जाता है। परमेश्वर केवल उसका उपयोग नहीं करता जो कोई व्यक्ति कहता है, बल्कि उसका भी जो परमेश्वर ने उस व्यक्ति में किया है।

इसी कारण आत्मिक गठन का स्थान सामग्री-निर्माण नहीं ले सकता। कोई प्रचारक जितनी जल्दी चरित्र गढ़ा जा सकता है, उससे कहीं जल्दी जानकारी उतार सकता है। कोई शिक्षक दीनता सीखने से कहीं पहले धर्मवैज्ञानिक शब्दावली में निपुण हो सकता है। कोई अगुवा क्रूस उठाना सीखने से कहीं पहले श्रोताओं की भीड़ जुटा सकता है।

नी का जीवन मंच को परिपक्वता समझ लेने के विरुद्ध चेतावनी देता है।

छिपे हुए वर्ष महत्त्व रखते हैं। वे सुधार महत्त्व रखते हैं जिन पर कोई ताली नहीं बजाता। वे प्रार्थनाएँ महत्त्व रखती हैं जिन्हें कोई नहीं सुनता। आज्ञा मानने के वे निर्णय महत्त्व रखते हैं जिनके बाद कोई दिखाई देने वाला प्रतिफल नहीं आता। परमेश्वर अपने सेवकों को ऐसे स्थानों में गढ़ता है जो मनुष्यों की आँखों में रणनीतिक नहीं दिखते।

एक विशिष्ट सेवकाई की ओर

बीस वर्ष की आयु के आरम्भिक वर्षों तक आते-आते नी के दृढ़ विश्वास एक बिन्दु पर मिलने लगे थे। मसीह जीवन है। क्रूस केवल पापों से ही नहीं, वरन् स्वतन्त्र स्वयं से भी निपटता है। पवित्र आत्मा को ही मसीही काम का स्रोत होना चाहिए। पवित्रशास्त्र को आत्मिक रूप से ग्रहण किया जाना और व्यावहारिक रूप से माना जाना चाहिए। विश्वास परमेश्वर की पर्याप्तता पर टिका रहता है। कलीसिया आपस में होड़ करने वाले मानवीय दलों की नहीं, वरन् मसीह की है।

ये दृढ़ विश्वास शीघ्र ही व्यक्तिगत गठन से आगे बढ़कर सार्वजनिक सेवकाई में उतरने वाले थे।

नी ने प्रकाशन करना, प्रचार करना, विश्वासियों को एकत्र करना और स्थानीय कलीसियाओं के लिये एक दर्शन को स्पष्ट शब्दों में रखना आरम्भ किया। जो आन्दोलन उभरा, वह भक्ति को प्रेरित करने वाला, विरोध भड़काने वाला, और एकता तथा पृथकता के विषय में कठिन प्रश्न उठाने वाला था।

फिर भी उस आन्दोलन की जाँच करने से पहले कहानी के क्रम पर ध्यान देना उचित है। काम के बड़ा होने से पहले परमेश्वर ने काम करने वाले से निपटा।

यह क्रम बाइबल के अनुसार है। यीशु ने बारहों को नियुक्त किया, "कि वे उसके साथ-साथ रहें, और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें" (मरकुस 3:14)।

पहले उसके साथ। फिर भेजे गए।

नी सदा अपने आदर्शों को सिद्ध रूप से जी नहीं पाए, और न ही वह आन्दोलन जो उनके चारों ओर बढ़ा। परन्तु यह सिद्धान्त उनकी गवाही के केन्द्र में बना रहा: परमेश्वर की मुख्य रुचि केवल इसमें नहीं है कि उसके सेवक उसके लिये क्या कुछ कर सकते हैं। वह ऐसे लोग चाहता है जो उसे जानते हों, उसके जीवन से जीते हों, और क्रूस को वह सब हटाने दें जो मसीह को प्रकट होने से रोकता है।

अब यह दृढ़ विश्वास कलीसियाई जीवन की उलझी हुई वास्तविकताओं में परखा जाने वाला था।

मार्गरेट बार्बर की छिपी हुई महानता

मार्गरेट ई. बार्बर उन शान्त व्यक्तियों में से एक हैं जिनके बिना वॉचमैन नी की कहानी समझी नहीं जा सकती। उन्होंने उस प्रकार की संस्था नहीं बनाई जो इतिहास में बड़ी छाप छोड़ना निश्चित कर देती है। उनका प्रभाव लोगों के द्वारा आगे बढ़ा।

यह अपने आप में बाइबल के एक ढाँचे को दर्शाता है। बरनबास को कुछ हद तक इसलिए स्मरण किया जाता है क्योंकि उसने दूसरों को पहचाना और उन्हें दृढ़ किया। लोइस और यूनीके ने तीमुथियुस को गढ़ा। प्रिस्किल्ला और अक्विला ने अपुल्लोस की सहायता की। कलीसिया की सबसे दूरगामी सेवकाई का बड़ा भाग प्रसिद्ध होने के बजाय उत्प्रेरक होता है।

बार्बर के पास पुस्तकें थीं, दृढ़ विश्वास थे, अनुभव था, और युवा उत्साह को बुझाए बिना उसका सामना करने की क्षमता थी। नी ने बाद में उन्हें असाधारण आदर के साथ स्मरण किया।

उनका जीवन हर मसीही अगुवे के सामने एक प्रश्न खड़ा करता है: क्या हम अपनी दिखाई देने वाली विरासत बना रहे हैं, या ऐसे लोगों को गढ़ रहे हैं जो आगे चलकर इस काम को हमसे भी आगे ले जा सकें?

पौलुस तीमुथियुस से कहता है कि वह सत्य "विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों" (2 तीमुथियुस 2:2)।

छिपे हुए निवेश का गुणन मंच से अधिक समय तक टिक सकता है।

सुधारा जाना सीखना

नी बार-बार धर्मवैज्ञानिक और सेवकाई सम्बन्धी प्रश्न बार्बर के पास ले जाते थे। उनके सुधार कठोर हो सकते थे। महत्त्वपूर्ण पाठ यह नहीं था कि वे सदा सही थीं, वरन् यह कि नी ने अपने आत्मविश्वास को जाँच के अधीन करना सीखा।

प्रतिभाशाली युवा अगुवों को विशेष रूप से ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो वरदान से प्रभावित नहीं होते।

"जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वासयोग्य हैं" (नीतिवचन 27:6)।

आधुनिक कलीसियाई संस्कृति प्रायः सफल अगुवों को ऐसे लोगों से घेर देती है जो उनकी स्वीकृति पर निर्भर होते हैं। जैसे-जैसे प्रभाव बढ़ता है, खरी असहमति दुर्लभ होती जाती है। नी के आरम्भिक गठन में इसका उलटा था: एक ऐसी मार्गदर्शक जो ना कह सकती थी।

बाद में उनका प्रबल अधिकार यह प्रश्न उठाता है कि क्या उन्होंने अपने चारों ओर सुधार की वैसी ही व्यवस्थाएँ सदा बनाए रखीं। यह प्रश्न कटुता से नहीं पूछा जाना चाहिए। यह नेतृत्व का एक सार्वभौमिक खतरा है।

जो शिक्षक सौंपे गए अधिकार में विश्वास करता है, उसे भी अपने ऊपर और अपने चारों ओर अधिकार और उत्तरदायित्व की आवश्यकता होती है।

पुस्तकें: मार्गदर्शक के रूप में

बार्बर के पुस्तकालय ने नी का परिचय ऐसे मसीही संसारों से कराया जहाँ वे स्वयं कभी जा नहीं सकते थे। एंड्रयू मरे ने समर्पण और बने रहना सिखाया। ब्रदरन लेखकों ने कलीसिया-विज्ञान और बाइबल की व्याख्या दी। पवित्रता आन्दोलन और केज़िक की आवाज़ों ने विजय और विश्वास पर बल दिया। जेसी पेन-लुइस ने क्रूस और आत्मिक संघर्ष के विषय दिए। सहस्राब्दी-पूर्व मत के शिक्षकों ने मसीह के लौटने की प्रतीक्षा को आकार दिया।

नी इन धाराओं को शीघ्रता से आत्मसात करने और उन्हें एक नये संश्लेषण में व्यक्त करने में सक्षम थे।

यह एक कारण है कि मसीहियों को व्यापक रूप से पढ़ना चाहिए। मसीह की देह समय के आर-पार फैली हुई है। कोई विश्वासी आंशिक रूप से उन लेखकों के द्वारा भी चेला बनाया जा सकता है जो अब जीवित नहीं हैं।

परन्तु पुस्तकों के लिये विवेक आवश्यक है। हर परम्परा के अपने अन्धे स्थान होते हैं। बहुत से लेखकों को पढ़ना या तो बुद्धि को विस्तृत कर सकता है, या अनसुलझे विरोधाभासों वाला एक पैबन्द लगा धर्मविज्ञान रच सकता है।

नी कभी-कभी धीमे, व्यवस्थित तर्क के बजाय प्रबल आत्मिक अन्तर्ज्ञान के द्वारा विचारों में सामंजस्य बिठाते थे। इससे उनकी शिक्षा में ताज़गी आई, परन्तु कुछ तनाव भी रह गए।

पाठ यह है कि व्यापक रूप से पढ़ें और लगातार पवित्रशास्त्र की ओर लौटते रहें।

तपेदिक और मृत्यु की कगार

तपेदिक ने नी को शारीरिक बल की सीमाओं के निकट पहुँचा दिया। बीमारी ने समय का पैमाना बदल दिया। एक युवक, जो दशकों की सेवकाई की आशा रखता था, इस सम्भावना के सामने खड़ा था कि उसका जीवन छोटा हो सकता है।

भजन संहिता 90 में यह प्रार्थना है, "हमको अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएँ" (भजन संहिता 90:12)।

नश्वरता बुलाहट को केन्द्रित कर देती है।

इस अवधि में नी ने *आत्मिक मनुष्य* (The Spiritual Man) पर गहन परिश्रम किया, आंशिक रूप से इसलिए कि उन्हें डर था कि शायद वे इस सामग्री को बाद में सिखाने के लिये

जीवित न रहें। पुस्तक की सघनता उस तात्कालिकता को दर्शाती है।

बीमारी ने स्वाभाविक ऊर्जा और पुनरुत्थान के जीवन के बीच उनके भेद को भी दृढ़ किया। जब शारीरिक साधन समाप्त हो जाते हैं, तब निर्भरता केवल एक भक्तिपूर्ण नारा नहीं रह जाती।

मसीहियों को सावधान रहना चाहिए कि वे बीमारी को आत्मिक रूप से श्रेष्ठ मानकर उसका महिमामण्डन न करें। स्वास्थ्य एक वरदान है। चंगाई माँगी जा सकती है। औषधि का उपयोग किया जा सकता है। परन्तु बीमारी इस भ्रम को उजागर कर सकती है कि जीवन हमारा अपना है।

याकूब कहता है कि तुम "यह नहीं जानते कि कल क्या होगा। सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो धुंध के समान हो" (याकूब 4:14)।

बाद में नी का कारावास यही पाठ और भी कठोरता से सिखाने वाला था।

सार्वजनिक उपयोगिता से पहले आत्मिक गठन

नी के जीवन में मार्गरेट बार्बर के महत्त्व को उनके सार्वजनिक मंच के आकार से नहीं मापा जा सकता। उनका प्रभाव उस सिद्धान्त को प्रदर्शित करता है जिसे नी ने बाद में बार-बार सिखाया: दिखाई देने वाली सेवकाई के फैलने से पहले परमेश्वर प्रायः अपना सबसे दूरगामी काम छिपे हुए सम्बन्धों में करता है।

आधुनिक कलीसिया इस क्रम को उलटने की परीक्षा में पड़ सकती है। वरदान अवसर उत्पन्न करता है; अवसर मंच उत्पन्न करता है; मंच परिपक्व दिखने का दबाव उत्पन्न करता है। परिणाम यह हो सकता है कि सार्वजनिक सेवकाई भीतरी व्यक्ति से अधिक तेज़ी से बढ़ती है। सुधार के अधीन बिताए नी के वर्षों ने इस ढाँचे को चुनौती दी। बार्बर की रुचि केवल इसमें नहीं थी कि युवा सेवक के विचार सही हैं या नहीं, वरन् इसमें थी कि क्या उसकी प्रतिक्रियाओं पर मसीह का शासन है।

याकूब लिखता है, "धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे" (याकूब 1:4)। धीरज निष्क्रियता नहीं है। यह परमेश्वर के गढ़ने वाले काम के अधीन बने रहने की वह क्षमता है जो समय से पहले आत्म-बचाव की ओर भाग नहीं जाती।

नी ने सीखा कि गलत समझा जाना भी उतना ही प्रकट कर सकता है जितना प्रशंसा पाना। जब किसी सेवक की प्रशंसा होती है, तो घमण्ड उठ सकता है। जब उसकी आलोचना होती है, तो आत्म-रक्षा उठ सकती है। दोनों प्रतिक्रियाएँ भीतरी लगावों को उजागर करती हैं। क्रूस केवल सुख की इच्छा से ही नहीं, वरन् अपनी छवि को नियन्त्रित करने की इच्छा से भी निपटता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि मसीहियों को हर परिस्थिति में झूठ को चुपचाप स्वीकार कर लेना चाहिए। यीशु ने दोष लगाने वालों को उत्तर दिया; पौलुस ने अपने प्रेरितपद का बचाव किया; भविष्यद्वक्ताओं ने झूठ का सामना किया। मुद्दा इससे गहरा है: क्या सत्य इस प्रकार बोला जा सकता है कि प्राण शान्ति की शर्त के रूप में अपने निर्दोष ठहराए जाने की माँग न करे? क्या कोई अगुवा स्पष्ट बचाव प्रस्तुत करके भी अपनी प्रतिष्ठा परमेश्वर को सौंप सकता है?

बार्बर की छिपी हुई सेवकाई ने आत्मिक अधिकार के विषय में नी के दृष्टिकोण को भी आकार दिया। वास्तविक अधिकार, अपने सर्वोत्तम रूप में, ऊँची आवाज़, पद या दबाव नहीं है। वह परमेश्वर के शासन के अधीन जिए गए जीवन से उत्पन्न होता है। यीशु ने अन्यजातियों के उन अधिपतियों की, जो दूसरों पर "प्रभुता करते हैं", अपनी सेवा के ढाँचे से तुलना की (मरकुस 10:42-45)। किसी मार्गदर्शक का अधिकार तब सबसे स्वस्थ होता है जब वह चेले की निर्भरता मार्गदर्शक पर नहीं, वरन् मसीह पर बढ़ाता है।

इन वर्षों में नी के गहन अध्ययन ने उनके गठन में एक और आयाम जोड़ा। पुस्तकों ने उन्हें सदियों और महाद्वीपों के पार के मसीहियों के साथ संवाद में प्रवेश करने दिया। फिर भी पढ़ने ने अपनी ही एक परीक्षा उत्पन्न की: उधार का दृढ़ विश्वास। कोई पाठक उन वास्तविकताओं के विषय में आत्मविश्वास से बोलना सीख सकता है जिन्हें उसने अभी तक व्यक्तिगत रूप से जाना ही नहीं।

आगे चलकर नी वस्तुनिष्ठ सत्य और व्यक्तिनिष्ठ अनुभव के बीच भेद करने लगे। इस भेद को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जा सकता है, परन्तु इसके पीछे की चिन्ता ठीक है। कोई सिद्धान्त हमारे समझने से पहले ही वस्तुनिष्ठ रूप से सत्य हो सकता है। हम उसे अनुभव के द्वारा सत्य नहीं बनाते। फिर भी सत्य का उद्देश्य अनुभव को आकार देना है। मसीह का पुनरुत्थान एक ऐतिहासिक तथ्य है, चाहे कोई विश्वासी पुनरुत्थान की सामर्थ्य का अनुभव करे या न करे; तौभी पौलुस की लालसा थी, "मैं उसको और उसके पुनरुत्थान की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ" (फिलिप्पियों 3:10)।

इसलिए गठन पवित्रशास्त्र, संगति, आज्ञाकारिता, दुःख और समय को एक साथ जोड़ता है। इनमें से किसी को अलग नहीं किया जाना चाहिए। संगति के बिना पवित्रशास्त्र निजी व्याख्या बन सकता है। पवित्रशास्त्र के बिना संगति समूह का नियन्त्रण बन सकती है। अनुग्रह के बिना आज्ञाकारिता व्यवस्थावाद बन सकती है। सत्य के बिना दुःख केवल घाव बनकर रह सकता है। जान-बूझकर दिए गए प्रत्युत्तर के बिना समय परिपक्वता के बिना केवल आयु उत्पन्न कर सकता है।

नी के आरम्भिक तपेदिक ने इन पाठों को पीड़ादायक रूप से शारीरिक बना दिया। जिस देह को आदेश देकर बलवन्त नहीं किया जा सकता, वह किसी धुन के पक्के व्यक्ति को उसकी सीमाओं के सामने खड़ा कर देती है। मसीही विश्वास उन सीमाओं को नकारता नहीं। वह यह खोज लेता है कि परमेश्वर उनसे सीमित नहीं है। पौलुस ने सुना, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है" (2 कुरिन्थियों 12:9)।

निर्बलता नी का आदर्श नहीं बनी; मसीह की पर्याप्तता बनी। यह भेद महत्त्वपूर्ण है। मसीहियत बीमारी, अपमान या असफलता को ऐसे नहीं खोजती मानो पीड़ा अपने आप में पवित्र हो। वह मसीह को खोजती है, और जब अनिवार्य निर्बलता आ पड़ती है, तब विश्वास यह निष्कर्ष निकालने से इनकार करता है कि उपयोगिता समाप्त हो गई है।

एक मान्य शिक्षक बनने से पहले नी स्वयं सिखाए जा रहे थे। टूटेपन के विषय में बोलने से पहले उन्हें सुधारा गया। पुनरुत्थान के जीवन के विषय में लिखने से पहले उन्होंने देह की नश्वरता का सामना किया। यही क्रम उनकी बाद की सर्वोत्तम शिक्षा को विश्वसनीयता देता है। वे सत्य केवल किसी नोटबुक में सजाए नहीं गए थे; उनमें से बहुत से एक वास्तविक जीवन के प्रतिरोध से होकर गुज़रे थे।

युवा प्रचारक और लिटिल फ्लॉक

बाइबल अध्ययन से जन्मी एक कलीसिया

वॉचमैन नी के मन-फिराव के ठीक बाद के वर्ष किसी चमकदार नाम, संविधान, मुख्यालय और विस्तार-योजना वाले संगठन को खड़ा करने में नहीं बीते। वे नया नियम पढ़ने, मसीह का प्रचार करने, दूसरे युवा विश्वासियों के साथ प्रार्थना करने, और यह पूछने में बीते कि वास्तव में कलीसिया को कैसा होना चाहिए। यह क्रम महत्त्वपूर्ण है। नी का कलीसिया-विज्ञान उनके इस दृढ़ विश्वास से उपजा कि कलीसिया इतिहास, संस्कृति, सम्प्रदाय, मिशनरी संस्था या राष्ट्रीय परम्परा की होने से पहले यीशु मसीह की है।

फ़ूझोउ में उन्हें ऐसे साथी मिले जो मसीही संगति के एक सरल रूप की लालसा रखते थे। लेलैंड वांग और कुछ अन्य लोग पहले से ही विश्वासी के बपतिस्मा, प्रभु-भोज, सुसमाचार प्रचार और पवित्रशास्त्र के अधिकार के विषय में गम्भीरता से सोच रहे थे। मार्गरेट बार्बर ने इन युवकों को उत्साहित किया कि वे नए नियम को गम्भीरता से लें, तब भी जब आज्ञाकारिता उन्हें स्थापित ढर्रों से बाहर ले जाए। इन मित्रताओं और तनावों से ऐसी सभाएँ निकलीं जिनमें विश्वासी रोटी तोड़ते, प्रार्थना करते, पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते, और नए नियम के सिद्धान्तों के अनुसार अगुवाई को पहचानने का प्रयत्न करते थे।

प्रेरितों के काम की पुस्तक ने उनके सामने एक ऐसा चित्र रखा जो आकर्षक भी था और कठोर माँग करनेवाला भी। पहले विश्वासी "प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे" (प्रेरितों के काम 2:42)। इस पद में कोई पेचीदा तंत्र नहीं है। यह एक ऐसे समुदाय को दिखाता है जो सत्य, साझा जीवन, प्रभु की मेज़ और प्रार्थना के चारों ओर इकट्ठा है। नी ने उस सरलता में कलीसियाई जीवन के उन रूपों के लिए एक फटकार देखी जिनमें साधारण विश्वासी दर्शक बन जाते थे और एक पेशेवर धार्मिक वर्ग उनकी ओर से सेवकाई करता था।

उनके आरम्भिक निष्कर्ष पूरी तरह नए नहीं थे। उन्नीसवीं सदी में ब्रदरन लेखक ऐसे ही विषयों पर बल दे चुके थे, और स्वदेशी चीनी मसीही पहले से ही मिशनरियों पर निर्भरता और बाहर से लाए गए सम्प्रदायवाद पर प्रश्न उठा रहे थे। नी का महत्त्व कुछ हद तक इस बात में था कि उन्होंने इन दृढ़ विश्वासों को एक साथ पिरोया, उन्हें असाधारण बल के साथ सिखाया, और उन्हें ऐसे चीनी परिवेश के अनुरूप ढाला जो राजनीतिक राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद-विरोधी भावना, और विदेश से नियंत्रित न होनेवाली संस्थाओं की लालसा से गुज़र रहा था।

फिर भी नी केवल एक चीनी मसीहियत नहीं चाहते थे। वे चाहते थे—जैसा वे इसे समझते थे—नए नियम की मसीहियत। इसी भेद ने उनके सम्प्रदाय-विरोध को साधारण राष्ट्रवाद बनने से रोका। सबसे गहरा प्रश्न यह नहीं था कि कोई कलीसिया चीनी है या विदेशी, बल्कि यह कि क्या व्यवहार में मसीह उसका सिर है।

कुलुस्सियों को लिखे पौलुस के शब्द बुनियादी बन गए: मसीह "वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है" (कुलुस्सियों 1:18)। यदि मसीह सिर है, तो कलीसियाई व्यवस्था का हर प्रश्न अन्ततः उसकी उपस्थिति में ही पूछा जाना चाहिए। कौन निर्देश देता है? कौन वरदान देता है? काम किसका है? महिमा किसे मिलती है? नी मानते थे कि उत्तर सदा मसीह तक ही लौटकर आना चाहिए।

फ़ूझोउ की जागृति और आरम्भिक संघर्ष

ये युवा विश्वासी उत्साही सुसमाचार प्रचारक थे। वे विद्यालयों में, सड़कों पर, घरों में, और जहाँ कहीं भी अवसर मिलता, प्रचार करते थे। उनके उत्साह ने फ़ूझोउ के विद्यार्थियों के बीच एक जागृति में योगदान दिया। नी अभी बहुत युवा थे, फिर भी उनकी बौद्धिक क्षमता, उनकी तड़प और बाइबल पर उनके बढ़ते आत्मविश्वास ने उन्हें स्वाभाविक अगुवा बना दिया।

परन्तु अगुवाई ने उसी स्व-जीवन को उजागर कर दिया जिसके विषय में मार्गरेट बार्बर ने उन्हें चेताया था। कार्यकर्ताओं के बीच मतभेद उठे। विवरणों और उनकी व्याख्या में वृत्तान्त भिन्न हैं, परन्तु ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन आरम्भिक वर्षों में नी ने पीड़ादायक संघर्ष और बहिष्कार का अनुभव किया। बाद की गवाही के अनुसार, बार्बर ने न तो सीधे उन्हें सही ठहराया और न ही उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने को उकसाया। उन्होंने उन पर क्रूस के मार्ग पर चलने का दबाव डाला।

वह पाठ नी की आत्मिक शब्दावली का हिस्सा बन गया: यह सम्भव है कि कोई तर्क में सही हो और आत्मा में गलत। अपने को सही सिद्ध किए जाने की चाह एक मूरत बन सकती है। परमेश्वर का कोई सेवक एक उचित पक्ष रखते हुए भी जीतने की इच्छा को समर्पित करने के लिए बुलाया जा सकता है।

पतरस मसीह के विषय में लिखता है, "वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था" (1 पतरस 2:23)। नी ने इसे निर्बलता नहीं, बल्कि आत्मिक बल के रूप में देखा। पुत्र ने आत्म-रक्षा के उपायों से अधिक पिता के न्याय पर भरोसा किया।

इस सिद्धान्त को सावधानी से बरतना चाहिए। मसीहियत यह माँग नहीं करती कि दुर्व्यवहार के शिकार लोग खतरे में ही बने रहें, और न ही वह सच बोलने, अपील करने, जवाबदेही माँगने या वैधानिक सुरक्षा पाने से रोकती है। स्वयं पौलुस की सेवकाई में सार्वजनिक सफ़ाई देना, कानूनी अपीलें और सीधा सामना करना शामिल था। क्रूस कोई धार्मिक युक्ति नहीं है जिसके द्वारा शक्तिशाली अगुवे आलोचना का मुँह बन्द कर दें। परन्तु मसीही कार्यकर्ता के लिए इसका अर्थ यह अवश्य है कि व्यक्तिगत अधिकार सर्वोपरि नहीं बन सकते। ऐसे समय आते हैं जब कोई व्यक्ति सच बोलते हुए भी बदला लेने से इनकार कर सकता है।

नी के आरम्भिक संघर्षों ने एक ऐसे दृढ़ विश्वास को गढ़ने में सहायता की जो उनके जीवन भर बार-बार उभरता रहा: परमेश्वर अपने सेवक की तात्कालिक सफलता से अधिक उसकी आत्मिक बनावट में रुचि रखता है। कोई सेवकाई किसी पद को खोकर भी बनी रह सकती है, यदि उसके पास मसीह बना रहे। वही सेवकाई कोई विवाद जीतते हुए भी मसीह का चरित्र खो सकती है।

वचन की सेवकाई

नी अधिकाधिक लेखन और प्रकाशन की ओर मुड़ते गए। भूगोल में विशाल और यातायात की सीमाओं से बँटे हुए देश में, छपी हुई सामग्री वहाँ तक पहुँच सकती थी जहाँ प्रचारक नहीं पहुँच सकता था। पत्रिकाएँ, पर्चे, बाइबल अध्ययन और पुस्तकें उनकी सेवकाई का विस्तार बन गईं।

यह केवल संचार की एक रणनीति नहीं थी। नी मानते थे कि मसीही कार्यकर्ताओं को विश्वासियों को ठोस सत्य से पोषित करना चाहिए। वे ऐसे सुसमाचार प्रचार से असन्तुष्ट थे जो लोगों को मन-फिराव तक तो ले आता था, परन्तु उन्हें आत्मिक रूप से कुपोषित छोड़ देता था। उद्धार शिष्यता के जीवन का द्वार खोलता था, और शिष्यों को पवित्रशास्त्र की आवश्यकता थी।

यीशु ने प्रार्थना की, "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है" (यूहन्ना 17:17)। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, "अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो" (2 तीमुथियुस 2:15)। नी ने पवित्रशास्त्र की बदल देनेवाली सामर्थ्य और उसे सावधानी से काम में लाने, दोनों को गम्भीरता से लिया।

वे बहुत अधिक पढ़नेवाले व्यक्ति थे और अनेक परम्पराओं के विचारों को एक साथ जोड़ते थे। इससे उनकी शिक्षा को व्यापकता मिली, परन्तु इसी से बाद में पश्चिमी लेखकों पर उनकी निर्भरता के विषय में, और इस विषय में भी प्रश्न उठे कि उनकी कुछ व्याख्याएँ किस हद तक मौलिक थीं। निष्पक्ष दृष्टि को दो अतियों में से किसी एक को चुनने की आवश्यकता नहीं है। नी न तो कोई एकाकी प्रतिभा थे जिन्हें सीधे स्वर्ग से धर्मविज्ञान मिला हो, और न ही बिना सृजनशीलता के केवल एक संकलनकर्ता। वे विचारों के एक वरदान-प्राप्त व्याख्याकार और व्यवस्थापक थे, जिन्होंने एक व्यापक, राष्ट्रों की सीमाओं के पार फैले इवैंजेलिकल संसार के भीतर काम किया और उन विचारों को ऐसे मेलों में प्रस्तुत किया जो विशिष्ट बन गए।

उनके प्रकाशनों ने पाठकों का एक बिखरा हुआ समुदाय बनाने में भी सहायता की, जो उनसे मिलने से पहले ही एक साझा शब्दावली और साझा अपेक्षाएँ रखता था। इस प्रकार छपाई ने एक आन्दोलन खड़ा करने में सहायता की।

फिर भी नी लगातार इस बात पर बल देते रहे कि बाइबल का ज्ञान आत्मिक वास्तविकता बनना चाहिए। "ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है" (1 कुरिन्थियों 8:1)। खतरा स्वयं ज्ञान में नहीं था—नी अध्ययन को बहुत अधिक महत्त्व देते थे—बल्कि उस ज्ञान में था जो प्रेम और आज्ञाकारिता से अलग हो। पवित्रशास्त्र का उपयोग हृदय को अछूता छोड़ते हुए बहसें जीतने के लिए भी किया जा सकता था।

इसलिए वचन के सेवक को जानकारी से अधिक कुछ चाहिए था। उसे प्रकाशन, अनुभव और चरित्र की आवश्यकता थी। नी के बाद के लेखन मन में रखे गए अक्षर और पवित्र आत्मा

के द्वारा जीवित बनाए गए सत्य के बीच भेद करते। यह भेद कभी-कभी बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, परन्तु इसके पीछे की पास्तरीय चिन्ता महत्त्वपूर्ण है। सत्य इसलिए है कि उस पर विश्वास किया जाए, उसका पालन किया जाए, उसके द्वारा आराधना की जाए, और उसे जिया जाए।

शंघाई और एक विस्तृत क्षेत्र

1920 के दशक के अन्त तक नी की गतिविधियों का केन्द्र शंघाई की ओर खिसक गया—वह विशाल तटीय महानगर जहाँ चीनी व्यापार, विदेशी प्रभाव, प्रकाशन, राजनीति और आधुनिक संस्कृति असाधारण तीव्रता से मिलते थे। शंघाई यातायात, छापेखानों, पाठकों, कार्यकर्ताओं और अनेक क्षेत्रों से आनेवाले लोगों तक रणनीतिक पहुँच देता था।

वहीं से नी से जुड़ी सभाओं का जाल फैलता गया। बाहरी लोगों ने अन्ततः "लिटिल फ्लॉक" (छोटा झुण्ड) और "असेम्बली हॉल" जैसे नामों का प्रयोग किया, यद्यपि स्वयं विश्वासी किसी नए सम्प्रदाय के बजाय स्थानीय कलीसियाओं के रूप में सोचना पसन्द करते थे। विडम्बना स्पष्ट थी: जो आन्दोलन कुछ हद तक साम्प्रदायिक नामों का विरोध करने के लिए बना था, उसने अनिवार्य रूप से अपने ही नाम अर्जित कर लिए।

नी का मानना था कि नया नियम सामान्यतः किसी नगर की कलीसिया की बात करता है —कुरिन्थुस, इफिसुस, थिस्सलुनीके आदि की कलीसिया। इससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि किसी स्थानीय कलीसिया की व्यावहारिक सीमा सैद्धान्तिक विशेषताओं या मिशनरी सम्बद्धताओं से नहीं, बल्कि स्थान से निर्धारित होनी चाहिए। किसी एक स्थान के सभी सच्चे विश्वासी आत्मिक रूप से एक ही कलीसिया के थे, चाहे वे एक ही सभा-स्थल में इकट्ठा होते हों या नहीं।

पौलुस ने अपना पत्र "परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है" (1 कुरिन्थियों 1:2) लिखा। नी ने ऐसी भाषा में भूगोल से अधिक कुछ देखा; उन्होंने उसमें एक सिद्धान्त देखा। क्योंकि मसीह में सभी विश्वासी एक ही जीवन के भागी हैं, इसलिए कलीसिया को ऐसे नामों को अस्वीकार करना चाहिए जो किसी अगुवे या सिद्धान्त के स्वामित्व का संकेत देते हों। पौलुस की फटकार—"मैं पौलुस का हूँ, और मैं अपुल्लोस का, और मैं कैफा का"—उन्हें सदा के लिए प्रासंगिक लगी (1 कुरिन्थियों 1:12)।

इस अन्तर्दृष्टि का बल स्पष्ट है। मसीही पहचान मूलतः मसीह में है। साम्प्रदायिक घमण्ड उन विश्वासियों को बाँट सकता है जो अनन्तकाल एक साथ बिताएँगे। एक देह का नए नियम का दर्शन प्रतिस्पर्धी साम्राज्य-निर्माण को फटकारता है।

परन्तु इसका व्यावहारिक प्रयोग उससे कहीं अधिक जटिल है जितना नी कभी-कभी मानते थे। नया नियम अनेक घरेलू सभाओं, क्षेत्रीय सहयोग, यात्रा करनेवाली सेवकाइयों, सैद्धान्तिक सीमाओं और व्यवहार में उचित विविधता का भी वर्णन करता है। जो मसीही इस बात पर सहमत हैं कि कलीसिया एक है, वे फिर भी इस पर असहमत हो सकते हैं कि संस्थागत ढाँचे उस एकता से कैसे जुड़ते हैं। सम्प्रदाय-विरोधी आन्दोलन का खतरा यह है कि वह एकता की भूमि का अनोखा प्रतिनिधि होने का दावा करते हुए व्यवहार में स्वयं एक सम्प्रदाय बन सकता है।

इसलिए नी का दर्शन तब सबसे अधिक फलदायी होता है जब उसे हर सच्चे विश्वासी को मसीह के अंग के रूप में पहचानने की पुकार के रूप में ग्रहण किया जाए, न कि अपने ही जाल को एकमात्र प्रामाणिक स्थानीय अभिव्यक्ति घोषित करने के हथियार के रूप में।

सब विश्वासियों का याजकपद

नी के कलीसियाई दर्शन के सबसे मुक्तिदायक पहलुओं में से एक यह आग्रह था कि सेवकाई पूरी देह की है। उन्होंने पादरी-वर्ग और साधारण-जन के बीच कठोर विभाजन को अस्वीकार किया। मसीह में हर विश्वासी की परमेश्वर तक पहुँच है, और हर विश्वासी सेवा करने के लिए अनुग्रह पा सकता है।

पतरस लिखता है, "तुम भी आप जीविते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज" बनो (1 पतरस 2:5), और आगे कलीसिया को "राज-पदधारी, याजकों का समाज" कहता है (1 पतरस 2:9)। यह भाषा सामूहिक और व्यापक है। याजकपद किसी संकीर्ण धार्मिक वर्ग तक सीमित नहीं है।

इसलिए नी ऐसी सभाएँ चाहते थे जिनमें विश्वासी प्रार्थना कर सकें, गवाही दे सकें, बोल सकें, सुसमाचार सुना सकें, एक-दूसरे की देखभाल कर सकें और उत्तरदायित्व उठा सकें। अगुवाई थी, परन्तु वह सेवकाई पर एकाधिकार नहीं रखती थी। प्राचीनों को रखवाली करनी थी; वरदान-प्राप्त कार्यकर्ताओं को तैयार करना था; और पवित्र लोगों को सक्रिय होना था।

1 कुरिन्थियों 12 में पौलुस का चित्र इसका समर्थन करता था: "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो" (1 कुरिन्थियों 12:27)। जिस देह में केवल एक ही अंग काम करता हो, वह रोगी है। आँख हाथ का स्थान नहीं ले सकती; सिर पाँवों से नहीं कह सकता, "मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं।"

इस बल ने साधारण चीनी मसीहियों को एक ऐसे भविष्य के लिए तैयार किया जिसका पूरा पूर्वानुमान 1920 के दशक का कोई भी कलीसियाई रणनीतिकार नहीं लगा सकता था। जब विदेशी मिशनरियों को निकाल दिया गया और सार्वजनिक कलीसियाई ढाँचे भारी दबाव में आ गए, तब साधारण विश्वासियों के विकेन्द्रित जालों में एक ऐसी सहनशक्ति थी जो अत्यन्त केन्द्रीकृत संस्थाओं में प्रायः नहीं थी। यह दावा नहीं करना चाहिए कि अकेले नी ने चीनी गृह-कलीसिया की घटना को जन्म दिया, जिसकी अनेक धाराएँ और अनेक कारण थे। परन्तु स्वदेशी अगुवाई, अवैतनिक सेवकाई, घरेलू सभाओं और साधारण विश्वासियों के सक्रिय होने पर उनका बल निःसन्देह उन परिस्थितियों के अनुकूल था जो बाद में उभरीं।

समृद्ध कलीसियाओं के लिए इसमें एक चेतावनी भी है। पेशेवर उत्कृष्टता चुपचाप मण्डली को उपभोक्ताओं में बदल सकती है। मंच जितना बेहतर होता जाता है, सदस्यों के लिए यह निष्कर्ष निकालना उतना ही आसान हो जाता है कि सेवकाई वह है जो प्रशिक्षित कर्मचारी करते हैं। नी का कलीसिया-विज्ञान पूछता है कि क्या स्वयं पवित्र लोग प्रार्थना करने, सेवा करने, सिखाने, सुसमाचार सुनाने, देने, परखने और देखभाल करने के लिए उन्नत किए जा रहे हैं।

इफिसियों में उन अगुवों का वर्णन है जो इसलिए दिए गए "जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए" (इफिसियों 4:12)। अगुवाई तब सफल नहीं होती जब वह सारी सेवकाई अपने भीतर समेट लेती है, बल्कि तब होती है जब वह देह को काम करने के लिए तैयार करती है।

विदेशी नियंत्रण से स्वतंत्रता

नी उन मिशनरियों के आभारी थे जो सुसमाचार लाए थे, और उस पश्चिमी मसीही साहित्य के भी जिसने उन्हें गढ़ा था। साथ ही, वे मानते थे कि चीनी कलीसियाओं को विदेशी धन और देखरेख पर निर्भर नहीं बने रहना चाहिए। चीन की कलीसिया को अपने अगुवों, अपने संसाधनों, सेवा के अपने ढंगों और अपनी मिशनरी ऊर्जा की आवश्यकता थी।

यह सिद्धान्त स्व-शासन, स्व-पोषण और स्व-प्रसार के उन व्यापक त्रि-स्व आदर्शों से मेल खाता था जो मिशन-चिन्तकों के बीच तब से बहुत पहले प्रचलित थे जब साम्यवादी सरकार ने बाद में राजनीतिक उद्देश्यों के लिए ऐसी ही भाषा का प्रयोग किया। नी का प्रयोग कलीसिया-विज्ञान और मिशन से निकला था: स्थानीय कलीसिया को सदा बाहरी संरक्षण में बने रहने के बजाय परिपक्व होना चाहिए।

पौलुस की मिशनरी रीति ने कलीसियाएँ स्थापित करने और फिर उन्हें सौंप देने का एक आदर्श प्रस्तुत किया। उसने और बरनबास ने "हर एक कलीसिया में उनके लिये प्राचीन ठहराए" (प्रेरितों के काम 14:23)। पौलुस अपने द्वारा स्थापित हर मण्डली का स्थायी पास्टर बनकर नहीं रहा। उसने अपेक्षा की कि स्थानीय उत्तरदायित्व विकसित हो।

आर्थिक निर्भरता भी महत्त्व रखती थी। धन एक अदृश्य अधिकार खड़ा कर सकता है। जिस कलीसिया का बजट किसी दूर के प्रायोजक पर निर्भर हो, उसके पास तकनीकी रूप से स्थानीय अगुवे हो सकते हैं, जबकि व्यवहार में वह बाहरी प्राथमिकताओं का पालन करती हो। नी उस बात को महत्त्व देते थे जिसे बाद की विद्वत्ता "विश्वास का सिद्धान्त" कहती है: कार्यकर्ता किसी सुनिश्चित संस्थागत वेतन-व्यवस्था पर निर्भर रहने के बजाय अपनी आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर की ओर देखते थे।

यह तरीका साहसी निर्भरता उत्पन्न कर सकता था, परन्तु यह असुरक्षा और अस्पष्टता भी पैदा कर सकता था। विश्वास आर्थिक ईमानदारी, योजना, पारदर्शिता, या कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों की देखभाल की आवश्यकता को समाप्त नहीं करता। पौलुस दान पर भी जी सकता था और अपने हाथों से काम भी कर सकता था। वह यह सिखा सकता था कि "मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है" (1 तीमुथियुस 5:18), और फिर भी कुछ परिस्थितियों में किसी अधिकार का उपयोग न करने का चुनाव कर सकता था।

नी की गहरी बात यह थी कि धन को सदा सेवक बने रहना चाहिए, स्वामी कभी नहीं। मसीही काम इस प्रश्न से संचालित नहीं हो सकता कि "हम क्या वहन कर सकते हैं?" इससे पहले कि वह यह पूछे, "परमेश्वर ने हमें क्या करने के लिए बुलाया है?" और न ही तथाकथित विश्वास गैर-ज़िम्मेदार प्रतिबद्धताओं का बहाना बन सकता है। परमेश्वर पर निर्भरता में बुद्धि, ईमानदारी और भण्डारीपन शामिल हैं।

रोटी तोड़ना और मसीह को स्मरण करना

सभाओं में प्रभु-भोज का केन्द्रीय स्थान था। साप्ताहिक रोटी तोड़ने को केवल एक धार्मिक कर्तव्य के रूप में नहीं देखा जाता था। उसका उद्देश्य विश्वासियों को स्वयं प्रभु के चारों ओर इकट्ठा करना था।

पौलुस यीशु के शब्द लिखता है: "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो" (1 कुरिन्थियों 11:24)। यह मेज़ बताती है कि कलीसिया इसलिए अस्तित्व में है क्योंकि मसीह ने अपने आपको दे दिया। यह घमण्ड को उजागर करती है। कोई भी विश्वासी अपनी श्रेष्ठ योग्यता के बल पर निकट नहीं आता। सब एक ही छुटकारे पर खड़े हैं।

इस मेज़ का एक सामूहिक अर्थ भी है। "इसलिए, कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं" (1 कुरिन्थियों 10:17)। इसलिए प्रभु-भोज के प्रति नी का प्रेम देह के विषय में उनके धर्मविज्ञान से अलग नहीं किया जा सकता था। रोटी इस बात की गवाही देती थी कि अनेक विश्वासी एक ही जीवन के भागी हैं।

इसी कारण बहिष्कारवादी सहभागिता उनके लिए विशेष रूप से पीड़ादायक थी। नी का ब्रिटेन और अन्य स्थानों के ब्रदरन मण्डलों से सम्पर्क था, और कुछ समय तक संगति भी रही। परन्तु सम्बन्ध और सहभागिता के प्रश्नों पर रिश्ते टूट गए। नी ने ऐसी व्यवस्था को स्वीकार करने से इनकार किया जिसमें दूसरे मसीहियों के साथ संगति का अर्थ अपने आप उन विश्वासियों से अलग होना था जिन्हें वे मसीह के सच्चे अंग मानते थे।

इस घटना ने उनके इस दृढ़ विश्वास को और पक्का किया कि देह की एकता परमेश्वर से ग्रहण की जानी चाहिए, न कि संगठनात्मक नियंत्रण के द्वारा गढ़ी जानी चाहिए।

फिर भी उनके अपने आन्दोलन को बाद में उसी चिरस्थायी परीक्षा का सामना करना पड़ा: जो संगति सबको सम्मिलित करने के आधार पर बनी हो, वह तब बहिष्कारी बन सकती है जब उसके सिद्धान्त कठोर होकर सीमा-चिह्न बन जाते हैं। हर नवीकरण आन्दोलन को इससे सावधान रहना चाहिए। जो पीढ़ी किसी संस्था को इसलिए छोड़ती है कि "केवल मसीह" पर्याप्त है, वह अन्ततः एक और ऐसी संस्था खड़ी कर सकती है जिसकी अलिखित शर्त संस्थापकों से सहमत होना हो।

प्रभु की मेज़ सदा सुधार करनेवाली बनी रहती है। हम मसीह के कारण आते हैं, न कि अपनी कलीसियाई श्रेष्ठता के कारण।

नी ने स्थानीय अगुवाई और घूम-घूमकर की जानेवाली सेवकाई में भेद किया। प्राचीन स्थानीय कलीसिया के होते थे और उसकी रखवाली का उत्तरदायित्व उठाते थे। उनके प्रयोग में प्रेरिताई कार्यकर्ता ऐसे भेजे हुए लोग थे जो कलीसियाएँ स्थापित करने और उन्हें दृढ़ करने के व्यापक काम में लगे रहते थे। उन्होंने प्रेरितों के काम और पौलुस की पत्रियों से बहुत कुछ लिया।

नया नियम निश्चय ही प्राचीनों को मान्यता देता है। पौलुस ने तीतुस से कहा कि वह "नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे" (तीतुस 1:5)। पतरस ने प्राचीनों को समझाया: "परमेश्वर के उस झुण्ड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से" (1 पतरस 5:2)।

पतरस की चेतावनी पर ध्यान दीजिए: "जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुण्ड के लिये आदर्श बनो" (1 पतरस 5:3)। कलीसिया में अधिकार वास्तविक है, परन्तु वह क्रूस के आकार का है। अगुवे लोगों के स्वामी नहीं होते। वे प्रधान रखवाले के अधीन रहकर लोगों की सेवा करते हैं।

आत्मिक अधिकार पर नी की बाद की शिक्षा उनके सबसे प्रभावशाली और सबसे विवादास्पद विषयों में से एक बन गई। उसे पढ़ने का सबसे स्वस्थ ढंग यहीं से, बाइबल के प्राचीनपद से आरम्भ होता है। अधिकार मसीह के द्वारा सौंपा जाता है और इसलिए मसीह के द्वारा ही सीमित भी है। वह कभी भी प्रभुत्व जमाने की अनुमति नहीं है। उसे पाँव धोते हुए यीशु के समान दिखना चाहिए।

नी का उग्र व्यक्तिवाद का विरोध करना उचित था। नए नियम का मसीही कोई एकाकी रहस्यवादी नहीं है जो केवल अपनी निजी अनुभूतियों के प्रति उत्तरदायी हो। विश्वासी एक-दूसरे के हैं और मसीह के भय से एक-दूसरे के अधीन रहते हैं। परन्तु सामूहिक जीवन परमेश्वर के सामने व्यक्तिगत विवेक को रद्द नहीं करता।

बिरीया के लोगों की प्रशंसा इसलिए हुई कि उन्होंने पौलुस की शिक्षा को पवित्रशास्त्र से जाँचा: वे "प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें ऐसी ही हैं कि नहीं" (प्रेरितों के काम 17:11)। यदि प्रेरितों के प्रचार को भी लिखित वचन के सामने परखा गया, तो बाद का कोई भी कलीसियाई अगुवा इससे छूट का दावा नहीं कर सकता।

सुसमाचार प्रचार और कलीसिया स्थापना

ये सभाएँ केवल आत्मिक रूप से गम्भीर मसीहियों के अध्ययन-मण्डल बनने के लिए नहीं बनाई गई थीं। सुसमाचार प्रचार केन्द्र में बना रहा। कार्यकर्ता यात्रा करते, प्रचार करते, साहित्य बाँटते और सभाएँ स्थापित करते थे। विकेन्द्रित ढाँचा बढ़ोतरी को प्रोत्साहित करता था।

नी के दर्शन ने दो ऐसी प्रतिबद्धताओं को जोड़ा जिन्हें कलीसिया के इतिहास में कभी-कभी अलग कर दिया गया है: गहरे आत्मिक जीवन की शिक्षा और उत्साहपूर्ण सुसमाचार प्रचार। वे नहीं मानते थे कि पवित्रीकरण मसीहियों को अपने भीतर ही सिमटा दे। मसीह का जीवन मिशनरी जीवन है।

यीशु ने कहा, "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ" (यूहन्ना 20:21)। कलीसिया अपने प्रभु से भेजे हुए होने की पहचान पाती है। जो आत्मिकता कभी खोए हुओं की ओर नहीं बढ़ती, वह अधूरी है।

साथ ही, नी सुसमाचार प्रचार के उन तरीकों से सावधान थे जो शिष्यता के बिना संख्या तो उत्पन्न करते थे। लक्ष्य केवल निर्णय नहीं, बल्कि कलीसियाएँ थीं—ऐसे समुदाय जिनमें नए विश्वासियों को सिखाया जा सके, उनकी रखवाली की जा सके और उन्हें तैयार किया जा सके।

यह ढर्रा प्रेरितों के काम में दिखाई देता है। पौलुस और बरनबास सुसमाचार सुनाते हैं, चेले बनाते हैं, उन्हें स्थिर करते हैं, प्राचीन ठहराते हैं, और उन्हें प्रभु के हाथ सौंपते हैं (प्रेरितों के काम 14:21-23)। सुसमाचार प्रचार और कलीसिया का गठन साथ-साथ चलते हैं।

सभाओं की बढ़ोतरी ने बड़ी इमारतों पर निर्भरता को भी घटाया। कोई मण्डली बहुत कम साधनों के साथ आरम्भ हो सकती थी। यही सरलता बाद में सताव के समय एक लाभ बन गई। परन्तु केवल सरलता ही आत्मिकता नहीं है। गृह-कलीसियाएँ भी उसी प्रकार अस्वस्थ हो सकती हैं जैसे संस्थागत कलीसियाएँ। प्रश्न यही बना रहता है कि क्या मसीह शासन करता है, क्या पवित्रशास्त्र का आदर होता है, क्या अगुवे जवाबदेह हैं, क्या विश्वासियों से प्रेम किया जाता है, और क्या सुसमाचार आगे बढ़ता है।

मसीह, न कि आन्दोलन

हर आत्मिक आन्दोलन एक खतरनाक परिवर्तन से गुज़रता है। आरम्भ में लोग किसी पुनः खोजे गए सत्य से मोहित होते हैं। बाद में वे उस आन्दोलन से मोहित हो जाते हैं जो उस सत्य को लिए चलता है। एक गवाही एक पहचान बन जाती है। एक पहचान एक सीमा बन जाती है। अन्ततः आन्दोलन उस वास्तविकता से कहीं अधिक उग्रता से अपना बचाव करने लगता है जिसकी सेवा के लिए वह बना था।

नी सिद्धान्त रूप में इस खतरे को समझते थे, यद्यपि उनका अपना आन्दोलन इससे अछूता नहीं रहा। उनकी सबसे सशक्त शिक्षा बार-बार मसीह पर ही लौट आती थी। मसीह से अलग होकर कलीसिया केन्द्र नहीं है; वह उसकी देह है। सेवकाई केन्द्र नहीं है; मसीह सेवकाई का सार है। आत्मिक अनुभव केन्द्र नहीं है; मसीह विश्वासी का जीवन है।

पौलुस की भाषा पूर्ण है: "क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है" (फिलिप्पियों 1:21)। सेवकाई नहीं। कलीसिया-विज्ञान नहीं। प्रतिष्ठा नहीं। मसीह।

यह नी के सबसे स्थायी योगदानों में से एक बन गया। वे कलीसियाई व्यवस्था, युगान्त-विज्ञान, आत्मिक मानव-विज्ञान और अधिकार जैसे जटिल विषयों पर चर्चा कर सकते थे, फिर भी अपने सर्वोत्तम रूप में वे पाठक को एक व्यक्ति की ओर वापस ले जाते थे।

स्थानीय कलीसिया को एक पात्र होना था, खज़ाना नहीं। सेवकाई को इशारा करती हुई एक उँगली होना था, भक्ति की वस्तु नहीं। कार्यकर्ता को, जैसे-जैसे मसीह बढ़ता, वैसे-वैसे लोगों की दृष्टि में घटते जाना था।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने कहा, "अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ" (यूहन्ना 3:30)। नी का जीवन अन्ततः ऐसी परिस्थितियों से होकर गुज़रा जिनमें वह घटते जाना पीड़ादायक रूप से शाब्दिक बन गया।

आन्दोलन आकार लेता है

1930 के दशक तक नी से जुड़ा जाल फ़ूझोउ का कोई छोटा प्रयोग नहीं रह गया था। कार्यकर्ता, सम्मेलन, प्रकाशन और सभाएँ विभिन्न क्षेत्रों के विश्वासियों को आपस में जोड़ते थे। विटनेस ली एक महत्त्वपूर्ण सहकर्मी बन गए। नी की शिक्षा उन लोगों से भी आगे पहुँची

जो औपचारिक रूप से सभाओं से जुड़े थे, और एक मसीही शिक्षक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती गई।

बढ़ोतरी अपने साथ अवसर भी लाई और तनाव भी। जब कोई आन्दोलन फैलता है, तो आदर्शों का सामना प्रशासन से होता है। कार्यकर्ताओं, धन, अनुशासन, विवाह, अगुवाई, सैद्धान्तिक मतभेदों, भौगोलिक उत्तरदायित्व, और जाल से बाहर के मसीहियों के साथ सम्बन्धों के विषय में प्रश्न उठते हैं। नया नियम सिद्धान्त दे सकता है, परन्तु उन सिद्धान्तों को ठोस परिस्थितियों में लागू करने के लिए फिर भी बुद्धि चाहिए।

नी का आन्दोलन उनके कलीसिया-विज्ञान की प्रयोगशाला बन गया। इसने उसके तनावों को भी उजागर किया। कोई जाल शिक्षकों, रीतियों, साहित्य और कलीसियाओं के आपसी सम्बन्धों को साझा करते हुए सम्प्रदाय होने से कैसे इनकार कर सकता है? विशाल महानगरीय क्षेत्रों में एक-नगर-एक-कलीसिया का सिद्धान्त कैसे चल सकता है? सभाओं को उन परम्पराओं के विश्वासियों को कैसे मान्यता देनी चाहिए जिनकी बपतिस्मा या प्रभु-भोज की रीतियाँ भिन्न हैं? जब स्थानीय प्राचीन प्रभावशाली यात्री कार्यकर्ताओं से असहमत हों, तब क्या होता है?

ये केवल सैद्धान्तिक समस्याएँ नहीं थीं। वे नी को व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करनेवाली थीं।

फिर भी आन्दोलन की जीवन-शक्ति को उसकी अपूर्णताओं के कारण नकारा नहीं जा सकता। इसने हज़ारों चीनी मसीहियों को यह दृढ़ बोध दिया कि वे विदेशी मिशनरियों पर स्थायी निर्भरता के बिना पवित्रशास्त्र पढ़ सकते हैं, सुसमाचार सुना सकते हैं, अगुवाई कर सकते हैं, कलीसियाएँ स्थापित कर सकते हैं, कार्यकर्ताओं को सहारा दे सकते हैं, और देह के जीवन में सीधे भाग ले सकते हैं। आगे के उथल-पुथल भरे दशकों में उस आत्मविश्वास का अत्यधिक महत्त्व होनेवाला था।

जो युवा प्रचारक कभी फ़ूझोउ में बहस किया करता था, वह अब राष्ट्रीय स्तर का शिक्षक बनता जा रहा था। परन्तु उनका सबसे प्रसिद्ध सन्देश कलीसियाई ढाँचे के विषय में नहीं होनेवाला था। वह किसी अधिक भीतरी बात के विषय में होनेवाला था: कि परमेश्वर ने मसीह में पहले से क्या पूरा कर दिया है, और एक विश्वासी व्यावहारिक रूप से उस वास्तविकता में कैसे प्रवेश करता है।

रोमियों 5 से रोमियों 8 तक का मार्ग नी के प्रचार में उस जीवन का मार्ग बननेवाला था जिसे उन्होंने सामान्य मसीही जीवन कहा।

स्वदेशी होने का अर्थ अलग-थलग होना नहीं

विदेशी नियंत्रण को नी के अस्वीकार करने को विश्वव्यापी कलीसिया के अस्वीकार के साथ नहीं मिलाना चाहिए। वे लगातार पश्चिमी लेखकों को पढ़ते थे, आनेवाले मसीहियों का स्वागत करते थे, अन्तरराष्ट्रीय यात्राएँ करते थे, और चीन के बाहर के विश्वासियों से आत्मिक लाभ पाते थे। उनका आदर्श अलगाव नहीं, बल्कि परिपक्वता था।

मिशन के क्षेत्र में यह भेद महत्त्वपूर्ण है। पराश्रितता और परस्पर-निर्भरता एक ही बात नहीं हैं। एक परिपक्व स्थानीय कलीसिया अपने जीवन का उत्तरदायित्व छोड़े बिना विदेश से शिक्षक, धन, परामर्श और मित्रता ग्रहण कर सकती है।

पौलुस ने यरूशलेम के कंगाल विश्वासियों के लिए अन्यजाति कलीसियाओं के बीच सहायता इकट्ठी की। कलीसियाएँ स्थानीय मण्डलियाँ बनी रहते हुए भी परस्पर निर्भर थीं।

"इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो" (1 कुरिन्थियों 12:27)। यह पद संस्कृतियों के आर-पार लागू होता है।

मिशन का लक्ष्य ऐसी कलीसियाएँ बनाना नहीं है जिन्हें किसी से कुछ भी न चाहिए। उसका लक्ष्य ऐसी कलीसियाएँ बनाना है जो मसीह को सिर के रूप में जानती हों और लेने के साथ-साथ दे भी सकती हों।

संस्थापकों का खतरा

जैसे-जैसे लिटिल फ्लॉक बढ़ा, नी का प्रभाव अनिवार्य रूप से बढ़ता गया। लोग उनकी पत्रिकाएँ पढ़ते, उनके सम्मेलनों में आते, और कलीसियाई व्यवस्था पर उनकी व्याख्या जानना चाहते थे। इससे एक साम्प्रदायिकता-विरोधी आन्दोलन के केन्द्र में ही एक तनाव उत्पन्न हुआ: कोई कलीसिया मानवीय अगुवों के चारों ओर बनने से कैसे इनकार कर सकती है, जबकि एक असाधारण रूप से वरदान-प्राप्त मानवीय अगुवा असाधारण प्रभाव रखता हो?

पौलुस के सामने भी ऐसी ही समस्या आई जब कुरिन्थुस के लोग प्रेरिताई व्यक्तित्वों से चिपक गए। उसका उत्तर कठोर था: "अपुल्लोस कौन है? और पौलुस कौन है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम लोगों ने विश्वास किया" (1 कुरिन्थियों 3:5)।

सेवक वह है जिसके द्वारा काम होता है, वह स्वयं स्रोत नहीं है।

हर संस्थापक को ऐसे ढाँचे बनाने चाहिए जिनसे उसकी अन्ततः होनेवाली अनुपस्थिति को सहा जा सके। इसमें बहुल अगुवाई, आर्थिक जवाबदेही, लिखित सिद्धान्त, बँटी हुई शिक्षा-सेवकाई, उत्तराधिकार, और दूसरे वरदानों को परिपक्व होने की स्वतंत्रता शामिल है।

नी का बाद का कारावास इस बात की परीक्षा करनेवाला था कि आन्दोलन ने यह सीखा था या नहीं।

शिष्यता के रूप में कलीसिया-विज्ञान

"आत्मिक जीवन" की तुलना में कलीसियाई ढाँचा गौण लग सकता है, परन्तु नी दोनों को जुड़ा हुआ मानते थे। मसीही जिस ढंग से इकट्ठा होते हैं, वही उन्हें गढ़ता है।

जिस सभा में केवल एक पेशेवर व्यक्ति बोलता है, वह लोगों को सुनना सिखाती है। जिस सभा में सदस्य प्रार्थना करते, गवाही देते और योगदान करते हैं, वह सहभागिता सिखाती है। साप्ताहिक प्रभु-भोज स्मरण करना सिखाता है। साझा उत्तरदायित्व सेवा सिखाता है।

कोई भी ढाँचा आत्मिक जीवन की गारंटी नहीं देता, परन्तु ढाँचे आदतें विकसित करते हैं।

आरम्भिक कलीसिया केवल प्रेरितों की शिक्षा में ही नहीं, बल्कि संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना में भी "लौलीन रहे" (प्रेरितों के काम 2:42)। सिद्धान्त और व्यवहार साथ-साथ थे।

आधुनिक कलीसियाएँ हर रूप की नकल किए बिना नी से सीख सकती हैं। पूछिए कि आपकी उपासना-विधि लोगों को क्या बनने का प्रशिक्षण देती है।

साम्प्रदायिक नाम के बिना एक आन्दोलन

नी से जुड़ी सभाओं की बढ़ोतरी ने एक विरोधाभास उत्पन्न किया। वे कुछ हद तक साम्प्रदायिक नामों के विरोध से उपजी थीं, फिर भी बढ़ोतरी ने अनिवार्य रूप से आन्दोलन को पहचानने योग्य सीमाएँ, आदतें, अगुवे, प्रकाशन और पहचान दे दी। साम्प्रदायिकता का विरोध करने के लिए बनी संगति को स्वयं एक पन्थ के रूप में देखा जा सकता था।

नी किसी नगर की कलीसिया को उस स्थान के हर सच्चे विश्वासी को सम्मिलित करनेवाली मानते थे। उनकी सेवकाई से जुड़ी व्यावहारिक सभा का उद्देश्य इसी समावेशी भूमि पर खड़ा होना था, न कि श्रेष्ठ सिद्धान्त के कारण सम्पूर्ण देह होने का दावा करना।

सिद्धान्त रूप में यह भेद उदार था: स्थानीय सभा ने कलीसिया को उत्पन्न नहीं किया था; मसीह ने विश्वासियों को अपने साथ जोड़कर पहले ही कलीसिया को उत्पन्न कर दिया था।

पौलुस कहता है, "क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया" (1 कुरिन्थियों 12:13)। एकता संगठनात्मक उपलब्धि बनने से पहले एक ईश्वरीय तथ्य है।

कठिनाई तब आती है जब कोई समूह यह मानने लगता है कि उसका ढर्रा उस तथ्य का सबसे विश्वासयोग्य प्रतिनिधित्व करता है। यदि वह साम्प्रदायिक नामों को अस्वीकार करे, किसी नगर के लिए केवल एक ही सभा-भूमि को मान्यता दे, और दूसरी मण्डलियों को नए नियम के ढर्रे से भटका हुआ माने, तो उसकी औपचारिक समावेशिता व्यावहारिक बहिष्कार उत्पन्न कर सकती है। नी का आन्दोलन इस तनाव से जूझता रहा, और बाद की पीढ़ियों ने कभी-कभी इसे और तीव्र कर दिया।

यह शिक्षा लिटिल फ्लॉक से कहीं आगे तक जाती है। हर नवीकरण आन्दोलन उसी चीज़ में बदल जाने के प्रति संवेदनशील है जिसका उसने विरोध किया था। पवित्रशास्त्र को फिर से प्राप्त करने के लिए जन्मा आन्दोलन ऐसी परम्पराएँ विकसित कर सकता है जो अलिखित पवित्रशास्त्र का काम करने लगें। आत्मिक स्वतंत्रता को फिर से पाने के लिए जन्मा आन्दोलन एक कठोर आन्तरिक संस्कृति अपना सकता है। प्रसिद्ध-व्यक्ति-पूजा को अस्वीकार करने के लिए जन्मा आन्दोलन किसी संस्थापक की व्याख्याओं के चारों ओर संगठित हो सकता है।

नी का अपना सिद्धान्त सुधार का मार्ग देता है: मसीह सिर है। यदि मसीह सचमुच सिर है, तो कोई भी कलीसियाई अन्तर्दृष्टि किसी एक समूह को देह का स्वामी नहीं बनाती। पौलुस ने विश्वासियों को चेताया कि वे किसी दूसरे अंग से यह न कहें, "मुझे तेरा प्रयोजन नहीं" (1 कुरिन्थियों 12:21)। आँख कोई वास्तविक बात देख सकती है और फिर भी उसे हाथ की आवश्यकता रहती है।

साथ ही, विखण्डन के विरुद्ध नी के विरोध को इसलिए नकारना नहीं चाहिए कि उसका क्रियान्वयन अपूर्ण था। आधुनिक कलीसिया प्राय: विभाजन को अनिवार्य और उपयोगी तक मान लेती है। सम्प्रदाय सिद्धान्त, जवाबदेही, प्रशिक्षण, मिशन और संस्थागत स्मृति को सुरक्षित रख सकते हैं, परन्तु वे अलगाव को सामान्य भी बना सकते हैं। नी ने विश्वासियों को

यह पूछने पर विवश किया कि क्या सेवकाई को व्यवस्थित करने में सहायक नाम चुपचाप ऐसी पहचान तो नहीं बन गए जो मसीह में लिए गए बपतिस्मा से भी गहरी हों।

प्रभु की मेज़ पर उनके बल ने इस प्रश्न को ठोस बना दिया। मेज़ घोषणा करती है कि विश्वासी एक ही रोटी के भागी हैं क्योंकि वे एक ही देह के हैं। पौलुस लिखता है, "इसलिए, कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं" (1 कुरिन्थियों 10:17)। एक-दूसरे को तुच्छ जानते हुए साथ खाना उस चिह्न का खण्डन करना है।

इसलिए नी के कलीसिया-विज्ञान का सबसे सशक्त प्रयोग शायद उनकी ठीक-ठीक कलीसियाई शासन-प्रणाली को दोहराने के विषय में कम, और मसीही विभाजन पर उनकी व्याकुलता को फिर से पाने के विषय में अधिक है। क्या विश्वासी तिरस्कार के बिना सैद्धान्तिक दृढ़ता बनाए रख सकते हैं? क्या कलीसियाएँ वहाँ सहयोग कर सकती हैं जहाँ विवेक अनुमति देता है? क्या अगुवे उन मण्डलियों के फल पर आनन्द मना सकते हैं जिन पर उनका नियंत्रण नहीं है? क्या कोई स्थानीय कलीसिया स्वयं को धार्मिक बाज़ार में हिस्सेदारी के लिए प्रतिस्पर्धी के बजाय मसीह के लोगों के भण्डारी के रूप में देख सकती है?

नी की आरम्भिक सभाओं ने एक ऐसे स्वदेशी आत्मविश्वास को भी मूर्त रूप दिया जो वैश्विक मसीहियत के इतिहास में महत्त्वपूर्ण है। चीनी विश्वासी केवल कहीं और रचे गए धर्मविज्ञान के ग्रहणकर्ता नहीं थे। वे पवित्रशास्त्र पढ़ते, कलीसियाई रीति पर बहस करते, लिखते, सुसमाचार सुनाते, संगठित करते और कार्यकर्ताओं को भेजते थे। आन्दोलन ने पश्चिमी मसीहियत से बहुत कुछ पाया, फिर भी वह अधिकाधिक अपनी ही आवाज़ में बोलने लगा।

उस विकास ने मसीहियत के गुरुत्व-केन्द्र में एक व्यापक बदलाव का पूर्वाभास दिया। विश्वास एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में नाटकीय रूप से बढ़नेवाला था। नी पश्चिम के बाहर के उन आरम्भिक मसीही शिक्षकों का एक उदाहरण बने जिनके लेखन अन्ततः संसार भर के पाठकों को गढ़नेवाले थे।

साम्प्रदायिक नाम के बिना वह आन्दोलन, विरोधाभासी रूप से, बीसवीं सदी के सबसे पहचाने जानेवाले चीनी मसीही आन्दोलनों में से एक बन गया। उसका इतिहास एक साथ कृतज्ञता और सावधानी का निमंत्रण देता है: मसीह के सिर होने और विश्वासियों की एकता पर उसके आग्रह के लिए कृतज्ञता; और यह कल्पना करने के विरुद्ध सावधानी कि कोई भी ढाँचा उन वास्तविकताओं की गारंटी दे सकता है।

सामान्य मसीही जीवन

क्षमा से एकता तक

वॉचमैन नी की अनेक शिक्षाओं में से कोई भी उतनी दूर तक नहीं पहुँची जितना वह संदेश, जो बाद में अंग्रेज़ी में *सामान्य मसीही जीवन* (The Normal Christian Life) के नाम से प्रकाशित हुआ। यह पुस्तक नी ने एक ही निरन्तर पाण्डुलिपि के रूप में नहीं लिखी थी, बल्कि यह उनके प्रवचनों को जोड़कर तैयार की गई थी; फिर भी जो धर्मविज्ञान यह प्रस्तुत करती है, वह उनकी परिपक्व सेवकाई के केन्द्र के बहुत निकट है। यह एक ऐसा प्रश्न उठाती है जिसका सामना अनेक सच्चे मसीही देर-सवेर करते हैं: यदि मसीह ने मेरे पाप क्षमा कर दिए हैं, तो मैं अब भी इतनी निर्बलता, पराजय और स्व-प्रयास का अनुभव क्यों करता हूँ?

नी का उत्तर पापों और पापी के बीच, अर्थात् जो कुछ हमने किया है और जो कुछ हम आदम में हैं, उनके बीच भेद करने से आरम्भ होता है। मसीह का लहू दोष से निपटता है; मसीह का क्रूस पुराने मनुष्यत्व से भी निपटता है। इस भेद का उद्देश्य मसीह के कार्य को अलग-अलग उद्धारों में बाँटना नहीं, बल्कि विश्वासियों को परमेश्वर के उपाय की व्यापकता देखने में सहायता देना है।

पौलुस लिखता है, "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों 5:8)। सुसमाचार प्रतिस्थापन से आरम्भ होता है। यीशु हमारे लिये मरा। हमारे पापों को अनदेखा नहीं किया गया; उनका न्याय एक अन्य की मृत्यु में हुआ। विश्वासी अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है।

परन्तु पौलुस क्षमा से आगे बढ़ता है। "हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया" (रोमियों 6:6)। सम्बन्धसूचक शब्द बदलते ही दृष्टिकोण बदल जाता है। मसीह केवल हमारे लिये नहीं मरा; एक रहस्यमय परन्तु वास्तविक एकता में, विश्वासियों के विषय में कहा गया है कि वे उसके साथ मर गए।

नी के लिये यही पवित्रीकरण का द्वार था। परमेश्वर आदम से मिले पुराने जीवन को केवल क्षमा करके फिर उसे यह आज्ञा नहीं देता कि वह यीशु की नकल और अधिक सफलता से करे। वह विश्वासी को मसीह में रख देता है। जो कुछ मसीह के साथ हुआ, वह उनके लिये निर्णायक बन जाता है जो उसके हैं।

कुंजी है एकता।

"यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएँगे" (रोमियों 6:5)। इसलिए मसीहियत केवल दूर से की जाने वाली नैतिक नकल नहीं है। यह जी उठे मसीह के जीवन में सहभागिता है।

लहू और क्रूस

नी शिक्षा देने के एक साधन के रूप में प्रायः लहू और क्रूस की तुलना करते थे। लहू परमेश्वर के सामने दोष की समस्या का उत्तर है। क्रूस उस पुराने स्व की समस्या का उत्तर है जो पापमय जीवन का स्रोत है।

पवित्रशास्त्र निश्चय ही मसीह के लहू को केन्द्रीय स्थान देता है। "उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)। "जबकि हम, अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे?" (रोमियों 5:9)। परमेश्वर के साथ विश्वासी का मेल किसी सुधरे हुए आत्मिक प्रदर्शन पर नहीं, बल्कि मसीह के पूरे किए हुए बलिदान पर आधारित है।

नी के लिये यह बात पास्तरीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थी। जो मसीही आश्वासन के लिये लगातार अपने आप को ही देखते रहते हैं, उन्हें कभी स्थिर नींव नहीं मिलेगी। लहू परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किया जाता है। विश्वास उस मूल्य पर टिकता है जो परमेश्वर अपने पुत्र के बलिदान को देता है।

इसके बाद क्रूस स्व के गहरे प्रश्न को सम्बोधित करता है। मनुष्य केवल अलग-अलग पाप ही नहीं करते; वे स्वभाव से ही आदम की पतित मानवता के हैं। पौलुस कहता है, "जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे" (रोमियों 5:19)।

नी चाहते थे कि विश्वासी परमेश्वर से केवल आदम को सुधारने की विनती करना छोड़ दें। परमेश्वर का उत्तर क्षेत्र का स्थानान्तरण है: आदम से मसीह में, मृत्यु से जीवन में, शरीर से

आत्मा में।

यह ढाँचा यदि यह संकेत दे कि पवित्रशास्त्र स्वयं "लहू" को क्षमा तक और "क्रूस" को स्व तक सीमित करता है, तो इसे बहुत कठोरता से व्यक्त किया जा सकता है। बाइबल की भाषा किसी सुव्यवस्थित धर्मवैज्ञानिक तालिका के संकेत से कहीं अधिक एक-दूसरे में घुली-मिली है। फिर भी नी की पास्तरीय अन्तर्दृष्टि मूल्यवान बनी रहती है। सुसमाचार दोष और बन्धन दोनों से निपटता है। मसीह केवल वह नहीं है जो हमारा ऋण रद्द करता है; वह वह भी है जिसमें एक नई मानवता आरम्भ होती है।

जानना

नी ने रोमियों 6 को कुछ मुख्य शब्दों के चारों ओर व्यवस्थित किया — जानना, मानना, सौंपना (Know, Reckon, Present)। इनमें पहला है जानना।

"हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया" (रोमियों 6:6)।

पौलुस पाप के लिये मरा हुआ अनुभव करने की आज्ञा से आरम्भ नहीं करता। वह जानने योग्य एक तथ्य से आरम्भ करता है। नी ने इस पर अथक बल दिया। मसीही अनुभव को परमेश्वर के सम्पन्न किए हुए कार्य पर टिका होना चाहिए, न कि विश्वासी की बदलती भावनात्मक दशा पर।

मान लीजिए कि एक विश्वासी आत्मिक विजय के एक दिन के बाद जागता है और परमेश्वर को अपने निकट अनुभव करता है। वह सहज ही विश्वास कर सकता है कि वह "मसीह में" है। अगली सुबह वह चूक जाता है, क्रोधित हो जाता है, परीक्षा में पड़ जाता है, या आत्मिक रूप से ठण्डा अनुभव करता है। यदि मसीह के साथ उसकी एकता अनुभव पर निर्भर है, तो उसका धर्मविज्ञान उसकी मनोदशा के साथ चढ़ता-उतरता रहेगा।

पौलुस क्रम को भिन्न रीति से रखता है। परमेश्वर ने मसीह में कार्य किया। विश्वासी को यह जानने के लिये बुलाया गया है कि परमेश्वर ने क्या किया है।

इसका अर्थ यह नहीं कि केवल बौद्धिक जानकारी से पवित्रीकरण उत्पन्न होता है। कोई व्यक्ति रोमियों 6 को कण्ठस्थ कर सकता है, फिर भी स्वतंत्रता में न जीए। नी ने उस क्षण का वर्णन करने के लिये प्रकाशन की भाषा का प्रयोग किया जब बाइबल का सत्य आत्मिक रूप से दिखाई देने लगता है। उनकी शब्दावली रहस्यवादी लग सकती है, परन्तु उनकी

केन्द्रीय बात सीधी है: किसी सिद्धान्त को दोहराने और भीतर से उसके प्रति आश्वस्त होने में अन्तर है।

पौलुस प्रार्थना करता है कि विश्वासियों के मन की आँखें ज्योतिर्मय हों (इफिसियों 1:18)। आत्मिक समझ फिर भी प्रकट किए गए सत्य की ही समझ है; वह पवित्रशास्त्र से परे का कोई गुप्त ज्ञान नहीं है। पवित्र आत्मा विश्वासियों को उस बात को ग्रहण करने, स्वीकार करने और उसमें जीने के योग्य बनाता है जिसे परमेश्वर पहले ही प्रकट कर चुका है।

इस प्रकार जानना शब्द पवित्रीकरण को आत्म-सुधार का कार्यक्रम बनने से बचाता है। हम अपने इतिहास से नहीं, बल्कि मसीह के इतिहास से आरम्भ करते हैं।

मानना

दूसरा मुख्य शब्द है मानना।

"ऐसे ही तुम भी अपने आपको पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो" (रोमियों 6:11)।

मानना तथ्य के प्रति विश्वास का प्रत्युत्तर है। यह तथ्य को उत्पन्न नहीं करता। नी को हिसाब-किताब के उदाहरण प्रिय थे: यदि किसी खाते में सचमुच धन जमा किया गया है, तो खाताधारक उसे मौजूद मान सकता है। बिना जमा के मानना कल्पना मात्र होगा। परन्तु जो सचमुच दिया गया है उसे मानने से इनकार करना अविश्वास है।

यह भेद अत्यन्त आवश्यक है। कुछ मसीही "अपने आपको मरा समझो" सुनते हैं और अपने आप को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करते हैं कि अब परीक्षा का अस्तित्व ही नहीं है। जब परीक्षा लौट आती है, तो वे निष्कर्ष निकालते हैं कि सिद्धान्त विफल हो गया। पौलुस विश्वासियों से अनुभव को नकारने के लिये नहीं कह रहा। वह उनसे कह रहा है कि वे अपनी पहचान पाप की प्रभुता से नहीं, बल्कि मसीह के साथ एकता से निर्धारित करें।

पाप अब भी उपस्थित है, परन्तु वह अब उचित स्वामी नहीं है। "तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो" (रोमियों 6:14)।

इसलिए मानना कोई मनोवैज्ञानिक दिखावा नहीं है। यह मसीह में अपनी नई स्थिति के विषय में परमेश्वर से सहमत होना है।

नी का यह बल उन मसीहियों के लिये विशेष रूप से सामर्थी था जो संकल्प और विफलता के बार-बार लौटने वाले चक्रों में फँसे हुए थे। वे और अधिक प्रयत्न करने की

प्रतिज्ञा करते हैं, विफल होते हैं, अंगीकार करते हैं, फिर से समर्पण करते हैं और फिर से आरम्भ करते हैं। हर चक्र चुपचाप यह मान लेता है कि पर्याप्त दृढ़ निश्चय अन्ततः पवित्रता उत्पन्न कर देगा।

रोमियों 6 एक भिन्न आरम्भ-बिन्दु की घोषणा करता है। विश्वासी से यह नहीं कहा जाता कि वह पाप के साथ पुराने स्वामी-दास सम्बन्ध को और दृढ़ करे, बल्कि यह पहचाने कि मसीह में एक निर्णायक सम्बन्ध-विच्छेद हो चुका है।

विश्वास कहता है: मैं मसीह का हूँ। पाप मुझे लुभा सकता है, परन्तु वह मेरा स्वामी नहीं है। मेरी भावनाएँ मुझ पर दोष लगा सकती हैं, परन्तु वे मेरी स्थिति निर्धारित नहीं करतीं। यीशु का पुनरुत्थान-जीवन अब वह स्रोत है जिससे जीने के लिये मैं बुलाया गया हूँ।

सौंपना

तीसरा चरण है सौंपना।

"न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो" (रोमियों 6:13)।

जानना और मानना समर्पण की ओर ले जाते हैं। अनुग्रह निष्क्रियता नहीं है। विश्वासी सक्रिय रूप से अपनी देह, मन, समय, धन, सम्बन्ध, महत्त्वाकांक्षाएँ, योग्यताएँ और भविष्य परमेश्वर को सौंपता है।

फिर से क्रम पर ध्यान दीजिए: "मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर।" हम जीवित होने के लिये अपने आप को नहीं सौंपते। हम अपने आप को इसलिए सौंपते हैं क्योंकि मसीह में हम जीवित हैं।

नी ने इस क्रम को मुक्तिदायक पाया। समर्पण परमेश्वर के साथ मोल-भाव नहीं है —"यदि मैं तुझे पर्याप्त दूँ, तो शायद तू मुझे आशीष दे।" यह एक छुड़ाए गए व्यक्ति का उचित प्रत्युत्तर है।

रोमियों 12 भी ऐसी ही भाषा का प्रयोग करता है: "अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ" (रोमियों 12:1)। जो देह कभी स्व की सेवा करती थी, वह अब परमेश्वर के अधिकार में रख दी गई है।

इसके व्यावहारिक परिणाम हैं। समर्पित जीभ को लापरवाही से चुगली के हवाले नहीं किया जा सकता। समर्पित यौनिकता को निजी सम्पत्ति नहीं माना जा सकता। समर्पित बैंक

खाता केवल भूख-लालसा से संचालित नहीं हो सकता। समर्पित व्यवसाय आज्ञाकारिता से छूट नहीं पा सकता। समर्पित सेवकाई पर सेवक का स्वामित्व नहीं हो सकता।

नी कभी-कभी निरपेक्ष शब्दों में बोलते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि आंशिक समर्पण अपने आप में विरोधाभासी है। यदि मसीह प्रभु है, तो कोई भी कमरा ऐसा नहीं जो स्वभावतः हमारा हो।

ऐसी शिक्षा को अनुग्रह में जड़ पकड़े रहना चाहिए। समर्पण कोई वीरतापूर्ण भेंट नहीं जिससे हम परमेश्वर को प्रभावित करें। हम वही सौंपते हैं जो पहले ही मोल लिया जा चुका है। पौलुस लिखता है, "तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो" (1 कुरिन्थियों 6:19-20)।

तर्क है छुटकारे के द्वारा स्वामित्व।

इच्छा-शक्ति की विफलता

अनेक विश्वासी पवित्रता को मुख्यतः इच्छा-शक्ति के द्वारा पाने का प्रयत्न करते हैं। नी ने इच्छा के महत्त्व को नकारा नहीं; पवित्रशास्त्र चुनाव करने की आज्ञा देता है। उनकी आपत्ति इच्छा को आत्मिक जीवन का स्रोत मानने पर थी।

रोमियों 7 पर्याप्त सामर्थ्य के बिना सच्ची अभिलाषा की निराशा का सजीव चित्रण करता है: "क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता हूँ" (रोमियों 7:19)।

बोलने वाला नैतिक रूप से उदासीन नहीं है। वह भलाई चाहता है। फिर भी चाहना उसे स्वतंत्र नहीं करता।

नी ने रोमियों 7 में एक ऐसे विश्वासी को देखा जो आत्म-निर्भरता के दिवालियेपन को पहचान रहा है। व्यवस्था पवित्र है, परन्तु व्यवस्था सामर्थ्य प्रदान नहीं कर सकती। वह दिखा सकती है कि धार्मिकता कैसी दिखती है, और साथ ही उसे उत्पन्न करने में शरीर की असमर्थता को उजागर कर देती है।

तब पुकार निकलती है: "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (रोमियों 7:24)।

नी को इस प्रश्न का व्याकरण प्रिय था। यह "कौन-सी तकनीक" या "कौन-सा नियम" नहीं, बल्कि "कौन" है। उत्तर व्यक्तिगत है: "हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का

धन्यवाद हो" (रोमियों 7:25)।

रोमियों 7 पौलुस की मन-फिराव से पहले की दशा का वर्णन करता है, व्यवस्था के अधीन किसी विश्वासी का, या मसीही अनुभव के निरन्तर चलने वाले संघर्ष का—इस पर सदियों से वाद-विवाद होता रहा है। नी की व्याख्या अनेक व्याख्याओं में से एक है। फिर भी उनका प्रयोग सामर्थी बना रहता है: आत्मिक विजय मसीह में मिलती है, स्वाधीन इच्छा में नहीं।

इच्छा अनुग्रह के साथ सहयोग करती है; वह अनुग्रह का निर्माण नहीं करती।

जीवन की आत्मा की व्यवस्था

रोमियों 8 उस बात को प्रस्तुत करता है जिसे नी एक नई संचालक शक्ति मानते थे।

"क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया" (रोमियों 8:2)।

नी प्राय: "व्यवस्था" को एक स्थिर नियम के रूप में समझाते थे। गुरुत्वाकर्षण बिना निरन्तर सचेत प्रयास के कार्य करता है। नैतिक क्षेत्र में पाप की व्यवस्था भी वैसी ही अडिग प्रतीत होती है: यदि हमें अपने ही भरोसे छोड़ दिया जाए, तो पतित प्रवृत्तियाँ नीचे की ओर खींचती हैं। परन्तु मसीह में एक और व्यवस्था कार्य करती है—जीवन की आत्मा।

यह चित्र वैज्ञानिक रूप से सटीक नहीं, परन्तु आत्मिक रूप से अर्थपूर्ण है। हवाई जहाज़ गुरुत्वाकर्षण को समाप्त नहीं करता; शक्तियों का एक और समूह उड़ान को सम्भव बनाता है। मसीही जीवन में पवित्र आत्मा मनुष्य की निर्बलता को लुप्त नहीं कर देता। वह ऐसी सामर्थ्य देता है जो शरीर में स्वाभाविक रूप से नहीं है।

पौलुस आगे कहता है: "इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं" (रोमियों 8:14)। इसलिए मसीही जीवन केवल यीशु से सीखे गए सिद्धान्तों के अनुसार जीना नहीं है। यह भीतर वास करने वाले आत्मा पर सक्रिय निर्भरता में जीना है।

यह निर्भरता सम्बन्ध पर आधारित है। आत्मा गवाही देता है कि हम सन्तान हैं, निर्बलता में सहायता करता है, मध्यस्थता करता है, और मसीह का जीवन उत्पन्न करता है।

आत्मा के विषय में नी की शिक्षा उनके बाद के लेखों में कभी-कभी अत्यधिक विश्लेषणात्मक हो जाती थी, विशेषकर जब वे आत्मा, प्राण और देह के बीच भेद करते थे।

परन्तु *सामान्य मसीही जीवन* तब सबसे सशक्त है जब वह सरल बनी रहती है: परमेश्वर ने विश्वासी को मसीह को पुनः उत्पन्न करने के लिये अकेला नहीं छोड़ा। मसीह का आत्मा विश्वासी के भीतर वास करता है।

मसीह हमारा जीवन

नी की आत्मिकता का हृदय पौलुस के इस वाक्यांश में समेटा जा सकता है: "मसीह जो हमारा जीवन है" (कुलुस्सियों 3:4)।

सामान्य मसीही जीवन मसीह और साथ में एक अत्यधिक विकसित धार्मिक स्व नहीं है। यह मसीह है—स्रोत के रूप में।

नी प्रायः इसे सद्गुणों पर लागू करते थे। विश्वासी परमेश्वर से धीरज माँगता है और धीरजवान बनने का प्रयत्न करता है। नी प्रश्न की दिशा बदल देते हैं: मसीह स्वयं हमारा धीरज है। विश्वासी विजय को ऐसे माँगता है मानो वह कोई वस्तु हो; नी कहते हैं कि विजय विजेता में पाई जाती है।

पौलुस लिखता है कि मसीह यीशु "जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धार्मिकता, और पवित्रता, और छुटकारा" (1 कुरिन्थियों 1:30)। यह भाषा व्यक्तिगत है। परमेश्वर केवल अमूर्त आत्मिक संसाधन नहीं बाँटता; वह मसीह को देता है।

यह बल मसीहियत को टुकड़ों में बँटने से बचाता है। हम आत्मिक उन्नति को तकनीकों के संग्रह में बदल सकते हैं: क्रोध के लिये एक विधि, चिन्ता के लिये दूसरी, प्रार्थना के लिये तीसरी, परीक्षा के लिये चौथी। व्यावहारिक बुद्धि का महत्त्व है, परन्तु नी बार-बार केन्द्र की ओर लौटते हैं। कोई भी तकनीक मसीह में बने रहने का स्थान नहीं ले सकती।

यीशु ने कहा, "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते" (यूहन्ना 15:4)।

डाली वीरतापूर्ण एकाग्रता के द्वारा अंगूर उत्पन्न नहीं करती। फल साझे जीवन से आता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि आत्मिक अनुशासन अनावश्यक हैं। प्रार्थना, पवित्रशास्त्र, संगति, अंगीकार, आज्ञाकारिता, उपवास, आराधना और सेवा ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा

विश्वासी परमेश्वर की ओर ध्यान देते और उसे प्रत्युत्तर देते हैं। परन्तु वे जीवन उत्पन्न करने वाली मशीनें नहीं हैं। जीवन मसीह है।

क्रूस और स्व-प्रयास

क्रूस के विषय में नी का धर्मविज्ञान स्पष्ट पापों पर विजय से आगे जाता था। उन्होंने धार्मिक सेवा में स्व-प्रयास को एक गहरी समस्या के रूप में देखा। शरीर प्रचार कर सकता है, संगठित कर सकता है, अगुवाई कर सकता है, त्याग कर सकता है, और आत्मिक दिखाई दे सकता है।

पौलुस गलातियों से पूछता है, "आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?" (गलातियों 3:3)। खतरा यह नहीं कि उन्होंने अनैतिकता के लिये मसीहियत को छोड़ दिया था। उन्होंने उस कार्य को शरीर के द्वारा पूरा करने का प्रयत्न किया जिसे परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा आरम्भ किया था।

यह प्रश्न आज भी पीड़ादायक रूप से प्रासंगिक है। कलीसियाएँ प्रार्थना में आरम्भ होकर तकनीक में समाप्त हो सकती हैं। अगुवे बुलाहट से आरम्भ करके आँकड़ों के वश में हो सकते हैं। एक विश्वासी मसीह पर निर्भरता से आरम्भ करके धीरे-धीरे आत्मिक अनुशासनों को स्वयं को सही ठहराने की एक व्यवस्था में बदल सकता है।

नी का विश्वास था कि क्रूस स्वतंत्र स्व को निरन्तर उजागर करता है। यह व्यक्तित्व, योग्यता या योजना को तुच्छ जानने का निमंत्रण नहीं है। यह स्वतंत्रता को संचालक स्रोत के रूप में अस्वीकार करने की बुलाहट है।

यीशु ने स्वयं कहा, "मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)। यह कथन चकित करने वाला है, क्योंकि चेले स्पष्ट रूप से अनेक काम कर सकते थे। वे चल सकते थे, बोल सकते थे, संगठित कर सकते थे और निर्णय ले सकते थे। "कुछ भी नहीं" का अर्थ है मसीह के साथ एकता से अलग स्थायी आत्मिक फलवन्तता में से कुछ भी नहीं।

स्व-प्रयास तब विशेष रूप से धोखा देने वाला होता है जब वह सफल होता है। विफलता हमें परमेश्वर की ओर धकेल सकती है; सफलता हमें यह विश्वास दिला सकती है कि अब हमें उसकी आवश्यकता नहीं।

क्रूस सेवकाई को मन का दीन बनाए रखता है।

वस्तुगत और व्यक्तिगत

नी का एक उपयोगी भेद मसीह के वस्तुगत कार्य और पवित्र आत्मा के व्यक्तिगत (आन्तरिक) कार्य के बीच है। वस्तुगत रूप से, मसीह मर चुका है, जी उठा है, स्वर्ग पर चढ़ गया है, और छुटकारे को पूरा कर चुका है। व्यक्तिगत रूप से, आत्मा मसीह की वास्तविकता को विश्वासी के अनुभव में प्रभावी बनाता है।

यदि हम केवल वस्तुगत पर बल दें, तो मसीहियत ऐसा सही सिद्धान्त बनकर रह सकती है जिसमें परिवर्तन बहुत कम हो। यदि हम वस्तुगत नींव के बिना व्यक्तिगत अनुभव पर बल दें, तो आत्मिकता अस्थिर हो जाती है और भ्रम की चपेट में आ सकती है।

पौलुस दोनों को साथ रखता है। "इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (रोमियों 8:1) वस्तुगत आश्वासन है। फिर भी वही अध्याय कहता है, "यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे" (रोमियों 8:13), जो सक्रिय, अनुभवजन्य परिवर्तन का वर्णन करता है।

नी की सर्वोत्तम शिक्षा तथ्य और अनुभव को उनके उचित क्रम में रखती है। हम अनुभव के द्वारा कोई स्थिति प्राप्त नहीं करते; हम उसका अनुभव करते हैं जो अनुग्रह ने दे दिया है।

यह क्रम तब अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है जब भावनाएँ विश्वास का खण्डन करती हैं। एक विश्वासी अपने को दोषी अनुभव कर सकता है, फिर भी मसीह में रोमियों 8:1 सत्य बना रहता है। वह अपने को दास अनुभव कर सकता है, फिर भी रोमियों 6 एक नई प्रभुता की घोषणा करता है। वह अपने को त्यागा हुआ अनुभव कर सकता है, फिर भी आत्मा लेपालकपन की गवाही देता है।

विश्वास भावनाओं को नकारता नहीं। वह उन्हें सिंहासन पर बैठाने से इनकार करता है।

परीक्षा और पाप की उपस्थिति

विजय की शिक्षा के कुछ पाठकों ने यह मान लिया है कि एक परिपक्व मसीही को ऐसी दशा तक पहुँच जाना चाहिए जिसमें परीक्षा लगभग लुप्त हो जाए। नी की भाषा को कभी-कभी उस दिशा में पढ़ा जा सकता है, परन्तु नया नियम इससे अधिक संयमित चित्र प्रस्तुत करता है।

पौलुस विश्वासियों को चेतावनी देता है, "जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े" (1 कुरिन्थियों 10:12)। पतरस कहता है, "सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए" (1 पतरस 5:8)। याकूब मसीहियों को सिखाता है कि जब परीक्षा आए तब कैसे प्रत्युत्तर दें—यह नहीं कि परीक्षा केवल सैद्धान्तिक रूप से सम्भव हो तो क्या करें।

पाप की प्रभुता से स्वतंत्रता का अर्थ पाप की उपस्थिति से स्वतंत्रता नहीं है। आदम में विश्वासी की पुरानी पहचान का न्याय हो चुका है, परन्तु महिमा पाने तक शरीर संघर्ष का एक वर्तमान क्षेत्र बना रहता है।

मानने पर नी के बल को सिद्धतावाद के बिना सुरक्षित रखा जा सकता है: मसीही एक नई स्थिति से परीक्षा का सामना करता है। उसे आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं।

पौलुस आज्ञा देता है, "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे" (गलातियों 5:16)। चलना निरन्तर होता है। निर्भरता क्षण-प्रतिक्षण की होती है।

इसलिए विजय कोई आत्मिक सम्पत्ति नहीं जिसे अलग से संचित करके रखा जाए। विश्वासी कभी मसीह से आगे निकलकर उत्तीर्ण नहीं हो जाता। कल की निर्भरता को आज के लिये स्वाधीन सामर्थ्य के रूप में जमा नहीं किया जा सकता।

यही एक कारण है कि मसीही जीवन दीन बना रहता है। हर घड़ी हमें फिर से अनुग्रह के पास ले आती है।

अनुग्रह और उत्तरदायित्व

नी की "परमेश्वर ने जो किया है उसमें विश्राम करना" वाली भाषा को कभी-कभी निष्क्रियतावाद समझ लिया गया है, मानो विश्वासियों को निष्क्रिय होकर मसीह के कार्य करने की प्रतीक्षा करनी चाहिए और स्वयं कोई जान-बूझकर चुनाव नहीं करना चाहिए। परन्तु नया नियम अनुग्रह और परिश्रम को इस रीति से जोड़ता है कि ऐसा अलगाव टिक नहीं पाता।

पौलुस कहता है, "मैंने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया तो भी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था" (1 कुरिन्थियों 15:10)। उसने परिश्रम किया, फिर भी स्रोत अनुग्रह था।

फिलिप्पियों को वह लिखता है, "डरते और काँपते हुए अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है" (फिलिप्पियों 2:12-13)। परमेश्वर का भीतरी कार्य मनुष्य के प्रत्युत्तर की नींव है।

इसलिए नी की शिक्षा का परिपक्व रूप "कुछ मत करो" नहीं है। वह है "स्वतंत्र होकर कुछ मत करो।" आज्ञा मानो, परन्तु विश्वास से। पाप का विरोध करो, परन्तु मसीह के साथ एकता से। सेवा करो, परन्तु आत्मा की आपूर्ति से। देह को अनुशासित करो, परन्तु अनुशासन को उद्धारकर्ता मानकर उस पर भरोसा मत करो।

यह सन्तुलन कठिन है, क्योंकि मनुष्य या तो नियंत्रण पसन्द करते हैं या निष्क्रियता। अनुग्रह हमें सक्रिय निर्भरता में बुलाता है।

सामान्य जीवन मसीह है

जब इतने सारे विश्वासी इससे कम कुछ अनुभव करते हैं, तो इसे सामान्य मसीही जीवन क्यों कहें? नी ने "सामान्य" शब्द का प्रयोग संघर्ष को नकारने के लिये नहीं, बल्कि नए नियम में प्रकट जीवन के मानक का वर्णन करने के लिये किया। पराजय, आत्म-निर्भरता और आत्मिक दरिद्रता आम हो सकती हैं, परन्तु वे मसीही अस्तित्व का अभिप्रेत मापदण्ड नहीं हैं।

सामान्य जीवन कोई चकाचौंध भरा प्रदर्शन नहीं है। यह निरन्तर आनन्दातिरेक, चमत्कारी सामर्थ्य या सार्वजनिक सफलता नहीं है। यह साधारण आज्ञाकारिता में प्रकट होता हुआ मसीह है।

यह ऐसा दिखता है: अन्याय होने पर क्षमा। परीक्षा सामने होने पर पवित्रता। जब कोई न देखे तब उदारता। जब चिन्ता बढ़े तब प्रार्थना। जब आज्ञाकारिता की कीमत चुकानी पड़े तब साहस। प्रशंसा होने पर नम्रता। गलती होने पर पश्चाताप। कठिन लोगों के प्रति प्रेम। छिपी हुई सेवा में विश्वासयोग्यता।

पौलुस का महान कथन न तो नाटकीय है और न अस्पष्ट: "मेरे लिये जीवित रहना मसीह है" (फिलिप्पियों 1:21)।

नी का स्थायी योगदान यह प्रश्न पूछना है कि क्या मसीहियों ने सुसमाचार को क्षमा और नैतिक प्रयास तक घटा दिया है। यदि ऐसा है, तो रोमियों 5-8 एक अनखोजे देश की तरह प्रतीक्षा कर रहा है।

मसीह हमारे लिये मरा। हम मसीह के साथ मर गए। हम उसमें परमेश्वर के लिये जीवित हैं। आत्मा भीतर वास करता है। हम अपने आप को इसलिए सौंपते हैं क्योंकि हम एक अन्य के हैं। हम शरीर के संसाधनों से नहीं, बल्कि मसीह के जीवन से चलते हैं।

विश्वासी की सबसे गहरी आवश्यकता स्व का कोई अधिक बलवान रूप नहीं है। वह मसीह का अधिक स्पष्ट दर्शन और उस पर अधिक पूर्ण निर्भरता है।

जैसा कि नी आगे इफिसियों से सिखाएँगे, वही मसीह केवल विश्वासी का भीतरी जीवन नहीं है। वह वह है जिसमें कलीसिया स्वर्गीय स्थानों में बैठाई गई है। मसीही चलना या खड़े रहना सीखे, उससे पहले उसे बैठना सीखना होगा।

रोमियों 5: दो मानवताएँ

नी का पवित्रीकरण-सम्बन्धी संदेश आंशिक रूप से आदम और मसीह के बीच पौलुस की तुलना पर टिका है। "जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे" (1 कुरिन्थियों 15:22)। रोमियों 5 इसी सामूहिक तर्क को विकसित करता है।

पश्चिमी व्यक्तिवाद उद्धार को ऐसा बना सकता है मानो परमेश्वर अलग-थलग व्यक्तियों की मरम्मत कर रहा हो। पौलुस दो प्रतिनिधि सिरों के अधीन दो मानवताओं का वर्णन करता है। आदम की आज्ञा-उल्लंघन से पाप और मृत्यु का राज्य आरम्भ होता है; मसीह की आज्ञाकारिता से अनुग्रह और जीवन का राज्य आरम्भ होता है।

इससे "मसीह में" को अपार महत्त्व मिलता है। विश्वासी की पहचान केवल एक क्षमा पाया हुआ आदम नहीं है जो फिर से प्रयत्न कर रहा है। वह उस नई मानवता का है जिसका सिर मसीह है।

इस पौलुसीय ढाँचे के भीतर रखे जाने पर नी का संदेश कम रहस्यवादी हो जाता है। मसीह के साथ एकता कोई मनोवैज्ञानिक विलय नहीं है। यह जी उठे प्रभु में वाचा-सम्बन्धी, आत्मिक और सामूहिक सहभागिता है।

मानना और मानसिक स्वास्थ्य

मानने के विषय में नी की भाषा तब मुक्तिदायक होती है जब वह पहचान को मसीह में स्थिर करती है। परन्तु यह हानिकारक बन सकती है यदि कोई विश्वासी इसका प्रयोग आघात,

अवसाद, अनचाहे विचारों या शारीरिक सीमाओं को नकारने के लिये करे।

"अपने आपको पाप के लिये मरा समझो" का अर्थ "यह दिखावा करो कि पीड़ा वास्तविक नहीं है" नहीं है। मसीहियत भावनात्मक मिथ्याचार की माँग नहीं करती।

पौलुस स्वयं कह सकता था, "हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे" (2 कुरिन्थियों 1:8), और साथ ही परमेश्वर पर भरोसा करता रहा। विश्वास और मानसिक पीड़ा एक साथ रह सकते हैं।

एक परिपक्व प्रयोग आत्मिक पहचान और मानवीय दशा के बीच भेद करता है। मैं मसीह में हो सकता हूँ और फिर भी मुझे परामर्श, चिकित्सा, नींद, शोक से उबरने की प्रक्रिया, मेल-मिलाप या व्यावहारिक परिवर्तन की आवश्यकता हो सकती है।

सहायता के सृष्ट साधनों से अनुग्रह को कोई खतरा नहीं है।

अनुशासन का स्थान

क्योंकि नी ने स्व-प्रयास की तुलना में अनुग्रह पर बल दिया, इसलिए पाठक सोच सकते हैं कि अनुशासन का स्थान कहाँ है। पौलुस अनुग्रह और प्रशिक्षण को जोड़कर इसका उत्तर देता है।

"मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूँ" (1 कुरिन्थियों 9:27)। "भक्ति में खुद को प्रशिक्षित कर" (1 तीमुथियुस 4:7)।

अनुशासन तब व्यवस्थावादी बन जाता है जब उसका प्रयोग स्वीकृति कमाने या आत्मिक श्रेष्ठता उत्पन्न करने के लिये किया जाता है। वह तब अनुग्रह का साधन बनता है जब उसका अभ्यास स्वीकृति की स्थिति से किया जाता है।

बैठा हुआ विश्वासी प्रार्थना का एक नियम रख सकता है, पवित्रशास्त्र कण्ठस्थ कर सकता है, उपवास कर सकता है, बजट बना सकता है, परीक्षा में डालने वाले वातावरण से बच सकता है, और आदतें स्थापित कर सकता है—ठीक इसलिए कि वह अपने आप को बचाने का प्रयत्न नहीं कर रहा।

अनुग्रह प्रयास को समाप्त नहीं करता, बल्कि उसे प्रशिक्षित करता है।

रोमियों 5-8: छुटकारे का मानचित्र

रोमियों की नी की व्याख्या उनकी अन्तरराष्ट्रीय विरासत के सबसे प्रभावशाली भागों में से एक बन गई, क्योंकि उन्होंने इन अध्यायों को दोष से स्वतंत्रता की ओर एक यात्रा के रूप में पढ़ा। उस पठन की शक्ति इस बात में है कि वह ऐसी कई समस्याओं के बीच भेद करता है जिन्हें मसीही प्रायः एक ही में मिला देते हैं।

रोमियों 1-5 पापों और धर्मी ठहराए जाने पर बल देता है। मानवता परमेश्वर के सामने दोषी खड़ी है, और उत्तर है मसीह का लहू और उसकी धार्मिकता। "जबकि हम, अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे?" (रोमियों 5:9)। क्षमा उससे निपटती है जो हमने किया है।

इसके बाद रोमियों 5 दृश्य को अलग-अलग कार्यों से बढ़ाकर सामूहिक पहचान तक ले जाता है। मानवता को आदम में और मसीह में देखा जाता है। "जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे" (रोमियों 5:19)। नी ने यहाँ इतिहास का परिवर्तन देखा। उद्धार केवल सुधरा हुआ आदम नहीं है; यह मसीह में स्थानान्तरण है।

रोमियों 6 उस एकता को पाप की प्रभुता पर लागू करता है। "हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएँ?" (रोमियों 6:2)। नी ने आज्ञा से पहले तथ्य-कथन पर बल दिया। पौलुस विश्वासियों से यह कहकर आरम्भ नहीं करता कि वे और ज़ोर लगाकर मरें। वह उन्हें बताता है कि मसीह के साथ एकता में क्या हो चुका है। फिर उन्हें आज्ञा दी जाती है कि वे उस तथ्य को मानें और अपने आप को परमेश्वर को सौंपें।

मानने की भाषा नी के लिये केन्द्रीय बन गई। मानना कल्पना नहीं है। यदि किसी बैंक खाते में सचमुच धन है, तो मानने का अर्थ है उस शेष राशि को वास्तविक मानकर चलना। विश्वास जमा-राशि को उत्पन्न नहीं करता। इसी प्रकार, नी ने तर्क दिया, विश्वास पुराने मनुष्यत्व को क्रूस पर नहीं चढ़ाता; परमेश्वर ने मसीह में कार्य किया है। विश्वास परमेश्वर के निर्णय से सहमत होता है।

फिर भी रोमियों 7 विजयवादी भ्रान्ति को रोकता है। जो विश्वासी व्यवस्था की भलाई को जानता है, वह भी पीड़ादायक असमर्थता को खोज सकता है: "क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता हूँ" (रोमियों 7:19)। नी ने इस संघर्ष में आत्म-विश्वास के ढह जाने को सुना। बार-बार

दोहराया गया "मैं" अन्ततः इस पुकार तक पहुँचता है, "मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (रोमियों 7:24)।

प्रश्न का व्याकरण महत्त्वपूर्ण है: कौन, न कि क्या। छुटकारा अन्ततः कोई विधि नहीं है। "हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो" (रोमियों 7:25)।

इसके बाद रोमियों 8 जीवन की आत्मा की व्यवस्था को प्रस्तुत करता है। "क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया" (रोमियों 8:2)। नी को एक ऊँची व्यवस्था के द्वारा निचली व्यवस्था पर विजय पाने का चित्र प्रिय था। गुरुत्वाकर्षण वास्तविक बना रहता है, परन्तु उड़ान में वायुगतिकीय उत्थापन उसके प्रभाव पर विजय पा सकता है। पाप एक शत्रुतापूर्ण शक्ति बना रहता है, परन्तु भीतर वास करने वाला आत्मा विश्वासी को एक नए संचालक नियम के अधीन ले आता है।

इस उपमा की सीमाएँ हैं। मसीही पवित्रीकरण व्यक्तिगत, सम्बन्धात्मक और नैतिक है, यांत्रिक नहीं। आत्मा कोई अव्यक्तिगत शक्ति नहीं जो किसी तकनीक से अपने आप सक्रिय हो जाए। पौलुस वर्णन करता है कि विश्वासी आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं, आत्मा के द्वारा देह की क्रियाओं को मारते हैं, "हे अब्बा, हे पिता" कहकर पुकारते हैं, मसीह के साथ दुःख उठाते हैं, आशा रखते हैं, प्रार्थना करते हैं, और पुत्र के स्वरूप में ढाले जाते हैं। रोमियों 8 किसी विजय-सूत्र से कहीं अधिक समृद्ध है।

यह व्यापक सन्दर्भ नी के दो सम्भावित गलत पठनों को सुधारता है। पहला, मसीह के साथ एकता का अर्थ यह नहीं कि परिपक्व मसीही परीक्षा या भीतरी संघर्ष का अनुभव करना बन्द कर देते हैं। दूसरा, मसीह में विश्राम करने का अर्थ निष्क्रियता नहीं है। पौलुस सक्रिय रूप से सौंपने, पाप के राज्य को अस्वीकार करने, आत्मा की सामर्थ्य से देह की क्रियाओं को मारने, और धीरज से आशा बनाए रखने की आज्ञा देता है।

नी का स्थायी योगदान थके हुए मसीहियों से यह कहना था कि पवित्रीकरण अपने आप पर अधिक भरोसे से आरम्भ नहीं होता। यह इस बात को देखने से आरम्भ होता है कि परमेश्वर ने मसीह में क्या किया है। विश्वासी एक नई पहचान से लड़ता है, एक नई पहचान पाने के लिये नहीं। अनुशासन, अंगीकार, संगति और परीक्षा का व्यावहारिक प्रतिरोध—ये सब महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु इनमें से कोई भी उद्धारकर्ता नहीं बनता।

रोमियों 8 का गन्तव्य केवल व्यक्तिगत विजय नहीं है। वह मसीह के अनुरूप होना है: जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया, उन्हें उसने "पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के

स्वरूप में हों" (रोमियों 8:29)। सामान्य मसीही जीवन, अपनी सबसे गहराई में, ऐसा जीवन नहीं है जिसमें विश्वासी अपनी आत्मिक सफलता से प्रभावित हो जाए। यह ऐसा जीवन है जिसमें पुत्र बढ़ते-बढ़ते दिखाई देने लगता है।

बैठो: मसीह में हमारी स्थिति

मसीही जीवन की अनोखी शुरुआत

वॉचमैन नी की छोटी-सी पुस्तक *बैठो, चलो, खड़े रहो (Sit, Walk, Stand)* ने इफिसियों के सन्देश को तीन क्रियाओं में समेट दिया। अपनी सरलता के कारण वह याद रह जाती थी। पहला शब्द सबसे अधिक चौंकाता है: बैठो। मनुष्य का धर्म गतिविधि से शुरू होता है। हम पूछते हैं कि हमें क्या करना है, कहाँ जाना है, कौन-सा अनुशासन साधना है, कौन-सा बलिदान चढ़ाना है। पर पौलुस इफिसियों की शुरुआत कहीं और से करता है—इस बात से कि परमेश्वर ने मसीह में क्या किया है, और जो उसके हैं उन्हें परमेश्वर ने कहाँ रखा है।

"परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिससे उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया ... और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया" (इफिसियों 2:4-6)।

नी ने "बैठो" में अनुग्रह का पूरा धर्मविज्ञान देखा। बैठा हुआ व्यक्ति किसी स्थान तक पहुँचने के लिए संघर्ष नहीं कर रहा होता; वह उस स्थान पर बैठा है जो उसके लिए पहले से तैयार किया गया है। मसीही जीवन उपलब्धि से नहीं, बल्कि ग्रहण करने से आरम्भ होता है।

यह आलस्य नहीं है। यह क्रम है। इससे पहले कि विश्वासी इफिसियों 4 के अनुसार योग्य चाल चल सके या इफिसियों 6 के अनुसार बुराई के विरुद्ध खड़ा रह सके, उसे उस अनुग्रह को समझना होगा जिसकी घोषणा इफिसियों 1-3 में की गई है। कर्तव्य पहचान से उपजता है। आचरण स्थिति से उपजता है। आज्ञा का आधार उस सच्चाई में है जो पहले ही घोषित की जा चुकी है।

यह सिद्धान्त पौलुस की पत्रियों में जगह-जगह दिखाई देता है। "तो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो" (कुलुस्सियों 3:1)। पहले मसीह के

साथ जिलाया जाना; फिर खोज में रहना। "यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी" (गलातियों 5:25)। पहले जीवन; फिर चाल।

नी को डर था कि बहुत से मसीही इस क्रम को उलट देते हैं। वे बैठने का स्थान कमाने के लिए चलने का प्रयास करते हैं। वे स्वीकार किए जाने के लिए सेवा करते हैं, परमेश्वर को अपने पक्ष में करने के लिए प्रार्थना करते हैं, यह सिद्ध करने के लिए परीक्षा का सामना करते हैं कि वे आत्मिक हैं, और अपनी पहचान पक्की करने के लिए सेवकाई में परिश्रम करते हैं। परिणाम है थकावट, क्योंकि मसीही जीवन एक परिवीक्षा-परीक्षा बनकर रह जाता है।

इफिसियों कहता है कि वह परीक्षा किसी दूसरे ने पहले ही उत्तीर्ण कर ली है। विश्वासी "प्रिय में ग्रहण किया गया" है, जैसा पुराने अंग्रेज़ी अनुवाद कहते हैं, या उस प्रिय में अनुग्रह पाया हुआ है। मसीही अपनी यात्रा मसीह की स्वीकृति के भीतर से आरम्भ करता है।

हर प्रकार की आत्मिक आशीष से आशीषित

पौलुस इफिसियों का आरम्भ स्तुति की एक धारा से करता है: "हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है" (इफिसियों 1:3)।

व्याकरण महत्त्वपूर्ण है। परमेश्वर ने "आशीष दी है।" आशीषें "मसीह में" रखी गई हैं। विश्वासी की मूल आत्मिक सम्पत्ति कोई भावी सम्भावना नहीं जिसे कमाना बाकी हो, बल्कि पुत्र में मिली एक वर्तमान मीरास है।

नी ने इस सत्य के द्वारा मसीही आत्मिकता में पाई जानेवाली कंगाली की मानसिकता को चुनौती दी। विश्वासी प्रायः परमेश्वर से वही माँगते हैं जो वह मसीह में पहले ही दे चुका है। वे ऐसे प्रार्थना करते हैं मानो वे पिता के घर के बाहर खड़े आत्मिक भिखारी हों, जबकि इफिसियों उन्हें ऐसी गोद ली हुई सन्तान बताता है जिनके पास मीरास है।

इसका अर्थ यह नहीं कि हर आशीष का अनुभव अभी पूरी परिपूर्णता में हो रहा है। छुटकारे की बनावट ऐसी है कि कुछ हो चुका है और कुछ अभी बाकी है। हम देह के छुटकारे और सब बातों की पूर्णता की बाट जोहते हैं। परन्तु निर्णायक दान दिया जा चुका है: स्वयं मसीह।

पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने हमें मसीह में चुन लिया, लेपालक पुत्र होने के लिए हमें पहले से ठहराया, उस प्रिय में हम पर अनुग्रह किया, उसके लहू के द्वारा छुटकारा दिया,

अपनी इच्छा का भेद हम पर प्रगट किया, पवित्र आत्मा से हम पर छाप लगाई, और आत्मा को हमारी मीरास के बयाने के रूप में दिया (इफिसियों 1:4-14)।

हर वाक्यांश ध्यान को अपने बल पर उपजाई गई आत्मिकता से हटाकर कहीं और ले जाता है। पिता योजना बनाता है, पुत्र उसे पूरा करता है, आत्मा उस पर छाप लगाता है। उद्धार त्रिएक परमेश्वर का अनुग्रह है।

स्थिति पर नी का ज़ोर सबसे स्वस्थ तब होता है जब उसे आराधना के इसी ढाँचे के भीतर पढ़ा जाए। "बैठना" ज़िम्मेदारी से बचने की कोई तरकीब नहीं है। यह उस व्यक्ति की मुद्रा है जो परमेश्वर की पहल से अभिभूत हो गया है।

मसीह में चुने हुए

"जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसकी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष हों" (इफिसियों 1:4)।

मसीही लोग सदियों से परमेश्वर के चुनाव और मनुष्य के प्रत्युत्तर के आपसी सम्बन्ध पर वाद-विवाद करते आए हैं। नी ने इस विवाद को अपनी सेवकाई का केन्द्र नहीं बनाया। उसकी रुचि अधिकतर इस बात में थी कि पौलुस के शब्दों का चरवाही प्रभाव क्या है: मसीही की कहानी किसी मानवीय संयोग से नहीं, बल्कि परमेश्वर के अभिप्राय से आरम्भ होती है।

इससे स्थिरता मिलती है। कोई विश्वासी अपने अतीत को देखकर उसमें असफलताओं, घावों, मूर्खतापूर्ण निर्णयों और असम्भव-सी परिस्थितियों की एक लम्बी शृंखला देख सकता है। इफिसियों उसकी आँखों को और भी पीछे ले जाता है। जगत की उत्पत्ति से पहले ही परमेश्वर का छुटकारे का अभिप्राय मसीह पर केन्द्रित था।

यह अभिप्राय केवल नरक से बचा लेना नहीं है। पौलुस कहता है, "कि हम उसकी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष हों।" अनुग्रह का एक निश्चित नैतिक रूप है जिसकी ओर वह ले जाता है। चुनाव आत्मिक लापरवाही का कारण नहीं, बल्कि आराधना और पवित्रता का कारण है।

नी ने बार-बार चेतावनी दी कि स्थिति को दशा से अलग न किया जाए। यह जानना कि हम मसीह में बैठाए गए हैं, यह दावा करना नहीं है कि हमारे आचरण का हर पहलू अपने-आप परिपक्व हो गया है। यह उस स्रोत को पहचानना है जिससे परिवर्तन आगे बढ़ता है।

बच्चा इसलिए आज्ञा नहीं मानता कि वह सन्तान बन जाए; वह आज्ञा इसलिए मानता है क्योंकि वह सन्तान है। लेपालकपन पुत्र-जीवन से पहले आता है।

पौलुस लिखता है कि परमेश्वर ने "हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों" (इफिसियों 1:5)। इसलिए मसीही की आज्ञाकारिता किसी के अपने होने का प्रत्युत्तर है, किसी अनाथ की परख-परीक्षा नहीं।

उसके लहू के द्वारा छुटकारा

"हमको मसीह में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, परमेश्वर के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है" (इफिसियों 1:7)।

नी का यह अभिप्राय कभी नहीं था कि "बैठना" विश्वासी को क्रूस से अलग कर दे। स्वर्गीय स्थिति केवल इसलिए है कि मसीह मृत्यु में उतरा। अनुग्रह हमारे लिए सेंत-मेंत है क्योंकि उसके लिए वह बहुत महँगा था।

"अनुग्रह के धन" वाक्यांश नी के दर्शन में बहुत महत्त्वपूर्ण था। परमेश्वर अनिच्छा से क्षमा नहीं करता, मानो दया कोई अपवाद हो जिसे किसी कठोर देवता से बड़ी कठिनाई से निकलवाया गया हो। छुटकारा परमेश्वर के अनुग्रह की भरपूरी को प्रगट करता है।

उन विश्वासियों के लिए, जिनका विवेक आत्म-दोष में फँसा रहता है, यह बात चरवाही की दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति एक ही पाप को बार-बार मान सकता है, इसलिए नहीं कि उसका मन-फिराव अधूरा है, बल्कि इसलिए कि वह यह स्वीकार नहीं कर पाता कि मसीह का लहू पर्याप्त है। बार-बार का अंगीकार क्रूस में भावनात्मक भुगतान जोड़ने का प्रयास बन जाता है।

इसका उत्तर पाप को छोटा करना नहीं है। इसका उत्तर मसीह के बलिदान के मूल्य को पूरी ऊँचाई तक पहचानना है।

इब्रानियों कहता है, "इसलिए हे भाइयों, जबकि हमें यीशु के लहू के द्वारा ... पवित्रस्थान में प्रवेश करने का साहस हो गया है" (इब्रानियों 10:19)। यह साहस कोई स्वभाव का गुण नहीं है। यह लहू से मोल ली गई पहुँच है।

यहाँ आकर विश्वासी की स्थिति पर नी का ज़ोर बहुमूल्य हो जाता है। हम स्वर्गीय स्थानों में इसलिए नहीं बैठे कि हम अपने अच्छे व्यवहार के सहारे ऊपर चढ़ गए। हम इसलिए बैठे हैं कि क्रूस पर चढ़ाया गया और जी उठा मसीह हमें अपने में लेकर गया।

मन की आँखें

इफिसियों में पौलुस की पहली महान प्रार्थना यह नहीं है कि विश्वासियों को और अधिक सम्पत्ति मिले, बल्कि यह कि वे उसे देखें जो पहले से उनका है।

वह परमेश्वर से माँगता है कि वह "तुम्हें बुद्धि की आत्मा और अपने ज्ञान का प्रकाश दे ... और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों" (इफिसियों 1:17-18)।

नी अक्सर "देखने" की भाषा का प्रयोग करता था। उसके लिए प्रकाशन मुख्यतः बाइबल से बाहर की कोई नई जानकारी नहीं, बल्कि बाइबल की वास्तविकता की आत्मिक समझ था। कोई सिद्धान्त वस्तुगत रूप से सत्य होते हुए भी ऐसे काम कर सकता है मानो वह हो ही नहीं, क्योंकि विश्वासी ने उसके महत्त्व को ग्रहण नहीं किया।

पौलुस चाहता है कि इफिसी विश्वासी परमेश्वर की बुलाहट की आशा को, पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा के धन को, और यह भी जान लें कि "उसकी सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है" (इफिसियों 1:19)।

उस सामर्थ्य का माप मसीह का पुनरुत्थान है।

तो मसीही की समस्या केवल प्रयास की कमी नहीं है। हो सकता है वह दृष्टि की कमी हो। यदि हम स्वयं को मुख्यतः परमेश्वर तक पहुँचने का प्रयत्न करते हुए अकेले, साधनहीन व्यक्ति के रूप में देखते हैं, तो हमारा आत्मिक जीवन उसी धारणा को प्रतिबिम्बित करेगा। यदि हम स्वयं को जी उठे मसीह में सम्मिलित, उसके साथ बैठाए गए, आत्मा से छाप लगाए गए, और पिता के निकट लाए गए लोगों के रूप में देखते हैं, तो हमारी आज्ञाकारिता किसी और स्थान से आरम्भ होती है।

यह सकारात्मक सोच नहीं है। इसका लक्ष्य अपनी बेहतर छवि नहीं, बल्कि मसीह है।

पुनरुत्थान की सामर्थ्य

पौलुस परमेश्वर की सामर्थ्य को वह सामर्थ्य बताता है "जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर" बैठाया (इफिसियों 1:20)।

नी की आत्मिकता पुनरुत्थान से ओत-प्रोत है। उसने पुनरुत्थान को केवल इस बात का प्रमाण नहीं माना कि यीशु की प्रायश्चित्त करनेवाली मृत्यु स्वीकार कर ली गई। पुनरुत्थान

नई सृष्टि का आरम्भ है और वह सामर्थ्य है जिसमें मसीही जीवन आगे बढ़ता है।

मृत्यु वह सीमा है जिसे स्वाभाविक बल पार नहीं कर सकता। मानवीय कौशल पुनर्गठन कर सकता है, सुधार सकता है, शिक्षा दे सकता है, अनुशासित कर सकता है और प्रेरित कर सकता है। वह मुर्दों को जिला नहीं सकता। पुनरुत्थान परमेश्वर का अपना विशिष्ट कार्य है।

इसी कारण नी दुर्बलता की परिस्थितियों को पुनरुत्थान को जानने के अवसर कह सकता था। यदि हमारे पास हर काम के लिए पर्याप्त स्वाभाविक ऊर्जा हो, तो सम्भव है हम कभी न जान पाएँ कि स्वाभाविक जीवन और परमेश्वर की ओर से मिलनेवाली आपूर्ति में क्या अन्तर है।

पौलुस ने अपनी चरम विवशता की दशा से लिखा: "हमने अपने मन में समझ लिया था, कि हम पर मृत्यु की सजा हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न रखें, वरन् परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है" (2 कुरिन्थियों 1:9)।

उद्देश्य दुःख के प्रति कोई भावुक आकर्षण नहीं था। उद्देश्य भरोसे का स्थानान्तरण था।

मसीही सेवकाई अक्सर पुनरुत्थान की सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करती है, और साथ ही जीवन को इतनी सावधानी से व्यवस्थित करती है कि पुनरुत्थान की आवश्यकता ही न पड़े। हम ऐसी क्षमताएँ पसन्द करते हैं जिन्हें हम नियन्त्रित कर सकें। नी इस प्रवृत्ति को चुनौती देता है। परमेश्वर हमें अपने साधनों के अन्त तक पहुँचने दे सकता है ताकि स्रोत के विषय में कोई सन्देह न रहे।

कलीसिया के लिए सब वस्तुओं पर शिरोमणि

इफिसियों 1 मसीह की महिमा से कलीसिया की ओर बढ़ता है: परमेश्वर ने "सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है" (इफिसियों 1:22-23)।

इसलिए "बैठो" पर नी की शिक्षा को केवल व्यक्तिगत आत्मिकता तक सीमित नहीं किया जा सकता। हम मसीह की देह के अंग होकर उसके साथ बैठाए गए हैं। कलीसिया अपने सिर की विजय में सहभागी है।

इसने नी के कलीसिया-विज्ञान को गहराई से गढ़ा। मसीह केवल अलग-अलग लिए गए व्यक्तिगत मसीहियों का सिर नहीं है। उसकी एक देह है। मसीही जीवन की परिपूर्णता सामूहिक है।

पश्चिमी भक्तिपूर्ण पठन अक्सर बहुवचन प्रतिज्ञाओं को निजी पुष्टियों में बदल देता है। नी ने, जो सामुदायिक जीवन की भिन्न मान्यताओंवाली संस्कृति में लिख रहा था और पौलुस के कलीसिया-विज्ञान में गहराई से डूबा हुआ था, बार-बार विश्वासियों को देह की ओर लौटने के लिए बुलाया।

व्यक्तिगत विश्वासी मसीह को व्यक्तिगत रूप से जान सकता है, पर कभी भी इस अर्थ में निजी रूप से नहीं कि वह उसके लोगों से कटा हुआ हो। "क्योंकि हम सब ने ... एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया" (1 कुरिन्थियों 12:13)।

देह का यह आयाम "बैठने" को आत्मिक आत्म-मग्नता बनने से बचाता है। हमें केवल इसलिए नहीं बैठाया गया कि हम सुरक्षित अनुभव करें। हम परमेश्वर के उस अभिप्राय में सम्मिलित किए गए हैं जिसके द्वारा वह कलीसिया के माध्यम से मसीह को प्रगट करना चाहता है।

मरे हुए, जिलाए गए, उठाए गए, बैठाए गए

इफिसियों 2 एक अप्रिय निदान से आरम्भ होता है: "और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे" (इफिसियों 2:1)।

इससे अधिक तीखा विरोधाभास शायद ही हो सकता है। मरे हुए लोग स्वयं को जिलाने में सहयोग नहीं करते। पौलुस चाहता है कि अनुग्रह अनुग्रह के रूप में ही दिखाई दे।

वह मनुष्यजाति का वर्णन इस संसार की रीति, आकाश के अधिकार के अधिपति और शरीर की लालसाओं के अधीन करता है। फिर पवित्रशास्त्र के दो महान शब्द आते हैं: "परन्तु परमेश्वर।"

"परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिससे उसने हम से प्रेम किया, ... हमें मसीह के साथ जिलाया" (इफिसियों 2:4-5)।

नी को यह क्रम बहुत प्रिय था: जिलाया, उठाया, बैठाया। तीनों मसीह के साथ जुड़े हुए हैं।

विश्राम करने के पीछे यही आत्मिक तर्क है। हम न स्वयं को जिला सकते हैं, न स्वयं को उठा सकते हैं, और न स्वयं को स्वर्गीय स्थानों में बैठा सकते हैं। यह परमेश्वर मसीह में करता है।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है; और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे" (इफिसियों 2:8-9)।

घमण्ड का बहिष्कार निर्णायक है। मनुष्य आत्मिक अनुशासनों को भी अपनी ट्रॉफ़ियाँ बना सकता है। अनुग्रह श्रेष्ठता की भूमि ही हटा देता है।

फिर भी पद 10 निष्क्रियता को रोकता है: "क्योंकि हम परमेश्वर की रचना हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया" (इफिसियों 2:10)।

हम चलने से पहले बैठते हैं, पर हम चलते अवश्य हैं। अनुग्रह एक कर्मठ प्रजा को जन्म देता है।

विश्राम और कर्म

विश्राम और कर्मों के सम्बन्ध को आसानी से गलत समझा जा सकता है। नी ने यह शिक्षा नहीं दी कि मसीहियों को निष्क्रिय हो जाना चाहिए। उसका अपना जीवन असाधारण रूप से सक्रिय था। उसने प्रचार किया, लिखा, यात्राएँ कीं, सम्मेलन आयोजित किए, सेवकों को प्रशिक्षित किया, साहित्य प्रकाशित किया, व्यापार में लगा रहा, विवाद सहे, और भारी पत्र-व्यवहार बनाए रखा।

उसकी चिन्ता कर्मों के भीतरी स्रोत को लेकर थी।

इब्रानियों परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करने की बात करता है और साथ ही यह भी कहता है, "इसलिए हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें" (इब्रानियों 4:11)। प्रयत्न और विश्राम साथ-साथ रह सकते हैं, क्योंकि यह विश्राम निष्क्रियता नहीं है; यह स्वीकृति के आधार के रूप में कर्मों से रुक जाना और परमेश्वर के पूरे किए हुए अभिप्राय में सहभागी होना है।

यीशु भी यही विरोधाभास प्रस्तुत करता है: "... मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा," और तुरन्त उसके बाद, "मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो" (मत्ती 11:28-29)। विश्राम एक जूए की ओर ले जाता है। अन्तर उस स्वामी में है जो उस जूए को साथ उठाता है।

नी चाहता था कि मसीही सेवा में यही गुण हो। एक प्रकार की गतिविधि चिन्ता से उपजती है: यदि मैंने सब कुछ सँभाले न रखा, तो सब ढह जाएगा। दूसरे प्रकार की गतिविधि

भरोसे से उपजती है: परमेश्वर कार्य कर रहा है, और मुझे उसमें सहभागी होने का निमन्त्रण मिला है।

बाहरी दिनचर्या दोनों में एक जैसी भरी हुई हो सकती है। भीतरी मुद्रा पूरी तरह भिन्न होती है।

लहू के द्वारा निकट

इफिसियों 2 यहूदी और अन्यजाति के बीच की उस बड़ी जातीय और वाचा-सम्बन्धी खाई की भी बात करता है। अन्यजाति लोग एक समय "मसीह से अलग" थे और "प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे" (इफिसियों 2:12)। "पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो" (इफिसियों 2:13)।

कलीसिया के विषय में नी की शिक्षा ने इस नई मनुष्यजाति से बहुत कुछ लिया। मसीह ने "यहूदियों और अन्यजातियों को एक कर दिया और अलग करनेवाले दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया" (इफिसियों 2:14)।

सुसमाचार केवल व्यक्तियों का परमेश्वर से ऊर्ध्वाधर मेल नहीं कराता। वह एक नई प्रजा में क्षैतिज मेल-मिलाप भी उत्पन्न करता है।

इस सत्य ने जातीय, राष्ट्रीय, वर्गीय और साम्प्रदायिक घमण्ड को चुनौती दी। गणतन्त्र-कालीन चीन में मसीहियत के साथ पश्चिमी सत्ता से जुड़े उलझे हुए अर्थ जुड़े थे। नी चाहता था कि चीनी विश्वासी सुसमाचार को ग्रहण करें, पर कलीसियाई रूप से पश्चिमी संस्थाओं के अधीन न बने रहें। फिर भी इफिसियों ने राष्ट्रीय मसीहियत को अन्तिम लक्ष्य बनने से भी रोका। मसीह एक नया मनुष्य रचता है।

"क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है" (इफिसियों 2:18)।

एक पुत्र, एक आत्मा, एक पिता—इसलिए एक घराना।

कलीसिया उन लोगों का गठबन्धन नहीं है जो स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के हों। यह उन लोगों के बीच मेल-मिलाप का एक आश्चर्यकर्म है जिनकी सबसे गहरी साझा पहचान मसीह है।

परमेश्वर का निवास-स्थान

पौलुस रूपक बदलता है: विश्वासी संगी नागरिक हैं, घराने के सदस्य हैं, और एक मन्दिर के पत्थर हैं, जिनसे बनी सारी रचना "प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है" (इफिसियों 2:21)।

"जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास-स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो" (इफिसियों 2:22)।

नी का कलीसियाई दर्शन "एक साथ बनाए जाते" को गम्भीरता से लेता था। मसीही परिपक्वता केवल अलग-अलग पत्थरों का सिद्ध हो जाना नहीं है। अकेला पड़ा हुआ चमकाया गया पत्थर मन्दिर नहीं होता।

इस ज़ोर ने अत्यन्त निजी आत्मिकता को चुनौती दी। कोई विश्वासी बाइबल को गहराई से पढ़ सकता है, घण्टों प्रार्थना कर सकता है, और व्यक्तिगत पवित्रता साध सकता है, फिर भी अन्य मसीहियों के साथ रहने में असमर्थ बना रह सकता है। नी ऐसी आत्मिकता की परिपक्वता पर प्रश्न उठाता।

कलीसिया वह स्थान है जहाँ सम्बन्धों में चरित्र की परख होती है। धीरज के लिए ऐसे लोग चाहिए जो धीरज की परीक्षा लें। क्षमा के लिए अपराध चाहिए। नम्रता तब दिखाई देती है जब पसन्दें टकराती हैं। प्रेम तब ठोस बनता है जब कोई असुविधाजनक हो।

इसलिए टूटेपन पर नी की बाद की शिक्षा कलीसियाई जीवन से अलग नहीं की जा सकती थी। परमेश्वर संगी विश्वासियों को गढ़ने के साधन के रूप में प्रयोग करता है।

इस सत्य की भी सीमाएँ होनी चाहिए। "एक साथ बनाए जाने" का प्रयोग लोगों को दुर्व्यवहार भरे वातावरण में फँसाए रखने या उचित चिन्ताओं को दबाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। वही नया नियम जो एकता की आज्ञा देता है, सुधार, अगुवों के अनुशासन, कमज़ोरों की रक्षा, और लगातार विनाशकारी व्यवहार करनेवालों से अलग होने की आज्ञा भी देता है।

बाइबल आधारित समुदाय न तो व्यक्तिवाद है और न ही ज़बरदस्ती का सामूहिकतावाद। यह मसीह के अधीन साथ मिलकर जिया जानेवाला जीवन है।

छिपा हुआ और प्रगट किया गया भेद

इफिसियों 3 कलीसिया को उस "भेद" का भाग बताता है जो पहले छिपा था और अब प्रगट हुआ है: अन्यजातीय लोग "मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा ... विरासत में सहभागी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं" (इफिसियों 3:6)।

परमेश्वर के अनन्त अभिप्राय को नी जिस प्रकार पढ़ता था, उसने कलीसिया को अपार महत्त्व दिया। कलीसिया इस्राएल के बाद की कोई वैकल्पिक योजना नहीं है, और न ही स्वर्ग की बाट जोहते पापियों के लिए केवल एक शरण-स्थल। मसीह में परमेश्वर एक प्रजा के द्वारा अपना ज्ञान प्रगट कर रहा है।

पौलुस कहता है कि "कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान" अब "उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं" प्रगट किया जाता है (इफिसियों 3:10)।

इस ब्रह्माण्डीय भाषा ने नी को मोहित किया। कलीसियाई जीवन का महत्त्व उससे कहीं आगे है जिसे दिखाई देनेवाली मण्डली माप सकती है। विश्वासियों की एकता, पवित्रता, प्रेम और गवाही परमेश्वर के बड़े अभिप्राय में सहभागी होती है।

ऐसा दर्शन महँगे समर्पण की प्रेरणा दे सकता है। यह आन्दोलनों को इतिहास में अपने विशेष स्थान को बढ़ा-चढ़ाकर आँकने के लिए भी ललचा सकता है। विश्वव्यापी कलीसिया किसी भी नेटवर्क से बड़ी है, नी के नेटवर्क से भी। "परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान" किसी एक आन्दोलन की सम्पत्ति नहीं है।

इसका सबसे सुरक्षित प्रयोग आराधनापूर्ण दीनता है: परमेश्वर अपनी सारी प्रजा के द्वारा कुछ ऐसा कर रहा है जो हमारे स्थानीय महत्त्व से कहीं बढ़कर है।

भीतरी मनुष्य में बलवन्त होना

इफिसियों में पौलुस की दूसरी प्रार्थना भीतर की ओर मुड़ती है: "कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ, और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे" (इफिसियों 3:16-17)।

भीतरी मनुष्य के विषय में नी की शब्दावली बाद में अधिक तकनीकी हो गई, पर यहाँ बाइबल का ज़ोर स्पष्ट है। आत्मा विश्वासियों को भीतर से बलवन्त करता है ताकि मसीह की

उपस्थिति अनुभव में स्थिर हो जाए और उन्हें गढ़ती रहे।

लक्ष्य कोई निजी रहस्यवादी तीव्रता नहीं है। पौलुस प्रार्थना करता है कि विश्वासी "प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डालकर" मसीह के प्रेम के विशाल आयामों को "सब पवित्र लोगों के साथ" समझें (इफिसियों 3:17-18)।

फिर से, सामूहिक वाक्यांश महत्त्वपूर्ण है: "सब पवित्र लोगों के साथ।" किसी भी एक व्यक्ति के पास इतनी व्यापक दृष्टि नहीं कि वह अकेले मसीह की परिपूर्णता को ग्रहण कर सके।

पौलुस भरपूरी के साथ समाप्त करता है: परमेश्वर "ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है" (इफिसियों 3:20)।

नी ने इस प्रार्थना में स्थिति से अनुभव की ओर संक्रमण सुना। विश्वासी पहले से मसीह में है, फिर भी उसे उस वास्तविकता के अनुसार जीने के लिए बल पाने की आवश्यकता है। वस्तुगत अनुग्रह आत्मा के द्वारा भीतरी रूपान्तरण बन जाता है।

बैठने का अर्थ आत्मिक ढिठाई नहीं

स्थिति-सम्बन्धी सत्य का एक गलत प्रयोग भी है। कोई मसीही यह दोहरा सकता है कि वह "स्वर्गीय स्थानों में बैठाया गया" है, और साथ ही मन-फिराव, बुद्धि, जवाबदेही और साधारण ज़िम्मेदारी की उपेक्षा कर सकता है। आत्मिक भाषा वास्तविकता से बचने की ढाल बन जाती है।

पौलुस इसकी कभी अनुमति नहीं देता। वही पत्री जो अनुग्रह का उत्सव मनाती है, शीघ्र ही विश्वासियों को आज्ञा देगी कि वे सच बोलें, ईमानदारी से परिश्रम करें, एक-दूसरे को क्षमा करें, व्यभिचार को ठुकराएँ, विवाह का आदर करें, बच्चों का विश्वासयोग्यता से पालन-पोषण करें, और बुराई का सामना करें।

स्थिति आचरण को अप्रासंगिक नहीं बनाती। वह आचरण को सम्भव बनाती है और उसे सही प्रेरणा देती है।

यूहन्ना चेतावनी देता है, "जो कोई यह कहता है, कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि वह स्वयं भी वैसे ही चले जैसे यीशु मसीह चलता था" (1 यूहन्ना 2:6)।

"बैठने" की कसौटी यह नहीं कि हमारी शब्दावली कितनी ऊँची हो जाती है, बल्कि यह कि अनुग्रह हमारे भीतर मसीह का चरित्र उत्पन्न करता है या नहीं।

नी का अपना आन्दोलन कभी-कभी ऐसे पाठकों को आकर्षित करता था जिन्हें आत्मिक श्रेणियाँ प्रिय थीं। उसकी सबसे अच्छी शिक्षा उन्हें लगातार वास्तविकता की ओर लौटाती रही। यदि प्रकाशन आज्ञाकारिता तक नहीं ले जाता, तो उसे ठीक से ग्रहण नहीं किया गया।

आत्मिक चिन्ता का अन्त

अपने सर्वोत्तम चरवाही रूप में "बैठो" चिन्ता से भरी मसीहियत का उत्तर है।

कुछ विश्वासी ऐसे जीते हैं मानो परमेश्वर सदा निराश रहता हो, और उसकी स्वीकृति उनके प्रदर्शन के अनुसार पल-पल घटती-बढ़ती हो। प्रार्थना खोई हुई कृपा फिर से पाने का प्रयास बन जाती है। बाइबल-पठन एक कोटा बन जाता है। सेवा अपनी योग्यता का प्रमाण बन जाती है। असफलता स्वस्थ मन-फिराव नहीं, बल्कि अस्तित्व के ढह जाने का अनुभव उत्पन्न करती है।

इफिसियों इससे बेहतर वचन कहता है। मसीह में हमें छुटकारा मिला है। मसीह में हम चुने गए हैं। मसीह में हम जिलाए गए हैं। मसीह में हम उठाए गए हैं। मसीह में हम बैठाए गए हैं। मसीह में हमें पिता के पास पहुँच मिली है।

बार-बार आनेवाला वाक्यांश ही नींव है: मसीह में।

विश्वास वहीं विश्राम करता है।

केवल तब पौलुस कहता है, "इसलिए मैं ... तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो" (इफिसियों 4:1)।

यह "इसलिए" ही पुल है। अध्याय 1-3 बुलाहट दे चुके हैं; अध्याय 4-6 चाल का वर्णन करते हैं।

नी का तीन शब्दों का सार अब अपने दूसरे शब्द की ओर बढ़ता है। बैठा हुआ विश्वासी उठता है—अनुग्रह कमाने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि अनुग्रह ने उसे ऐसा जीवन दिया है जिसमें चलना सार्थक है।

“मसीह में”: पौलुस का आत्मिक भूगोल

इफिसियों “मसीह में,” “उसमें,” और इनसे मिलते-जुलते वाक्यांशों का बार-बार प्रयोग करता है। नी इस भाषा को लगभग आत्मिक भूगोल के रूप में देखता था। जैसे किसी कमरे के भीतर मौजूद व्यक्ति उस कमरे के वातावरण में सहभागी होता है, वैसे ही मसीह में स्थित विश्वासी मसीह के इतिहास के परिणामों में सहभागी होता है।

यह उपमा सीमित है, पर सहायक है। यदि नूह का परिवार जहाज़ के भीतर है, तो जहाज़ की नियति उनकी नियति बन जाती है। यदि मनुष्यजाति आदम में है, तो आदम का पतन पुरानी सृष्टि को परिभाषित करता है। यदि विश्वासी मसीह में हैं, तो उसकी मृत्यु, उसका पुनरुत्थान और उसकी स्वीकृति उनकी नई स्थिति को परिभाषित करते हैं।

पौलुस कहता है, “यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है” (2 कुरिन्थियों 5:17)।

इसलिए सुसमाचार केवल यह नहीं कि मसीह दूर खड़े लोगों के लिए कुछ करता है। वह उन्हें अपने भीतर ले आता है।

पिता के पास पहुँच

“बैठने” में पहुँच भी सम्मिलित है। “जिसमें हमको उस पर विश्वास रखने से साहस और भरोसे से निकट आने का अधिकार है” (इफिसियों 3:12)।

बहुत से मसीही ऐसे जीते हैं मानो प्रार्थना के लिए पहले किसी आत्मिक पर्वत पर चढ़ना पड़ता हो, तभी परमेश्वर सुनेगा। इफिसियों कहता है कि मसीह में पहुँच का मार्ग पहले ही खुल चुका है।

इससे अंगीकार बदल जाता है। हम परमेश्वर को फिर से पिता बनने के लिए मनाने को अंगीकार नहीं करते। हम इसलिए अंगीकार करते हैं क्योंकि मसीह के द्वारा पिता तक का मार्ग खुला रहता है।

इससे आराधना बदल जाती है। हम संगीत के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति की रचना नहीं करते; हम आत्मा के द्वारा पुत्र के माध्यम से निकट आते हैं।

“क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है” (इफिसियों 2:18)।

इसलिए ध्यान से पढ़ने पर स्थिति-सम्बन्धी नी की शिक्षा गहराई से त्रिएकवादी हो सकती है।

संकट से पहले विश्राम

सैनिक को युद्ध आरम्भ होने से पहले सीख लेना चाहिए कि उसे कहाँ खड़ा होना है। नी के क्रम में चरवाही बुद्धि है, क्योंकि संकट का समय शून्य से अपनी पहचान गढ़ने का बुरा समय होता है।

जब दोषारोपण, बीमारी, आर्थिक भय या सताव आता है, तब विश्वासियों को उन सच्चाइयों की आवश्यकता होती है जो पहले से जड़ पकड़ चुकी हों: परमेश्वर ने हम से प्रेम किया है; मसीह ने हमें छुड़ाया है; आत्मा ने हम पर छाप लगाई है; हम देह के हैं; पुनरुत्थान की प्रतिज्ञा दी गई है।

बैठना सीखने का समय भूकम्प से पहले है।

भजन संहिता 46 कहता है, "परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक" (भजन संहिता 46:1)। शरणस्थान घबराहट में जल्दबाज़ी से नहीं बनाया जाता। उसमें प्रवेश किया जाता है।

मसीह के साथ बैठाए गए: प्रदर्शन से पहले अनुग्रह

इफिसियों पर नी की छोटी व्याख्या क्रम के विषय में एक सरल अवलोकन के कारण प्रसिद्ध हुई। इफिसियों का आरम्भ विश्वासी के चलने या लड़ने से नहीं, बल्कि इस बात से होता है कि परमेश्वर ने मसीह को अपनी दाहिनी ओर बैठाया और विश्वासियों को उसके साथ बैठाया। उसके बाद ही पौलुस योग्य चाल की आज्ञा देता है और आत्मिक संघर्ष का वर्णन करता है।

नी के लिए वह क्रम कोई साहित्यिक कौतूहल नहीं था। वह अनुग्रह के तर्क को प्रकट करता था। मसीही आज्ञाकारिता एक ऐसी स्थिति से उपजती है जो चले जानेवाले मार्ग बनने से पहले ग्रहण की जाती है।

पौलुस लिखता है कि परमेश्वर ने हमें "मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया" (इफिसियों 2:6)। ये क्रियाएँ परमेश्वर के कार्य का वर्णन करती

हैं। विश्वासी आत्मिक उपलब्धि के सहारे स्वर्गीय स्थानों पर नहीं चढ़ता। परमेश्वर अपनी दया के कारण और मसीह के साथ एकता के कारण कार्य करता है।

इसलिए बैठने का अर्थ है उसे स्थापित करने का प्रयास छोड़ देना जो परमेश्वर पहले ही दे चुका है। इसका अर्थ निष्क्रियता नहीं है। प्राचीन संसार में किसी शासक के दाहिने हाथ बैठना पूर्ण विजय, विशेषाधिकार और अधिकार में सहभागिता का संकेत हो सकता था। मसीह इसलिए बैठा है कि उसका छुटकारे का कार्य पूरा हो चुका है। विश्वासी का विश्राम उसी पूरे किए गए कार्य में सहभागिता है।

नी ने इसे चिन्ता से भरे धर्म का उपचार माना। बहुत से मसीही हर दिन ऐसे आरम्भ करते हैं मानो उन्हें परमेश्वर को मनाना हो कि वह उन्हें स्वीकार करे। एक असफलता दूरी पैदा कर देती है; एक सफल भक्ति-समय आत्मविश्वास पैदा कर देता है; प्रशंसा फुला देती है; आलोचना ढहा देती है। पहचान प्रदर्शन के साथ चढ़ती-उतरती रहती है। इफिसियों कहीं और से आरम्भ करता है: "हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है" (इफिसियों 1:3)।

आशीष हमारी भावनाओं में होने से पहले मसीह में है।

यह ज़ोर अगुवों के लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। सेवकाई एक निरन्तर चलनेवाला अंक-पट बना देती है: उपस्थिति, मन-फिराव, दान, बढ़ोतरी, निमन्त्रण, डाउनलोड, प्रभाव, भवन, कर्मचारी, प्रतिष्ठा। इनमें से कोई भी माप अपने-आप में गलत नहीं है। भण्डारीपन का मूल्यांकन होना चाहिए। परन्तु जब आँकड़े पहचान बन जाते हैं, तो सेवा दासता बन जाती है। बैठा हुआ विश्वासी किसी खराब परिणाम का ईमानदारी से सामना कर सकता है, उसे अपनी व्यक्तिगत योग्यता पर दिया गया निर्णय माने बिना।

इफिसियों विश्राम को व्यक्तिवादी बनने से भी रोकता है। वही अनुग्रह जो विश्वासियों को मसीह के साथ बैठाता है, बँटी हुई जातियों से "एक नई जाति" उत्पन्न करता है और उन्हें एक साथ परमेश्वर के निवास-स्थान के रूप में बनाता है (इफिसियों 2:15, 22)। मसीह में विश्राम सामुदायिक है। विश्वासी किसी निजी आत्मिक कक्ष में अकेला नहीं बैठा है।

इसके नैतिक परिणाम हैं। यदि अनुग्रह यहूदी और अन्यजाति विश्वासियों को मसीह में एक साथ रखता है, तो सामाजिक श्रेष्ठता उस स्थिति का खण्डन करती है। जाति, वर्ग, शिक्षा, धन, राष्ट्रीयता और धार्मिक वंश-परम्परा घमण्ड का आधार नहीं बन सकते। पौलुस वास्तव में यही पूछता है कि तेरे पास ऐसा क्या है जो तूने नहीं पाया?

नी का अपना आन्दोलन कभी-कभी इस व्यापक एकता को जीने में संघर्ष करता रहा, पर उसकी सबसे अच्छी शिक्षा इसी की ओर संकेत करती है। मसीह के साथ बैठना यह खोज लेना है कि हर सच्चा विश्वासी उसी दया के कारण वहाँ है। आत्मिक शब्दावली के कारण कोई ऊँचे आसन पर नहीं बैठता।

बैठाए जाने की स्थिति प्रार्थना को भी बदल देती है। इफिसियों 1 और 3 में ऐसी प्रार्थनाएँ हैं जो मुख्यतः नई सम्पत्ति के लिए नहीं, बल्कि प्रकाशित दृष्टि और दृढ़ समझ के लिए हैं। पौलुस माँगता है कि विश्वासी परमेश्वर की बुलाहट की आशा, उसकी मीरास के धन, उसकी सामर्थ्य की महानता और मसीह के प्रेम को जानें। बहुत-सी मसीही प्रार्थना परमेश्वर से वह माँगती है जो वह मसीह में पहले ही दे चुका है, क्योंकि हमने अभी तक नहीं देखा कि हमारे पास क्या है।

"देखने" की नी की भाषा इसी ढाँचे से निकली। आत्मिक उन्नति अक्सर तब होती है जब बाइबल का कोई तथ्य अमूर्त सत्य से आगे बढ़कर जीवन को संचालित करनेवाला दृढ़ विश्वास बन जाता है। वह तथ्य प्रकाश मिलने के क्षण से पहले भी सत्य था। परन्तु एक बार देख लिए जाने पर वह व्यवहार को नए सिरे से व्यवस्थित कर देता है।

खतरा यह है कि "बैठने" को भी एक और तकनीक बना दिया जाए: विश्राम करने के लिए और अधिक ज़ोर लगाओ, हर प्रयास को ठुकरा दो, या चिन्ता को तब तक दबाओ जब तक विजयी अनुभव न होने लगे। यह पूरे उद्देश्य को ही नष्ट कर देता है। विश्राम एकाग्रता के बल से उत्पन्न की गई कोई आत्मिक मनोदशा नहीं है। यह मसीह की पर्याप्तता के प्रति विश्वास का प्रत्युत्तर है।

मसीही वहाँ से आरम्भ करता है जहाँ मसीह ने पूरा किया। उसी आसन से चाल आरम्भ हो सकती है।

चलो: हमारे द्वारा जिया गया मसीह का जीवन

इफिसियों का "इसलिए"

तीन अध्यायों तक यह घोषणा करने के बाद कि परमेश्वर ने क्या किया है, पौलुस विश्वासी के आचरण की ओर मुड़ता है: "इसलिए मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो" (इफिसियों 4:1)।

वॉचमैन नी ने *बैठो, चलो, खड़े रहो (Sit, Walk, Stand)* के दूसरे भाग को इसी एक शब्द के चारों ओर गढ़ा: चलना। जिस मसीही ने मसीह में विश्राम करना सीख लिया है, वह निश्चल नहीं पड़ा रहता। अनुग्रह जीवन की एक रीति को जन्म देता है।

यह "इसलिए" अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मसीही नैतिकता ऐसे मनमाने, बेजड़ नियम नहीं है जो अजनबियों पर थोप दिए जाएँ। यह वह पारिवारिक समानता है जिसकी अपेक्षा उन लोगों से की जाती है जिन्हें परमेश्वर के घराने में लाया गया है। पौलुस यह नहीं कहता कि योग्य चाल चलो ताकि तुम बुलाए जाओ। वह कहता है कि उस बुलाहट के योग्य चाल चलो जो तुम्हें पहले ही मिल चुकी है।

नी ने इसमें व्यवस्थावाद और लापरवाही दोनों का उपचार देखा। व्यवस्थावाद आज्ञाकारिता को अनुग्रह से अलग कर देता है और आचरण को स्वीकृति तक पहुँचने की सीढ़ी बना देता है। लापरवाही अनुग्रह को आज्ञाकारिता से अलग कर देती है और स्वीकृति को इस बात की छूट मान लेती है कि मनुष्य जैसा है वैसा ही बना रहे। इफिसियों दोनों को ठुकरा देता है।

"क्योंकि हम परमेश्वर की रचना हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए" (इफिसियों 2:10)। काम नई सृष्टि को उत्पन्न नहीं करते; नई सृष्टि काम उत्पन्न करती है।

इसलिए मसीही चाल एक अदृश्य स्थिति की दृश्य अभिव्यक्ति बन जाती है।

दीनता, नम्रता, धीरज

योग्य चाल का जो पहला वर्णन पौलुस देता है, वह प्रतिभा, साहस, सैद्धान्तिक परिष्कार या अलौकिक सामर्थ्य नहीं है। वह है: "सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो" (इफिसियों 4:2)।

नी की आत्मिकता को कभी-कभी ऊँची अवधारणाओं के लिए याद किया जाता है—पुनरुत्थान का जीवन, आत्मिक अधिकार, जयवन्त, स्वर्गीय स्थिति। परन्तु नया नियम हर ऊँची भाषा को साधारण दीनता की कसौटी पर परखता है।

दीनता दूसरों से श्रेष्ठ होने की लालसा को ठुकरा देती है। नम्रता परमेश्वर के शासन के अधीन रखा गया बल है। धीरज लोगों को समय देता है। सहनशीलता दूसरों में अनुग्रह के अधूरे काम के लिए जगह बनाती है।

ये गुण अनिवार्य हैं क्योंकि कलीसिया उन छुड़ाए गए पापियों से बनी है जिनका रूपान्तरण हो रहा है। कलीसिया का कोई भी सिद्धान्त जो यह माँग करे कि एकता सम्भव होने से पहले हर कोई ऐसा हो जाए जिसके साथ रहना आसान हो, वह कभी कोई कलीसिया नहीं बना पाएगा।

पौलुस विश्वासियों से कहता है: "मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो" (इफिसियों 4:3)। वे एकता को उत्पन्न नहीं करते; आत्मा ने एक देह पहले ही बना दी है। उनका काम उसे बनाए रखना है।

नी की सम्प्रदाय-विरोधी दृष्टि इसी तथ्य पर बहुत अधिक आधारित थी। फिर भी इफिसियों एकता को बनाए रखने की बात को दीनता, धीरज और प्रेम के सन्दर्भ में रखता है। इन सद्गुणों के बिना सही कलीसियाई सिद्धान्त स्वयं अपना खण्डन करता है।

कोई व्यक्ति एक देह के पक्ष में जोश से तर्क दे सकता है और साथ ही संगी मसीहियों के साथ तिरस्कार का व्यवहार कर सकता है। ऐसा करके वह अपने आचरण से उसी सिद्धान्त का इन्कार करता है जिसका वह अपने शब्दों से बचाव करता है।

एक देह, एक आत्मा, एक प्रभु

"एक ही देह है, और एक ही आत्मा ... एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है" (इफिसियों 4:4-6)।

नी इस एकता को वस्तुगत मानता था। मसीही एक ही संगठन में सम्मिलित होकर एक नहीं होते; वे इसलिए एक हैं क्योंकि उनमें एक ही मसीह और एक ही आत्मा है।

इस सत्य के दूरगामी परिणाम हैं। किसी दूसरे सम्प्रदाय का विश्वासी, जो सचमुच मसीह का है, आत्मिक रूप से हमारे उस अविश्वासी से अधिक निकट है जो हमारी राष्ट्रीयता, राजनीति, शिक्षा या संस्कृति का सहभागी है। मसीह एक गहरी रिश्तेदारी रचता है।

नी चाहता था कि कलीसियाई व्यवहार इस तथ्य को स्वीकार करे। उसने उन नामों का विरोध किया जो विश्वासियों को संस्थापकों या गौण सिद्धान्तों के आधार पर बाँटते थे। उसकी दृष्टि यीशु की उस प्रार्थना से मेल खाती है "कि वे सब एक हों" (यूहन्ना 17:21)।

परन्तु एकता सैद्धान्तिक उदासीनता के समान नहीं है। नया नियम कलीसिया को यह आज्ञा भी देता है कि वह सुसमाचार की रक्षा करे, मसीह के विषय में झूठी शिक्षा को ठुकराए और अनुशासन का पालन करे। "एक ही विश्वास" की अपनी एक विषय-वस्तु है।

चुनौती यह है कि उन मूल बातों को, जो मसीही संगति को परिभाषित करती हैं, उन गौण धारणाओं से अलग पहचाना जाए जिन पर विश्वासी मतभेद रख सकते हैं। नी ने कभी-कभी यह रेखा दूसरे मसीहियों से भिन्न स्थान पर खींची, विशेषकर बपतिस्मा, स्थानीय कलीसिया की भूमि और प्रभु-भोज की संगति के विषय में। उसके अपने आन्दोलन का इतिहास दिखाता है कि यह काम कितना कठिन है।

स्थायी सिद्धान्त यह है कि संगति का आरम्भ इस बात से हो कि परमेश्वर ने विश्वासियों को एक बनाकर क्या किया है, न कि हमारी इस क्षमता से कि हम इतनी बड़ी संस्था खड़ी कर सकें जिसमें वे सब समा जाएँ।

वरदान देह के लिए दिए जाते हैं

पौलुस एकता से विविधता की ओर बढ़ता है: "पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है" (इफिसियों 4:7)।

एक देह का अर्थ एकरूपता नहीं है। मसीह वरदान बाँटता है।

नी ने हर अंग के सक्रिय होने पर बहुत बल दिया। ऐसा नहीं है कि अगुवे देह बनाते हैं और साधारण मसीही केवल उपस्थित रहते हैं। कलीसिया के जीवन और सेवा में हर अंग का अपना स्थान है।

इफिसियों प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों, रखवालों और उपदेशकों का उल्लेख करता है, जो इसलिए दिए गए हैं "जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए" (इफिसियों 4:12)।

इस पद के विराम-चिह्नों और व्याख्या पर चर्चा होती रही है, परन्तु इसकी व्यापक दिशा स्पष्ट है: वरदान पाए हुए अगुवे पवित्र लोगों को तैयार करते हैं, और जब अंग सक्रिय होते हैं तब देह का निर्माण होता है।

नी की सभाओं ने सहभागिता वाली सभाओं और साधारण विश्वासियों की सेवकाई के द्वारा इसे साकार करने का प्रयास किया। यह सिद्धान्त उन कलीसियाओं में भी प्रासंगिक है जिनकी आराधना-सभाएँ अधिक व्यवस्थित ढाँचे वाली होती हैं। प्रश्न यह है कि क्या विश्वासियों को मंच से बाहर सेवा करने के लिए तैयार किया जा रहा है।

किसी कलीसिया में उत्तम उपदेश हो सकते हैं और फिर भी वह अपरिपक्व रह सकती है, यदि उसके सदस्य कभी दुःख उठानेवालों के साथ प्रार्थना करना, सुसमाचार समझाना, नए विश्वासियों को चेला बनाना, झगड़ों में मेल कराना, आत्मिक वरदानों का उपयोग करना और पड़ोसियों की सेवा करना न सीखें।

लक्ष्य है "एक सिद्ध मनुष्य ... मसीह के पूरे डील-डौल तक" पहुँचना (इफिसियों 4:13)। आत्मिक परिपक्वता मसीह की समानता से मापी जाती है, संस्थागत परिष्कार से नहीं।

अब बालक नहीं

पौलुस चाहता है कि विश्वासी "आगे को बालक न रहें, जो ... उपदेश की, हर एक वायु से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों" (इफिसियों 4:14)।

नी एक ऐसे मसीही संसार में रहा जो आन्दोलनों, भविष्यवाणी सम्बन्धी योजनाओं, पवित्रता की शिक्षाओं, मिशनरी अपीलों, साम्प्रदायिक दावों और नए धार्मिक समूहों से भरा हुआ था। उसने बहुत व्यापक रूप से पढ़ा और वह स्वयं एक प्रबल धर्मवैज्ञानिक नवप्रवर्तक था। इसलिए वह आत्मिक नवीनता के मूल्य और खतरे दोनों को जानता था।

अपरिपक्वता आसानी से प्रभावित हो जाती है। वह तीव्रता को सत्य, नवीनता को प्रकाशन, आत्मविश्वास को अधिकार और असामान्य शब्दावली को गहराई समझ बैठती है।

पौलुस का उत्तर संशयवाद नहीं, बल्कि सत्य और प्रेम के द्वारा परिपक्वता है: "वरन् प्रेम में सच बोलें और सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ" (इफिसियों

4:15)।

प्रेम के बिना सत्य एक हथियार बन सकता है। सत्य के बिना प्रेम भावुकता बन जाता है। बढ़ने के लिए दोनों आवश्यक हैं।

यह पद नी को पढ़ने के लिए भी एक सुरक्षा प्रदान करता है। उसकी शिक्षाओं को परखा जाना चाहिए, केवल सराहा नहीं। किसी वरदान पाए हुए शिक्षक के प्रति सही प्रतिक्रिया आँख मूँदकर निष्ठा नहीं, बल्कि पवित्रशास्त्र के अधीन कृतज्ञतापूर्ण विवेक है।

नी ने स्वयं विश्वासियों से वचन को जानने का आग्रह किया। कोई भी बाद का चेला उसकी पुस्तकों को दूसरा धर्मशास्त्र-संग्रह मानकर उसका आदर नहीं करता।

हर जोड़ की सहायता

इफिसियों देह का चित्र इस प्रकार खींचता है कि वह "हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-ठीक कार्य करने के द्वारा उसमें होता है" बढ़ती है (इफिसियों 4:16)।

नी को आपूर्ति (supply) का विचार बहुत प्रिय था। मसीही सम्बन्ध केवल प्रशासनिक जुड़ाव नहीं हैं। अंग मसीह को ग्रहण करते हैं और एक दूसरे तक मसीह को पहुँचाते हैं।

यह रूपक परस्पर निर्भरता को दर्शाता है। देह से अलग हुआ हाथ अपने व्यक्तिगत अधिकारों पर अड़े रहकर स्वस्थ नहीं रह सकता। न ही देह हाथ की उपेक्षा कर सकती है।

नी कभी-कभी "देह-चेतना" की बात करता था—यह बोध कि किसी का जीवन और सेवकाई एक बड़े जीवित शरीर-तन्त्र के भीतर आते हैं। इसने उस स्वतन्त्र मसीही सेवक को चुनौती दी जो अपना निजी राज्य खड़ा करता है।

पौलुस की अपनी सेवकाई परस्पर निर्भरता को दर्शाती है। उसे बरनबास, सीलास, तीमुथियुस, लूका, प्रिस्किल्ला और अक्विला की, प्रार्थना करनेवाली और दान देनेवाली कलीसियाओं की, और उन अनाम विश्वासियों की भी आवश्यकता थी जिन्होंने उसके जी को ठंडा किया। प्रेरितीय अधिकार ने आवश्यकता को समाप्त नहीं किया।

अगुवों के लिए यह नम्र करनेवाली बात है। कोई सेवकाई जितनी अधिक दिखाई देने लगती है, उतना ही यह कल्पना करना आसान हो जाता है कि दूसरे लोग अगुवे की बुलाहट का ही विस्तार हैं। इफिसियों इस चित्र को उलट देता है: अगुवा एक अंग है जो वह पहुँचाता है जो मसीह देता है, और साथ ही दूसरों की सहायता ग्रहण करता है।

देह इस प्रकार बढ़ती है "कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए" (इफिसियों 4:16)। प्रेम कोई सजावट नहीं है। वह जीवित बढ़ोतरी का वातावरण है।

उतार डालो और पहन लो

अब पौलुस अत्यन्त व्यावहारिक हो जाता है। विश्वासियों को अब ऐसे नहीं चलना चाहिए "जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं" (इफिसियों 4:17)। उन्होंने भिन्न रीति से "मसीह को सीखा" है।

यह वाक्यांश ध्यान खींचनेवाला है। मसीहियत केवल मसीही नियम सीखना नहीं है; यह मसीह को सीखना है।

पौलुस पुराने मनुष्यत्व को उतार डालने और नये को पहन लेने का वर्णन करता है, "जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है" (इफिसियों 4:24)।

यहाँ नी की रोमियों 6 वाली शिक्षा फिर सामने आती है। पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है; इसलिए विश्वासी पुराने जीवन के आचरण को उतार डालता है और नये जीवन के अनुरूप आचरण को पहन लेता है।

इसमें सच्चाई भी सम्मिलित है: "इस कारण झूठ बोलना छोड़कर, हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले" (इफिसियों 4:25)।

इसमें वह क्रोध भी सम्मिलित है जिसे पैर जमाने की जगह बनने से पहले ही वश में कर लिया जाए: "क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे" (इफिसियों 4:26)।

इसमें ईमानदार परिश्रम और उदारता भी सम्मिलित है: "चोरी करनेवाला फिर चोरी न करे; वरन् ... अपने हाथों से परिश्रम करे; इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो" (इफिसियों 4:28)।

यह रूपान्तरण अद्भुत है। चोर केवल चोरी करना बन्द नहीं करता; उसके हाथ उदारता के साधन बन जाते हैं। अनुग्रह क्षमता को नई दिशा देता है।

जीभ अनुग्रह का साधन

"कोई गंदी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो" (इफिसियों 4:29)।

आत्मिक सेवकाई पर नी की शिक्षा इस पद को विशेष रूप से मन को टटोलनेवाला बना देती है। यदि मसीही सेवा मसीह के जीवन का मुक्त होना है, तो शब्दों में अनुग्रह होना चाहिए।

इसका अर्थ यह नहीं कि बोली का स्वर सदा कोमल ही हो। यीशु कपट को कड़ाई से डाँट सकता था; पौलुस भ्रम का सामना कर सकता था। परन्तु सुधार का लक्ष्य भी आत्म-प्रदर्शन नहीं, बल्कि उन्नति होना चाहिए।

जीभ स्रोत को प्रकट कर देती है। चुगली संगति जैसी लग सकती है, पर वह गिराती है। व्यंग्य तिरस्कार को हास्य का रूप दे सकता है। चापलूसी हेरफेर करती है। अतिशयोक्ति अपनी छवि चमकाती है। कठोर सत्य किसी भाई को फिर से सँभालने के बदले क्रोध को तृप्त कर सकता है।

याकूब कहता है, "जो कोई वचन में नहीं चूकता, वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है" (याकूब 3:2)।

आत्मिक व्यक्ति की परख उसकी बोली में होती है।

नी की अपनी सशक्त शैली ने पाठकों की कई पीढ़ियों को प्रभावित किया। चेलों के लिए खतरा यह है कि वे उसके वर्षों के गठन में सहभागी हुए बिना उसकी निश्चितता की नकल करें। दो-टूक बोलने से आत्मिक अधिकार उत्पन्न नहीं होता।

परिपक्व जीभ सत्य, प्रेम, सही समय और सुननेवाले की आवश्यकताओं के अधीन रहती है।

पवित्र आत्मा को शोकित करना

"परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिससे तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है" (इफिसियों 4:30)।

यह पद आश्वासन और उत्तरदायित्व को जोड़ता है। आत्मा विश्वासी पर छुटकारे के लिए छाप लगाता है; फिर भी विश्वासी उसे शोकित कर सकता है।

नी की भक्तिपूर्ण शिक्षा आत्मा के प्रति संवेदनशीलता को बहुत महत्त्व देती थी। वह मानता था कि लगातार आज्ञा न मानने से आत्मिक समझ मन्द पड़ सकती है।

इसका सन्दर्भ सम्बन्धों से जुड़ा पाप है: कड़वाहट, प्रकोप, क्रोध, कलह, निन्दा, बैरभाव। हम कभी-कभी सोचते हैं कि आत्मा मुख्यत: रहस्यमय साधनाओं की उपेक्षा से शोकित होता है। पौलुस यह चेतावनी साधारण मानवीय सम्बन्धों के बीच रखता है।

"एक दूसरे पर कृपालु, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो" (इफिसियों 4:32)।

आत्मा का जीवन क्षमा के रूप में दिखाई देता है।

इसका मापदण्ड सुसमाचार है: "जैसे परमेश्वर ने ... तुम्हारे अपराध क्षमा किए।" मसीही क्षमा का अर्थ यह दिखावा करना नहीं कि कोई अपराध हुआ ही नहीं, और न ही वह सदा परिणामों को मिटा देती है या भरोसे को तुरन्त लौटा देती है। इसका अर्थ है बदला लेने की इच्छा को छोड़ देना और उस दया की ओर बढ़ना जो हमने स्वयं पाई है।

नी के लिए कलीसियाई जीवन ऐसे रूपान्तरण के लिए परमेश्वर की प्रमुख पाठशालाओं में से एक था। अमूर्त आत्मिकता तब तक आसान है जब तक कोई दूसरा व्यक्ति हमें घायल न कर दे।

प्रेम में चलो

"इसलिए प्रिय बच्चों के समान परमेश्वर का अनुसरण करो; और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आपको ... बलिदान कर दिया" (इफिसियों 5:1-2)।

"प्रिय बच्चों" वाक्यांश फिर से आज्ञा को पहचान पर आधारित करता है। हम अनुसरण इसलिए करते हैं क्योंकि हमसे प्रेम किया गया है।

प्रेम की परिभाषा मसीह का आत्म-दान है। प्रेम केवल स्नेह नहीं है; वह क्रूस का आकार ले लेता है।

टूटेपन पर नी की शिक्षा यहीं स्थान पाती है। बाहरी मनुष्य इसलिए नहीं तोड़ा जाता कि व्यक्ति उदास या निष्क्रिय हो जाए, बल्कि इसलिए कि वह स्व-केन्द्रितता से मुक्त हो, ताकि मसीह का जीवन दूसरों तक पहुँच सके। सच्चा टूटापन प्रेम को बढ़ाता है।

पौलुस तुरन्त प्रेम की तुलना व्यभिचार, अशुद्धता, लोभ, निर्लज्जता, मूर्खता की बातचीत और भद्दे उपहास से करता है (इफिसियों 5:3-4)। प्रेम की नैतिक सीमाएँ होती हैं। वह भूख-लालसा को पवित्र ठहराने का ठप्पा नहीं लगाता।

यह ऐसे युग में महत्त्वपूर्ण है जो अकसर प्रेम को इच्छा के समर्थन के रूप में परिभाषित करता है। नये नियम का प्रेम परमेश्वर के सत्य के अधीन दूसरे की भलाई चाहता है।

मसीह ने "हमारे लिये अपने आपको ... बलिदान कर दिया।" क्रूस ही आदर्श बना रहता है।

ज्योति की सन्तान के समान चलो

"क्योंकि तुम तो पहले अंधकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो" (इफिसियों 5:8)।

पौलुस केवल यह नहीं कहता कि विश्वासी अंधकार में थे; वह कहता है कि वे स्वयं अंधकार थे। न ही वह केवल यह कहता है कि उनके पास ज्योति है; वे "प्रभु में" ज्योति हैं। पहचान फिर से आचरण को उत्पन्न करती है।

"ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है" (इफिसियों 5:9)।

भीतरी आत्मिक जीवन पर नी के आग्रह को यहाँ परखा जा सकता है। "भीतरी जीवन" का अर्थ चाहे जो हो, उसका फल भलाई, धार्मिकता और सत्य के रूप में दिखाई देना चाहिए। जो व्यक्ति परमेश्वर के साथ असाधारण संगति का दावा करता है पर छल से जीता है, वह बाइबल की एक कसौटी पर विफल हो गया है।

"अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन् उन पर उलाहना दो" (इफिसियों 5:11)। मसीही प्रेम नैतिक चुप्पी की माँग नहीं करता।

फिर भी उजागर करने का काम हमसे ही आरम्भ होना चाहिए। कलीसियाओं के लिए बाहर के अंधकार की निन्दा करना और भीतर के पाप को छिपाना आसान है। ज्योति में चलने में अंगीकार और जवाबदेही सम्मिलित हैं।

यूहन्ना कहता है, "यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अंधकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं" (1 यूहन्ना 1:6)।

आत्मिकता और ईमानदारी को अलग नहीं किया जा सकता।

ध्यान से चलो

"इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो। और अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं" (इफिसियों 5:15-16)।

नी असाधारण अस्थिरता के दौर से गुज़रा: सरदारों की राजनीति, राष्ट्रवादी क्रान्ति, जापानी आक्रमण, गृहयुद्ध, साम्यवादियों की विजय, वैचारिक अभियान, कारावास। "दिन बुरे हैं" उसके लिए कोई सैद्धान्तिक बात नहीं थी।

बुद्धि का अर्थ था बदलती परिस्थितियों में प्रभु की इच्छा को समझना। इसके लिए भय नहीं, बल्कि सजगता आवश्यक थी।

पौलुस आगे कहता है, "पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" (इफिसियों 5:18)। आत्मा से परिपूर्ण होना आराधना, धन्यवाद और परस्पर अधीनता उत्पन्न करता है।

नी ने आत्मिक परिपूर्णता पर बल दिया, परन्तु पौलुस के बताए चिह्न आश्चर्यजनक रूप से सामूहिक और साधारण हैं: भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाना; धन्यवाद करना; मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहना (इफिसियों 5:19-21)।

आत्मा से परिपूर्ण जीवन केवल असाधारण अनुभवों से प्रमाणित नहीं होता। वह आराधना, कृतज्ञता और मसीह के अधीन व्यवस्थित सम्बन्धों में दिखाई देता है।

विवाह और मसीह का भेद

इफिसियों मसीही चाल को विवाह पर लागू करता है। इस खण्ड ने, विशेषकर अधीनता और मुखियापन को लेकर, तीव्र वाद-विवाद उत्पन्न किया है। नी ने, जो अपने सांस्कृतिक और धर्मवैज्ञानिक परिवेश से ढला था, सामान्यतः इस पाठ को पारम्परिक अर्थ में पढ़ा। एक उत्तरदायी समकालीन पठन को पूरे खण्ड को मसीह के आत्म-दान पर केन्द्रित रखना चाहिए।

"हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया" (इफिसियों 5:25)।

कोई पति के पास जो भी अधिकार माने, उसका आदर्श एक क्रूस पर चढ़ाया गया दूल्हा है। मसीह अपनी सुविधा के लिए कलीसिया का शोषण नहीं करता। वह उसकी पवित्रता और भलाई के लिए अपने आपको दे देता है।

यह खण्ड इस बात से आरम्भ होता है: "मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो" (इफिसियों 5:21)। मसीही विवाह को एक ओर विशेषाधिकार और दूसरी ओर कर्तव्य में नहीं समेटा जा सकता। दोनों मसीह के हैं।

सौंपे गए अधिकार पर नी के बाद के बल को सदा इसी आदर्श के अधीन रखा जाना चाहिए। जो अधिकार दूसरे की हानि करके अपनी रक्षा करता है, वह यीशु जैसा दिखना छोड़ चुका है।

अन्ततः विवाह एक चिह्न है: "यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ" (इफिसियों 5:32)।

पार्थिव सम्बन्ध अपने से परे की ओर संकेत करता है।

बच्चे, माता-पिता, सेवक, स्वामी

पौलुस घर-परिवार के सम्बन्धों की ओर बढ़ता है। बच्चे "प्रभु में" माता-पिता की आज्ञा मानें (इफिसियों 6:1), जबकि पिताओं को चेतावनी दी जाती है, "अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो" (इफिसियों 6:4)।

अधिकार फिर से उत्तरदायित्व की सीमा में बँधा है।

पौलुस पहली शताब्दी की सामाजिक व्यवस्था के भीतर दासों और स्वामियों को भी सम्बोधित करता है। दुःख की बात है कि इन पाठों का दुरुपयोग दासप्रथा को उचित ठहराने के लिए किया गया है। नया नियम कोई आधुनिक दासप्रथा-उन्मूलनवादी ग्रन्थ प्रस्तुत नहीं करता, परन्तु वह ऐसे सिद्धान्त बोता है जो मनुष्य पर मनुष्य के स्वामित्व की जड़ खोदते हैं: स्वामी और सेवक दोनों का स्वर्ग में एक ही स्वामी है, और "वह किसी का पक्ष नहीं करता" (इफिसियों 6:9)।

आधुनिक काम पर इसे लागू करते समय नौकरी और दासता के ऐतिहासिक अन्तर को मिटाया नहीं जाना चाहिए। फिर भी पौलुस का यह आग्रह कि काम "मानो मसीह के लिये" किया जाए, छिपे हुए परिश्रम को गरिमा देता है।

नी साधारण विश्वासयोग्यता को मूल्यवान समझता था। आत्मिक जीवन सभाओं तक सीमित नहीं है। मेज़ पर बैठा कर्मचारी, रसोई में माता या पिता, ईमानदारी से सौदा करता व्यापारी, पढ़ाई करता विद्यार्थी और बिना किसी की नज़र में आए काम करता सेवक—सबके पास मसीह के साथ चलने का एक क्षेत्र है।

आत्मिक शिक्षा की परख सोमवार की सुबह होती है।

हमारे द्वारा जिया गया मसीह का जीवन

अन्ततः नी के लिए "चलने" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ यीशु की बाहरी नकल करना नहीं है, मानो वह केवल हमारे बाहर खड़ा एक उदाहरण हो। इसका अर्थ है भीतर निवास करनेवाले मसीह को यह अवसर देना कि वह समर्पित अंगों के द्वारा अपने जीवन को प्रकट करे।

पौलुस कहता है, "अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है" (गलातियों 2:20)।

नी की भाषा से ऐसा लग सकता है मानो मानवीय व्यक्तित्व लुप्त हो जाता है। बाइबल के अनुसार पौलुस एक सक्रिय "मैं" बना रहता है: "मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ।" एकता व्यक्तित्व को नष्ट नहीं करती; वह उसे मसीह के चारों ओर नये सिरे से व्यवस्थित करती है।

परिपक्व मसीही कम मानवीय नहीं, बल्कि पुत्र के स्वरूप में ढलकर और भी सच्चे अर्थ में मानवीय बनता है। मसीह का जीवन स्वभाव, संस्कृति, स्मृति, सृजनशीलता या बुलाहट को मिटाता नहीं। वह उन्हें पवित्र करता है।

इसलिए "मसीह को जीने देना" निष्क्रियता नहीं है। यह निरन्तर निर्भरता में विश्वास से भरी आज्ञाकारिता है।

मार्ग में विफलता

कोई भी मसीही सिद्ध चाल नहीं चलता। "जयवन्त जीवन" के सन्देश का खतरा यह है कि विफलता को स्वीकार करना कठिन हो सकता है। विश्वासी डर सकते हैं कि अंगीकार इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने रहस्य को समझा ही नहीं।

नया नियम इससे बेहतर यथार्थवाद प्रदान करता है। "यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं" (1 यूहन्ना 1:8)। फिर भी तुरन्त आगे: "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)।

अनुग्रह केवल चाल का आरम्भ ही नहीं करता; जब हम ठोकर खाते हैं तब अनुग्रह हमें फिर से सँभालता है।

नी का सर्वोत्तम धर्मविज्ञान इसका समर्थन करता है। मसीह का लहू संगति का आधार बना रहता है। क्रूस स्व के लिए परमेश्वर का उत्तर बना रहता है। आत्मा हमारा स्रोत बना रहता है। हम सुसमाचार से आगे बढ़कर कभी मसीही अस्तित्व की किसी ऐसी ऊँची श्रेणी में नहीं पहुँचते जहाँ पश्चाताप अनावश्यक हो।

योग्य चाल में शीघ्र अंगीकार सम्मिलित है।

प्रेम: अन्तिम मापदण्ड

परिपक्वता का पौलुस का चित्र बार-बार प्रेम में ही अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचता है। यह पूरे नये नियम के अनुरूप है।

"यदि ... मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं" (1 कुरिन्थियों 13:2)।

कोई मसीही आत्मा और प्राण के बीच नी के भेदों को समझ सकता है, स्थानीय कलीसिया के विषय में दृढ़ धारणाएँ रख सकता है, रोमियों 6 को जान सकता है, पुनरुत्थान के जीवन की बात कर सकता है, विश्वास के सिद्धान्तों पर चल सकता है, और फिर भी मसीह के जीवन के केन्द्रीय नैतिक प्रमाण से चूक सकता है।

"आत्मा का फल प्रेम ..." (गलातियों 5:22)। प्रेम सबसे पहले आता है।

प्रेम सभाओं में धीरजवन्त होता है, व्यापार में ईमानदार, विवाह में विश्वासयोग्य, आवश्यकता के प्रति उदार, संघर्ष में सच्चा, मतभेदों के पार अतिथि-सत्कार करनेवाला, पाप के सामने साहसी, और चोट के बाद क्षमा करनेवाला।

यही चलना है।

बैठा हुआ विश्वासी साधारण संसार में से होकर चलता है और उसके चरित्र को साथ लिए चलता है जिसमें वह बैठा है।

परन्तु इफिसियों में एक और क्रिया है। मसीही केवल ग्रहण ही नहीं करता और चलता ही नहीं। वह एक ऐसे संसार में रहता है जिस पर संघर्ष छिड़ा हुआ है। बुराई परमेश्वर के उद्देश्यों का विरोध करती है। इसलिए कलीसिया को केवल आगे बढ़ना ही नहीं, बल्कि निर्णायक क्षणों में पीछे हटने से इन्कार करना भी सीखना होगा।

अन्तिम शब्द है: खड़े रहो।

चाल असाधारण होने से पहले सम्बन्धों की होती है

मसीही अकसर असाधारण आत्मिकता की ओर आकर्षित होते हैं: आश्चर्यकर्म, दर्शन, भविष्यद्वाणी की अन्तर्दृष्टि, वीरतापूर्ण मिशन, तीव्र प्रार्थना। इफिसियों 4-6 अपनी नैतिक ऊर्जा का बहुत बड़ा भाग सम्बन्धों पर लगाता है।

सच बोलो। ईमानदारी से काम करो। ऐसे शब्द बोलो जो उन्नति करें। क्षमा करो। अपने जीवनसाथी से प्रेम रखो। बच्चों को रिस दिलाए बिना उनका पालन-पोषण करो। साधारण काम को मानो मसीह के लिये करो।

नी को पढ़ने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है। उसकी भाषा ऊँची सुनाई दे सकती है, परन्तु "मसीह जीवन के रूप में" की कसौटी रोज़मर्रा की है।

"यदि कोई कहे, 'मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ,' और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा है" (1 यूहन्ना 4:20)।

सबसे ऊँची आत्मिकता को खाने की मेज़ पर भी टिके रहना होगा।

आत्मा के अनुसार चलना

गलातियों इफिसियों के समानान्तर एक बात रखता है: "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे" (गलातियों 5:16)।

इसके बाद आनेवाला फल नैतिक और सम्बन्धों से जुड़ा है: प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, दया, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम।

आत्मा के विषय में नी की भाषा तब सबसे सुरक्षित होती है जब वह यहाँ लंगर डाले रहती है। आत्मा के अनुसार चलने का प्रमाण कोई असामान्य भीतरी अनुभूति नहीं, बल्कि मसीह जैसा फल है।

जो व्यक्ति आत्मिक अन्तर्ज्ञान का दावा करता है पर संयम से रहित है, उसके पास अपने दावे पर प्रश्न उठाने का कारण है।

सार्वजनिक जीवन में योग्य चाल

नी ने प्रायः कलीसिया को दलगत राजनीति से अलग रखने का प्रयास किया, परन्तु इफिसियों की योग्य चाल की पुकार सार्वजनिक जीवन पर भी लागू होती है। मसीही कर चुकाते हैं, व्यापार करते हैं, नागरिकता रखते हैं, अन्याय का सामना करते हैं और समुदायों को प्रभावित करते हैं।

"बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो" (कुलुस्सियों 4:5)।

कलीसिया की सार्वजनिक गवाही केवल इस पर निर्भर नहीं करती कि वह मसीह के विषय में क्या कहती है, बल्कि इस पर भी कि जब कोई स्पष्ट धार्मिक गतिविधि नहीं चल रही होती, तब विश्वासी कैसा व्यवहार करते हैं।

व्यापार में ईमानदारी, कर्मचारियों के साथ व्यवहार, विरोधियों के विषय में बोली, यौन पवित्रता और कंगालों की चिन्ता—ये सब चाल का ही भाग हैं।

योग्य चाल और पवित्रता का साधारण रूप

यदि मसीह को जीवन मानने पर नी के बल को इफिसियों के उत्तरार्ध से अलग कर दिया जाए, तो वह रहस्यवादी सुनाई दे सकता है। पौलुस यह अलगाव होने नहीं देता। अध्याय 1-3 की स्वर्गीय स्थिति अध्याय 4-6 में एक अत्यन्त व्यावहारिक चाल उत्पन्न करती है।

"इसलिए मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो" (इफिसियों 4:1)। "इसलिए" शब्द सिद्धान्त और आचरण को जोड़ता है। अनुग्रह नैतिकता को समाप्त नहीं करता; वह उसके लिए एकमात्र स्थिर भूमि रचता है।

पौलुस जिन पहले गुणों का नाम लेता है, वे असाधारण वरदान नहीं हैं: दीनता, नम्रता, धीरज, और प्रेम से एक दूसरे की सह लेना। यह आत्मिकता की एक गहरी, मन को टटोलनेवाली कसौटी है। कोई विश्वासी स्वर्गीय वास्तविकताओं के विषय में प्रभावशाली ढंग से बोल सकता है और फिर भी घर में अधीर, सभाओं में आत्म-रक्षात्मक, अपने वचनों में अविश्वसनीय या दुर्बलता के प्रति कठोर बना रह सकता है। पौलुस चाल को वहाँ मापता है जहाँ दूसरे लोग उसे अनुभव कर सकें।

नी बार-बार इस सिद्धान्त पर लौटता था कि मसीह को व्यावहारिक बनना ही होगा। यदि मसीह हमारा जीवन है, तो उसका जीवन हमारी बोली, धन, विवाह, काम, क्षमा, यौनता और असुविधाजनक लोगों के साथ हमारे व्यवहार में अधिकाधिक दिखाई देना चाहिए।

इफिसियों 4 सच्चाई को सामूहिक बना देता है: "झूठ बोलना छोड़कर, हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं" (इफिसियों 4:25)। झूठ बोलना केवल कोई निजी नियम तोड़ना नहीं है; वह व्यक्ति की अपनी ही देह को चोट पहुँचाता है। देह का सिद्धान्त ईमानदारी की नैतिकता बन जाता है।

क्रोध के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया है। "क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे" (इफिसियों 4:26)। पौलुस यह दिखावा नहीं करता कि क्रोध कभी उठता ही नहीं। वह आज्ञा देता है कि क्रोध पाप के लिए जमी हुई भूमि न बन जाए। आत्मिक व्यक्ति वह नहीं जिसने क्रोध पर "प्राणिक" का ठप्पा लगाकर उसका इन्कार करना सीख लिया है। परिपक्वता भावना को सच्चाई से पहचानती है, उसे परमेश्वर के अधीन करती है और मेल-मिलाप की खोज करती है।

काम का भी रूपान्तरण हो जाता है। चोर से केवल चोरी बन्द करने को नहीं कहा जाता, बल्कि परिश्रम करने को कहा जाता है "इसलिए कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो" (इफिसियों 4:28)। अनुग्रह बटोरने को उदारता में बदल देता है। लक्ष्य केवल नकारात्मक नैतिकता से बढ़कर है; यह एक नया उद्देश्य है।

बोली को अनुग्रह पहुँचाना चाहिए: "कोई गंदी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो" (इफिसियों 4:29)। कसौटी केवल यह नहीं कि कोई कथन तकनीकी रूप से सत्य है या नहीं। क्या वह आवश्यकता के अनुसार उन्नति करता है? सत्य को हथियार बनाया जा सकता है। मसीही बोली सत्य और प्रेम को जोड़ती है।

इफिसियों 5 इसमें यौन पवित्रता, समय का बुद्धिमानी से उपयोग, आराधना, कृतज्ञता और परस्पर अधीनता जोड़ता है। आत्मा से परिपूर्ण होने की आज्ञा के बाद गीत गाना, धन्यवाद और सम्बन्धों का आचरण आता है। आत्मा से परिपूर्ण जीवन असाधारण सभाओं तक सीमित नहीं है। वह खाने की मेज़ तक पहुँचता है।

पारिवारिक सम्बन्धों पर नी की अपनी शिक्षा उसके युग की मान्यताओं को दर्शाती थी और उसे सावधानी से पढ़ा जाना चाहिए। घर-परिवार सम्बन्धी पाठों का कोई भी प्रयोग मसीह के आत्म-दान करनेवाले प्रेम, हर विश्वासी की गरिमा और ज़बरदस्ती के प्रभुत्व के

निषेध के अधीन होना चाहिए। पतियों के लिए पौलुस का मापदण्ड अधिकार-भावना नहीं, बल्कि क्रूस है: “हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया” (इफिसियों 5:25)।

इसलिए योग्य चाल मसीह में विश्राम करने के नी के सिद्धान्त को निष्क्रियतावाद बनने से बचाती है। अनुग्रह प्रयत्न को जन्म देता है, परन्तु उस प्रयत्न की जड़ें बदल चुकी होती हैं। विश्वासी इसलिए आज्ञा नहीं मानता कि वह स्वीकार किया जाए; वह इसलिए आज्ञा मानता है क्योंकि वह उस प्रिय में स्वीकार किया जा चुका है। वह आत्मिक जीवन गढ़ता नहीं; वह अपने अंगों को उस परमेश्वर को सौंपता है जिसका जीवन पहले से भीतर कार्य कर रहा है।

यहीं नी के प्रसिद्ध क्रम में पास्तरीय बुद्धि दिखाई देती है। पहले बैठो। फिर चलो। क्रम उलटने से व्यवस्थावाद उत्पन्न होता है। चलना छोड़ देने से अवास्तविकता उत्पन्न होती है।

खड़े रहो: आत्मिक युद्ध और विजय

तीसरी क्रिया

इफिसियों की पत्री को वॉचमैन नी जिस प्रकार पढ़ते थे, उसका अंतिम चरण एक ही शब्द में समाया हुआ है: खड़े रहो। "परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको" (इफिसियों 6:11)।

क्रिया का यह बदलना अर्थपूर्ण है। विश्वासी मसीह के साथ बैठाया जा चुका है और उसने उस बुलाहट के योग्य चाल चलना सीख लिया है। परन्तु ऐसे क्षण भी आते हैं जब मुख्य आज्ञा न कुछ प्राप्त करने की होती है, न आगे बढ़ने की। वह आज्ञा यह होती है कि अपनी जगह से हटाए जाने से इन्कार करो।

नी ने आत्मिक युद्ध को मसीह की पूरी हो चुकी विजय के दृष्टिकोण से समझा। मसीही इसलिए नहीं लड़ता कि बुराई पर मसीह की जीत उत्पन्न करे। वह उस विजय में खड़ा रहता है जो यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान और महिमा में ऊँचे उठाए जाने के द्वारा स्थापित हो चुकी है।

पौलुस पहले ही कह चुका है कि मसीह को "सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के" ऊपर बैठाया गया (इफिसियों 1:21)। अध्याय 6 के युद्ध को अध्याय 1 के सिंहासनारोहण से अलग नहीं किया जा सकता। विश्वासी का भरोसा उसकी अपनी आत्मिक शक्ति पर नहीं, बल्कि मसीह की सर्वोच्चता पर है।

नी के इस ज़ोर के पीछे यही तर्क है: अपनी भूमि पर डटे रहो, क्योंकि वह भूमि मसीह की है।

आत्मिक संघर्ष की वास्तविकता

आज के पाठक आत्मिक युद्ध को बहुत भिन्न पूर्वधारणाओं के साथ देखते हैं। कुछ मसीही लगभग हर कठिनाई को दुष्टात्माओं का आक्रमण मान लेते हैं; दूसरे अपने विश्वदृष्टिकोण से

व्यक्तिगत आत्मिक बुराई को व्यावहारिक रूप से निकाल ही देते हैं। इफिसियों न अंधविश्वास की अनुमति देता है, न सरलीकरण की।

"हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और माँस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के शासकों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं" (इफिसियों 6:12)।

पौलुस स्पष्ट रूप से विश्वास करता है कि बुराई का एक व्यक्तिगत और आत्मिक आयाम है जो मानवीय संस्थाओं से परे है। फिर भी वह इफिसियों का अधिकांश भाग साधारण आचरण, सम्बन्धों, सच्चाई, काम, यौन जीवन, क्षमा और बुद्धि की चर्चा में लगाता है। आत्मिक युद्ध साधारण आज्ञाकारिता का स्थान नहीं लेता।

नी ऐसे संसार में रहते थे जहाँ आत्मिक वास्तविकताओं को गम्भीरता से लिया जाता था, और उन्होंने ऐसे लेखकों को पढ़ा था जो शैतान के साथ संघर्ष पर ज़ोर देते थे। उनकी शिक्षा ने बहुत से पश्चिमी मसीहियों को यह बाइबल-आधारित समझ फिर से पाने में सहायता दी कि कलीसिया के संघर्षों को केवल मनोविज्ञान, राजनीति या समाजशास्त्र से नहीं समझाया जा सकता।

परन्तु विवेक आवश्यक है। पवित्रशास्त्र विश्वासियों को दुष्टात्माओं के बारे में जुनूनी अटकलबाज़ी में कभी नहीं बुलाता। प्रेरित मसीह का प्रचार करते हैं, परीक्षा का सामना करते हैं, प्रार्थना करते हैं, आवश्यकता पड़ने पर अधिकार का प्रयोग करते हैं, और ध्यान को परमेश्वर की ओर मोड़ते हैं। केन्द्र मसीह ही बना रहता है।

सबसे सुरक्षित नियम सरल है: शैतान को उतनी ही गम्भीरता से लो जितनी गम्भीरता से पवित्रशास्त्र लेता है, परन्तु उसे उससे अधिक केन्द्र में न रखो जितना पवित्रशास्त्र रखता है।

शैतान की युक्तियाँ

पौलुस "शैतान की युक्तियों" की बात करता है (इफिसियों 6:11)। यह शब्द रणनीति, चतुराई या तरीके का संकेत देता है। बुराई हमेशा स्पष्ट नहीं होती। परीक्षा बुद्धि, धार्मिकता, विवशता, भय, महत्त्वाकांक्षा, या आत्मिक उत्साह का भी भेष धरकर आ सकती है।

नी नकली आत्मिकता के प्रति विशेष रूप से सजग थे। कोई विश्वासी भावनात्मक तीव्रता को पवित्र आत्मा, कठोरता को अधिकार, निष्क्रियता को समर्पण, या असाधारण अनुभवों को परिपक्वता समझने की भूल कर सकता है।

यह विषय *आत्मिक मनुष्य* (The Spiritual Man) में प्रमुख हो गया, जहाँ नी ने आत्मा, प्राण, शरीर और दुष्टात्मिक प्रभाव की क्रियाओं में भेद करने का प्रयास किया। इनमें से कुछ भेद स्वयं पवित्रशास्त्र से अधिक निश्चित और पेचीदा हैं, और पाठकों को उन्हें निदान की किसी पद्धति में बदलने से बचना चाहिए। फिर भी उनके पीछे की पास्तरीय चिन्ता ठीक है: जो कुछ आत्मिक लगता है, वह सब परमेश्वर की ओर से नहीं होता।

यूहन्ना आज्ञा देता है, "हे प्रियों, हर एक आत्मा पर विश्वास न करो: वरन् आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं" (1 यूहन्ना 4:1)।

परखने के लिए पवित्रशास्त्र, मसीह का अंगीकार, नैतिक फल, बुद्धि और मसीही समुदाय का विवेक आवश्यक है। कोई निजी अनुभूति केवल इसलिए अपने आप प्रामाणिक नहीं हो जाती कि वह तीव्र है।

शैतान के सबसे प्रभावी झूठों में अक्सर इतना सत्य होता है कि वे विश्वसनीय लगें। जंगल में उसने यीशु के सामने पवित्रशास्त्र उद्धृत किया। यीशु ने पवित्रशास्त्र का उत्तर उसके उचित सन्दर्भ में पवित्रशास्त्र से ही दिया (मत्ती 4:1-11)।

इसलिए आत्मिक युद्ध में बाइबल की सही व्याख्या भी सम्मिलित है।

कमर पर सत्य

"इसलिए सत्य से अपनी कमर कसकर स्थिर रहो" (इफिसियों 6:14)।

हथियार सत्य से आरम्भ होते हैं। यह नींव की बात है। कलीसिया अधिक प्रबल भावनाएँ उत्पन्न करके धोखे को नहीं हराती, बल्कि स्वयं को उस वास्तविकता से कसकर बाँधकर हराती है जिसे परमेश्वर प्रकट करता है।

इफिसियों में सत्य सैद्धान्तिक भी है और नैतिक भी। मसीही सुसमाचार के सत्य का अंगीकार करते हैं और एक-दूसरे से सच बोलते हैं। जब भी विश्वासी साधारण जीवन में झूठ को सहन करते हैं, आत्मिक युद्ध कमज़ोर पड़ जाता है।

कोई अगुवा तथ्यों को तोड़-मरोड़ते हुए प्रार्थना में सामर्थ्य की आशा नहीं कर सकता। कोई कलीसिया दुर्व्यवहार को छिपाते हुए अंधकार के विरुद्ध युद्ध नहीं कर सकती। कोई मसीही बढ़ा-चढ़ाकर अपनी छवि बनाते हुए आत्मिक अधिकार का दावा नहीं कर सकता।

नी के अपने जीवन की व्याख्या तीखे रूप से परस्पर-विरोधी वृत्तान्तों के द्वारा की गई है, विशेषकर उनकी व्यावसायिक गतिविधियों, कथित नैतिक विफलताओं, साम्यवादी आरोपों

और बाद के कारावास के सम्बन्ध में। ज़िम्मेदार जीवनी-लेखक को एक सरल वीर-गाथा की इच्छा का विरोध करना चाहिए। किसी मसीही अगुवे का प्रचार-प्रसार उसका जितना आदर करता है, सत्य उससे कहीं अधिक मसीह का आदर करता है।

आत्मिक रूप से भी यही सिद्धान्त लागू होता है। हम तब सबसे सुरक्षित होते हैं जब हम सत्य चाहते हैं, तब भी जब सत्य हमें लज्जित करता है।

यीशु ने कहा, "सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:32)।

धार्मिकता की झिलम

पौलुस आगे कहता है, "धार्मिकता की झिलम पहनकर" (इफिसियों 6:14)।

मसीही परम्परा ने इसकी व्याख्या मसीह में प्राप्त धार्मिकता के रूप में भी की है और उससे निकलनेवाले धर्मी आचरण के रूप में भी। इफिसियों दोनों आयामों का समर्थन करता है। विश्वासी अनुग्रह से उद्धार पाते हैं और भले कामों के लिए सृजे गए हैं।

नी के सुसमाचार का ज़ोर उस स्वीकृति से आरम्भ होता है जो हमारे नाम गिनी गई है। शैतान के आरोप धर्मी ठहराए जाने को उलट नहीं सकते। "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है" (रोमियों 8:33)।

फिर भी नैतिक समझौता वास्तविक असुरक्षा उत्पन्न करता है। पतरस विश्वासियों को सचेत और जागते रहने की चेतावनी देता है, और साथ ही उन्हें बुलाता है कि "विश्वास में दृढ़ होकर" शैतान का सामना करें (1 पतरस 5:9)। याकूब परमेश्वर के अधीन होने, शैतान का सामना करने, परमेश्वर के निकट आने, हाथ शुद्ध करने और हृदय पवित्र करने को एक साथ जोड़ता है (याकूब 4:7-8)।

इसलिए धार्मिकता कोई जादुई ढाल नहीं है जिसे किसी सूत्र से बुलाया जाए। यह विश्वासी का मसीह की धार्मिकता में खड़ा रहना है, और साथ ही उस पाप को ठुकराना है जिसे वह मन में सँजोए हुए है।

विवेक के विषय में नी की शिक्षा यहीं आती है। शुद्ध विवेक आत्मिक स्वतंत्रता देता है। छिपा हुआ पाप दुचित्तापन उत्पन्न करता है।

परन्तु विवेक को पवित्रशास्त्र के द्वारा शिक्षित होना चाहिए। अति-संवेदनशील लोग उस बात के लिए भी दोषी महसूस कर सकते हैं जिसे परमेश्वर ने मना नहीं किया, जबकि कठोर

हो चुके लोग वास्तविक पाप के लिए भी बहुत कम दोष महसूस कर सकते हैं। वचन विवेक का न्याय करता है; विवेक अंतिम न्यायी नहीं है।

मेल के सुसमाचार के जूते

"पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहनकर" (इफिसियों 6:15)।

यह ध्यान देने योग्य है कि हथियारों में मेल का सुसमाचार भी सम्मिलित है। योद्धा कलीसिया झगड़ालू कलीसिया नहीं है। उसकी तैयारी उस मेल-मिलाप से आती है जिसे मसीह ने पूरा किया है।

इफिसियों 2 पहले ही घोषित कर चुका है, "वही हमारा मेल है" (इफिसियों 2:14)। यीशु ने बीच की अलग करनेवाली दीवार को ढा दिया और क्रूस के द्वारा मेल कराया। इसलिए आत्मिक युद्ध मानवीय शत्रुओं के प्रति बैर को कभी उचित नहीं ठहरा सकता।

"हमारा यह मल्लयुद्ध, लहू और माँस से नहीं।" यह पद लोगों को राक्षस बना देने के हर प्रयास पर रोक लगाना चाहिए। राजनीतिक विरोधी, धार्मिक आलोचक, सतानेवाले, कठिन स्वभाव के सम्बन्धी और बैर रखनेवाले पड़ोसी अंतिम शत्रु नहीं हैं।

आगे चलकर नी को एक ऐसी सरकार का सामना करना पड़ा जिसने उन्हें बीस वर्ष तक कैद में रखा। उनके दु:ख का मसीही वृत्तान्त अन्याय की निन्दा कर सकता है, परन्तु मानवीय सतानेवालों को घृणा की ऐसी वस्तु नहीं बना सकता मानो वे मनुष्य से कम हों।

यीशु आज्ञा देता है, "अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो" (मत्ती 5:44)।

सुसमाचार के योद्धा अपने पाँवों में मेल लिए चलते हैं।

विश्वास की ढाल

"उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको" (इफिसियों 6:16)।

नी की विश्वास-सम्बन्धी शिक्षा विश्वास को मानसिक तीव्रता नहीं मानती थी। विश्वास बाहर की ओर, परमेश्वर और उसके वचन की ओर देखता है।

ये "जलते हुए तीर" कई रूप ले सकते हैं: आरोप, भय, अविश्वास, लज्जा, परीक्षा, निराशा, परमेश्वर की विकृत छवियाँ, और अचानक घुस आनेवाले विचार। ढाल यह कथन नहीं है कि "मैं बलवान हूँ।" ढाल परमेश्वर के चरित्र और उसकी प्रतिज्ञा पर भरोसा है।

परीक्षा के समय यीशु का उत्तर बार-बार इन शब्दों से आरम्भ होता था, "लिखा है।" उसने वचन के द्वारा पिता पर भरोसा रखा।

विश्वास ख़तरे का इन्कार नहीं करता। पौलुस कहता है कि अब्राहम के विश्वास के लिए यह आवश्यक नहीं था कि वह अपनी परिस्थितियों को कुछ और होने का दिखावा करे। उसने अपनी देह के मरे हुए-से होने पर ध्यान दिया, और फिर भी उस परमेश्वर पर भरोसा रखा "जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है, कि मानो वे हैं" (रोमियों 4:17)।

बाइबल का विश्वास परिस्थितियों के प्रति यथार्थवाद है, जो परमेश्वर के विषय में और भी गहरे यथार्थवाद के साथ जुड़ा हुआ है।

सेवकाई में नी का "विश्वास का सिद्धान्त" इसी दृढ़ धारणा से उपजा। वे चाहते थे कि सेवक संस्थागत गारंटियों पर नहीं, परमेश्वर पर निर्भर रहें। यह अभ्यास महँगा पड़ सकता था, और बुद्धि यह पहचानने की माँग करती है कि परमेश्वर साधारण नौकरी, बजट बनाने, दान या संस्थाओं के द्वारा भी प्रबन्ध कर सकता है। विश्वास किसी एक आर्थिक ढाँचे से परिभाषित नहीं होता। वह आज्ञाकारिता के भीतर परमेश्वर पर निर्भरता से परिभाषित होता है।

उद्धार का टोप

"और उद्धार का टोप ले लो" (इफिसियों 6:17)।

मन एक प्रमुख रणभूमि है। उद्धार पहचान और आशा की रक्षा करता है।

पौलुस दूसरी जगह इस टोप को "उद्धार की आशा" का टोप कहता है (1 थिस्सलुनीकियों 5:8)। मसीही आशा अनुकूल परिस्थितियों के विषय में मनचाही कल्पना नहीं है। यह परमेश्वर की अंतिम विजय पर आधारित निश्चित अपेक्षा है।

आगे चलकर नी का कारावास उनसे उपयोगी होने के सब साधारण चिह्न छीन लेनेवाला था। जो व्यक्ति अपनी सेवकाई के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता था, वह जेल की दीवारों के पीछे रहनेवाला था, और उसकी सार्वजनिक आवाज़ छीन ली जानेवाली थी। यदि आशा दिखाई देनेवाले प्रभाव पर निर्भर होती, तो ऐसे वर्ष व्यर्थ दिखाई दे सकते थे।

सुसमाचार एक दूसरा क्षितिज देता है। “जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे” (कुलुस्सियों 3:4)।

मसीही की कहानी का अंतिम न्याय मृत्यु, राजनीतिक पराजय, जीविका की विफलता या सार्वजनिक ग़लतफ़हमी के समय नहीं होता। अंतिम क्षितिज पुनरुत्थान निर्धारित करता है।

यह आशा इतिहास के विषय में भावुक आशावाद की माँग किए बिना मन को निराशा से बचाती है।

आत्मा की तलवार

पौलुस केवल एक ही स्पष्ट रूप से आक्रामक हथियार का नाम लेता है: “आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है” (इफिसियों 6:17)।

पवित्रशास्त्र के प्रति नी की जीवन-भर की भक्ति यहाँ स्वाभाविक रूप से ठीक बैठती है। तलवार आत्मा की है; यह केवल मनुष्य का मन नहीं है जो पदों को चलाता है।

परन्तु पवित्रशास्त्र का आत्मिक उपयोग लापरवाह उपयोग नहीं है। परीक्षा के वृत्तान्त में शैतान ने भी पवित्रशास्त्र उद्धृत किया था। आत्मा की तलवार सच्ची व्याख्या की माँग करती है।

मसीही कभी-कभी अलग-थलग पदों को मंत्रों की तरह प्रयोग करते हैं। नये नियम का आदर्श इससे कहीं अधिक समृद्ध है। यीशु ने पवित्रशास्त्र को उसके सन्दर्भ में, आज्ञाकारिता में, और पिता की इच्छा के सम्बन्ध में समझा। पौलुस ने पवित्रशास्त्र से तर्क किया। बिरीया के लोगों ने पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ा। तीमुथियुस से कहा गया कि वह सत्य के वचन को ठीक-ठीक काम में लाए।

कंठस्थ किया हुआ पद परीक्षा में सामर्थी हो सकता है, क्योंकि वह मन को परमेश्वर के प्रकट किए हुए सत्य के अधीन ले आता है। परन्तु सामर्थ्य किसी जादुई शब्दांश में नहीं है; वह उस सत्य में है जिस पर विश्वास से भरोसा किया जाता है।

नी ने गहरे अध्ययन, मनन और आत्मिक समझ को प्रोत्साहित किया। उनका अपना व्यापक अध्ययन हमें यह भी स्मरण दिलाता है कि कलीसिया के पूरे इतिहास के शिक्षकों के द्वारा पवित्रशास्त्र पर प्रकाश पड़ सकता है। हमें बाइबल और अच्छी पुस्तकों में से किसी एक

को चुनने की आवश्यकता नहीं; अच्छी पुस्तकों को हमें फिर से बाइबल की ओर ले जाना चाहिए।

हर समय प्रार्थना

हथियारों का यह खण्ड तुरन्त प्रार्थना में बह जाता है: "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और जागते रहो" (इफिसियों 6:18)।

आत्मिक युद्ध मुख्य रूप से नाटकीय टकराव नहीं है। यह निरन्तर प्रार्थना है।

नी दृढ़ता से विश्वास करते थे कि प्रार्थना परमेश्वर के उद्देश्य में सहभागिता है। अपनी कुछ बाद की शिक्षाओं में उन्होंने पृथ्वी के स्वर्ग से सहमत होने की बात कही—कि परमेश्वर अपनी सम्प्रभुता में अपने लोगों की प्रार्थनाओं के द्वारा काम करना चुनता है। इसके ठीक-ठीक धर्मवैज्ञानिक सूत्रीकरण पर बहस हो सकती है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि पवित्रशास्त्र प्रार्थना को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका देता है।

यीशु ने सिखाया, "तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10)। प्रार्थना विश्वासी को परमेश्वर के राज्य के साथ एक सीध में ले आती है।

पौलुस इफिसियों से अपने लिए प्रार्थना करने को कहता है "कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बता सकूँ" (इफिसियों 6:19)। उल्लेखनीय बात यह है कि बन्दी प्रेरित सबसे पहले छुटकारा नहीं, बल्कि साहस माँगता है।

यह प्रार्थना नी की अपनी बाद की दशा का पूर्वाभास देती है। स्वतंत्रता बहुमूल्य है, और सताए जा रहे विश्वासियों की रिहाई के लिए प्रार्थना करना उचित है। परन्तु अधिक गहरी प्रार्थना यह है कि चाहे जीवन से हो या मृत्यु से, मसीह की महिमा हो।

बाँधना और खोलना

नी कभी-कभी आत्मिक युद्ध को यीशु की बाँधने और खोलने की भाषा से जोड़ते थे। "जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग पर बँधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा" (मत्ती 18:18)।

मसीही इस खण्ड की व्याख्या अलग-अलग ढंग से करते हैं, विशेषकर कलीसियाई अनुशासन, रब्बियों के अधिकार, प्रार्थना और आत्मिक संघर्ष के सम्बन्ध में। नी इसके प्रयोग को शैतान के काम के विरुद्ध अधिकारपूर्ण प्रार्थना तक बढ़ा सकते थे।

बाइबल के प्रति सावधान दृष्टिकोण बुद्धिमानी है। कलीसिया के पास मसीह के अधीन वास्तविक अधिकार है—सुसमाचार में क्षमा का प्रचार करने, पवित्रशास्त्र के अनुसार अनुशासन चलाने, बुराई के विरुद्ध प्रार्थना करने और दुष्टात्मिक उत्पीड़न का सामना करने का। परन्तु विश्वासी कभी भी ऐसे स्वाधीन आत्मिक शासक नहीं हैं जो अपनी पसन्द के अनुसार वास्तविकता को आदेश देते फिरें।

यीशु कहता है, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है" (मत्ती 28:18)। अधिकार उसी का बना रहता है।

मसीही सौंपे गए अधिकार का प्रयोग केवल राजा की आज्ञाकारिता के भीतर ही करता है।

दुष्टात्माओं पर अधिकार

सुसमाचार और प्रेरितों के काम स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं कि यीशु और उसके सेवकों ने दुष्टात्माओं का सामना किया। मसीह का अधिकार पूर्ण है। जब सत्तर लौटते हैं, तो वे आनन्दित होते हैं कि उसके नाम से दुष्टात्माएँ उनके वश में हैं। यीशु उनके आनन्द की दिशा बदल देता है: "इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं" (लूका 10:20)।

यह एक आवश्यक सन्तुलन है। आत्मिक अधिकार वास्तविक है, परन्तु अनुग्रह में मिली पहचान उससे बड़ी है।

नी के पाठक कभी-कभी आत्मिक युद्ध में ठीक इसीलिए रुचि लेने लगते हैं कि वह सामर्थी दिखाई देता है। नया नियम लगातार विश्वासी को सामर्थ्य के आकर्षण से हटाकर मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता की ओर खींचता है।

प्रेरितों के काम 19 एक चेतावनी देता है। स्क्किवा के पुत्र यीशु के नाम को एक तरकीब की तरह प्रयोग करने का प्रयास करते हैं, जबकि वे स्वयं उसके नहीं हैं। परिणाम अपमानजनक पराजय होता है। आत्मिक अधिकार कोई सूत्र नहीं है।

पीड़ित लोगों के बीच सबसे सुरक्षित सेवकाई वह है जो मसीह-केन्द्रित, बाइबल पर आधारित, प्रार्थनापूर्ण, संयमी और पास्तरीय रूप से ज़िम्मेदार हो। मसीहियों को यह नहीं

मान लेना चाहिए कि शारीरिक या मानसिक बीमारी दुष्टात्मिक है; स्वयं पवित्रशास्त्र कई खण्डों में बीमारी और दुष्टात्मा-ग्रस्त होने में भेद करता है। चिकित्सा और मनोवैज्ञानिक देखभाल सामान्य अनुग्रह के वरदान हो सकते हैं, और इन्हें केवल इसलिए ठुकराना नहीं चाहिए कि किसी आत्मिक आयाम पर भी विचार किया जा रहा है।

आत्मिक वास्तविकताओं पर नी का ज़ोर हमारे विवेक को विस्तृत करे, उसे मानवीय दुःख की एक ही व्याख्या तक संकुचित न करे।

दोष लगानेवाला और लहू

प्रकाशितवाक्य शैतान को "हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला" कहता है और बताता है कि विश्वासी "मेम्ने के लहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण" जयवन्त हुए (प्रकाशितवाक्य 12:10-11)।

नी बार-बार मसीह के लहू को आरोप के उत्तर के रूप में प्रस्तुत करते थे। यह उनके सबसे अधिक पास्तरीय रूप से उपयोगी विषयों में से एक है।

पाप का बोध कराने और दोष लगाने में अन्तर है। पाप का बोध विशिष्ट और सच्चा होता है, और विश्वासी को अंगीकार और पुनःस्थापना की ओर ले जाता है। दोष लगाना अक्सर अस्पष्ट और कुचल देनेवाला होता है, और इस उद्देश्य से होता है कि विश्वासी को परमेश्वर से दूर भगा दे।

पवित्र आत्मा मानो यह कहता है, "यह पाप था; इसे ज्योति में ले आओ।" दोष लगानेवाला कहता है, "तुम्हारे लिए कोई आशा नहीं; छिप जाओ।"

लहू अपराध-बोध और दोषारोपण दोनों का उत्तर देता है। अंगीकार किए गए पाप का इन्कार नहीं किया जाता; उसे शुद्ध किया जाता है।

"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)।

विश्वास अपने आप का बचाव नहीं करता। वह मसीह की ओर संकेत करता है।

दण्ड की आज्ञा के विरुद्ध खड़े रहना

रोमियों 8 विजय से भरे प्रश्नों की एक शृंखला पूछता है: "यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा?" "फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा?" (रोमियों 8:31, 33-34)।

दण्ड की आज्ञा का उत्तर मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और मध्यस्थता है।

नी का "खड़े रहो" यहाँ लागू किया जा सकता है। कोई विश्वासी स्मरण की हुई विफलता के कारण परमेश्वर की उपस्थिति से पीछे हट जाने की परीक्षा में पड़ सकता है। वह अपनी निर्दोषता का दावा करके नहीं, बल्कि मसीह का दावा करके खड़ा रहता है।

यह कोमल विवेकवालों के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। शैतान पवित्रता की सच्ची इच्छा का भी प्रयोग करके रुग्ण आत्म-परीक्षण उत्पन्न कर सकता है। मसीही अपने मन फिराने की गुणवत्ता, अपने विश्वास की शक्ति, अपनी भावना की गहराई को मापने लगता है, यहाँ तक कि आत्मिक आत्म-विश्लेषण के पीछे मसीह ओझल हो जाता है।

सुसमाचार हमें बाहर की ओर बुलाता है। "इसलिए अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (रोमियों 8:1)।

वहीं खड़े रहो।

सताव में खड़े रहना

नी के जीवन में "खड़े रहो" शब्द को एक ऐतिहासिक गहराई भी मिलती है। आगे चलकर उन्हें एक ऐसे राज्य का सामना करना पड़ा जो धार्मिक जीवन को वैचारिक नियंत्रण के अधीन पुनर्गठित करने पर तुला हुआ था। बहुत से चीनी मसीहियों को असम्भव-से चुनावों का सामना करना पड़ा, जिनमें सार्वजनिक निन्दा-सभाएँ, राजनीतिक भागीदारी, संगठन का पंजीकरण, और संगी विश्वासियों के प्रति निष्ठा जैसे प्रश्न सम्मिलित थे।

कोई सरल उत्तर नहीं थे। असाधारण दबाव में मसीहियों ने भिन्न-भिन्न निर्णय लिए। कुछ ने समझौता किया; कुछ ने विरोध किया; कुछ ने विश्वास को छोड़े बिना सहयोग करने का प्रयास किया; कुछ ने बाद में दबाव में किए गए कामों के लिए मन फिराया।

हाल के शोध के अनुसार, कोरियाई युद्ध के दौर में नी ने स्वयं आरम्भ में अपने आन्दोलन को नई सरकार के समर्थन में सार्वजनिक प्रदर्शनों में आगे बढ़ाया, जबकि वे कलीसियाई

जीवन के लिए स्थान भी खोजते रहे। बाद में उन्हें गिरफ़्तार किया गया और वे सार्वजनिक दोषारोपण का निशाना बने।

खड़े रहना हमेशा नाटकीय विद्रोह जैसा नहीं दिखता। जेल में नी ने प्रतीत होता है कि नियमों का पालन किया, परन्तु मसीह का इन्कार करने से मना कर दिया। नागरिक व्यवस्था के प्रति अधीनता और परमेश्वर के प्रति निष्ठा साथ-साथ चलती रहीं, जब तक कि वे आपस में टकरा न गईं।

प्रेरितों ने इस सीमा को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया: "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है" (प्रेरितों के काम 5:29)।

लोगों से मल्लयुद्ध नहीं

सताव विश्वासियों को यह परीक्षा देता है कि वे सतानेवाले को ही शत्रु ठहरा दें। इफिसियों इसे अस्वीकार करता है: "लहू और माँस से नहीं।"

इसका अर्थ यह नहीं कि मनुष्य नैतिक रूप से निर्दोष हैं या राजनीतिक व्यवस्थाओं को न्याय से बच जाना चाहिए। पवित्रशास्त्र अन्याय की निन्दा करता है। परन्तु मसीहियों को आत्मिक युद्ध के झण्डे तले लोगों से घृणा करने की अनुमति नहीं है।

स्तिफनुस ने पथराव किए जाते समय प्रार्थना की, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा" (प्रेरितों के काम 7:60)। उसकी प्रार्थना में यीशु की प्रार्थना की गूँज है।

नी के बाद के मौन के कारण हमारे पास उनकी लेखनी से जेल-जीवन का कोई विस्तृत धर्मविज्ञान नहीं है। फिर भी जिस सन्देश का प्रचार वे दशकों से कर रहे थे, उसने उन्हें घृणा के बिना दुःख उठाने की शब्दावली दी: क्रूस, परमेश्वर के प्रति अधीनता, पुनरुत्थान, देह, मसीह का अधिकार।

सतानेवाला भी ऐसा व्यक्ति है जिसके लिए मसीह मरा, चाहे वह उस समय बुराई ही क्यों न कर रहा हो।

जब खड़े रहने का अर्थ कुछ न करना हो

नी के इस शब्द का एक और आयाम है। कुछ आत्मिक लड़ाइयाँ इसलिए हारी जाती हैं कि विश्वासी घबराकर कार्य में कूद पड़ते हैं।

लाल समुद्र के किनारे इस्राएल ने मूसा को यह कहते सुना, "डरो मत, खड़े-खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा" (निर्गमन 14:13)। यह आज्ञा हर समय निष्क्रिय रहने की नहीं थी; कुछ ही क्षण बाद इस्राएल को आगे बढ़ना था। परन्तु पहले उन्हें अपना घबराया हुआ भय रोकना था।

नी मसीही विश्राम और खड़े रहने को परस्पर सम्बन्धित मानते थे। जब परिस्थितियाँ डरावनी हो जाती हैं, तब अक्सर अपने बल पर किया गया प्रयास उभर आता है। हम नियंत्रण को मुट्ठी में पकड़ना चाहते हैं।

विश्वास कार्य की माँग कर सकता है, परन्तु वह ऐसे कार्य को अस्वीकार करता है जो केवल अविश्वास से भरी घबराहट से जन्मा हो।

अगुवों के लिए यह सिद्धान्त कठिन है। समस्याएँ दिखाई देनेवाली प्रतिक्रिया को पुरस्कृत करती हैं। प्रतीक्षा करना कमज़ोरी जैसा लग सकता है। फिर भी पवित्रशास्त्र बार-बार दिखाता है कि परमेश्वर के सेवक आगे बढ़ने से पहले उसका मार्गदर्शन खोजते हैं।

खड़े रहना यह पूछता है: क्या परमेश्वर ने सचमुच पीछे हटने की आज्ञा दी है? यदि नहीं, तो केवल इसलिए अपनी भूमि मत छोड़ो कि दबाव तीव्र है।

विजय प्रभु की है

आत्मिक युद्ध में सबसे गहरी सुरक्षा यह है कि विजय मसीह की है।

क्रूस पर यीशु ने "प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर" "उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय जयकार की ध्वनि सुनाई" (कुलुस्सियों 2:15)।

इस चित्रण की ठीक-ठीक व्याख्या भिन्न-भिन्न ढंग से की गई है, परन्तु पौलुस की घोषणा स्पष्ट है: विरोधी शक्तियों का वचन अंतिम नहीं है। मसीह की प्रत्यक्ष पराजय उनकी पराजय बन जाती है।

नी का विजय का धर्मविज्ञान इसी पर टिका है। विश्वासी आत्मिक तीव्रता के द्वारा विजय गढ़ता नहीं। वह मसीह की विजय में सहभागी होता है।

यह भय और घमण्ड दोनों से बचाता है। भय कहता है कि शत्रु बहुत बलवान है। घमण्ड कहता है कि हमारी आत्मिक तकनीक हमें बलवान बनाती है। विश्वास कहता है कि मसीह प्रभु है।

हथियार मसीह के समान चरित्र हैं

इफिसियों 6 को इतनी कल्पनाशीलता से पढ़ना सम्भव है कि हथियार पत्री के बाकी भाग से अलग हो जाएँ। परन्तु हर एक हथियार उन वास्तविकताओं से मेल खाता है जिनका वर्णन पहले ही हो चुका है: सत्य, धार्मिकता, मेल, विश्वास, उद्धार, वचन, प्रार्थना।

ये हथियार कोई गूढ़ अनुष्ठान नहीं हैं। ये देहधारी रूप में जिया गया सुसमाचार हैं।

जो मसीही सच्चा, धर्मी, मेल-मिलाप किया हुआ, विश्वास करनेवाला, आशा से भरा, पवित्रशास्त्र से गढ़ा हुआ और प्रार्थना करनेवाला है, वह हथियारबन्द है।

यह नी की सर्वोत्तम शिक्षा से गहराई से मेल खाता है। आत्मिक युद्ध मुख्य रूप से अंधकार पर चिल्लाना नहीं है। यह मसीह की वास्तविकता में खड़े रहना है।

बैठो, चलो, खड़े रहो—एक साथ

नी की तीनों क्रियाएँ एक साथ जुड़ी हुई हैं।

यदि हम बैठे बिना चलने का प्रयास करें, तो आज्ञाकारिता संघर्ष-भरा परिश्रम बन जाती है। यदि हम बैठे बिना खड़े रहने का प्रयास करें, तो युद्ध भय या खोखला साहस बन जाता है। यदि हम चले बिना बैठने का दावा करें, तो अनुग्रह आज्ञा न मानने का बहाना बन जाता है। यदि हम खड़े रहे बिना चलें, तो जब भी विरोध आता है, हम पीछे हट जाते हैं।

बैठो: मसीह का पूरा किया हुआ काम ग्रहण करो।

चलो: मसीह का जीवन प्रकट करो।

खड़े रहो: मसीह की विजय को छोड़ देने से इन्कार करो।

यह ढाँचा इतना सरल है कि नया विश्वासी इसे याद रख सके, और इतना गहरा है कि पूरे जीवन को आकार दे सके।

फिर भी नी का अपना जीवन उन्हें एक और पाठ सिखा रहा था। जो मसीही स्थिति, आचरण और युद्ध को समझते हैं, वे भी हठीले स्वाभाविक बल से परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं। पात्र से स्वयं निपटा जाना आवश्यक है।

अगला महान विषय उनके सबसे भेदक विषयों में से एक बननेवाला था: बाहरी मनुष्य का टूटना और आत्मा का मुक्त होना।

शत्रु की सबसे साधारण रणनीति

आत्मिक युद्ध सुनने में विचित्र लग सकता है, परन्तु शैतान के विषय में नये नियम की शिक्षा का बड़ा भाग साधारण नैतिक धोखे से सम्बन्धित है। शैतान झूठ बोलता है, दोष लगाता है, परीक्षा में डालता है, फूट डालता है, और क्षमा न करने की दशा के द्वारा लाभ उठाने का प्रयास करता है।

पौलुस कुरिन्थियों से कहता है कि पश्चाताप करनेवाले अपराधी को क्षमा करें और शान्ति दें, "कि शैतान का हम पर दाँव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं" (2 कुरिन्थियों 2:11)।

सन्दर्भ में यह युक्ति कोई नाटकीय प्रकटीकरण नहीं है; यह एक कलीसिया द्वारा अनुशासन और पुनःस्थापना को ग़लत ढंग से सँभालना है।

इससे नी की युद्ध-शिक्षा को एक व्यावहारिक केन्द्र मिलता है। शैतान का सामना तब होता है जब मसीही सच बोलते हैं, क्षमा करते हैं, कड़वाहट को ठुकराते हैं, यौन रूप से पवित्र रहते हैं, शीघ्र मेल-मिलाप करते हैं, झूठ को उजागर करते हैं, और प्रार्थना में लगे रहते हैं।

जो कलीसिया दुष्टात्माओं पर अधिकार चाहती है, परन्तु निन्दा और चुगली को सहन करती है, उसने युद्ध को ग़लत समझा है।

दुःख सदा आक्रमण नहीं होता

एक और सुरक्षा-उपाय आवश्यक है। हर बाधा शैतानी विरोध नहीं होती। कभी-कभी बन्द द्वार परमेश्वर का विधान होता है। कभी-कभी विफलता कमज़ोर योजना से आती है। कभी-कभी बीमारी शारीरिक कारणों से होती है। कभी-कभी संघर्ष हमारी अपनी अपरिपक्वता का परिणाम होता है।

पौलुस बितूनिया जाना चाहता था, "परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया" (प्रेरितों के काम 16:7)। रुकी हुई योजना परमेश्वर की ओर से भी हो सकती है।

इसलिए विवेक घोषणा करने से पहले पूछता है।

नी के पाठकों को हर समस्या को आत्मिक रंग देने की परीक्षा का विरोध करना चाहिए। आत्मिक युद्ध वास्तविक है, परन्तु वास्तविकता की कई परतें हैं। बुद्धि माँग कर सकती है

प्रार्थना और डॉक्टर दोनों की, आत्मिक प्रतिरोध और क्षमा-याचना दोनों की, मध्यस्थता और बेहतर प्रबन्धन दोनों की।

एक साथ खड़े रहना

इफिसियों बहुवचन भाषा का प्रयोग करता है। हथियारबन्द विश्वासी एक कलीसिया के अंग के रूप में खड़ा रहता है। रोमी सैनिक चित्रण स्वाभाविक रूप से उन सैनिकों का संकेत देता है जो एक साथ पंक्ति थामे खड़े रहते हैं।

अकेलापन परीक्षा को और भी ख़तरनाक बना देता है। "एक से दो अच्छे हैं ... क्योंकि यदि उनमें से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा" (सभोपदेशक 4:9-10)।

इसलिए देह के विषय में नी का सिद्धान्त उनकी युद्ध-शिक्षा के भीतर ही आता है। हम अकेले आत्मिक नायकों की तरह नहीं लड़ते।

आत्मिक जुनून के बिना आत्मिक युद्ध

"इसलिए स्थिर रहो" इफिसियों की नी द्वारा की गई व्याख्या में अंतिम महान आज्ञा है। विश्वासी मसीह में बैठता है, बुलाहट के योग्य चाल चलता है, और आत्मिक विरोध के सामने खड़ा रहता है। यह क्रम युद्ध को भय से बचाता है। हम मसीह की विजय प्राप्त करने के लिए नहीं लड़ते; हम उस विजय के भीतर खड़े रहते हैं जो पहले ही पूरी हो चुकी है।

पौलुस कहता है, "इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो" (इफिसियों 6:10)। बल का स्थान महत्त्व रखता है। मसीही से यह नहीं कहा जाता कि वह कोई छिपी हुई व्यक्तिगत शक्ति खोज निकाले, बल्कि यह कि वह प्रभु में बलवन्त किया जाए।

आत्मिक युद्ध पर नी की शिक्षा उन मसीहियों के मन को छू गई जो शैतान, प्रधानताओं, अधिकारों, परीक्षा, दोषारोपण और धोखे के विषय में नये नियम की भाषा को गम्भीरता से लेते थे। आज के पाठक कभी-कभी विपरीत भूलों में पड़ जाते हैं। एक विश्वदृष्टिकोण हर आत्मिक सन्दर्भ को मनोविज्ञान या समाजशास्त्र तक सीमित कर देता है। दूसरा लगभग हर कठिनाई को सीधे दुष्टात्मिक आक्रमण मान लेता है। पवित्रशास्त्र इनमें से किसी भी सरलीकरण की अनुमति नहीं देता।

पौलुस सन्दर्भ के अनुसार कठिनाई का कारण साधारण दुर्बलता, मानवीय विरोधियों, पापमय अभिलाषा, व्यवस्थागत अन्याय, परमेश्वर की ताड़ना, या शैतानी हस्तक्षेप को बता सकता है। याकूब कहता है कि परीक्षा व्यक्ति की अपनी अभिलाषा से जुड़ी है (याकूब 1:14)। पतरस शैतान को विरोधी बताता है (1 पतरस 5:8)। इब्रानियों पिता जैसी ताड़ना की बात करता है (इब्रानियों 12:5-11)। बुद्धि यह पूछती है कि कौन-सी श्रेणी उपयुक्त है, न कि सारे अनुभव को ज़बरदस्ती एक ही व्याख्या में ठूँस देती है।

परमेश्वर के हथियार आश्चर्यजनक रूप से जादू-रहित हैं। सत्य, धार्मिकता, मेल के सुसमाचार की तैयारी, विश्वास, उद्धार, परमेश्वर का वचन और प्रार्थना—ये साधारण मसीही वास्तविकताएँ हैं। पौलुस विश्वासियों को दुष्टात्माओं का पता लगाने के गुप्त सूत्र नहीं देता। वह उन्हें सुसमाचार में गहराई से स्थिर होने के लिए बुलाता है।

सत्य के पटुके में वस्तुनिष्ठ सत्य और सच्चा जीवन दोनों सम्मिलित हैं। जहाँ विश्वासी झूठ को ठुकराते हैं, वहाँ धोखा अपनी भूमि खो देता है। धार्मिकता की झिलम पहले परमेश्वर के धर्मी ठहरानेवाले वरदान पर टिकी है और फिर धर्मी आचरण में प्रकट होती है। मेल का सुसमाचार उस संघर्ष में पाँवों को स्थिर रखता है जिसके कारण कलीसिया को अपना सन्देश कभी नहीं भूलना चाहिए। विश्वास परमेश्वर के चरित्र पर भरोसा करके आरोपों को बुझा देता है। उद्धार परमेश्वर के उद्धार देनेवाले उद्देश्य की निश्चितता से मन की रक्षा करता है। वचन झूठ का उत्तर देता है। प्रार्थना पूरे संघर्ष को सम्बन्ध और निर्भरता में बनाए रखती है।

यह ढाँचा नी की आत्मिक युद्ध की भाषा के कुछ बाद के प्रयोगों को परखने में सहायता करता है। मसीहियों को अंधकार से मोहित नहीं होना चाहिए। नये नियम का केन्द्र मसीह है, शैतान नहीं। कुलुस्सियों कहता है कि मसीह ने "प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर" उनका खुलेआम तमाशा बनाया और क्रूस में उन पर विजय पाई (कुलुस्सियों 2:15)। शत्रु वास्तविक है, परन्तु अंतिम नहीं।

न ही आत्मिक युद्ध की भाषा का प्रयोग मानवीय असहमति को राक्षसी ठहराने के लिए किया जाना चाहिए। आलोचक अपने आप शैतान का एजेंट नहीं हो जाता। राजनीतिक विरोधी इस कारण कोई प्रधानता नहीं बन जाता। कोई चिन्ता उठानेवाला जीवनसाथी आवश्यक नहीं कि शत्रु के द्वारा प्रयोग किया जा रहा हो। स्वयं इफिसियों कहता है कि हमारा मल्लयुद्ध "लहू और माँस से नहीं" है (इफिसियों 6:12), और इससे लोगों को शत्रु मानने की परीक्षा घटनी चाहिए।

खड़े रहने का एक सामूहिक आयाम भी है। सर्वनाम और चित्रण एक हथियारबन्द समुदाय के हैं। रोमी सैनिक पंक्तिबद्ध होकर ही सबसे बलवान होते थे। अकेलापन विश्वासियों को विकृत धारणाओं और निजी निराशा के प्रति असुरक्षित बना देता है। अंगीकार, प्रार्थना, बुद्धिमानी की सलाह, आराधना और मिलकर पवित्रशास्त्र पढ़ना युद्ध के कार्य हैं, क्योंकि ये मसीहियों को वास्तविकता में जमाए रखते हैं।

खड़े रहने पर नी के ज़ोर को सरल शब्दों में इस प्रकार सारांशित किया जा सकता है: जब दोषारोपण कहे कि परमेश्वर ने तुम्हें छोड़ दिया है, तो सुसमाचार में खड़े रहो। जब परीक्षा कहे कि पाप अनिवार्य है, तो मसीह के साथ एकता में खड़े रहो। जब भय कहे कि शत्रु सर्वसत्ताधारी है, तो मसीह की विजय में खड़े रहो। जब घमण्ड कहे कि विजय तुम्हारी है, तो प्रभु के बल में खड़े रहो।

लक्ष्य युद्ध में डूबा हुआ जीवन नहीं है। लक्ष्य ऐसा जीवन है जो मसीह में इतना स्थिर हो कि विरोध उसे सत्य, प्रेम, पवित्रता और आशा से आसानी से हटा न सके।

बाहरी मनुष्य का टूटना

संघर्ष में गढ़ा गया सन्देश

वॉचमैन नी की बाद की शिक्षाओं में सबसे प्रभावशाली शिक्षाओं में वह सन्देश है जो अंग्रेज़ी में *आत्मा का मुक्त होना* (The Release of the Spirit) और *बाहरी मनुष्य का टूटना और आत्मा का मुक्त होना* (The Breaking of the Outer Man and the Release of the Spirit) जैसे शीर्षकों से प्रकाशित हुआ। इसकी भाषा अनोखी है, परन्तु इसका केन्द्रीय विश्वास समझ में आने योग्य है: परमेश्वर का जीवन किसी विश्वासी के भीतर वास कर सकता है, जबकि उसी विश्वासी का स्वाभाविक स्व उस जीवन के प्रगट होने में बाधा बना रहता है।

नी इस शिक्षा तक किसी सैद्धान्तिक चिन्तन के द्वारा नहीं पहुँचे। चीन-जापान युद्ध के आस-पास के वर्षों, उनकी अन्तरराष्ट्रीय यात्राओं, अपने भाई के दवा-व्यवसाय में उनकी भागीदारी, शंघाई में कलीसिया के प्राचीनों के साथ संघर्ष, सार्वजनिक सेवकाई से निलम्बन और अन्ततः पुनर्स्थापना ने इस सिद्धान्त को उनके जीवन-चरित्र में ढाल दिया।

हाल का शोध इस बात पर बल देता है कि नी का व्यवसाय में शामिल होना विवाद का एक बड़ा कारण बना, और शंघाई के प्राचीनों ने उन्हें वर्षों तक सेवकाई से अलग रखा। पहले की सहानुभूतिपूर्ण जीवनियाँ कभी-कभी इस पूरी घटना को मुख्यतः बलिदान या ग़लतफ़हमी के रूप में देखती हैं; विरोधी वृत्तान्त आरोपों को निश्चित तथ्य के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। इतिहासकार को इससे अधिक सावधानी से चलना चाहिए। इतना निश्चित है कि उस दौर ने सार्वजनिक अपमान, सम्बन्धों में दरार और नी की प्रचार-सेवकाई में लम्बा व्यवधान उत्पन्न किया।

टूटेपन पर उनका बाद का ज़ोर एक ऐसे जीवन से उपजा जिसमें वरदान-सम्पन्न होना उन्हें इस बात से नहीं बचा सका कि उनका विरोध हो, उनका न्याय किया जाए, उन्हें सीमित किया जाए और दूसरों पर निर्भर बनाया जाए।

इसलिए यह सिद्धान्त एक ऐसा प्रश्न पूछता है जिससे सफल अगुवे बचना पसन्द करते हैं: क्या हो यदि किसी सेवक में परमेश्वर का सबसे गहरा काम उसकी उपयोगिता बढ़ाना नहीं, बल्कि उस व्यक्ति से निपटना हो जो उपयोगी होना चाहता है?

धन और मिट्टी का बरतन

नी बार-बार पौलुस के इन शब्दों पर लौटते थे: "परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे" (2 कुरिन्थियों 4:7)।

धन मसीह है। बरतन मानवीय है।

नी का उद्देश्य बरतन को तुच्छ जानना नहीं था। मिट्टी का बरतन ठीक इसीलिए उपयोगी है कि उसमें धन रखा रहता है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब बरतन अपनी ओर ध्यान खींचता है या धन को प्रगट होने से रोकता है।

उन्होंने "बाहरी मनुष्य" और "भीतरी मनुष्य" की भाषा का प्रयोग किया। ये शब्द पौलुस की शब्दावली से मेल खाते हैं, परन्तु इन्हें अपने आप ऐसी सटीक पारिभाषिक श्रेणियाँ नहीं मान लेना चाहिए जिनका अभिप्राय पौलुस ने किया हो। नी ने इन्हें एक आत्मिक मनोविज्ञान के रूप में विकसित किया: बाहरी मनुष्य में स्वाभाविक मन, भावना और इच्छा सम्मिलित हैं, जब वे स्वतन्त्र रूप से कार्य करते हैं; भीतरी मनुष्य नया जन्म पाई हुई मानवीय आत्मा है, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा मसीह को प्रगट करता है।

यदि इस शब्दावली को एक रूपकात्मक नक़्शे की तरह प्रयोग किया जाए, तो यह सहायक हो सकती है। यह तब ख़तरनाक हो जाती है जब हर मानवीय प्रतिक्रिया को कठोरता से ऐसे खानों में बाँट दिया जाए जिन्हें पवित्रशास्त्र स्वयं इतनी सफ़ाई से परिभाषित नहीं करता।

बाइबल का केन्द्र इससे सरल है। पौलुस चाहता है कि "यीशु का जीवन भी" "हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो" (2 कुरिन्थियों 4:11)। जीवन उसका है; मरनहार शरीर हमारा है।

गेहूँ का दाना

यूहन्ना 12 में यीशु का दिया हुआ चित्र नी के लिए केन्द्रीय बन गया: "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

सन्दर्भ में, यीशु पहले अपनी ही मृत्यु की बात करता है। पुत्र का फलवन्त होने का मार्ग क्रूस से होकर जाता है। फिर वह इसी नमूने को चेलेपन पर लागू करता है: "जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उसकी रक्षा करेगा" (यूहन्ना 12:25)।

नी ने दाने के छिलके में उस स्वाभाविक स्व का चित्र देखा जो जीवन को घेरे रहता है। छिलका सजावट से नहीं खुलता; वह मृत्यु के द्वारा टूटता है।

यह सतही आत्मिक विकास के विरुद्ध उनकी सबसे कड़ी आलोचनाओं में से एक बन गई। मसीही प्रायः छिलके को सुधारने का प्रयास करते हैं। हम पवित्रता से जुड़े तौर-तरीक़े अपनाते हैं, धार्मिक भाषा सीख लेते हैं, प्रचार की तकनीकें सीखते हैं और बाहरी आचरण को अनुशासित करते हैं। इनका कुछ मूल्य हो सकता है, परन्तु ये आवश्यक रूप से मसीह को मुक्त नहीं करते।

फलवन्त होने के लिए कुछ अधिक गहरा चाहिए: स्व का स्वतन्त्र रहने का दावा टूटना चाहिए।

टूटापन क्या नहीं है

मसीही समुदायों में टूटेपन की भाषा का दुरुपयोग हुआ है। अगुवों ने प्रश्न पूछनेवाले सदस्यों से कहा है कि उनका विरोध इस बात का प्रमाण है कि वे "टूटे नहीं हैं।" शोषण करनेवाली व्यवस्थाओं ने अपमान को आत्मिक गठन के रूप में प्रस्तुत किया है। पीड़ितों को अधीनता सीखने के नाम पर हानि सहते रहने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

ऐसे प्रयोग मसीह के चरित्र के विपरीत हैं।

बाइबल का टूटापन व्यक्तित्व का विनाश नहीं है। यह अपनी इच्छा से निर्णय लेने की क्षमता का खो जाना, विवेक को दबाना या मानवीय अधिकार की बिना शर्त आज्ञाकारिता

नहीं है। इसका अर्थ हिंसा, यौन शोषण, छल या आपराधिक व्यवहार को चुपचाप स्वीकार कर लेना नहीं है।

यीशु नम्र था, परन्तु उसने धार्मिक अगुवों का सामना किया। पौलुस वैध अधिकार के अधीन रहा, फिर भी उसने अपनी रोमी नागरिकता की दुहाई दी। दाऊद ने शाऊल के पद का आदर किया, फिर भी वह शाऊल के प्राणघातक हाथ से भागता रहा। बिरीया के लोगों ने प्रेरितों के प्रचार को परखा।

इसलिए नी के सिद्धान्त को बाइबल की स्पष्ट सीमाओं के भीतर पढ़ा जाना चाहिए। परमेश्वर घमण्ड, आत्मनिर्भरता, हठ, आत्मरक्षा और स्वतन्त्र बल को तोड़ता है। वह मसीही अगुवों के ज़बरदस्ती के नियन्त्रण को पवित्र नहीं ठहराता।

सचमुच टूटा हुआ व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए अधिक स्वतन्त्र होता है, नैतिक विवेक में कम सक्षम नहीं।

पनीएल पर याकूब

नी को प्रायः परमेश्वर के सेवकों के जीवन में टूटेपन के बाइबलीय चित्र मिलते थे। याकूब इनमें सबसे स्पष्ट उदाहरणों में से है।

याकूब की कहानी झपट लेने की प्रवृत्ति से भरी है। वह सौदेबाज़ी करता है, युक्तियाँ रचता है, भागता है, सम्पत्ति जमा करता है और अपनी रक्षा करता है। यब्बोक के घाट पर वह रात भर मल्लयुद्ध करता है। वह रहस्यमय पुरुष याकूब की जाँघ की नस को छूता है, और शारीरिक बल का स्रोत अपने स्थान से उतर जाता है। याकूब लँगड़ाता हुआ निकलता है (उत्पत्ति 32:24-31)।

इस चित्र ने नी को मोह लिया। बलवन्त मनुष्य अपने स्वाभाविक बल के स्थान पर ही निर्बल हो जाता है, फिर भी उसे आशीष और एक नया नाम मिलता है।

लँगड़ाहट अनुग्रह का एक रूप बन सकती है, जब वह हमें बिना प्रश्न किए फिर से आत्मनिर्भरता की ओर लौटने से रोकती है।

पौलुस अपने "शरीर में एक काँटा" का वर्णन अलग ढंग से करता है, परन्तु उसका परिणाम मिलता-जुलता है। उसने तीन बार उसके हटाए जाने की विनती की। मसीह ने उत्तर दिया, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है" (2 कुरिन्थियों 12:9)।

पौलुस निष्कर्ष निकालता है, "जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ" (2 कुरिन्थियों 12:10)।

नी का टूटेपन का धर्मविज्ञान अपने सर्वोत्तम रूप में तब होता है जब वह मसीहियों को निर्बलता को अपने आप असफलता नहीं, बल्कि एक ऐसा स्थान समझने में सहायता करता है जहाँ अनुग्रह पर्याप्त सिद्ध होता है।

पतरस का गिरना

पतरस एक और चित्र प्रस्तुत करता है। वह पूरे भरोसे से यीशु से कहता है, "यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तो भी, मैं तुझ से कभी न मुकरूँगा" (मत्ती 26:35)। कुछ ही घण्टों बाद वह तीन बार उसका इन्कार करता है।

पतरस का प्रेम सच्चा था, परन्तु अपने विषय में उसका ज्ञान उथला था। वह मानता था कि सच्चाई बल की गारण्टी है।

वह पतन विनाशकारी था, फिर भी उसने आत्मविश्वास को उजागर कर दिया। पुनरुत्थान के बाद यीशु पतरस को त्याग नहीं देता। वह उसे पुनर्स्थापित करता है और भेड़ें उसे सौंपता है।

"जब तू जवान था, तो अपनी कमर बाँधकर जहाँ चाहता था, वहाँ फिरता था; परन्तु जब तू बूढ़ा होगा, तो अपने हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा तेरी कमर बाँधेगा" (यूहन्ना 21:18)।

आत्म-निर्देशन से समर्पित चेलेपन की ओर यह यात्रा नी के विषय से मेल खाती है।

टूटापन पतरस को अनुपयोगी नहीं बनाता। वह उसे एक भिन्न रीति से उपयोगी बनाता है। जो प्रेरित कभी अपनी श्रेष्ठ निष्ठा पर घमण्ड करता था, वही बाद में लिखता है, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है" (1 पतरस 5:5)।

अनुभव सिद्धान्त में प्रवेश कर गया है।

स्वाभाविक योग्यता और आत्मिक उपयोगिता

नी की शिक्षा विशेष रूप से वरदान-सम्पन्न लोगों के लिए चुनौती है। स्वाभाविक योग्यता किसी व्यक्ति को मसीही काम में आश्चर्यजनक रूप से दूर तक ले जा सकती है। बुद्धि उपदेश तैयार कर सकती है। आकर्षक व्यक्तित्व भीड़ इकट्ठी कर सकता है। प्रशासनिक कौशल

संगठन खड़े कर सकता है। संगीत की प्रतिभा आराधना की अगुवाई कर सकती है। सहानुभूति पास्तरीय प्रभाव उत्पन्न कर सकती है।

इनमें से कोई भी योग्यता बुरी नहीं है। ये परमेश्वर के प्रबन्ध के वरदान हैं। समस्या स्वतन्त्रता है।

मूसा को "मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई" और वह "वचन और कामों में सामर्थी था" (प्रेरितों के काम 7:22)। फिर भी अपने निजी प्रयास से इस्राएल को छुड़ाने का उसका आरम्भिक प्रयत्न निर्वासन में समाप्त हुआ। दशकों बाद वह अपनी निर्बलता के बोध के साथ लौटता है।

नी कहते कि परमेश्वर आवश्यक रूप से स्वाभाविक योग्यता को हटाता नहीं; वह उसे मृत्यु और पुनरुत्थान से होकर ले जाता है, ताकि वह स्रोत नहीं, सेवक बन जाए।

पौलुस की सेवकाई इसका उदाहरण है। उसकी शिक्षा, तर्क करने की क्षमता, रोमी नागरिकता, यहूदी पृष्ठभूमि और वाक्-कौशल उपयोगी बने रहे। फिर भी वह "शरीर पर भरोसा" रखने से इन्कार करता है (फिलिप्पियों 3:3)। ये सम्पत्तियाँ अब उसकी पहचान का आधार नहीं रहीं।

यह एक निर्णायक भेद है। मसीही गठन यह माँग नहीं करता कि हम योग्यता को अयोग्यता होने का दिखावा करें। वह यह माँग करता है कि हम योग्यता को अपने भरोसे का स्थान बनाने से इन्कार करें।

परिस्थितियों का अनुशासन

बाहरी मनुष्य कैसे टूटता है? नी ने परिस्थितियों के द्वारा पवित्र आत्मा के अनुशासन पर बल दिया।

जीवन ऐसे व्यवधान लाता है जिन्हें हमने नहीं चुना: बीमारी, ग़लतफ़हमी, टलती योजनाएँ, कठिन सहकर्मी, आर्थिक सीमाएँ, आलोचना, पारिवारिक बोझ, बन्द द्वार, असफलता, प्रतीक्षा, हानि। नी का विश्वास था कि परमेश्वर ऐसी परिस्थितियों का उपयोग स्व को उजागर करने और मसीह को गढ़ने के लिए करता है।

रोमियों 8:28 कहता है, "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं।" अगला पद उस भलाई को परिभाषित करता है: "उसके पुत्र के स्वरूप में" ढल जाना (रोमियों 8:29)।

इसका अर्थ यह नहीं कि हर घटना भली है। सताव, विश्वासघात, रोग और अन्याय को भला नाम नहीं दे दिया जाता। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर सब बातों के द्वारा एक छुटकारा देनेवाले उद्देश्य की ओर कार्य करने में समर्थ है।

यदि नी के दृष्टिकोण को ग़लत ढंग से लागू किया जाए, तो वह भाग्यवादी बन सकता है, मानो मसीहियों को कठिन परिस्थितियों को कभी बदलना ही नहीं चाहिए क्योंकि हर बाधा अवश्य ही परमेश्वर का अनुशासन देने वाला प्रबन्ध होगी। पवित्रशास्त्र यह नहीं सिखाता। पौलुस कभी-कभी सताव से भाग गया, उसने कैसर की दुहाई दी, अपनी यात्रा की योजनाएँ बदलीं, चन्दा इकट्ठा किया और सक्रियता से समस्याओं को सुलझाया।

अधिक बुद्धिमानी का प्रश्न यह नहीं है, "क्या मुझे हर कठिनाई में बने ही रहना है?" बल्कि यह है, "जब मैं विश्वासयोग्य प्रतिक्रिया खोज रहा हूँ, तब इस परिस्थिति के द्वारा परमेश्वर मुझमें क्या गढ़ रहा है?"

आत्मा द्वारा लागू किया गया क्रूस

नी ने मसीह के ऐतिहासिक क्रूस और विश्वासी के स्व-जीवन पर आत्मा द्वारा क्रूस के वर्तमान प्रयोग में भेद किया। मसीह की मृत्यु एक ही बार सदा के लिए है; मसीही चेलेपन में प्रतिदिन क्रूस उठाना सम्मिलित है।

यीशु कहता है, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले" (लूका 9:23)।

यह प्रतिदिन का क्रूस प्रायश्चित्त नहीं है। हम मसीह के बलिदान में कुछ नहीं जोड़ते। यह स्व-शासन का व्यावहारिक समर्पण है।

पवित्र आत्मा महत्त्वाकांक्षा, कड़वाहट, प्रतिष्ठा, आर्थिक सुरक्षा, नियन्त्रण की आवश्यकता, प्रेम-सम्बन्धी अभिलाषा, सैद्धान्तिक घमण्ड या समझे जाने के आग्रह पर उँगली रख सकता है। जहाँ कहीं आज्ञाकारिता का मूल्य अहं को चुकाना पड़ता है, वहीं क्रूस ठोस बन जाता है।

नी समझते थे कि अस्पष्ट समर्पण आसान है। हम परमेश्वर से कह सकते हैं, "सब कुछ तेरा है," और जब किसी विशेष वस्तु को छुआ जाए, तो पूरी शक्ति से उसकी रक्षा करने लगते हैं।

समर्पण की परख टकराव के बिन्दु पर होती है।

टूटापन और कोमलता

एक आम व्यंग्य-चित्र "टूटे हुए" मसीही को कठोर, आनन्दहीन और भावनात्मक रूप से सपाट व्यक्ति के रूप में कल्पित करता है। नी की बाद की शिक्षा ठीक विपरीत दिशा में संकेत करती है। टूटेपन से लचीलापन और कोमलता उत्पन्न होनी चाहिए।

कठोर बाहरी खोल व्यक्ति के पास जाना कठिन बना देता है। उसे सदा सही होना होता है, वह क्षमा नहीं माँग पाता, बचाव की मुद्रा में प्रतिक्रिया करता है, सुधार को आक्रमण समझता है और अपनी छवि की रक्षा करता है। टूटा हुआ व्यक्ति सुन सकता है।

याकूब ऊपर से आनेवाले ज्ञान का वर्णन इस प्रकार करता है: "पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ" (याकूब 3:17)।

"मृदुभाव" आत्मिक परिपक्वता की एक उत्तम कसौटी है। क्या हमें समझाया जा सकता है? क्या हम सीख सकते हैं? क्या हम मिट जाने का अनुभव किए बिना अपना मन बदल सकते हैं?

नी का अपना प्रबल व्यक्तित्व और अगुवाई का इतिहास इस सिद्धान्त को विशेष रूप से मार्मिक बना देता है। कोई भी मसीही शिक्षक अपने सिद्धान्त को पूर्णता से नहीं जीता। सिद्धान्त का मूल्य सन्त-चरित्र की प्रशस्ति पर निर्भर नहीं करता।

सुसमाचार ऐसे लोगों को गढ़ता है जो मन फिरा सकते हैं।

जीवन की सेवकाई

नी ने जानकारी पहुँचानेवाली सेवकाई और जीवन पहुँचानेवाली सेवकाई में भेद किया। यह भेद रहस्यमय लग सकता है, परन्तु साधारण मसीही इस बात को पहचानते हैं। दो लोग समान रूप से सच्चे शब्द कह सकते हैं, फिर भी एक परखी हुई वास्तविकता से बोलता है और दूसरा केवल उधार लिए हुए ज्ञान से।

पौलुस प्रेरितों के विषय में कहता है, "इस कारण मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर" (2 कुरिन्थियों 4:12)।

सेवकाई का एक क्रूसाकार नमूना है: सेवक महँगा व्यवहार स्वीकार करता है, ताकि दूसरों को जीवन मिले।

माता-पिता यह जानते हैं। एक पिता अपनी नींद, धन, सुविधा और अहं त्याग देता है, ताकि उसके बच्चे फलें-फूलें। पास्टर ऐसे बोझ उठाते हैं जिन्हें मण्डली नहीं देखती। मिशनरी परिचित परिवेश का त्याग करते हैं। मित्र असुविधा सहते हैं, ताकि दुःख में साथ बने रहें।

क्रूस प्रेम को महँगा बना देता है।

नी का विश्वास था कि परमेश्वर प्रायः सन्देशवाहक के द्वारा गहरी सेवकाई सौंपने से पहले सन्देशवाहक के भीतर गहरा काम करता है। यह कोई यान्त्रिक समीकरण नहीं है—दुःख अपने आप बुद्धि उत्पन्न नहीं करता—परन्तु विश्वास में ग्रहण किया गया दुःख करुणा, धीरज और बिना कठोरता का अधिकार उत्पन्न कर सकता है।

जब ज्ञान अनुभव बन जाता है

नी का अध्ययन-जीवन असाधारण था। परन्तु वे पुस्तकों से जाने गए सत्य और अनुभव में सीखे गए सत्य में अधिकाधिक भेद करने लगे।

अय्यूब अपनी कठिन परीक्षा के बाद कहता है, "मैंने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं" (अय्यूब 42:5)।

अन्तर यह नहीं है कि अय्यूब का पहले का धर्मविज्ञान पूरी तरह झूठा था। वह परमेश्वर के विषय में सच्ची बातें जानता था। दुःख उसे एक भिन्न स्तर के साक्षात्कार में ले आया।

मसीही अनुग्रह के विषय में तब तक पढ़ सकते हैं जब तक असफलता अनुग्रह को अनिवार्य न बना दे। वे क्षमा का अध्ययन तब तक कर सकते हैं जब तक विश्वासघात उसकी माँग न करे। वे परमेश्वर के प्रबन्ध के विषय में तब तक सिखा सकते हैं जब तक योजनाएँ ढह न जाएँ। वे पुनरुत्थान का प्रचार तब तक कर सकते हैं जब तक उनकी कोई प्रिय वस्तु मर न जाए।

अनुभव पवित्रशास्त्र का स्थान नहीं लेता; वह ऐसा सन्दर्भ देता है जिसमें पवित्रशास्त्र जीवन के स्तर पर भारी हो उठता है।

नी ऐसे सेवक चाहते थे जिनके शब्द जीवन से होकर गुज़रे हों।

दवा-व्यवसाय से जुड़ा विवाद

युद्धकाल के दौरान नी अपने भाई से जुड़े एक दवा-व्यवसाय में शामिल हो गए। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका उद्देश्य, कम से कम बड़े अंश में, गम्भीर आर्थिक उथल-पुथल के समय मसीही सेवकों के लिए संसाधन जुटाना था। फिर भी इस निर्णय ने शंघाई की कलीसिया के भीतर विवाद खड़ा कर दिया।

हाल का शोध प्राचीनों के विरोध, उनके आचरण से सम्बन्धित आरोपों और सार्वजनिक सेवकाई से लम्बे समय तक अलग रखे जाने का वर्णन करता है। आन्दोलन के पुराने स्रोत इस घटना को भिन्न बलों के साथ प्रस्तुत करते हैं। उपलब्ध प्रमाण किसी भक्तिपूर्ण जीवनी में सरलीकृत निर्णय को उचित नहीं ठहराते।

इतना कहा जा सकता है कि व्यवसाय ने नी के आत्मिक काम के ढाँचे में छिपे तनावों को उजागर कर दिया। एक पूर्णकालिक मसीही सेवक का वाणिज्य से कैसा सम्बन्ध होना चाहिए? क्या व्यवसाय का मुनाफ़ा सेवकाई को सहारा दे सकता है, बिना इसके कि व्यवसाय का प्रभाव सेवकाई को भ्रष्ट कर दे? जब व्यक्तिगत, पारिवारिक और कलीसियाई हित आपस में मिलते हैं, तब कितनी पारदर्शिता आवश्यक है?

नया नियम व्यवसाय का निषेध नहीं करता। पौलुस स्वयं तम्बू बनाता था। लुदिया एक व्यापारी थी। नीतिवचन परिश्रम का आदर करता है। परन्तु धन उद्देश्य और प्रबन्ध की परीक्षाएँ उत्पन्न करता है।

नी का अनुभव ठीक इसीलिए उपयोगी है कि वह रूमानी श्रेणियों में नहीं समाता। एक आत्मिक अगुवा सच्चे मन से परमेश्वर के काम को खोजते हुए भी विवादास्पद निर्णय ले सकता है। अच्छा अभिप्राय जवाबदेही की आवश्यकता को नहीं हटाता।

आधुनिक सेवकाइयों के लिए शिक्षा स्पष्ट है: आत्मिक भरोसे के साथ-साथ आर्थिक स्पष्टता, स्वतन्त्र निगरानी, लिखित नीतियाँ और हितों के टकराव का पारदर्शी निपटारा भी होना चाहिए।

टूटेपन में जवाबदेह होने की तत्परता भी सम्मिलित है।

मौन के छह वर्ष

एक प्रचारक के लिए मंच से अलग कर दिया जाना अपनी पहचान खो देने जैसा लग सकता है। नी की सार्वजनिक सेवकाई कई वर्षों तक बाधित रही। विटनेस ली और अन्य लोगों ने बाद में उनकी पुनर्स्थापना में भूमिका निभाई।

वे वर्ष इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं कि उन्होंने नी से उनके वरदानों को प्रगट करने का स्पष्ट मार्ग छीन लिया। वे विश्वासयोग्यता को केवल अधिक उपदेश देने के रूप में परिभाषित नहीं कर सकते थे।

बहुत से मसीही अगुवे यह तभी जान पाते हैं कि उनकी पहचान उपयोगिता से कितनी गहराई से जुड़ी है, जब उपयोगिता छीन ली जाती है। सेवानिवृत्ति, बीमारी, कलंक, किसी की देखभाल का दायित्व, राजनैतिक प्रतिबन्ध या संगठन में परिवर्तन इस समीकरण को उजागर कर सकते हैं: यदि मैं सेवकाई नहीं कर रहा, तो मैं कौन हूँ?

सुसमाचार बुलाहट से पहले उत्तर देता है। विश्वासी मसीह में परमेश्वर की सन्तान है।

यीशु ने चेलों को पहले इसलिए बुलाया कि "वे उसके साथ-साथ रहें, और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें" (मरकुस 3:14)। मसीह के साथ रहना भेजे जाने से पहले आता है।

जिस दौर में सार्वजनिक सेवकाई घट जाती है, उसमें भी परमेश्वर का काम हो सकता है।

सेवकाई में वापसी

नी अन्ततः 1940 के दशक के उत्तरार्ध में सार्वजनिक सेवकाई में लौट आए। उनकी पुनर्स्थापना से जुड़ी शिक्षा में समर्पण, तालमेल, देह-जीवन और स्वाभाविक बल के टूटने के विषय प्रमुख थे।

पुनर्स्थापित अगुवे को अपरिवर्तित होकर नहीं लौटना चाहिए। पुनर्स्थापना केवल मंच को फिर से पा लेना नहीं है। उसमें सच्चाई, जहाँ आवश्यक हो वहाँ मन-फिराव, जहाँ सम्भव हो वहाँ मेल-मिलाप, और जीवन के बदले हुए ढर्रे सम्मिलित होने चाहिए।

नी की वापसी से जुड़ा ऐतिहासिक अभिलेख जटिल है, परन्तु उसके बाद वे जो धर्मवैज्ञानिक सन्देश लेकर चले, उसने ठीक उन्हीं गुणों पर बल दिया जिन्हें संघर्ष का एक दौर उत्पन्न कर सकता है।

पुनर्स्थापना के विषय में पौलुस का सिद्धान्त कोमल है: "यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को सम्भालो, और अपनी भी देख-रेख करो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो" (गलातियों 6:1)।

कोई भी श्रेष्ठता के स्थान से किसी को पुनर्स्थापित नहीं करता।

टूटापन और अधिकार

नी ने टूटेपन को आत्मिक अधिकार से अधिकाधिक जोड़ा। अधिकार सौंपने के लिए सबसे सुरक्षित व्यक्ति वह है जिसकी स्व-इच्छा से निपटा जा चुका हो।

यीशु यह सिद्धान्त तुलना के द्वारा सिखाता है: अन्यजातियों के अधिपति दूसरों पर "प्रभुता करते हैं," "पर तुम में ऐसा नहीं है" (मरकुस 10:42-43)। बड़प्पन सेवा बन जाता है।

मनुष्य का पुत्र "इसलिए नहीं आया, कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना प्राण दे" (मरकुस 10:45)।

क्रूस के द्वारा गढ़ा गया अधिकार शोषण नहीं, रक्षा करता है। वह विशेषाधिकार से अधिक उत्तरदायित्व का भार उठाता है।

नी की बाद की पुस्तक *आत्मिक अधिकार* (Spiritual Authority) का प्रयोग कभी-कभी इस क्रूसाकार सन्दर्भ के बिना किया गया है। अकेले पढ़ने पर, आज्ञाकारिता के विषय में उसकी कड़ी भाषा तानाशाही अगुवाई को बल दे सकती है। यीशु की शिक्षा के प्रकाश में पढ़ने पर, अधिकार सदा जवाबदेह, सीमित, बलिदानी और पवित्रशास्त्र के अधीन होता है।

जो अगुवा अधीनता की माँग करता है पर सुधार का विरोध करता है, उसने मसीह का अधिकार नहीं सीखा।

टूटापन और भावनात्मक जीवन

नी ने कभी-कभी भावनाओं को "प्राण" के भीतर रखा, जिससे कुछ पाठकों में यह धारणा बनी कि तीव्र भावना आत्मिक रूप से संदिग्ध है। यह निष्कर्ष पवित्रशास्त्र से आगे चला जाता है।

यीशु रोया। पौलुस ने वेदना, आनन्द, स्नेह, भय और लालसा के साथ लिखा। भजन संहिता में मानवीय भावनाओं का पूरा विस्तार है। समस्या भावना नहीं, बल्कि भावना का

शासन है।

टूटापन भावना को सुन्न नहीं करता; वह भावना को प्रेम और सत्य के अधीन ले आता है।

टूटा हुआ व्यक्ति क्रोध का अनुभव कर सकता है पर रोष के वश में नहीं होता, शोक कर सकता है पर आशा नहीं छोड़ता, भय अनुभव कर सकता है पर आज्ञाकारिता का त्याग नहीं करता, आनन्द कर सकता है पर स्वयं को ऊँचा नहीं उठाता।

पौलुस आज्ञा देता है, "आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो, और रोनेवालों के साथ रोओ" (रोमियों 12:15)। भावनात्मक रूप से साथ होना प्रेम का अंग है।

नी की शिक्षा का परिपक्व प्रयोग दमन नहीं, एकीकरण है।

टूटापन और मन

यही बात बुद्धि पर भी लागू होती है। नी स्वयं अत्यन्त बौद्धिक व्यक्ति थे। उन्होंने आत्मिक बनने के लिए सोचना बन्द नहीं किया।

रोमियों की पत्री विश्वासियों को आज्ञा देती है कि "तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए" (रोमियों 12:2)। बुद्धि नई की जाती है, त्यागी नहीं जाती।

स्वाभाविक चतुराई तब समस्या बनती है जब वह स्वतन्त्र रूप से कार्य करती है—जब व्यक्ति परमेश्वर से अधिक विश्लेषण पर भरोसा करता है, दूसरों पर प्रभुत्व जमाने के लिए बुद्धि का प्रयोग करता है, या आज्ञा न मानने को तर्कों से उचित ठहराता है।

टूटापन मन को सत्य की सेवा के लिए स्वतन्त्र करता है।

धर्मविज्ञान में यह महत्त्वपूर्ण है। एक विद्वान किसी सन्त से अधिक तथ्य जान सकता है, फिर भी बुद्धि से रहित हो सकता है। परन्तु बौद्धिकता-विरोध इसका समाधान नहीं है। कलीसिया को मसीह के अधीन किए गए मनों की आवश्यकता है।

"तू परमेश्वर अपने प्रभु से ... अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मत्ती 22:37)।

टूटापन और इच्छा

नी प्रायः इच्छा को बाहरी मनुष्य का एक बड़ा गढ़ मानते थे। दृढ़ इच्छावाले लोग अपने संकल्प को विश्वासयोग्यता समझने की भूल कर सकते हैं।

गतसमनी में यीशु नमूना देता है: "मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो" (लूका 22:42)।

यह मानवीय इच्छा का अभाव नहीं है। यीशु स्पष्ट रूप से एक अभिलाषा प्रगट करता है। अधीनता का अर्थ है वास्तविक अभिलाषा को पिता के उद्देश्य के अधीन ले आना।

इसलिए मसीही समर्पण अनिर्णय नहीं है। टूटी हुई इच्छा, परमेश्वर का मार्ग स्पष्ट हो जाने पर, असाधारण रूप से दृढ़ हो सकती है। पौलुस तरीक़ों के विषय में लचीला और सुसमाचार के विषय में अटल हो सकता था।

टूटापन हठीले स्वामित्व-भाव को हटाता है, पवित्र दृढ़ विश्वास को नहीं।

मसीह की सुगन्ध

पौलुस लिखता है, "परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हमको जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है" (2 कुरिन्थियों 2:14)।

नी ने कभी-कभी सुगन्ध को सेवकाई के चित्र के रूप में प्रयोग किया। इत्र चुपचाप कमरे को भर देता है। उसकी उपस्थिति बिना तर्क के पहचान ली जाती है।

चरित्र का प्रभाव भी ऐसा ही होता है। मसीह के द्वारा गहराई से गढ़ा गया व्यक्ति संघर्ष में धीरज, दबाव में शान्ति और सफलता में दीनता लेकर चलता है। दूसरों को जानकारी से बढ़कर कुछ मिलता है।

यह कोई रहस्यवादी अभिजात्यवाद नहीं है। यह आत्मा के साधारण फल का देहधारी हो जाना है।

टूटा हुआ बरतन सुगन्ध इसलिए छोड़ता है कि अब उसका मुख्य अस्तित्व अपनी रक्षा करने के लिए नहीं है।

लक्ष्य टूटापन नहीं, मसीह है

टूटापन स्वयं एक मूरत बन सकता है। कुछ मसीही इसी में उलझे रहते हैं कि परमेश्वर ने उनसे कितनी गहराई से निपटा है। दु:ख प्रतिष्ठा का प्रतीक बन जाता है। गम्भीर उदासी को परिपक्वता समझ लिया जाता है।

नी का धर्मविज्ञान तब सबसे स्वस्थ होता है जब मसीह लक्ष्य बना रहता है। परमेश्वर उसे तोड़ता है जो प्रेम में बाधा डालता है, ताकि मसीह प्रगट हो सके।

पौलुस यह नहीं कहता, “मेरे लिये जीवित रहना टूटापन है।” वह कहता है, “मेरे लिये जीवित रहना मसीह है” (फिलिप्पियों 1:21)।

क्रूस पुनरुत्थान की सेवा करता है।

बीज को इसलिए नहीं गाड़ा जाता कि गाड़े जाने का उत्सव मनाया जाए। वह इसलिए मरता है कि फल लाए।

एक अधूरा काम

कोई भी विश्वासी ऐसी अवस्था तक नहीं पहुँचता जिसमें बाहरी मनुष्य से पूरी तरह और स्थायी रूप से निपटा जा चुका हो। घमण्ड नए रूपों में लौट सकता है। कोई व्यक्ति अपनी दीनता पर घमण्ड कर सकता है, या निर्भरता के अपने सिद्धान्त के विषय में ही स्वतन्त्र हो सकता है।

पौलुस सेवकाई के अन्तिम दौर में भी आगे बढ़ता जाता है: “यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ; पर ... दौड़ा चला जाता हूँ” (फिलिप्पियों 3:12)।

इसलिए टूटापन कोई आत्मिक पद नहीं, बल्कि परमेश्वर के रूपान्तरित करनेवाले काम के प्रति निरन्तर खुलापन है।

नी का अपना जीवन शीघ्र ही अपने सबसे कठोर ऐतिहासिक दबावों में प्रवेश करनेवाला था। चीन युद्ध और क्रान्ति से होकर साम्यवादी विजय की ओर बढ़ रहा था। जिस मनुष्य ने सिखाया था कि बाहरी बरतन को टूटना आवश्यक है, उसे ऐसी परिस्थितियों का सामना करना था जो उसकी स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा, सार्वजनिक सेवकाई और अन्ततः नियन्त्रण के लगभग हर दृश्य रूप को छीन लेतीं।

परन्तु उस कहानी से पहले हमें उस धर्मवैज्ञानिक ढाँचे की जाँच करनी होगी जिसने नी को बीसवीं शताब्दी के सबसे विशिष्ट मसीही शिक्षकों में से एक बनाया: उनकी यह शिक्षा कि मनुष्य आत्मा, प्राण और देह से बना है, और आत्मिक परिपक्वता के लिए इनकी क्रियाओं में भेद करना सीखना आवश्यक है।

टूटापन और क्षमा-याचना

स्वाभाविक घमण्ड से निपटे जाने के सबसे स्पष्ट चिह्नों में से एक है बिना आत्म-बचाव के क्षमा माँग पाने की क्षमता।

नातान को दाऊद का उत्तर सरल था: "मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है" (2 शमूएल 12:13)। उसने तनाव, राजकीय दबाव या बतशेबा के व्यवहार की व्याख्या से आरम्भ नहीं किया।

मसीही अगुवे प्रायः अपनी आरम्भिक भूलों से उतनी हानि नहीं पहुँचाते, जितनी उन्हें स्वीकार न कर पाने से पहुँचाते हैं। प्रतिष्ठा मेल-मिलाप से अधिक मूल्यवान बन जाती है।

नी का धर्मविज्ञान सीधा निदान देता है: बाहरी मनुष्य अपनी रक्षा कर रहा है।

एक टूटा हुआ अगुवा कह सकता है, "मैं ग़लत था। मैंने तुम्हें हानि पहुँचाई। मुझे खेद है। क्या क्षतिपूर्ति सम्भव है?"

कोई भी आत्मिक शब्दावली सच्चे पश्चाताप से गहरी नहीं है।

टूटापन और सृजनशीलता

समर्पण लोगों को एक-जैसा नहीं बना देता। नया नियम अलग-अलग व्यक्तित्वों को बनाए रखता है। पतरस यूहन्ना नहीं है; पौलुस बरनबास नहीं है।

इसलिए स्वाभाविक बल पर परमेश्वर का काम कोई रबड़ नहीं जो सब कुछ मिटा दे। यह स्व-केन्द्रित नियन्त्रण से मुक्ति है, ताकि वरदान और भी सच्चे अर्थ में उपलब्ध हो सकें।

समर्पण के बाद एक संगीतकार और अधिक सृजनशील हो सकता है, क्योंकि तालियाँ अब उसकी स्वामी नहीं रहीं। एक उद्यमी अधिक बुद्धिमानी से जोखिम उठा सकता है, क्योंकि उसकी पहचान सफलता से बँधी नहीं है। एक शिक्षक अधिक स्पष्ट हो सकता है, क्योंकि अब उसे प्रभावशाली सुनाई देने की आवश्यकता नहीं रही।

"जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है" (2 कुरिन्थियों 3:17)।

टूटेपन से पवित्र स्वतन्त्रता बढ़नी चाहिए।

क्रूस और सीमाएँ

आत्म-त्याग का अर्थ कोई सीमा न रखना नहीं है। यीशु भीड़ से अलग हो जाता था, छल-भरी माँगों को ठुकराता था, अपने समय से पहले उसे मार डालने के प्रयासों से बच निकलता था, और अपने आप को बिना विवेक के लोगों के भरोसे नहीं छोड़ता था।

"वह आप जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है" (यूहन्ना 2:25)।

एक मसीही मना कर सकता है, और इससे वह अटूटा नहीं ठहरता। माता-पिता अपने बच्चों की रक्षा कर सकते हैं। कर्मचारी दुराचार की सूचना दे सकते हैं। कलीसिया के सदस्य असुरक्षित परिस्थितियों को छोड़ सकते हैं। अगुवे स्वस्थ सीमाएँ ठहरा सकते हैं।

क्रूस हमें स्वार्थी अधिकारों को समर्पित करने के लिए बुलाता है, बुद्धि को नहीं।

टूटापन, कोमलता, और क्रूस तथा दुर्व्यवहार के बीच का अन्तर

नी से जुड़े बहुत कम वाक्यांशों को "बाहरी मनुष्य का टूटना" से अधिक सावधानी से सम्भालने की आवश्यकता है। यह वाक्यांश मसीही गठन पर प्रकाश डाल सकता है, परन्तु अस्वस्थ समुदायों में इसे अपमान, प्रभुत्व या स्वस्थ आत्म-निर्णय के विनाश के लिए धार्मिक औचित्य भी बनाया जा सकता है। बाइबल पर आधारित जीवनी को यह भेद स्पष्ट करना चाहिए।

नी की केन्द्रीय चिन्ता यह थी कि स्वाभाविक आत्मनिर्भरता भीतर वास करनेवाले आत्मा के प्रगट होने में बाधा डाल सकती है। बाहरी व्यक्ति में आत्मरक्षा, हठ, आवेग, घमण्ड, चतुराई, भावनात्मक प्रतिक्रियाशीलता और नियन्त्रण करने की सहज प्रवृत्ति की आदतें सम्मिलित हैं। परमेश्वर इन ढर्रों को ढीला करने के लिए पवित्रशास्त्र, समुदाय, परिस्थितियों, सुधार और दुःख का उपयोग करता है, ताकि मसीह का जीवन अधिक स्वतन्त्रता से प्रगट हो सके।

मिट्टी के बरतनों में धन का पौलुस का चित्र इस विरोधाभास को पकड़ लेता है। बरतन बुरा नहीं है; वह नाज़ुक है। लक्ष्य व्यक्ति को चूर-चूर करना नहीं, बल्कि धन को प्रगट करना है। "कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे" (2 कुरिन्थियों 4:7)।

इसलिए स्वस्थ टूटापन विनाश नहीं, कोमलता उत्पन्न करता है। टूटा हुआ व्यक्ति बिखरे बिना क्षमा माँग सकता है। वह तुरन्त पलटवार किए बिना सुधार ग्रहण कर सकता है। वह बिना घृणा के मना कर सकती है। वह प्रभुत्व जमाने की आवश्यकता के बिना अधिकार का प्रयोग कर सकता है। वह सत्य को छोड़े बिना ग़लतफ़हमी सह सकती है। अब स्व के लिए हर मुठभेड़ जीतना आवश्यक नहीं रहता।

यीशु मापदण्ड देता है। वह "नम्र और मन में दीन" है (मत्ती 11:29), फिर भी वह कपट का सामना करता है, छल-भरे दबाव को ठुकराता है, शत्रुतापूर्ण भीड़ से हट जाता है, सीधे प्रश्न पूछता है और अधिकार के साथ बोलता है। नम्रता परमेश्वर के अधीन किया गया बल है, शोषण के लिए उपलब्ध निर्बलता नहीं।

जब आत्मिक अगुवे क्रूस की दुहाई देते हैं, तब यह भेद अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी अगुवे को यह अधिकार नहीं कि वह ज़बरदस्ती से किसी दूसरे विश्वासी को "तोड़े।" नया नियम चरवाहों को आज्ञा देता है कि वे उन पर प्रभुता न करें जो उन्हें सौंपे गए हैं। पतरस लिखता है, "जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुण्ड के लिये आदर्श बनो" (1 पतरस 5:3)। परमेश्वर का अनुशासन उसका अपना विशेषाधिकार है। मानवीय अगुवे सिखाते हैं, सुधारते हैं, रक्षा करते हैं और आदर्श बनते हैं; वे अपमान के द्वारा टूटापन गढ़ते नहीं।

सार्वजनिक आलोचना और बहिष्कार के नी के अपने बाद के अनुभव ने स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने की इच्छा के समर्पण पर उनके ज़ोर को वज़न दिया। फिर भी मसीही समुदायों को व्यक्तिगत अधिकारों के स्वेच्छा से त्याग और थोपी गई चुप्पी में भेद करना चाहिए। एक विश्वासी बदला न लेने का चुनाव कर सकता है। कोई दुर्व्यवहार करनेवाला आत्मिकता के प्रमाण के रूप में इस चुनाव की माँग नहीं कर सकता।

क्रूस सीमाएँ भी बनाता है। यीशु कभी-कभी वहाँ से चला जाता था। पौलुस दमिश्क से बच निकला, उसने रोमी व्यवस्था की दुहाई दी, और कलीसियाओं को ख़तरनाक शिक्षकों के विषय में चेतावनी दी। क्षमा के लिए यह आवश्यक नहीं कि भरोसा तुरन्त बहाल हो जाए। मेल-मिलाप के लिए सच्चाई चाहिए और, जहाँ ग़लत काम हुआ हो, वहाँ पश्चाताप। प्रेम दूसरे व्यक्ति की भलाई चाहते हुए भी उस तक पहुँच को सीमित कर सकता है।

इसलिए टूटेपन को सबसे अच्छी तरह स्व के अत्याचार से मुक्ति के रूप में समझा जा सकता है, स्व के मिटा दिए जाने के रूप में नहीं। व्यक्ति प्रेम के लिए अधिक उपलब्ध हो जाता है, क्योंकि अहं की रक्षा में कम शक्ति खर्च होती है। स्वाभाविक वरदान बने रहते हैं, पर

अधिक सीखने योग्य हो जाते हैं। दृढ़ विश्वास बना रहता है, पर तिरस्कार खो देता है। साहस बना रहता है, पर जीतने की आवश्यकता खो देता है।

मरकुस 14 से लिया गया संगमरमर के पात्र का नी का चित्र, यदि सावधानी से लागू किया जाए, तो सहायक है। जब पात्र टूटता है, तब सुगन्ध घर में भर जाती है। परन्तु भक्ति का यह काम वह स्त्री स्वयं मसीह के प्रति करती है; चेलों को उसे चूर-चूर करने के लिए आमन्त्रित नहीं किया जाता। मसीही समर्पण अन्ततः यीशु के प्रति व्यक्तिगत प्रत्युत्तर है।

टूटेपन पर किसी भी शिक्षा की परख उसका फल है। क्या वह "प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, और दया, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम" उत्पन्न करती है (गलातियों 5:22-23)? क्या वह अगुवों को अधिक सुरक्षित, विश्वासियों को सच बोलने के लिए अधिक स्वतन्त्र, सम्बन्धों को अधिक ईमानदार और मसीह को अधिक दृश्यमान बनाती है? यदि वह भय, मानवीय अधिकार पर निर्भरता, गोपनीयता या लगातार आत्म-दोषारोपण उत्पन्न करती है, तो क्रूस की भाषा मसीह के आत्मा से अलग कर दी गई है।

नी की सर्वोत्तम अन्तर्दृष्टि इस जाँच में खरी उतरती है। परमेश्वर केवल हमारी तकनीकों को नहीं सुधारता। वह उस व्यक्ति को रूपान्तरित करता है जिसके द्वारा सेवकाई प्रवाहित होती है। परन्तु परमेश्वर के रूपान्तरित करनेवाले हाथ को कभी भी किसी दूसरे मनुष्य की नियन्त्रण की भूख के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

आत्मा, प्राण और देह

नी की सबसे विशिष्ट मनुष्य-विषयक शिक्षा

यदि *सामान्य मसीही जीवन* (The Normal Christian Life) ने वॉचमैन नी को बहुत-से सुसमाचारवादी मसीहियों का प्रिय बनाया, तो *आत्मिक मनुष्य* (The Spiritual Man) ने उन्हें विशिष्ट भी बनाया और विवादास्पद भी। 1920 के दशक में गम्भीर बीमारी और गहन अध्ययन के दौर में लिखी गई इस विशाल कृति ने वह करने का प्रयास किया जिसे हाल की विद्वत्ता ठीक ही "बाइबिल आधारित मनोविज्ञान" कहती है। नी का तर्क था कि मनुष्य आत्मा, प्राण और देह से मिलकर बना है, और मसीही परिपक्वता इस समझ पर निर्भर है कि ये आयाम पवित्र आत्मा के अधीन कैसे काम करते हैं।

मुख्य पाठ 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 था: "शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।"

इब्रानियों 4:12 का भी बड़ा प्रभाव था: "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत तेज है, प्राण, आत्मा को ... अलग करके, आर-पार छेदता है।"

नी ने इन खण्डों को इस बात का प्रमाण माना कि प्राण और आत्मा मनुष्य की बनावट के अलग पहचाने जा सकने वाले भाग या शक्तियाँ हैं। फिर उन्होंने बाइबिल के अन्य शब्दों और अनुभवों को आपस में जोड़कर एक विस्तृत नक्शा रचा: देह का सम्बन्ध भौतिक संसार से है; प्राण में मन, भावना और इच्छा है और वही व्यक्तिगत आत्म-चेतना देता है; मनुष्य की आत्मा में विवेक, अन्तर्ज्ञान और सहभागिता जैसी क्षमताएँ हैं और वही वह अंग है जिसके द्वारा परमेश्वर को जाना जाता है।

इस ढाँचे ने बहुत-से पाठकों को केवल भावना और आत्मिक सहभागिता के बीच का अन्तर स्पष्ट शब्दों में कहने में सहायता दी है। पर इसकी आलोचना भी हुई है कि यह बाइबिल की लचीली शब्दावली को एक कठोर त्रिभागी व्यवस्था में ठूँस देता है।

एक निष्पक्ष मूल्यांकन की शुरुआत इसके पास्तरीय उद्देश्य और इसकी व्याख्यात्मक सीमाओं, दोनों को पहचानने से होनी चाहिए।

देह: भौतिक संसार से हमारा सम्पर्क

नी ने देह को भौतिक परिवेश से मनुष्य के सम्पर्क का साधन माना। इन्द्रियों के द्वारा हम देखते, सुनते, छूते, चखते और सूँघते हैं; देह के द्वारा हम सृजी हुई दुनिया में काम करते हैं।

बाइबिल का मसीही विश्वास देह को स्वभाव से बुरा नहीं मानता। उत्पत्ति भौतिक सृष्टि को अच्छा बताती है। परमेश्वर का पुत्र देहधारी हुआ। यीशु देह सहित जी उठा। मसीही लोग "अपनी देह के छुटकारे" (रोमियों 8:23) की प्रतीक्षा करते हैं, देह से छुटकारा पाकर भाग निकलने की नहीं।

इसलिए पौलुस देह को गहरी गरिमा देता है: "क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है?" (1 कुरिन्थियों 6:19)।

नी की सबसे सशक्त शिक्षा भी इससे सहमत है। देह को धार्मिकता के हथियार के रूप में परमेश्वर को सौंपा जाना चाहिए। स्वभाव से वह न स्वामी है, न शत्रु। पाप ने देह की भूखों-लालसाओं को प्रभावित किया है, पर छुटकारे में देह भी सम्मिलित है।

यह इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि गहरे-जीवन की कुछ आत्मिक धाराएँ व्यावहारिक द्वैतवाद की ओर बह सकती हैं, मानो शारीरिक आवश्यकताएँ आत्मिक जीवन के मार्ग की लज्जाजनक बाधाएँ हों। पवित्रशास्त्र इससे कहीं अधिक समन्वित है। नींद, भोजन, यौनता, काम, व्यायाम, बीमारी, बुढ़ापा और विश्राम आत्मिक दृष्टि से अप्रासंगिक नहीं हैं।

1 राजाओं 19 में एलिय्याह की निराशा का उत्तर आगे के प्रकाशन से पहले कुछ हद तक नींद और भोजन से दिया जाता है। यीशु सोया, उसने खाया, वह रोया, उसने बीमारों को छुआ, और देह की सीमाओं को स्वीकार किया।

परिपक्व आत्मिकता देह की देखभाल करती है, पर उसकी उपासना नहीं करती।

प्राण: मन, भावना और इच्छा

नी ने "प्राण" शब्द का प्रयोग मनोवैज्ञानिक जीवन के लिए किया: विचार, भावना और संकल्प। प्राण व्यक्तित्व और आत्म-चेतना का आसन है।

"प्राण" को व्यक्तिगत जीवन, अभिलाषा और भीतरी अनुभव से जोड़ने के लिए बाइबिल में आधार है, पर बाइबिल का प्रयोग व्यापक है। इब्रानी *नेफ़ेश* और यूनानी *साइके* सन्दर्भ के अनुसार जीवन, व्यक्ति, स्वयं या प्राण का अर्थ दे सकते हैं। पवित्रशास्त्र "प्राण" को ठीक तीन शक्तियों के लिए किसी तकनीकी नाम के रूप में लगातार प्रयोग नहीं करता।

यह एक ऐसा स्थान है जहाँ पाठकों को नी की व्यवस्था को हर पद पर थोपे गए शब्दकोश के बजाय एक धर्मवैज्ञानिक प्रतिरूप के रूप में लेना चाहिए।

फिर भी उनकी पास्तरीय चिन्ता वास्तविक थी। मसीही लोग बुद्धि, भावना या इच्छा के बल पर जी सकते हैं और साथ ही यह मान सकते हैं कि वे परमेश्वर से जी रहे हैं।

यदि किसी शानदार तर्क का स्रोत घमण्ड है, तो वह प्राणिक हो सकता है। उपासना का कोई तीव्र अनुभव, यदि उससे आज्ञाकारिता उत्पन्न नहीं होती, केवल भावनात्मक हो सकता है। "विश्वास" का कोई ज़ोरदार कदम धार्मिक भाषा का वस्त्र पहने हठी इच्छाशक्ति हो सकता है।

नी चाहते थे कि विश्वासी केवल यह न पूछें कि कोई काम मसीही दिखता है या नहीं, बल्कि यह भी कि उसका उद्गम कहाँ है।

पौलुस एक मिलता-जुलता भेद करता है जब वह कहता है, "शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।" (रोमियों 8:6)। प्रश्न सोचने या न सोचने का नहीं है; प्रश्न यह है कि मन पर किस क्षेत्र का शासन है।

आत्मा: परमेश्वर की ओर उन्मुख आयाम

नी ने मनुष्य की आत्मा को व्यक्ति का सबसे गहरा, परमेश्वर की ओर उन्मुख आयाम माना। नये जन्म के समय पवित्र आत्मा विश्वासी की आत्मा को जीवन देता है और परमेश्वर के साथ सहभागिता को पुनःस्थापित करता है।

नीकुदेमुस से कहे गए यीशु के शब्द नींव के समान थे: "जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।" (यूहन्ना 3:6)।

पौलुस लिखता है, "पवित्र आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।" (रोमियों 8:16)। नी ने इस पद में दो आत्माएँ देखीं: परमेश्वर का आत्मा और मनुष्य की आत्मा।

इससे वे मसीही जीवन का वर्णन भीतर वास करनेवाले पवित्र आत्मा और नया जन्म पाई हुई मानवीय आत्मा के बीच की सहभागिता के रूप में कर सके। परमेश्वर का आत्मा केवल बाहर से व्यवहार को प्रभावित नहीं करता; वह भीतर वास करता है।

"क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?" (1 कुरिन्थियों 3:16)।

नी का यह ज़ोर विश्वासियों को याद दिलाता है कि मसीहियत केवल सिद्धान्त से बौद्धिक सहमति नहीं है। वह भीतर वास करनेवाले आत्मा के द्वारा आत्मिक जीवन है।

फिर भी सावधानी आवश्यक है। पवित्रशास्त्र विश्वासियों को यह नहीं सिखाता कि वे किसी भीतरी तत्त्वमीमांसीय अंग को खोजने में ही उलझे रहें। व्यावहारिक प्रश्न है मसीह के द्वारा, आत्मा से, परमेश्वर के साथ सहभागिता।

विवेक

नी ने विवेक को मनुष्य की आत्मा के भीतर रखा। यह शारीरिक-संरचना जैसा वर्गीकरण प्रमाणित किया जा सकता है या नहीं, यह स्वयं विवेक के विषय में उनकी सशक्त शिक्षा से कम महत्त्वपूर्ण है।

पौलुस ने कहा, "मैं आप भी यत्न करता हूँ, कि परमेश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।" (प्रेरितों के काम 24:16)।

शुद्ध विवेक महत्त्व रखता है। जब परमेश्वर पाप को प्रकट करता है, तो विश्वासी को उसे मान लेना चाहिए और जहाँ उचित हो वहाँ क्षतिपूर्ति करनी चाहिए। विवेक की लगातार अनदेखी हृदय को कठोर कर सकती है।

पर विवेक अचूक नहीं है। पौलुस ऐसे निर्बल विवेकों की बात करता है जो उन बातों से व्याकुल होते हैं जो अपने आप में पापमय नहीं हैं (1 कुरिन्थियों 8)। वह ऐसे विवेकों का भी वर्णन करता है जो अशुद्ध हो सकते हैं या दागे जा सकते हैं।

इसलिए विवेक को पवित्रशास्त्र और सुसमाचार के द्वारा गढ़ा जाना चाहिए।

नी कभी-कभी अत्यन्त सूक्ष्म संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करते थे। स्वस्थ व्यक्ति में इससे पवित्रता उत्पन्न हो सकती है, पर जो व्यक्ति अति-शंकालु विवेक की ओर झुका हो, उसमें इससे अन्तहीन आत्म-दोषारोपण उत्पन्न हो सकता है। मसीह का लहू ही शान्ति का आधार बना रहना चाहिए।

"तो मसीह का लहू ... तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीविते परमेश्वर की सेवा करो।" (इब्रानियों 9:14)।

शुद्ध किए गए विवेक का लक्ष्य सेवा है, अपने आप में उलझे रहना नहीं।

अन्तर्ज्ञान और मार्गदर्शन

नी ने "अन्तर्ज्ञान" शब्द का प्रयोग ऐसे सीधे आत्मिक ज्ञान के लिए किया जो तर्क या भावना से भिन्न है। उनका विश्वास था कि मनुष्य की आत्मा परमेश्वर की अगुआई को मन के पूरी तरह विश्लेषण कर लेने से पहले ही भाँप सकती है।

बहुत-से मसीही ऐसे अनुभव पहचानते हैं जो इस वर्णन से मिलते हैं: भीतर की कोई रोक, बोझ, शान्ति, दृढ़ निश्चय या दिशा का बोध जो बाद में समझ में आता है। पवित्रशास्त्र विश्वासियों के "परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते" होने की बात करता है (रोमियों 8:14)।

पर यदि "अन्तर्ज्ञान" को अपने आप ईश्वरीय मान लिया जाए, तो यह एक जोखिम भरी श्रेणी है। मानवीय अन्तर्ज्ञान स्मृति, भय, अभिलाषा, आघात, पैटर्न पहचानने की क्षमता, सांस्कृतिक अपेक्षा या अचेतन पूर्वाग्रह से भी उत्पन्न हो सकता है।

बाइबिल का मार्गदर्शन अनेक साधनों का उपयोग करता है: पवित्रशास्त्र, बुद्धि, प्रार्थना, परमेश्वर का प्रबन्ध, परामर्श, वरदान, परिस्थितियाँ, और आत्मा की शान्ति और गवाही। कोई भी भीतरी बोध परमेश्वर के वचन से ऊपर नहीं है।

प्रेरितों के काम 16 में पौलुस और उसके साथियों ने बन्द और खुले द्वारों का अनुभव किया, पर वे सोचते, यात्रा करते और परिस्थितियों का उत्तर देते रहे। मार्गदर्शन यान्त्रिक नहीं, बल्कि गतिशील था।

इसलिए नी की शिक्षा का परिपक्व प्रयोग यह है: आत्मा के प्रति संवेदनशीलता विकसित करो, पर भीतरी छापों को नम्रता से परखो।

"सब बातों को परखो जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।" (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)।

सहभागिता

नी ने आत्मा में परमेश्वर के साथ सीधी संगति का वर्णन करने के लिए सहभागिता शब्द का प्रयोग किया। उनके प्रतिरूप का यह शायद सबसे कम विवादास्पद पहलू है, क्योंकि नया नियम स्पष्ट रूप से मसीहियों को पिता, पुत्र और आत्मा के साथ संगति में बुलाता है।

"हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।" (1 यूहन्ना 1:3)।

"प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।" (2 कुरिन्थियों 13:14)।

प्रार्थना केवल विनतियाँ प्रस्तुत करना नहीं है; वह सहभागिता है। उपासना केवल गाना नहीं है; वह सहभागिता है। पवित्रशास्त्र पढ़ना केवल जानकारी इकट्ठा करना नहीं है; जब परमेश्वर का सत्य विश्वासी से बात करता है, तो वह सहभागिता का स्थान बन जाता है।

नी की भक्तिपूर्ण शक्ति इस बात में थी कि उन्होंने मसीहियों को औपचारिक धर्म से आगे बढ़कर परमेश्वर के साथ सचेत संगति में बुलाया।

ख़तरा आत्मनिष्ठता का है। परमेश्वर के साथ सहभागिता पवित्रशास्त्र को कभी अनावश्यक नहीं बनाती। जो आत्मा विश्वासियों में वास करता है, वही आत्मा है जिसने वचन को प्रेरित किया और जो मसीह की महिमा करता है।

"प्राणिक" मसीही

नी ने "प्राणिक" (soulish या soulical) विशेषण का प्रयोग ऐसे विश्वासी के वर्णन के लिए किया जो पवित्र आत्मा के अधीन मनुष्य की आत्मा के बजाय मुख्यतः स्वाभाविक मन, भावना या इच्छा से संचालित होता है।

यह भाषा 1 कुरिन्थियों 2:14 से ली गई थी, जहाँ ASV कहता है कि "स्वाभाविक मनुष्य" (हिन्दी IRV में "शारीरिक मनुष्य") परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता। यूनानी विशेषण *साइकिकोस* को व्युत्पत्ति की दृष्टि से *साइके* ("प्राण") से जोड़ा जा सकता है, पर उससे एक पूरी मनुष्य-विषयक शिक्षा गढ़ लेना विवाद का विषय है।

1 कुरिन्थियों में पौलुस का विरोधाभास उन लोगों के बीच है जिनके पास आत्मा नहीं है और उनके बीच जिनके पास आत्मा है। बाद में वह मसीहियों को "शारीरिक" कहकर डाँटता

है। नी ने इन श्रेणियों को आत्मिक विकास के एक विस्तृत वर्गीकरण तक फैला दिया।

यह वर्गीकरण तब प्रकाश देनेवाला हो सकता है जब वह यह पूछे कि क्या हम पर स्वाभाविक क्षमता शासन कर रही है। यह तब समस्या बन जाता है जब मसीही असहमति को ठुकराने के लिए एक-दूसरे पर "प्राणिक" का ठप्पा लगाते हैं।

जो भाई प्रमाण माँगता है, वह आवश्यक रूप से प्राणिक नहीं है। जो बहन तीव्र भावना का अनुभव करती है, वह आवश्यक रूप से प्राणिक नहीं है। जो अगुवा सावधानी से योजना बनाता है, वह आवश्यक रूप से प्राणिक नहीं है।

किसी मनोवैज्ञानिक ढाँचे से मेल खाना नहीं, बल्कि आत्मा का फल ही बेहतर कसौटी है।

भावना: वरदान भी और ख़तरा भी

नी भावना के प्रति सतर्क थे, क्योंकि धार्मिक भावना आत्मिक अनुभव की नकल कर सकती है। जागृति-सभाएँ सामूहिक उत्तेजना पैदा कर सकती हैं। संगीत लोगों को गहराई से हिला सकता है। भय पाप-बोध का रूप धर सकता है। प्रेम-आकर्षण को ईश्वरीय मार्गदर्शन समझ लिया जा सकता है।

उनकी सावधानी उपयोगी है। पर पवित्रशास्त्र भावना को आत्मा के विरोध में खड़ा नहीं करता।

यीशु "पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया" (लूका 10:21)। पौलुस को इस्राएल के लिए "बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है" (रोमियों 9:2)। भजन संहिता विश्वासियों को सिखाती है कि वे भय, शोक, क्रोध, आनन्द, आशा और लालसा को परमेश्वर के पास ले आएँ।

पवित्र आत्मा मनुष्यों को कम भावनात्मक नहीं बनाता। वह भावना को पवित्र करता है।

सही प्रश्न यह नहीं है कि "क्या मैंने तीव्रता से महसूस किया?" बल्कि यह है कि "क्या यह भावना सत्य और प्रेम के अधीन है? क्या यह मसीह-समान आज्ञाकारिता की ओर ले जाती है?"

इसलिए नी की श्रेणियों को स्वस्थ भावनाओं के प्रति सन्देह उत्पन्न किए बिना स्रोत को पहचानने में सहायता करनी चाहिए।

मन: नया किया गया, दरकिनार नहीं

नी के कुछ पाठकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि आत्मिक ज्ञान स्वभाव से ही तर्क से श्रेष्ठ है और मन को बस भीतरी अन्तर्ज्ञान के पीछे चलना चाहिए। ऐसी व्याख्या बुद्धि-विरोध की ओर ले जा सकती है।

पौलुस कहता है, "तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए" (रोमियों 12:2)। वह प्रार्थना करता है कि विश्वासी "सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ" (कुलुस्सियों 1:9)।

आत्मा विचार को नया करता है। वह उसे दरकिनार नहीं करता।

नी स्वयं इस बात को प्रमाणित करते हैं। *आत्मिक मनुष्य* अत्यन्त विश्लेषणात्मक पुस्तक है, श्रेणियों और बाइबिल आधारित तर्कों से भरी हुई। उसकी जो भी कमियाँ हों, वह किसी ऐसे व्यक्ति की रचना नहीं है जो सोचने पर अविश्वास करता हो।

मन तब ख़तरनाक बनता है जब वह स्वायत्त, घमण्डी या आज्ञाकारिता से कटा हुआ हो। नया किया गया मन विवेचन के लिए अनिवार्य है।

इच्छा: समर्पित, मिटाई हुई नहीं

नी ने इसी प्रकार स्व-इच्छा के विरुद्ध चेतावनी दी। पर समर्पित इच्छा का अर्थ अस्तित्वहीन इच्छा नहीं है।

यीशु कहता है, "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा" (यूहन्ना 7:17)। स्वेच्छा से की गई आज्ञाकारिता समझ का मार्ग खोलती है।

पौलुस ने यात्रा करने के लिए "आत्मा में ठाना" (प्रेरितों के काम 19:21)। मसीही जीवन में निर्णय, दृढ़ संकल्प और धीरज सम्मिलित हैं।

समस्या वह स्वायत्त इच्छा है जो अपने लक्ष्य स्वयं तय करती है और फिर परमेश्वर से उन्हें आशीष देने को कहती है।

गतसमनी नमूना देता है: "मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।" (लूका 22:42)। मनुष्य की इच्छा व्यक्त भी की जाती है और सौंप भी दी जाती है।

शरीर और प्राण एक ही नहीं हैं

नी की शिक्षा के सरलीकृत रूपों में एक आम भ्रम यह है कि प्राण को बुरा मान लिया जाता है। नी ने स्वयं लगातार ऐसा नहीं कहा, यद्यपि उनकी भाषा पाठकों को उस ओर ले जा सकती है।

पवित्रशास्त्र में "शरीर" अकसर परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में पड़े पतित मानवीय अस्तित्व को दर्शाता है। "प्राण" का अर्थ केवल जीवन या व्यक्ति भी हो सकता है। प्राण पाप का पर्याय नहीं है।

मरियम कहती है, "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई।" (लूका 1:46-47)। यह काव्यात्मक समानान्तरता यह संकेत नहीं देती कि मरियम का प्राण भ्रष्ट है जबकि उसकी आत्मा ठीक से उपासना करती है।

इसी प्रकार यीशु कहता है, "मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है।" (मत्ती 26:38)। उसकी निष्पाप मानवता में प्राण-सम्बन्धी भाषा सम्मिलित है।

प्राण को राक्षसी ठहराने से बचने का यह एक ठोस कारण है। मन, भावना और इच्छा सृजे गए व्यक्तित्व के आयाम हैं, जिन्हें परमेश्वर के अधीन नया और व्यवस्थित किया जाना है।

द्विभाजन, त्रिभाजन और बाइबिल की भाषा

मसीही धर्मविज्ञान में लम्बे समय से यह बहस रही है कि मनुष्य का सबसे अच्छा वर्णन देह और प्राण/आत्मा (द्विभाजन) के रूप में होता है या देह, प्राण और आत्मा (त्रिभाजन) के रूप में। गम्भीर, सिद्धान्तनिष्ठ मसीहियों ने दोनों मत रखे हैं।

1 थिस्सलुनीकियों 5:23 जैसे पाठ त्रिभाजन के पक्ष में दिखते हैं। अन्य पाठ प्राण और आत्मा का प्रयोग एक-दूसरे पर छाते हुए अर्थों में करते हैं, या व्यक्ति का वर्णन केवल देह और आत्मा के रूप में करते हैं। बाइबिल के लेखक मनुष्य-सम्बन्धी शब्दों का प्रयोग अकसर शारीरिक संरचना के बजाय कार्य के अर्थ में करते हैं।

इब्रानियों 4:12 कहता है कि वचन प्राण और आत्मा को अलग करता है, जिसे नी ने उनके पृथक होने का प्रमाण माना। पर वही पद यह भी कहता है कि वह "गाँठ-गाँठ, और गूदे-

गूदे" को अलग करता है, जो मनुष्य की पूरी शारीरिक संरचना का वर्णन होने के बजाय भेदनेवाले विवेचन का आलंकारिक चित्र हो सकता है।

इसलिए नी का त्रिभाजन एक धर्मवैज्ञानिक प्रतिरूप के रूप में सम्भव है, पर उसे एकमात्र विश्वासयोग्य मसीही व्याख्या नहीं माना जाना चाहिए।

बाइबिल की अधिक महत्त्वपूर्ण पुष्टियाँ सभी प्रतिरूपों में साझी हैं: मनुष्य परमेश्वर के लिए बनाए गए देहधारी प्राणी हैं; पाप पूरे व्यक्ति को भ्रष्ट करता है; नया जन्म आत्मा के द्वारा परमेश्वर का कार्य है; पवित्रीकरण में पूरा व्यक्ति सम्मिलित है; और पुनरुत्थान देहधारी जीवन को पुनःस्थापित करेगा।

पौलुस की प्रार्थना स्वयं सम्पूर्णता पर ज़ोर देती है: "तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे।"

अति-आत्मनिरीक्षण का ख़तरा

एक विस्तृत आत्मिक मनोविज्ञान विश्वासियों को हर भीतरी हलचल पर नज़र रखने के लिए उकसा सकता है: क्या वह विचार प्राण से था या आत्मा से? क्या वह भावना शरीर की थी या केवल भावना? क्या वह निर्णय अन्तर्ज्ञान था या इच्छा?

ऐसा विश्लेषण आत्मिक रूप से पंगु कर देनेवाला बन सकता है।

नया नियम अधिकतर विश्वासियों को मसीह, पवित्रशास्त्र, प्रेम, बुद्धि और आज्ञाकारिता की ओर मोड़ता है। आत्म-परीक्षण का अपना स्थान है—"अपने आपको परखो, कि विश्वास में हो कि नहीं" (2 कुरिन्थियों 13:5)—पर मसीही जीवन अन्तहीन भीतरी चीर-फाड़ नहीं है।

चरवाहा भेड़ की भीतरी मशीनरी से अधिक मसीह की ओर देखता है।

नी की श्रेणियाँ कभी-कभार प्रयोग किए जानेवाले निदान के औज़ारों के रूप में सबसे अधिक उपयोगी हैं, न कि पल-पल की नियन्त्रण-व्यवस्था के रूप में।

वचन अलग करता है

नी का इब्रानियों 4:12 का प्रयोग एक अधिक स्वस्थ समाधान की ओर संकेत करता है। अन्ततः हम प्राण और आत्मा को आत्मनिरीक्षण की किसी प्रतिभा से अलग नहीं करते। परमेश्वर का वचन "मन की भावनाओं और विचारों को" भेदता और जाँचता है (इब्रानियों 4:12)।

पवित्रशास्त्र उन उद्देश्यों को प्रकट करता है जिनका हम अकेले सही निदान नहीं कर सकते।

इसलिए प्रार्थनापूर्वक पढ़ना समर्पण का कार्य बन जाता है: प्रभु, मुझे दिखा कि मैं कहाँ घमण्ड, भय, भूख या स्व-इच्छा से काम कर रहा हूँ। मेरे पूरे व्यक्तित्व को अपने सत्य के अधीन कर।

ज़ोर स्वयं को श्रेणियों में बाँटने से हटकर परमेश्वर को हमें जाँचने देने पर आ जाता है।

"हे परमेश्वर, मुझे जाँचकर जान ले! मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुआई कर!" (भजन संहिता 139:23-24)।

सम्पूर्ण व्यक्ति का पवित्रीकरण

नी की व्यवस्था पदानुक्रमी लग सकती है: आत्मा प्राण पर शासन करती है, प्राण देह पर। यह चाहने में बुद्धिमानी है कि जीवन का परमेश्वर-उन्मुख आयाम विचार, भावना, इच्छा और कर्म पर शासन करे। पर पवित्रशास्त्र का अन्तिम दर्शन आदेशों की किसी शृंखला से कहीं अधिक समन्वित है।

शान्ति का परमेश्वर पूरी रीति से पवित्र करता है।

मन नया किया जाता है। भावनाएँ परमेश्वर में आनन्दित होती हैं। इच्छा आज्ञा मानती है। देह धार्मिकता का हथियार बन जाती है। आत्मा परमेश्वर के साथ सहभागिता करती है। पूरा व्यक्ति प्रेम करता है।

यीशु व्यवस्था का सार बताता है: "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।" (मरकुस 12:30)।

हम जो भी भेद करें, परमेश्वर पूरे व्यक्ति पर दावा करता है।

आत्मिक मनुष्य का स्थायी मूल्य

नी की यह जटिल मनुष्य-विषयक शिक्षा प्रभावशाली क्यों बनी रही? क्योंकि यह एक वास्तविक मसीही अनुभव को सम्बोधित करती है: विश्वासी पाते हैं कि हर भीतरी प्रेरणा

पवित्र आत्मा नहीं होती, कि स्वाभाविक प्रतिभा आत्मिक सेवकाई की नकल कर सकती है, और कि परमेश्वर के साथ सहभागिता केवल भावना या बुद्धि से कहीं अधिक गहरी है।

इसका मूल्य विवेचन और निर्भरता विकसित करने में है।

इसका ख़तरा अति-व्यवस्थीकरण में, बुद्धि-विरोधी या भावना-विरोधी प्रयोगों में, और "आत्मिक" मसीहियों का एक ऐसा विशिष्ट वर्ग बनाने की परीक्षा में है जो दूसरों को नीची दृष्टि से देखे।

पौलुस आवश्यक सुधार देता है: "यदि कोई समझे, कि मैं कुछ जानता हूँ, तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता।" (1 कुरिन्थियों 8:2)।

सच्चा आत्मिक ज्ञान नम्रता उत्पन्न करता है।

नी का सबसे गहरा उद्देश्य आत्मिक शरीर-रचना के विशेषज्ञ तैयार करना नहीं था। उनका उद्देश्य विश्वासियों को आत्मा के जीवन में ले जाना था।

और नी के लिए वह जीवन कभी केवल व्यक्तिगत बने रहने के लिए नहीं था। मनुष्य की आत्मा नया जन्म पाकर एक देह में सम्मिलित होती है। आत्मिकता अपना सामूहिक घर कलीसिया में पाती है।

आत्मिक विवेचन और मस्तिष्क

नी ने उस समय से पहले लिखा जब आधुनिक तन्त्रिका-विज्ञान और मनोविज्ञान ने मानवीय अनुभव को समझने के वे बहुत-से साधन विकसित किए जो आज उपलब्ध हैं। आधुनिक पाठकों को हर मानसिक या भावनात्मक घटना को उनकी आत्मा-प्राण श्रेणियों में ज़बरदस्ती नहीं ठूँसना चाहिए।

थकान ध्यान को बदल देती है। आघात ख़तरे की अनुभूति को प्रभावित करता है। अवसाद भावनाओं को सपाट कर सकता है। चिन्ता ऐसी शारीरिक संवेदनाएँ उत्पन्न कर सकती है जिन्हें आत्मिक चेतावनियाँ समझ लिया जाता है। तन्त्रिका-विविधता इस बात को आकार देती है कि लोग अपने परिवेश और सम्बन्धों को कैसे ग्रहण करते हैं।

इन वास्तविकताओं को पहचानना आत्मा का इनकार नहीं है। यह देहधारी प्राणियों की जटिलता का आदर करना है।

यीशु ने कहा, "तू ... अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना" (मरकुस 12:30)। मसीही मनुष्य-विषयक शिक्षा को सम्पूर्ण सृजे गए व्यक्ति के लिए स्थान बनाना चाहिए।

इसलिए पास्तरीय विवेचन में प्रार्थना, पवित्रशास्त्र, चिकित्सीय बुद्धि, मनोविज्ञान, समुदाय का ज्ञान और समय, सब सम्मिलित हो सकते हैं।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, कोई भीतरी संकेत नहीं

मनुष्य की आत्मा के विषय में विस्तृत शिक्षा अनजाने में पवित्र आत्मा को भीतरी छापों के एक स्रोत तक सीमित कर सकती है। नया नियम उसे एक ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है: वह सिखाता है, बोलता है, भेजता है, मना करता है, मध्यस्थता करता है, उसे शोकित किया जा सकता है, और वह मसीह की महिमा करता है।

"जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा" (यूहन्ना 16:13)।

आत्मिक संवेदनशीलता का लक्ष्य उसके साथ सम्बन्ध है, मार्गदर्शन की किसी तकनीक पर महारत नहीं।

सहभागिता के विषय में नी की सबसे अच्छी भाषा इसी दिशा में संकेत करती है।

पवित्रशास्त्र सम्पूर्ण व्यक्ति की भाषा बोलता है

बाइबिल अकसर शब्दों को सटीक रूप से बाँटने के बजाय उन्हें एक के ऊपर एक रखती जाती है। "हृदय," "प्राण," "मन," "आत्मा," "शक्ति," "भीतरी मनुष्य" और "शरीर" सन्दर्भ के अनुसार एक-दूसरे पर छा जाते हैं।

यह भाषाई समृद्धि व्याख्याकारों को नम्र बनानेवाली होनी चाहिए।

नक्शा इसलिए उपयोगी है क्योंकि वह भू-भाग को सरल बनाता है, पर नक्शे को ही भू-भाग समझ लेना त्रुटि उत्पन्न करता है। नी का त्रिभाजन एक नक्शा है।

भू-भाग तो परमेश्वर के सामने खड़ा जीवित मनुष्य है।

आत्मा, प्राण और देह: एक उपयोगी भेद जिसे नम्र बने रहना चाहिए

आत्मिक मनुष्य भीतरी जीवन का नक्शा बनाने का नी का सबसे महत्त्वाकांक्षी प्रयास था। उन्होंने मनुष्य की त्रिभागी समझ के पक्ष में ज़ोरदार तर्क दिया: देह, प्राण और आत्मा। देह का सम्बन्ध भौतिक संसार से है; प्राण में मन, भावना और इच्छा सम्मिलित हैं; मनुष्य की आत्मा

में विवेक, अन्तर्ज्ञान और परमेश्वर के साथ सहभागिता जैसे कार्य सम्मिलित हैं। इस प्रतिरूप में नया जन्म मनुष्य की आत्मा को परमेश्वर के प्रति जीवित करता है, और आत्मिक उन्नति का अर्थ है आत्मा के शासन का पूरे व्यक्ति में फैलते जाना।

नी ने विशेष रूप से 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 का सहारा लिया: "शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह ... पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।" उन्होंने इब्रानियों 4:12 पर भी ज़ोर दिया, जो वचन के विषय में कहता है कि वह "प्राण, आत्मा को ... अलग करके, आर-पार छेदता है।" ये पाठ एक भेद को सम्भव बनाते हैं, और नी से पहले भी बहुत-से मसीहियों ने त्रिभागी श्रेणियों का प्रयोग किया था।

कठिनाई तब आती है जब एक भेद कठोर शरीर-रचना बन जाता है। पवित्रशास्त्र अकसर "प्राण," "आत्मा," "हृदय," "मन," "भीतरी मनुष्य" और सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग एक-दूसरे पर छाते अर्थों में करता है। मरियम कहती है, "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई।" (लूका 1:46-47), जहाँ काव्यात्मक समानान्तरता प्राण और आत्मा को साथ-साथ रखती है। यीशु अपने प्राण के व्याकुल होने की बात कर सकता है, जबकि पौलुस अपनी आत्मा में परमेश्वर की सेवा करने की बात करता है। बाइबिल का प्रयोग इतना समृद्ध है कि वह किसी सरलीकृत तालिका में नहीं समाता।

इसलिए नी की श्रेणियाँ मानव-स्वभाव के किसी सम्पूर्ण वैज्ञानिक नक्शे के बजाय पास्तरीय भेदों के रूप में सबसे अधिक उपयोगी हैं। उनकी चिन्ता व्यावहारिक थी: विश्वासियों को स्वाभाविक पसन्द से उठनेवाली प्रेरणाओं और परमेश्वर की अगुआई के बीच का अन्तर सीखना चाहिए। भावना वास्तविक है, पर अचूक नहीं। तर्क मूल्यवान है, पर सर्वज्ञ नहीं। इच्छाशक्ति परमेश्वर की आज्ञा मान भी सकती है और उसका विरोध भी कर सकती है। आत्मिक परिपक्वता के लिए आवश्यक है कि पूरा व्यक्ति सत्य और पवित्र आत्मा के अधीन आए।

वह चिन्ता आज भी प्रासंगिक है, पर विवेचन को "आत्मा" नाम दी गई किसी भीतरी अनुभूति का पता लगाने तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। पवित्र आत्मा एक ईश्वरीय व्यक्ति है, कोई अन्तर्ज्ञान-मापक यन्त्र नहीं। उसी ने पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया, वह मसीह की महिमा करता है, पवित्र फल उत्पन्न करता है, पाप के विषय में निरुत्तर करता है, वरदान देता है और परमेश्वर के लोगों की अगुआई करता है। मार्गदर्शन के किसी भी दावे को

पवित्रशास्त्र, चरित्र, बुद्धि, परमेश्वर के प्रबन्ध और परिपक्व विश्वासियों के परामर्श की कसौटी पर परखा जाना चाहिए।

यूहन्ना आज्ञा देता है, "हे प्रियों, हर एक आत्मा पर विश्वास न करो: वरन् आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं" (1 यूहन्ना 4:1)। परखना स्वयं एक आत्मिक कार्य है।

मस्तिष्क के विषय में आधुनिक ज्ञान भी नम्रता को प्रोत्साहित करता है। नींद, आघात, हार्मोन, तन्त्रिका-सम्बन्धी दशाएँ, दवाइयाँ, तनाव और शारीरिक बीमारी विचार और भावना को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे कारकों को पहचानना आत्मिक वास्तविकता का इनकार नहीं है। मनुष्य देहधारी प्राणी हैं। 1 राजाओं 19 में एलिय्याह के टूट जाने का उत्तर सबसे पहले दोषपूर्ण आत्मिकता पर किसी भाषण से नहीं, बल्कि नींद, भोजन, उपस्थिति और फिर नये सिरे से दिए गए कार्यभार से दिया गया।

नी का ढाँचा तब हानिकारक बन सकता है जब सामान्य भावना को अपने आप "प्राणिक" और इसलिए सन्देहास्पद ठहरा दिया जाता है। भजन संहिता पवित्र भावनाओं से भरपूर है: शोक, क्रोध, आनन्द, भय, लालसा, कृतज्ञता और आशा। यीशु रोया। पौलुस ने वेदना और स्नेह के साथ लिखा। आत्मिकता के लिए भावनाओं को सपाट कर देना आवश्यक नहीं है।

न ही मन शत्रु है। पौलुस मन के नये हो जाने से रूपान्तरित होने का आह्वान करता है (रोमियों 12:2)। वह पवित्रशास्त्र से तर्क करता है। वह विश्वासियों से कहता है कि वे उन बातों पर ध्यान लगाएँ जो सत्य, आदरणीय, उचित, पवित्र, सुहावनी और मनभावनी हैं। आत्मा मन को दरकिनार नहीं करता; वह उसे नया करता है।

इसलिए नी की मनुष्य-विषयक शिक्षा का सबसे स्थायी भाग हर खाने की सटीकता नहीं, बल्कि भीतरी विवेचन की पुकार है। मसीहियों को यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि हर तीव्र भावना, चतुर विचार, करिश्माई छाप या दृढ़ अभिलाषा परमेश्वर की ओर से है। पूरे व्यक्ति को पवित्रीकरण की आवश्यकता है।

1 थिस्सलुनीकियों में पौलुस की प्रार्थना सबसे सुरक्षित निष्कर्ष देती है: "शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे।" कोई चाहे त्रिभागी धर्मवैज्ञानिक प्रतिरूप अपनाए या द्विभागी, लक्ष्य परमेश्वर के अधीन सम्पूर्णता है। मसीह किसी अलग किए जा सकनेवाले धार्मिक पुर्ज़े का उद्धार नहीं करता। वह पूरे व्यक्ति पर दावा करता है।

कलीसिया और मसीह की देह

दूसरा मन-फिराव

वॉचमैन नी कभी-कभी मसीह की देह की खोज के बारे में ऐसी भाषा में बात करते थे जो उनके पहले मन-फिराव के वर्णन जितनी ही प्रबल थी। मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानना अनिवार्य था, परन्तु वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बहुत से विश्वासी आधे रास्ते पर ही रुक जाते हैं। वे सिर को तो जानते हैं, पर देह को ठीक से नहीं पहचानते।

स्वयं पौलुस के मन-फिराव में ही एक सामूहिक झटका निहित है। जब शाऊल मसीहियों को सताता है, तो जी उठा यीशु पूछता है, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरितों के काम 9:4)। यीशु अपने दु:ख उठानेवाले लोगों के साथ स्वयं को एक कर लेता है।

नी ने इससे एक गहरा निष्कर्ष निकाला: देह को छूना, किसी अर्थ में, मसीह को छूना है। मसीही जीवन को "यीशु और मैं" तक सीमित नहीं किया जा सकता।

इस दृढ़ विश्वास ने उनके कलीसिया-विज्ञान को किसी भी संगठनात्मक पसन्द से कहीं अधिक आकार दिया। कलीसिया मूल रूप से धार्मिक व्यक्तियों का कोई स्वैच्छिक संघ नहीं है। वह मसीह से जुड़ा हुआ एक जीवित शरीर-तन्त्र है।

"तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो" (1 कुरिन्थियों 12:27)।

"अंग" शब्द में गरिमा और सीमा दोनों निहित हैं। हर विश्वासी इसका भाग है; कोई भी विश्वासी सम्पूर्ण नहीं है।

मसीह सिर

कुलुस्सियों की पत्री कहती है कि मसीह "वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है" (कुलुस्सियों 1:18)। नी ने मसीह के सिर होने की बात को व्यावहारिक रूप से लिया।

कलीसिया को मसीह का केवल प्रतीकात्मक आदर ही नहीं करना चाहिए, बल्कि उससे मार्गदर्शन भी प्राप्त करना चाहिए।

इससे कठिन प्रश्न उठते हैं। कोई मण्डली मसीह के मन को कैसे पहचाने? पवित्रशास्त्र, प्रार्थना, आत्मा द्वारा दिए गए वरदानों, बुद्धिमान अगुवाई, सामूहिक परख और परमेश्वर के विधान के द्वारा। कोई भी अकेला अगुवा अपनी व्यक्तिगत पसन्द को सीधे सिर की आज्ञा के बराबर नहीं ठहरा सकता।

नी के बाद के आन्दोलन में प्रेरितीय कार्यकर्ताओं के द्वारा, जिनमें स्वयं नी भी शामिल थे, एक प्रबल केन्द्रीकृत प्रभाव विकसित हुआ। इससे मसीह के सिर होने की उनकी शिक्षा और वरदान-प्राप्त मानवीय अगुवों द्वारा चलाए जानेवाले व्यावहारिक अधिकार के बीच एक तनाव उत्पन्न होता है।

यह तनाव केवल स्थानीय कलीसिया आन्दोलन तक सीमित नहीं है। हर करिश्माई संस्थापक को इसका सामना करना पड़ता है। अगुवे का वरदान जितना प्रबल होता है, समुदाय के लिए उस अगुवे की व्याख्या को मसीह का निर्देश समझ लेना उतना ही आसान हो जाता है।

नया नियम इसका उत्तर उत्तरदायित्व को बाँटकर देता है। प्राचीन अनेक होते हैं। भविष्यद्वाणी को परखा जाता है। शिक्षा को जाँचा जाता है। सदस्यों के पास वरदान होते हैं। अगुवे प्रेरितीय शिक्षा के प्रति उत्तरदायी होते हैं। मसीह ही एकमात्र परम सिर बना रहता है।

एक देह

"एक ही देह है" (इफिसियों 4:4)।

नी का सम्प्रदायगत पहचान को अस्वीकार करना इसी कथन को पूरी गम्भीरता से लेने से उपजा था। यदि परमेश्वर ने विश्वासियों को एक बनाया है, तो मसीहियों को यह अधिकार कहाँ से मिला कि वे अपना नाम लूथर, वेस्ली, बपतिस्मे की रीति, शासन-प्रणाली, राष्ट्रीयता या किसी विशेष मिशन के नाम पर रखें?

इस आलोचना में बल है। पौलुस ने कुरिन्थुस में दलबन्दी की भावना को डाँटा था: "क्या मसीह बँट गया?" (1 कुरिन्थियों 1:13)।

सम्प्रदाय ऐतिहासिक विभाजनों को संस्थागत रूप दे सकते हैं। वे विश्वासियों को "हमारी कलीसिया" और "उनकी कलीसिया" के रूप में सोचने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, मानो देह

स्वयं बँटी हुई हो।

फिर भी सम्प्रदाय धर्मवैज्ञानिक दृढ़ विश्वासों को सुरक्षित भी रख सकते हैं, मिशन को संगठित कर सकते हैं, जवाबदेही प्रदान कर सकते हैं, अगुवों को प्रशिक्षित कर सकते हैं, सम्पत्ति की रक्षा कर सकते हैं और भौगोलिक सीमाओं के पार सहयोग कर सकते हैं। किसी नाम का अर्थ अपने आप यह नहीं होता कि वह विश्वासी आत्मिक एकता का इनकार करता है।

इसलिए नी के सिद्धान्त को किसी सरलीकृत कसौटी के बजाय एक भविष्यद्वक्तात्मक प्रश्न के रूप में काम करना चाहिए: क्या हमारी संरचना मसीह की एकता और मिशन की सेवा करती है, या वह एक ऐसी पहचान बन गई है जो देह से ऊपर हो गई है?

स्थानीयता का आधार

नी का सबसे विशिष्ट कलीसिया-विज्ञान सम्बन्धी प्रस्ताव "स्थानीयता का आधार" था। नया नियम कुरिन्थुस, इफिसुस, यरूशलेम और अन्य नगरों की कलीसिया की बात करता है। नी ने निष्कर्ष निकाला कि भूगोल ही स्थानीय कलीसिया की वैध व्यावहारिक सीमा है।

एक नगर, एक कलीसिया।

कलीसिया बहुत से घरों में इकट्ठी हो सकती है, परन्तु आत्मिक और प्रशासनिक रूप से उसे एक ही स्थानीय गवाही को मान्यता देनी चाहिए। मसीहियों को गौण शिक्षाओं, अगुवों या मिशनों के इर्द-गिर्द अलग-अलग कलीसियाएँ नहीं बनानी चाहिए।

इस प्रतिरूप में एक आकर्षक सरलता है। यह एकता को ऐसी बात पर टिकाता है जिसे विश्वासी स्वयं नहीं चुनते: वे कहाँ रहते हैं। यह नये नियम के बहुत से अभिवादनों से भी मेल खाता है।

परन्तु पवित्रशास्त्र "एक नगर, एक प्रशासनिक कलीसिया" की सार्वभौमिक कलीसियाई व्यवस्था के रूप में स्पष्ट आज्ञा नहीं देता। बड़े नगरों में कई घरेलू सभाएँ हो सकती थीं। आधुनिक महानगरीय क्षेत्रों में लाखों लोग और ऐसे जटिल प्रशासनिक क्षेत्राधिकार हो सकते हैं जिन्हें प्राचीन संसार जानता ही नहीं था।

यह सिद्धान्त तब सबसे अधिक समस्यापूर्ण बन जाता है जब कोई एक नेटवर्क किसी नगर में स्वयं के "कलीसिया" होने का दावा करता है, जबकि सही शिक्षा रखनेवाली अन्य

मण्डलियों को अनुचित आधार पर खड़ा माना जाता है। जो बात गुटवाद के विरोध के रूप में आरम्भ हुई थी, वह एक नई अनन्यता बन सकती है।

इसका उदार प्रयोग यह है कि स्थानीयता को इस बात के स्मरण के रूप में देखा जाए कि हमारे निकट का हर विश्वासी उसी एक देह का है, चाहे सब एक ही प्रशासन के अधीन इकट्ठे होते हों या नहीं।

जिन्हें मसीह ग्रहण करता है, उन सबको ग्रहण करना

पौलुस लिखता है, "इसलिए, जैसा मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो" (रोमियों 15:7)।

यह मसीही संगति के महान सिद्धान्तों में से एक है। मसीह का ग्रहण करना ही मापदण्ड बन जाता है।

एक्सक्लूसिव ब्रदरन की संगति से नी के अलग होने ने उनके इस दृढ़ विश्वास को और पैना कर दिया कि मसीहियों को सच्चे विश्वासियों को केवल इस कारण अस्वीकार नहीं करना चाहिए कि उनका सम्बन्ध अन्य मसीही समूहों से है।

प्रभु की मेज़ को देह की एकता की गवाही देनी चाहिए।

साथ ही, जब मूलभूत शिक्षा या लगातार अनैतिक आचरण का प्रश्न हो, तब नया नियम संगति पर सीमाएँ लगाता है। ग्रहण करना अंधाधुंध समर्थन नहीं है।

चुनौती यह पहचानने की है कि स्वयं मसीह किस बात को अनिवार्य ठहराता है।

कलीसिया का इतिहास दिखाता है कि मसीही कितनी आसानी से गौण दृढ़ विश्वासों को संगति की कसौटी बना देते हैं। नी के अपने अनुयायी भी इससे अछूते नहीं रहे। कोई भी आन्दोलन अछूता नहीं है।

सबसे सुरक्षित रवैया वह है जो धर्मसिद्धान्त सम्बन्धी गम्भीरता को इस नम्रता के साथ जोड़ता है कि सीमाएँ पूरी तरह ठीक-ठीक खींचने की हमारी क्षमता सीमित है।

प्रभु-भोज और एक रोटी

"वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या मसीह की देह की सहभागिता नहीं? इसलिए, कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं" (1 कुरिन्थियों 10:16-17)।

नी ने प्रभु-भोज को असाधारण केन्द्रीय स्थान दिया। प्रभु की मेज़ मसीह की मृत्यु का स्मरण कराती है और कलीसिया की एकता को प्रकट करती है।

हर सप्ताह रोटी तोड़ने से विश्वासियों ने सीखा कि आराधना किसी प्रचारक के इर्द-गिर्द नहीं घूमती। स्वयं प्रभु ही केन्द्र है।

कोई कलीसिया धीरे-धीरे, अनजाने में, किसी वरदान-प्राप्त शिक्षक की श्रोता-मण्डली बन सकती है। नी स्वयं इतने वरदान-प्राप्त थे कि ठीक यही खतरा उत्पन्न कर सकते थे। प्रभु की मेज़ प्रचारक के महत्त्व को उसकी उचित सीमा में रखती है। हर कोई अनुग्रह पानेवाले के रूप में आता है।

रोटी वर्ग-भेद को भी डाँटती है। धनी और निर्धन, पढ़े-लिखे और अनपढ़, प्राचीन और नये विश्वासी, सब एक ही छुटकारे में सहभागी हैं।

1 कुरिन्थियों 11 में कुरिन्थुस के दुरुपयोगों पर पौलुस की डाँट दिखाती है कि सामाजिक तिरस्कार संस्कार के प्रतीकात्मक अर्थ का खण्डन कर देता है। निर्धन विश्वासियों को अपमानित करते हुए एक रोटी खाना देह को पहचानने में चूक जाना है।

स्थानीय चरवाहों के रूप में प्राचीन

नी ने प्राचीनों को प्रमुख स्थानीय अध्यक्षों के रूप में मान्यता दी। उन्होंने इस विचार को अस्वीकार किया कि किसी मण्डली में एक ही पास्टर एकमात्र सेवक के रूप में काम करे।

प्रेरितों के काम 14:23 बताता है कि पौलुस और बरनबास ने "हर एक कलीसिया में उनके लिये प्राचीन ठहराए।" प्रेरितों के काम 20 में इफिसुस के प्राचीनों को सामूहिक रूप से सम्बोधित किया गया है। पतरस "तुम में जो प्राचीन हैं" उन्हें सम्बोधित करता है (1 पतरस 5:1)।

अनेक प्राचीनों की व्यवस्था अधिकार और वरदानों को बाँट सकती है, यद्यपि केवल संख्या में अनेक होना स्वस्थता की गारंटी नहीं है। कोई समूह सामूहिक रूप से भी तानाशाह बन सकता है।

पद से अधिक महत्त्व बाइबल में दी गई चरित्र सम्बन्धी योग्यताओं का है। अध्यक्ष को निर्दोष, संयमी, सुशील, कोमल, न झगड़ालू, न धन का लोभी, सिखाने में निपुण और सम्मानित होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:1-7)।

नी के कलीसिया-विज्ञान ने नियुक्ति और आत्मिक परिपक्वता पर बल दिया। आधुनिक कलीसियाओं को इसमें जवाबदेही, कमज़ोरों की सुरक्षा के उपायों, आर्थिक पारदर्शिता, और अगुवों पर लगे आरोपों से निपटने की प्रक्रियाओं की सुदृढ़ व्यवस्था भी जोड़नी चाहिए।

पौलुस स्पष्ट रूप से प्राचीनों पर लगाए गए आरोपों का, और पाप में बने रहनेवाले अगुवों को सबके सामने डाँटने का प्रावधान करता है (1 तीमुथियुस 5:19-20)। अगुवाई अनुशासन से परे नहीं है।

प्रेरित और कार्यकर्ता

नी ने "प्रेरित" शब्द का प्रयोग उन परम्पराओं से अधिक व्यापक अर्थ में किया जो इस उपाधि को बारहों और पौलुस तक सीमित रखती हैं। वे प्रेरितों को ऐसे कार्यकर्ता मानते थे जिन्हें परमेश्वर प्रचार करने, कलीसियाएँ स्थापित करने और प्राचीन नियुक्त करने के लिए भेजता है।

व्यापक भाषाई अर्थ में, नया नियम बारहों के अतिरिक्त अन्य भेजे गए सन्देशवाहकों के लिए भी *अपोस्तोलोस* शब्द का प्रयोग करता है। परन्तु जो लोग जी उठे मसीह के गवाह होने के लिए नियुक्त किए गए थे, उनका नींव-रूपी प्रेरितीय अधिकार अद्वितीय बना रहता है।

नी की व्यावहारिक व्यवस्था ने कलीसिया-स्थापना और क्षेत्रीय समन्वय के विषय में घूम-घूमकर सेवा करनेवाले कार्यकर्ताओं को काफ़ी अधिकार दिया। इससे कार्यकुशलता और शिक्षा में एकरूपता तो आई, पर केन्द्रीकृत नियन्त्रण का जोखिम भी उत्पन्न हुआ।

बाद के वर्षों में, जब अधिकार के विषय में उनकी शिक्षा और कठोर होती गई, यह तनाव और तीव्र हो गया।

एक स्वस्थ आधुनिक प्रयोग किसी जवाबदेही-रहित पदानुक्रम को फिर से खड़ा किए बिना इस मिशनरी अन्तर्दृष्टि को बनाए रख सकता है: कलीसियाओं को स्थानीय सीमाओं से परे की सेवकाइयों, कलीसिया-स्थापकों, धर्मविज्ञानियों, मिशनरियों और नेटवर्कों की आवश्यकता है, परन्तु ऐसे कार्यकर्ताओं को स्थानीय मण्डलियों का स्वामी बनने के बजाय उनकी सेवा करनी चाहिए।

पौलुस अधिकार का प्रयोग कर सकता था, फिर भी कुरिन्थियों से कह सकता था, "यह नहीं, कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं" (2 कुरिन्थियों 1:24)।

काम और कलीसिया

नी ने "काम" और "कलीसिया" में भेद किया। कलीसिया स्थानीय है और उसमें किसी स्थान के सब विश्वासी शामिल हैं; काम प्रेरितों और उनके सहकर्मियों की व्यापक मिशनरी गतिविधि है।

इस भेद ने उन्हें किसी मिशन संगठन को कलीसिया के समान मान लेने से बचाया। मिशन कार्यकर्ताओं को भेज सकता है, परन्तु नये विश्वासियों को मिशन की स्थायी शाखाएँ बनने के बजाय स्थानीय मण्डलियों में परिपक्व होना चाहिए।

इस सिद्धान्त ने स्वदेशी कलीसिया-स्थापना सम्बन्धी आधुनिक चर्चाओं का पूर्वाभास दिया। स्थानीय अगुवों के परिपक्व होने के साथ-साथ मिशनरियों का लक्ष्य स्वयं को कम आवश्यक बनाना होना चाहिए।

पौलुस तीमुथियुस को लिखता है, "जो बातें तूने ... मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों" (2 तीमुथियुस 2:2)।

इसमें चार पीढ़ियाँ दिखाई देती हैं: पौलुस, तीमुथियुस, विश्वासयोग्य लोग, और अन्य लोग। स्वस्थ मिशन उत्तरदायित्व को कई गुना बढ़ाता है।

देह और आत्मिक वरदान

"क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही जैसा काम नहीं; वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं" (रोमियों 12:4-5)।

नी का वाक्यांश "एक दूसरे के अंग" आत्मनिर्भर आत्मिकता को चुनौती देता था। मेरा वरदान मेरी निजी पहचान के लिए नहीं है। वह देह का है।

शिक्षक को दया करनेवाले की आवश्यकता है। दूरदर्शी को प्रबन्धक की आवश्यकता है। निडर सुसमाचार प्रचारक को शान्त मध्यस्थ की आवश्यकता है। बुद्धिजीवी को व्यावहारिक बुद्धि रखनेवाले व्यक्ति की आवश्यकता है।

यह प्रसिद्ध व्यक्तियों को पूजनेवाली संस्कृति की जड़ काटता है। सार्वजनिक वरदान आवश्यक रूप से छिपे हुए वरदानों से अधिक मूल्यवान नहीं होते।

“देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं” (1 कुरिन्थियों 12:22)।

जो कलीसिया केवल मंच के वरदानों को पुरस्कृत करती है, वह देह को गलत पढ़ती है।

तालमेल और अधीनता

नी ने सिखाया कि सदस्यों को स्वतन्त्र रहने के बजाय आपसी तालमेल सीखना चाहिए। सिद्धान्त रूप में यह बाइबल के अनुसार है। “मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो” (इफिसियों 5:21)।

“एक दूसरे के” वाक्यांश महत्त्वपूर्ण है। मसीही अधीनता केवल ऊपर से नीचे की ओर नहीं चलती। यह ऐसे लोगों का समुदाय है जो मसीह के लिए अपनी स्वार्थी ज़िद छोड़ देते हैं।

इब्रानियों 13:17 भी विश्वासियों को उन अगुवों की मानने के लिए बुलाता है जो प्राणों के लिए जागते रहते हैं। परन्तु कलीसिया का सारा अधिकार पवित्रशास्त्र और प्रधान चरवाहे के अधीन है।

प्रतिनिधि अधिकार के विषय में नी के बाद के कठोर कथन खतरनाक हो सकते हैं यदि उन्हें पारस्परिकता, विवेक और सीमाओं से अलग कर दिया जाए। किसी विश्वासी को पाप के विषय में कभी किसी अगुवे की आज्ञा नहीं माननी चाहिए। कोई भी अगुवा ऐसी गोपनीयता की माँग नहीं कर सकता जो दुर्व्यवहार को ढक दे। आत्मिक आवरण का कोई भी दावा मसीह की प्रभुता का स्थान नहीं ले सकता।

पतरस का कथन अन्तिम सीमा तय करता है: “मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है” (प्रेरितों के काम 5:29)।

आत्मिक अधिकार

अधिकार के विषय में नी की शिक्षा आंशिक रूप से उनके व्यक्तिवाद-विरोध से उपजी थी। उनका विश्वास था कि उचित रूप से सौंपे गए अधिकार के विरुद्ध विद्रोह परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह को प्रकट कर सकता है। दाऊद का शाऊल को मारने से इनकार करना जैसे बाइबल के उदाहरणों ने इस विषय को प्रभावित किया।

इसमें बुद्धि है। आधुनिक व्यक्तिवाद हर व्यक्ति को स्वयं अपने लिए अन्तिम अधिकारी बना सकता है। मसीहियों को सीखने की तत्परता और उन पदों के प्रति आदर की आवश्यकता है जिनका परमेश्वर उपयोग करता है।

परन्तु बाइबल अंधी आज्ञाकारिता की आज्ञा नहीं देती। दाऊद शाऊल से भागा, उसने अन्याय का अप्रत्यक्ष रूप से सामना किया, और स्वयं को मार डाले जाने के लिए नहीं सौंपा। नातान ने दाऊद को डाँटा। पौलुस ने सबके सामने पतरस को डाँटा। भविष्यद्वक्ताओं ने राजाओं का सामना किया। कलीसियाओं ने शिक्षा को परखा।

यीशु का आदर्श निर्णायक है: "जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने" (मरकुस 10:43)।

मसीही अधिकार सेवा, सत्य, नम्रता, जवाबदेही और दूसरों के लिए दुःख उठाने की तत्परता से पहचाना जाता है।

जो अगुवा व्यक्तिगत नियन्त्रण पाने के लिए "प्रतिनिधि अधिकार" की दुहाई देता है, वह क्रूस का खण्डन कर चुका है।

नई मानवता के रूप में कलीसिया

इफिसियों की पत्री कहती है कि मसीह ने यहूदी और अन्यजाति, "दोनों से अपने में एक नई जाति उत्पन्न करके" मेल करा दिया (इफिसियों 2:15)।

इसलिए नी का कलीसिया-दर्शन सभा की संरचना से कहीं बड़ा था। कलीसिया मसीह में परमेश्वर की नई मानवता है।

इसके सामाजिक निहितार्थ हैं। एक देह में बपतिस्मा राष्ट्रवाद, नस्लवाद, वर्गीय पदानुक्रम और कबीलाई पहचान को गौण बना देता है।

साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद, आक्रमण और क्रान्ति के युग में एक चीनी मसीही के लिए यह कोई अमूर्त बात नहीं थी। विदेशी प्रभुत्व ने मसीहियत की स्वीकृति को जटिल बना दिया था। नी चाहते थे कि कलीसिया सच्चे अर्थों में स्वदेशी बने, परन्तु मसीहियत केवल चीनी राष्ट्रीय पहचान तक सीमित न हो जाए।

देह राष्ट्रों की सीमाओं से परे है, क्योंकि मसीह सबका प्रभु है।

कलीसिया और मिशन

नी का कलीसिया-विज्ञान गहराई से मिशनरी था। देह का अस्तित्व मसीह को प्रकट करने और सुसमाचार को आगे ले जाने के लिए है।

1940 के दशक के अन्त में सुसमाचार से अछूते क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं और विश्वासियों को फैलाने की महत्त्वाकांक्षी योजनाएँ बनीं। आन्दोलन से जुड़े कुछ लोगों ने सुसमाचार के लिए "प्रवास" के विभिन्न रूप अपनाए—परिवारों और आजीविकाओं को दूसरे स्थानों पर ले जाना, ताकि नई कलीसियाएँ स्थापित की जा सकें।

इसमें प्रेरितों के काम को गम्भीरता से लिया गया। आरम्भिक कलीसिया के लोग तितर-बितर हुए और "सुसमाचार सुनाते हुए फिरे" (प्रेरितों के काम 8:4)।

मिशन केवल पेशेवर मिशनरियों का काम नहीं है। व्यवसायी, परिवार, विद्यार्थी और कामगार अपने साधारण आवागमन के द्वारा सुसमाचार को आगे ले जाते हैं।

इस रणनीति को रूमानी बनाकर नहीं देखना चाहिए; स्थानान्तरण जीवनसाथियों और बच्चों पर भारी बोझ डाल सकता है, और अगुवाई का प्रबल दबाव स्वैच्छिक त्याग की रेखा को धुँधला कर सकता है। मसीही मिशन को विवेक और पारिवारिक उत्तरदायित्व का आदर करना चाहिए।

फिर भी यह दर्शन चुनौती देता है: क्या हो यदि साधारण विश्वासी यह चुनें कि कहाँ रहना है, केवल आर्थिक अवसर के आधार पर नहीं, बल्कि कुछ हद तक सुसमाचार की आवश्यकता के आधार पर?

सौंप देना और समर्पण

1940 के दशक के अन्त में आन्दोलन ने आर्थिक समर्पण और सम्पत्ति को "सौंप देने" पर भी बल दिया। इसका उद्देश्य सुसमाचार-प्रचार के लिए संसाधन जुटाना और भौतिकवाद की पकड़ को तोड़ना था।

प्रेरितों के काम में लिखा है कि विश्वासियों ने आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए सम्पत्ति बेची (प्रेरितों के काम 4:34-35)। यीशु बार-बार धन के विषय में चेतावनी देता है। पौलुस उदारता से देने की शिक्षा देता है।

फिर भी प्रेरितों के काम 5:4 स्पष्ट करता है कि दिए जाने से पहले सम्पत्ति स्वेच्छा से स्वामी के ही नियन्त्रण में रहती थी। मसीही उदारता कलीसिया के अगुवों द्वारा की गई ज़ब्ती नहीं है।

समर्पण की कोई भी प्रबल शिक्षा स्वैच्छिक विवेक को सुरक्षित रखे। पौलुस कहता है कि दान इस रीति से दिया जाए: "न कुढ़-कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है" (2 कुरिन्थियों 9:7)।

जब आत्मिक प्रतिष्ठा को नाटकीय आर्थिक त्याग से जोड़ दिया जाता है, तब आन्दोलन लोगों से हेरफेर करनेवाले बन सकते हैं। पारदर्शिता अनिवार्य है।

समर्पण के लिए नी की पुकार आज भी मन को जाँचती है, परन्तु आधुनिक प्रयोग में ज़बरदस्ती के विरुद्ध स्पष्ट सुरक्षा-उपाय शामिल होने चाहिए।

कलीसिया और राज्य

नी ने कलीसिया और राज्य के पहलुओं में भेद किया, और साथ ही यह अपेक्षा रखी कि कलीसिया की गवाही परमेश्वर के अन्त-समय के उद्देश्य में सहभागी होगी। उनके युगान्त-विज्ञान में "जय पानेवालों" का विषय भी शामिल था—ऐसे विश्वासयोग्य विश्वासी जो मसीह को पूर्ण प्रत्युत्तर देते हैं और प्रतिफल पाते हैं।

प्रकाशितवाक्य बार-बार कहता है, "जो जय पाए..." और उसके साथ प्रतिज्ञाएँ जोड़ता है (प्रकाशितवाक्य 2-3)। नी ने इन खण्डों का प्रयोग विश्वासियों को नाममात्र की मसीहियत से आगे बुलाने के लिए किया।

जय पाने की पुकार तब मूल्यवान है जब वह विश्वासयोग्यता की प्रेरणा देती है। वह तब खतरनाक बन जाती है जब वह एक ऐसा आत्मिक विशिष्ट वर्ग बना देती है जो साधारण विश्वासियों को दूसरे दर्जे का मानता है।

नया नियम सब मसीहियों को अनुग्रह पर आधारित करता है, और साथ ही प्रतिफल और विश्वासयोग्यता को गम्भीरता से लेता है। "हर एक का काम प्रगट हो जाएगा" (1 कुरिन्थियों 3:13), फिर भी उद्धार मसीह पर टिका है।

दबाव में कलीसिया

1949 तक नी से जुड़ी सभाएँ नाटकीय रूप से बढ़ चुकी थीं। अनुमान अलग-अलग हैं, परन्तु स्रोत प्रायः सैकड़ों मण्डलियों और दसियों हज़ार विश्वासियों का वर्णन करते हैं; क्रिश्चियन हिस्ट्री के अनुसार 1950 तक लगभग 700 सभाएँ और 70,000 सदस्य थे।

यह वृद्धि युद्ध, विस्थापन और राजनीतिक उथल-पुथल के बीच हुई। आन्दोलन का विकेन्द्रीकृत स्वरूप टिकाऊ सिद्ध हुआ था।

अब चीन का जनवादी गणराज्य एक ऐसी चुनौती प्रस्तुत करनेवाला था जो पिछले किसी भी विरोध से भिन्न थी। नया राज्य व्यापक सामाजिक परिवर्तन और धार्मिक संस्थाओं पर बढ़ते वैचारिक नियन्त्रण का प्रयास कर रहा था।

नी का कलीसिया-धर्मविज्ञान अब सम्मेलनों की शिक्षा से निकलकर अस्तित्व की परीक्षा बनने जा रहा था।

क्या कलीसिया तब भी एक देह बनी रह सकती थी जब अगुवों पर एक दूसरे की निन्दा करने का दबाव डाला जाए? क्या विश्वासी मसीह के सिर होने को त्यागे बिना शासकीय अधिकारियों का आदर कर सकते थे? क्या स्थानीय कलीसियाएँ दिखाई देनेवाली संरचनाओं के बिना बची रह सकती थीं? क्या आत्मिक अधिकार का शिक्षक सरकार के अधीन रहने और उस आज्ञाकारिता में भेद कर सकता था जो केवल परमेश्वर की है?

वे प्रश्न भविष्य के थे। गिरफ़्तारी और जेल से पहले एक और प्रमुख विषय आया: विश्वास, प्रार्थना और परमेश्वर पर पूरी निर्भरता।

एकता और सत्य

मसीह की देह को उस सत्य की अनदेखी करके एक नहीं किया जा सकता जो उसे अस्तित्व में लाता है। यीशु प्रार्थना करता है "कि वे सब एक हों" और यह भी कि "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर" (यूहन्ना 17:21, 17)।

इसलिए मसीही एकता न तो संगठनात्मक एकरूपता है और न ही सबसे कम साझा बातों पर टिका धर्म।

विभाजन के विरुद्ध नी के उत्साह के साथ धैर्यपूर्ण धर्मवैज्ञानिक परिश्रम भी जुड़ा होना चाहिए। मसीही गम्भीर रूप से असहमत होते हुए भी एक दूसरे को भाई-बहन मान सकते हैं।

कुछ मतभेदों के कारण व्यावहारिक ईमानदारी के लिए अलग-अलग मण्डलीय संरचनाएँ आवश्यक हो सकती हैं, बिना आपसी तिरस्कार के।

त्रासदी हर संस्थागत भेद में नहीं है। त्रासदी है घृणा, प्रतिद्वन्द्विता, घमण्ड, और दूसरे विश्वासियों में मसीह को पहचानने से इनकार।

देह वरदान-प्राप्त लोगों को सुधारती है

एक सच्ची देह वरदान-प्राप्त अगुवों की स्वयं उन्हीं से रक्षा करती है। आँख को हाथ की आवश्यकता है। शिक्षक को पास्टर की आवश्यकता है। दूरदर्शी को ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो परिणामों पर ध्यान दे।

"बिना सम्मति की कल्पनाएँ निष्फल होती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से सफलता मिलती है" (नीतिवचन 15:22)।

इसके प्रशासनिक निहितार्थ हैं। बोर्डों और प्राचीनों का अस्तित्व केवल किसी संस्थापक के निर्णयों पर मुहर लगाने के लिए नहीं होना चाहिए। एक स्वस्थ अगुवाई-दल को असहमत होने की स्वतन्त्रता होती है।

नी का अपना प्रबल प्रभाव इस पाठ को उनकी विरासत के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक बना देता है।

कलीसियाई अनुशासन और पुनःस्थापना

नी का आन्दोलन अनुशासन को गम्भीरता से लेता था, कभी-कभी बहुत अधिक गम्भीरता से। नया नियम सचमुच कलीसियाओं से अपेक्षा करता है कि वे लगातार बने रहनेवाले पाप का समाधान करें।

परन्तु अनुशासन का लक्ष्य पुनःस्थापना, सुरक्षा और सत्य है—अपमान नहीं।

पौलुस गलातियों से कहता है कि गिरे हुए व्यक्ति को "नम्रता के साथ" सम्भालें (गलातियों 6:1)। 1 कुरिन्थियों 5 में आवश्यक बहिष्कार के बाद भी 2 कुरिन्थियों में यह चिन्ता दिखाई देती है कि पश्चाताप करनेवाला व्यक्ति अत्यधिक शोक में डूब न जाए।

कलीसियाई अधिकार को साहस और दया दोनों को जानना चाहिए।

मसीह की देह, स्थानीयता, और संस्थागत निश्चितता की सीमाएँ

नी के कलीसिया-विज्ञान के पीछे एक भव्य दृढ़ विश्वास था: मसीह केवल अलग-थलग व्यक्तियों का उद्धार नहीं करता। वह एक देह बनाता है। इस दृढ़ विश्वास ने उनकी आत्मिकता को पूरी तरह निजी बन जाने से बचाया। मसीह के साथ विश्वासी का एकत्व हर दूसरे विश्वासी के साथ एक तदनुरूप सम्बन्ध उत्पन्न करता है।

पौलुस लिखता है, "वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं" (रोमियों 12:5)। अन्तिम वाक्यांश बहुत कुछ माँगता है। मसीही केवल एक ही संगठन के सदस्य नहीं हैं; वे एक दूसरे के हैं।

नी का विश्वास था कि नया नियम सामान्यत: कलीसियाओं की पहचान स्थान से करता है: कुरिन्थुस की कलीसिया, गलातिया की कलीसियाएँ, थिस्सलुनीकियों की कलीसिया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि स्थानीय कलीसिया का उचित आधार कोई सम्प्रदाय, कोई विशेष शिक्षा, कोई मिशनरी संस्था या कोई प्रिय अगुवा नहीं, बल्कि नगर है। उनका उद्देश्य यह था कि संगति की व्यावहारिक सीमा उस सीमा से संकरी न हो जिसे मसीह ने स्थापित किया है।

इस अन्तर्दृष्टि में वास्तविक बल है। यदि परमेश्वर किसी विश्वासी को मसीह के कारण ग्रहण करता है, तो मसीहियों को सदस्यता की गौण कसौटियाँ बनाने में धीमे होना चाहिए। पौलुस कहता है, "इसलिए, जैसा मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो" (रोमियों 15:7)। संगति परमेश्वर के ग्रहण करने से आरम्भ होती है।

परन्तु बाइबल के किसी अवलोकन से एक अनन्य संस्थागत नियम तक पहुँचना अधिक कठिन है। नये नियम में स्थानीय कलीसियाएँ, घरों में होनेवाली सभाएँ, प्रेरितीय कार्यकर्ताओं के नेटवर्क, और नगरों व क्षेत्रों के पार फैले सम्बन्ध पाए जाते हैं। वह कोई आधुनिक संविधान नहीं देता जो ठीक-ठीक बताए कि किसी महानगर में अनेक मण्डलियों का आपस में क्या सम्बन्ध होना चाहिए। इसलिए विश्वासयोग्य मसीहियों ने उन्हीं वचनों का आदर करने का प्रयास करते हुए अलग-अलग कलीसियाई व्यवस्थाएँ विकसित की हैं।

अत: नी के एक-नगर-एक-कलीसिया सिद्धान्त को कलीसिया-विज्ञान सम्बन्धी एक प्रस्ताव माना जाना चाहिए, न कि पुनरुत्थान के स्तर का कोई धर्मसिद्धान्त। इसका सबसे अच्छा उद्देश्य भविष्यद्वक्तात्मक है: यह उजागर करता है कि मसीही कितनी आसानी से

पसन्दों और व्यक्तित्वों के इर्द-गिर्द बँट जाते हैं। इसका खतरा तब प्रकट होता है जब कोई समूह अपनी प्रशासनिक अभिव्यक्ति को किसी नगर की कलीसिया के साथ इतना पूर्ण रूप से एक मान लेता है कि दूसरे विश्वासी व्यवहार में दूसरे दर्जे के बन जाते हैं।

देह स्वयं ऐसी निश्चितता को सुधारती है। पौलुस कहता है कि आँख हाथ से नहीं कह सकती, "मुझे तेरा प्रयोजन नहीं" (1 कुरिन्थियों 12:21)। जो मण्डली एकता के विषय में कुछ देखती है, उसे दया, सुसमाचार-प्रचार, धर्मवैज्ञानिक विद्वत्ता, न्याय, अन्तर-सांस्कृतिक मिशन या पास्टरीय देखभाल में किसी दूसरी मण्डली की सामर्थ्य की आवश्यकता हो सकती है। कोई भी स्थानीय अभिव्यक्ति मसीह को पूरी तरह समेट नहीं सकती।

नी ने अनेक अगुवों की अगुवाई और साधारण सदस्यों की सक्रिय सहभागिता पर भी बल दिया। ये चिन्ताएँ आज भी मूल्यवान हैं। इफिसियों की पत्री कहती है कि मसीह ने वरदान-प्राप्त लोगों को दिया, "जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए" (इफिसियों 4:12)। अगुवे पवित्र लोगों को तैयार करते हैं; वे सेवकाई पर एकाधिकार नहीं जमाते।

यह दर्शक बनी मसीहियत के लिए एक सशक्त सुधार है। कलीसिया किसी पेशेवर धार्मिक प्रस्तुतकर्ता के चारों ओर इकट्ठी हुई श्रोता-मण्डली नहीं है। हर विश्वासी एक अंग है जिसके पास देने के लिए अनुग्रह है। शान्त मध्यस्थ, अतिथि-सत्कार करनेवाला परिवार, व्यवसायी, शिक्षक, युवा सुसमाचार प्रचारक, बुज़ुर्ग पवित्र जन, संगीतकार, प्रबन्धक, और दया का वरदान रखनेवाला व्यक्ति, सब देह के स्वास्थ्य में योगदान देते हैं।

फिर भी सक्रियता को प्रेम के द्वारा व्यवस्थित रहना चाहिए। पहली कुरिन्थियों का अध्याय 12 सीधे अध्याय 13 की ओर ले जाता है। प्रेम के बिना वरदान शोर बन जाते हैं। प्रेम के बिना कलीसिया-विज्ञान जीवन-रहित वास्तुकला बन जाता है।

देह के विषय में नी की शिक्षा अपने सबसे समृद्ध बिन्दु पर तब पहुँचती है जब वह नम्रता उत्पन्न करती है। मुझे अपने भाई या बहन में मसीह की आवश्यकता है, क्योंकि परमेश्वर ने हर वरदान मुझ में न रखने का चुनाव किया है। देह पर निर्भरता आत्मिक व्यक्तिवाद और आत्मिक प्रसिद्धि, दोनों पर एक साथ प्रहार करती है। वरदान-प्राप्त शिक्षक को सुधार की आवश्यकता है। दूरदर्शी को प्रबन्धकों की आवश्यकता है। साहसी सुधारक को धीरजवन्त चरवाहों की आवश्यकता है। मननशील व्यक्ति को सुसमाचार प्रचारकों की आवश्यकता है। सम्पन्न कलीसिया को दुःख उठानेवाली कलीसियाओं की आवाज़ों की आवश्यकता है।

मसीह ही सिर बना रहता है, और इससे हर संस्था पर एक सीमा लग जाती है। कोई भी सम्प्रदाय, नेटवर्क, स्थानीय सभा, प्राचीनों की समिति, प्रेरित, पास्टर या शिक्षक मसीह के स्थान पर कलीसिया का विवेक नहीं बनता। मानवीय संरचनाएँ देह की सेवा करती हैं; वे उसकी स्वामी नहीं हैं।

इसलिए नी जो स्थायी प्रश्न छोड़ जाते हैं, वह केवल यह नहीं है, "क्या हम उसके नमूने के अनुसार संगठित हैं?" वह यह है, "क्या हमारा कलीसियाई जीवन सचमुच एक सिर और एक देह को स्वीकार करता है?" यदि मसीह सिर है, तो अगुवे सेवक होंगे। यदि विश्वासी एक देह हैं, तो प्रतिस्पर्धा अपनी शक्ति का कुछ भाग खो देगी। यदि वरदान बाँटे गए हैं, तो साधारण पवित्र जन तैयार किए जाएँगे। यदि क्रूस शासन करता है, तो एकता के लिए यह दिखावा करना आवश्यक नहीं होगा कि मतभेद हैं ही नहीं।

कोई कलीसिया नी के बाहरी नमूने की नकल करके भी इन वास्तविकताओं से चूक सकती है। कोई दूसरी कलीसिया भिन्न संरचना अपनाकर भी उस बहुत कुछ को साकार कर सकती है जिसे वे पुनः प्राप्त करना चाहते थे। सच्चा मापदण्ड यह है कि क्या मसीह को सिर के रूप में आदर मिलता है और क्या उसके लोग सत्य और प्रेम में एक साथ बनाए जाते हैं।

विश्वास, प्रार्थना और निर्भरता का जीवन

विश्वास का सिद्धान्त

वॉचमैन नी की सेवकाई किसी बड़े सम्प्रदाय या विदेशी मिशन बोर्ड की सुरक्षा से बाहर विकसित हुई। यह स्वतंत्रता धर्मवैज्ञानिक भी थी, कलीसियाई भी और आर्थिक भी। उन्हें यह दृढ़ विश्वास हो गया कि मसीही कार्यकर्ताओं को सीधे परमेश्वर पर निर्भर रहना सीखना चाहिए—एक ऐसा अभ्यास जिसे प्रायः "विश्वास का सिद्धान्त" कहा जाता है।

यह विचार नी ने नहीं गढ़ा था। जॉर्ज मूलर, हडसन टेलर, एंथनी नॉरिस ग्रोव्स और अन्य लोगों ने मिशनरी सेवा के ऐसे रूपों का आदर्श प्रस्तुत किया था जिनमें कार्यकर्ता निश्चित वेतन माँगने के बजाय अपनी आवश्यकताओं के लिये परमेश्वर की ओर ताकते थे। मार्गरेट बार्बर का जीवन भी शान्त आर्थिक निर्भरता का साकार उदाहरण था।

नी के लिये यह सिद्धान्त कोई भावुक, आदर्शीकृत दरिद्रता नहीं था। यह परमेश्वर के चरित्र को जानने का प्रशिक्षण था।

यीशु ने सिखाया, "पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी" (मत्ती 6:33)। यह प्रतिज्ञा एक ऐसे खण्ड में आती है जो भोजन, वस्त्र, चिन्ता और मनुष्य की आवश्यकताओं के विषय में पिता के ज्ञान की बात करता है।

विश्वास एक व्यावहारिक प्रश्न पूछता है: जब आज्ञाकारिता के साथ कोई दिखाई देनेवाली गारंटी नहीं आती, तब क्या परमेश्वर भरोसे के योग्य है?

विश्वास कोई आर्थिक तकनीक नहीं है

जब भी प्रावधान के किसी एक ढंग को "विश्वास" का नाम दिया जाता है और बाकी सब ढंगों को आत्मिक रूप से घटिया माना जाता है, तब एक खतरा उत्पन्न होता है। पौलुस ने आर्थिक भेंटें स्वीकार कीं। उसने अपने हाथों से काम भी किया। कलीसियाओं को निर्देश दिया गया

था कि वे परिश्रम करनेवालों का पालन-पोषण करें। नीतिवचन योजना बनाने की सराहना करता है।

इसलिए विश्वास की परिभाषा यह नहीं हो सकती कि वेतन लेने से इनकार किया जाए, आवश्यकताओं का कभी उल्लेख न किया जाए, या बजट से बचा जाए। वेतन पानेवाला पास्टर विश्वास से जी सकता है; बिना वेतन का कार्यकर्ता चिन्ता में जी सकता है।

विश्वास का सम्बन्ध इस बात से है कि भरोसा किस पर रखा गया है।

पौलुस कह सकता था, "मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा" (फिलिप्पियों 4:19)। यह प्रतिज्ञा उदार दान और जवाबदेह साझेदारी के एक सम्बन्ध के भीतर दी गई थी।

नी का विश्वास का सिद्धान्त सबसे अधिक उपयोगी तब होता है जब वह यह पूछता है कि क्या पैसा हमारी आज्ञाकारिता को नियंत्रित करता है। क्या हम परमेश्वर की बुलाहट को इसलिए ठुकरा देंगे कि आर्थिक मार्ग अभी स्पष्ट नहीं है? क्या हम किसी दानदाता को बनाए रखने के लिये सत्य से समझौता करेंगे? क्या हम लोगों से चालबाज़ी करेंगे क्योंकि हमें भरोसा नहीं कि परमेश्वर ईमानदारी से उपलब्ध कराएगा?

सच्चा विश्वास चालबाज़ी से इनकार करता है।

सहभागिता के रूप में प्रार्थना

नी प्रार्थना को निजी सांत्वना से कहीं बढ़कर मानते थे। प्रार्थना परमेश्वर के उद्देश्य में सहभागी होती है।

यीशु अपने चेलों को यह प्रार्थना करना सिखाता है, "तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10)। यह प्रार्थना मान कर चलती है कि परमेश्वर की सिद्ध स्वर्गीय इच्छा और पृथ्वी की वर्तमान दशा के बीच एक अन्तर है, और माँगती है कि दूसरी उत्तरोत्तर पहली के अनुरूप होती जाए।

नी कभी-कभी इसे इस प्रकार व्यक्त करते थे कि परमेश्वर चाहता है कि पृथ्वी पर उसके लोग स्वर्ग में उसकी इच्छा के साथ सहमत हों। धर्मवैज्ञानिक परम्पराओं में इस बात पर मतभेद है कि इसे कितने ज़ोर से कहा जाए। परमेश्वर की सम्प्रभुता मनुष्य की अनुमति पर निर्भर नहीं है। फिर भी पवित्रशास्त्र बार-बार प्रार्थना को एक वास्तविक साधन के रूप में दिखाता है जिसे परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिये ठहराया है।

याकूब कहता है, "तुम्हें इसलिए नहीं मिलता, कि माँगते नहीं" (याकूब 4:2)। यहेजकेल परमेश्वर को एक मध्यस्थ ढूँढ़ते हुए दिखाता है। पौलुस बार-बार कलीसियाओं से अपनी सेवकाई के लिये प्रार्थना करने को कहता है। स्वयं यीशु पूरी रात प्रार्थना करता है।

इसलिए प्रार्थना न तो किसी अनजान परमेश्वर को सूचना देना है और न किसी अनिच्छुक परमेश्वर पर विजय पाना। यह उस परमेश्वर के साथ संगति और सहयोग है जो अपने लोगों के द्वारा काम करना चुनता है।

प्रार्थना का बोझ

नी प्राय: "बोझ" की भाषा का प्रयोग करते थे—एक भीतरी भार या चिन्ता जो विश्वासी को लगातार प्रार्थना की ओर ले जाती है। बहुत से मसीही इस अनुभव को जानते हैं: कोई व्यक्ति, कलीसिया, राष्ट्र या समस्या असामान्य गम्भीरता के साथ बार-बार मन में लौट आती है।

पौलुस इस्राएल के विषय में अपने मन की दशा लिखता है: "मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है" (रोमियों 9:2)। वह गलातियों से कहता है, "हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा के समान पीड़ाएँ सहता हूँ" (गलातियों 4:19)।

मध्यस्थता की भावनात्मक कीमत चुकानी पड़ सकती है।

परन्तु भीतरी बोझ को परखा जाना चाहिए। चिन्ता आत्मिक बोझ का भेस धर सकती है। सनक मध्यस्थता का भेस धर सकती है। कसौटी यह है कि क्या प्रार्थना हमें विवशता के बजाय परमेश्वर, प्रेम, सत्य और शान्ति की ओर ले जाती है।

"अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है" (1 पतरस 5:7)। सच्ची मध्यस्थता प्रार्थना जारी रखते हुए भी अन्ततः बोझ को परमेश्वर के हाथ में सौंप देती है।

प्रार्थना में जागते रहना

पौलुस विश्वासियों को आज्ञा देता है, "प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत रहो" (कुलुस्सियों 4:2)।

नी की प्रार्थना सम्बन्धी शिक्षा में जागरूकता पर ज़ोर था। प्रार्थना सजग होती है। विश्वासी परिवर्तनों, उत्तरों, विरोध, आवश्यकताओं और आत्मा की प्रेरणाओं पर ध्यान देता है।

जागरूकता प्रार्थना को यांत्रिक बनने से बचाती है। हम केवल एक सूची नहीं दोहराते; हम सुनते हैं, स्मरण करते हैं और प्रत्युत्तर देते हैं।

गतसमनी में यीशु ने अपने चेलों से कहा, "जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो" (मत्ती 26:41)। प्रार्थना नैतिक सतर्कता को पैना करती है।

नेतृत्व में, जागरूक प्रार्थना उन बातों को उजागर कर सकती है जिन्हें आँकड़े अनदेखा कर देते हैं। किसी कलीसिया का डैशबोर्ड स्वस्थ दिख सकता है जबकि सम्बन्ध सड़ रहे हों। कोई सेवकाई बढ़ सकती है जबकि अगुवे का प्राण सिकुड़ता जा रहा हो। प्रार्थना उन प्रश्नों के लिये स्थान देती है जिन्हें उत्पादकता दबा देती है।

यीशु के नाम में माँगना

यीशु बार-बार अपने नाम में की गई प्रार्थना के उत्तर की प्रतिज्ञा करता है। "यदि तुम मुझसे मेरे नाम से कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा" (यूहन्ना 14:14)।

नी "यीशु के नाम में" को निवेदनों के अन्त में जोड़ा जानेवाला कोई शाब्दिक सूत्र नहीं मानते थे। किसी व्यक्ति के नाम में माँगने का अर्थ है उस व्यक्ति के चरित्र और अधिकार के अनुरूप माँगना।

यूहन्ना इसकी सीमा-रेखा बताता है: "यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो हमारी सुनता है" (1 यूहन्ना 5:14)।

इसलिए यीशु के नाम में प्रार्थना अपनी इच्छा को यीशु की प्रभुता के अधीन कर देती है।

यह विश्वास को ढिठाई से बचाता है। विश्वास परमेश्वर को हमारा मनचाहा परिणाम पूरा करने के लिये बाध्य नहीं करता। स्वयं यीशु ने प्रार्थना की, "यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो" (लूका 22:42)।

विश्वास की सबसे बड़ी प्रार्थना में ऐसे उत्तर के प्रति समर्पण भी सम्मिलित हो सकता है जिसे हम नहीं चाहते थे।

विलम्बित उत्तर

नी के जीवन में बहुत से विलम्ब थे: विवाह में देरी, बीमारी, सेवकाई में संघर्ष, अनिश्चित प्रावधान, राजनीतिक प्रतिबन्ध। प्रार्थना से तुरन्त समाधान नहीं मिला।

लगातार विनती करनेवाली विधवा का यीशु का दृष्टान्त इसलिए दिया गया था "कि नित्य प्रार्थना करना और साहस नहीं छोड़ना चाहिए" (लूका 18:1)।

विलम्ब यह परखता है कि हम परमेश्वर के विषय में क्या विश्वास करते हैं। जब उत्तर तुरन्त मिलता है, तब धन्यवादी होना सहज है। जब वर्ष बीत जाते हैं, तब प्रार्थना एक ऐसा स्थान बन सकती है जहाँ हमारे उद्देश्य शुद्ध किए जाते हैं।

क्या हम परमेश्वर को खोज रहे हैं या केवल किसी परिणाम को? क्या हम दिखाई देनेवाली पुष्टि के बिना भी आज्ञाकारिता में बने रह सकते हैं?

पौलुस ने अपने काँटे के दूर होने के लिये तीन बार प्रार्थना की और उसे काँटे का हटना नहीं, बल्कि एक प्रतिज्ञा मिली: "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है" (2 कुरिन्थियों 12:9)।

एक अनुत्तरित निवेदन किसी गहरे स्तर पर एक उत्तर पाई हुई आवश्यकता बन सकता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि मसीहियों को विलम्ब का महिमामण्डन करना चाहिए या साहस के साथ माँगना बन्द कर देना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि जब पिता का उत्तर कोई और रूप ले लेता है, तब भी विश्वास उस पर भरोसा रखता है।

चंगाई और बीमारी

नी के गम्भीर क्षयरोग ने चंगाई को एक सैद्धान्तिक विषय से कहीं अधिक बना दिया। उनके जीवन के वृत्तान्त गहरी दुर्बलता के दौरों और उल्लेखनीय स्वास्थ्य-लाभ का वर्णन करते हैं। उनके धर्मवैज्ञानिक प्रत्युत्तर में प्रार्थना, विश्वास, और यह दृढ़ धारणा मिली हुई थी कि पुनरुत्थान का जीवन विश्वासी को स्वाभाविक साधनों से परे सम्भाल सकता है।

पवित्रशास्त्र बीमारों के लिये प्रार्थना करने को प्रोत्साहित करता है। "विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा" (याकूब 5:15)।

साथ ही, हर विश्वासयोग्य विश्वासी इस जीवन में चंगा नहीं होता। तीमुथियुस को बार-बार पेट की तकलीफ़ रहती थी। त्रुफिमुस को मीलेतुस में बीमार छोड़ दिया गया था। पौलुस

एक ऐसे काँटे के साथ जीया जिसे परमेश्वर ने नहीं हटाया।

इसलिए बीमारी को विश्वास पर जनमत-संग्रह नहीं बना देना चाहिए।

नी का पुनरुत्थान पर ज़ोर सबसे सशक्त तब होता है जब वह बीमार विश्वासियों को मसीह पर निर्भर होने की ओर ले जाता है—चाहे चंगाई औषधि के द्वारा आए, परमेश्वर के प्रबन्ध से स्वास्थ्य-लाभ के द्वारा, आश्चर्यकर्मी हस्तक्षेप के द्वारा, या अन्तिम पुनरुत्थान के द्वारा।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता किसी एक परिणाम से कहीं बड़ी है।

जॉर्ज मूलर और प्रावधान करनेवाला परमेश्वर

नी जॉर्ज मूलर जैसे मसीहियों की गवाहियों की सराहना करते थे, जिनका अनाथालय का काम प्रार्थना और परमेश्वर के प्रावधान पर भरोसे के आधार पर खड़ा किया गया था। ऐसी जीवनियों ने उन्हें सिखाया कि सिद्धान्त को व्यावहारिक आवश्यकता में परखा जा सकता है।

मूलर का पाठ यह नहीं था कि हर मसीही को उनकी विधियों की नकल करनी चाहिए। पाठ यह था कि परमेश्वर व्यक्तिगत है और भरोसे के योग्य है।

यीशु कहता है, "तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएँ चाहिए" (मत्ती 6:32)।

परमेश्वर का पितृत्व प्रावधान को एक यांत्रिक प्रतिज्ञा से बदलकर सम्बन्ध बना देता है।

इससे आराम की गारंटी नहीं मिलती। पौलुस ने भूख भी जानी और बहुतायत भी। वह बदलती परिस्थितियों में सन्तोष सीखने के सन्दर्भ में कहता है, "जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ" (फिलिप्पियों 4:13)।

विश्वास कभी प्रावधान पाने के द्वारा प्रकट होता है; कभी परमेश्वर को छोड़े बिना अभाव सहने के द्वारा।

देना और पाना

नी के आन्दोलन ने क्रान्तिकारी उदारता को प्रोत्साहित किया। कार्यकर्ता भेंटों पर निर्भर रहते थे, सभाएँ सेवकाई को सहारा देती थीं, और बाद के अभियानों ने विश्वासियों को सुसमाचार के विस्तार के लिये अपनी सम्पत्ति समर्पित करने के लिये बुलाया।

नया नियम पैसे के विषय में संकोच नहीं करता। यीशु ने इसके बारे में बहुत बार बात की। पौलुस ने राहत के लिये एक बड़ा दान एकत्र करने का प्रबन्ध किया। उसने आनुपातिक और स्वेच्छा से की जानेवाली उदारता सिखाई।

"हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़-कुढ़ के, और न दबाव से" (2 कुरिन्थियों 9:7)।

जब भी प्रभावशाली आत्मिक अगुवे दान देने की शिक्षा देते हैं, तब "न दबाव से" वाक्यांश अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है। दबाव भीतरी स्वतंत्रता के बिना भी बाहरी बलिदान उत्पन्न कर सकता है।

विश्वास पर आधारित सेवकाई को विशेष रूप से पारदर्शी होना चाहिए, क्योंकि आत्मिक भाषा आर्थिक चालबाज़ी को छिपा सकती है।

कोई सेवकाई जितना अधिक परमेश्वर पर भरोसा रखने की बात करती है, उसके पास अस्पष्ट लेखा-जोखा रखने का उतना ही कम बहाना होता है।

प्रार्थना और कलीसिया

नी प्रार्थना को केवल एक व्यक्तिगत अनुशासन नहीं समझते थे। कलीसिया सामूहिक रूप से प्रार्थना करती है।

जब पतरस और यूहन्ना को धमकाया गया, तब विश्वासियों ने "एक चित्त होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से कहा" (प्रेरितों के काम 4:24)। उनकी प्रार्थना में पवित्रशास्त्र दोहराया गया, घटनाओं को परमेश्वर की सम्प्रभुता के अधीन समझा गया, हियाव माँगा गया, और परिणाम नए सिरे से गवाही के रूप में निकला।

सामूहिक प्रार्थना कलीसिया की कल्पना को आकार देती है। जो मण्डली अधिकतर आराम के लिये प्रार्थना करती है, वह अपने आप में सिमट सकती है। जो मण्डली सुसमाचार, सताए जा रहे विश्वासियों, शासकों, पड़ोसियों, पवित्रता और परमेश्वर के राज्य के लिये प्रार्थना करती है, वह अपने से परे देखना सीखती है।

नी की सभाएँ प्रार्थना सभाओं को महत्त्व देती थीं, क्योंकि प्रार्थना काम का ही एक भाग थी, न कि असली काम की तैयारी मात्र।

प्रार्थना में सहमति

यीशु कहता है, "यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये जिसे वे माँगें, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिये हो जाएगी" (मत्ती 18:19)।

नी ने सहमति को देह के जीवन से जोड़ा। व्यक्तिगत विवेक सीमित होता है; साथ मिलकर प्रार्थना करनेवाले विश्वासी सामूहिक रूप से परमेश्वर के मन को खोज सकते हैं।

फिर भी, सहमति कोई जादू नहीं है। किसी स्वार्थी निवेदन पर उत्साह से सहमत होनेवाले दो मसीही परमेश्वर को बाध्य नहीं करते। यह प्रतिज्ञा कलीसियाई सम्बन्धों, अनुशासन, क्षमा और इकट्ठे हुए चेलों के बीच उसकी उपस्थिति के विषय में यीशु की शिक्षा के भीतर आती है।

सच्ची सहमति मसीह के अधीन सहमति है।

प्रार्थना और आत्मिक युद्ध

प्रार्थना अनदेखे विरोध के प्रति कलीसिया का प्रत्युत्तर भी बन जाती है। इफिसियों 6 किसी नाटकीय, दुष्टात्मा निकालने के सूत्र के साथ नहीं, बल्कि इस बात के साथ समाप्त होता है: "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो" (इफिसियों 6:18)।

नी की आत्मिक युद्ध सम्बन्धी शिक्षा में कभी-कभी शैतान की गतिविधि को बाँधने के विषय में कड़ी भाषा का प्रयोग होता था। सबसे स्वस्थ अभ्यास सरल और बाइबल के अनुसार है: बुराई का सामना करो, मसीह का प्रचार करो, सुरक्षा के लिये प्रार्थना करो, छुटकारा माँगो, सत्य को अंगीकार करो, और भय को ठुकरा दो।

निर्णायक यीशु की विजय है, हमारी आवाज़ की ऊँचाई नहीं।

अधिकार की प्रार्थना

नी साधारण विनती और उस प्रार्थना में भेद करते थे जिसे वे अधिकारपूर्ण प्रार्थना कहते थे—मसीह की विजय पर आधारित प्रार्थना जो विरोध को झुकने की आज्ञा देती है। सुसमाचार विश्वासियों को यह मानने का कारण देते हैं कि मसीह दुष्टात्माओं पर अधिकार सौंपता है, और प्रेरितों के काम दिखाता है कि ऐसी सेवकाई जारी रही।

परन्तु अधिकारपूर्ण प्रार्थना को मसीह के अधिकार के अधीन ही रहना चाहिए। मसीही परिस्थितियों के सम्प्रभु नहीं हैं। हम धन, स्वास्थ्य, चुनावों या दूसरे लोगों की इच्छाओं को ऐसे आदेश नहीं दे सकते मानो परमेश्वर की सामर्थ्य हमारे चलाने की वस्तु हो।

सूबेदार अधिकार को ठीक-ठीक इसलिए समझता था कि वह समझता था कि "पराधीन" होना क्या है (मत्ती 8:9)।

आत्मिक अधिकार उन्हीं लोगों के हाथ में सबसे सुरक्षित है जो परमेश्वर के प्रति गहराई से अधीन हैं।

धन्यवाद विश्वास के रूप में

पौलुस बार-बार प्रार्थना के साथ धन्यवाद को जोड़ता है। "हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ" (फिलिप्पियों 4:6)।

उत्तर मिलने से पहले धन्यवाद देना भरोसे का एक रूप है। यह परमेश्वर के चरित्र और उसकी पिछली विश्वासयोग्यता को स्मरण करता है।

नी इन्हीं कारणों से गवाही को महत्त्व देते थे। प्रावधान को स्मरण करना भरोसे को दृढ़ करता है।

फिर भी धन्यवाद विलाप का इनकार नहीं है। भजन संहिता विश्वासियों को सिखाती है कि वे विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के सामने अपनी शिकायत रखें। कृतज्ञता और शोक साथ-साथ रह सकते हैं।

पौलुस ऐसा हो सकता था मानो "शोक करनेवालों के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं" (2 कुरिन्थियों 6:10)।

परिपक्व प्रार्थना में दोनों के लिये पर्याप्त स्थान होता है।

प्रार्थना और मार्गदर्शन

नी प्रार्थना, पवित्रशास्त्र, भीतरी गवाही, सलाह और परिस्थिति के द्वारा दिशा खोजते थे। उनकी शिक्षा कभी-कभी भीतरी आत्मिक बोध को बहुत अधिक महत्त्व देती थी।

आधुनिक पाठकों को एक महत्त्वपूर्ण सुरक्षा-उपाय जोड़ना चाहिए: बड़े निर्णयों को सामान्यतः समय लेकर परखा जाना चाहिए, विशेषकर जब वे परिवारों, आर्थिक स्थिति, जीविका या कलीसियाई समुदायों को प्रभावित करते हों।

"जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है" (नीतिवचन 11:14)।

पवित्र आत्मा को बुद्धिमानी की सलाह से कोई खतरा नहीं है।

विश्वास और जोखिम

आज्ञाकारिता में प्रायः जोखिम सम्मिलित होता है। अब्राहम ऐसे निकल गया कि "यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूँ" (इब्रानियों 11:8)। पतरस नाव से बाहर पैर रखकर उतरा। मिशनरी संस्कृतियों की सीमाएँ पार करते हैं। उद्यमी, पास्टर और माता-पिता पूरी जानकारी के बिना निर्णय लेते हैं।

परन्तु जोखिम और विश्वास एक ही वस्तु नहीं हैं। लापरवाही भी धार्मिक वस्त्र पहन सकती है।

विश्वास परमेश्वर को प्रत्युत्तर देता है; ढिठाई एक खतरनाक योजना बनाती है और फिर परमेश्वर से सुरक्षा की माँग करती है।

जब शैतान ने स्वर्गदूतों की सुरक्षा की एक प्रतिज्ञा उद्धृत की, तब यीशु ने मन्दिर से कूदने से इनकार कर दिया। "तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर" (मत्ती 4:7)।

नी के जीवन में सराहने योग्य साहसी जोखिम भी हैं और जाँचने योग्य विवादित निर्णय भी। विश्वास हमसे यह माँग नहीं करता कि हम किसी आदरणीय अगुवे के हर जोखिम को सही घोषित करें।

निर्भरता और परिश्रम

नी के बार-बार सामने आनेवाले विरोधाभासों में से एक है निर्भरता के साथ कठोर परिश्रम। पौलुस इसे पूरी तरह व्यक्त करता है: "मैंने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया तो भी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था" (1 कुरिन्थियों 15:10)।

अनुग्रह परिश्रम को समाप्त नहीं करता; वह उसका स्रोत बदल देता है।

यह विशेष रूप से उच्च क्षमता वाले अगुवों के लिये प्रासंगिक है। कोई व्यक्ति इसलिए कठोर परिश्रम कर सकता है कि वह चिन्तित है, सब कुछ अपने नियंत्रण में रखना चाहता है, महत्त्वाकांक्षी है, या असफलता से डरता है। यह भी सम्भव है कि वह इसलिए कठोर परिश्रम करे कि अनुग्रह प्रेम को ऊर्जा देता है।

दिनचर्या एक जैसी दिख सकती है। भीतरी जीवन भिन्न होता है।

जब संसार बदलता है तब प्रार्थना

1940 के दशक के अन्त तक नी के आन्दोलन में प्रार्थना को आमूल रूप से बदलते हुए चीन का सामना करना पड़ा। जापान के विरुद्ध युद्ध समाप्त हो चुका था। गृहयुद्ध फिर से छिड़ गया। साम्यवादी सेनाएँ आगे बढ़ती गईं। 1949 में माओ त्से-तुंग ने चीनी जनवादी गणराज्य की घोषणा की।

विदेशी मिशनरियों पर दबाव बढ़ता गया और अन्ततः उन्हें निष्कासित कर दिया गया। मसीही संस्थाओं को यह तय करना था कि वे एक ऐसे क्रान्तिकारी राज्य के साथ कैसा सम्बन्ध रखें जो विदेशी सम्बन्धों पर सन्देह करता था और समाज को नए सिरे से गढ़ने पर तुला हुआ था।

नी के जीवन भर के सिद्धान्त अब एक नए स्वर में परखे जाने को थे। परमेश्वर पर भरोसा रखो—परन्तु एक विचारधारा-प्रधान सरकार के अधीन भरोसा कैसा दिखता है? अधिकार के अधीन रहो—परन्तु आज्ञापालन की सीमा कहाँ है? स्वदेशी कलीसियाएँ बनाओ—परन्तु तब क्या होता है जब राज्य "स्वदेशी" की परिभाषा राजनीतिक शब्दों में करता है? एक देह बने रहो—परन्तु तब क्या होता है जब राजनीतिक अभियान विश्वासियों से एक-दूसरे पर दोष लगाने की माँग करते हैं?

विश्वास अब मुख्यतः प्रावधान के विषय में नहीं रहनेवाला था।

वह दबाव के बीच का विश्वास बनने जा रहा था।

प्रार्थना और परमेश्वर की इच्छा

प्रार्थना के सबसे कठिन तनावों में से एक है साहसपूर्ण माँगने और समर्पण के बीच का सम्बन्ध। मसीही कभी-कभी डरते हैं कि "यदि तेरी इच्छा हो" जोड़ना विश्वास को कमज़ोर

कर देता है। गतसमनी में यीशु की अपनी प्रार्थना इसके विपरीत सिद्ध करती है।

वह स्पष्ट रूप से माँगता है कि कटोरा टल जाए, और स्पष्ट रूप से पिता के अधीन हो जाता है। कोई भी भाग दूसरे को रद्द नहीं करता।

इसलिए प्रार्थना की प्रभावशीलता पर नी के प्रबल ज़ोर को पुत्र-सुलभ भरोसे के भीतर रखा जाना चाहिए। विश्वास यह निश्चय नहीं है कि मेरा मनचाहा परिणाम अवश्य होगा। यह यह निश्चय है कि पिता इतना भला है कि मैं साहस से माँग सकूँ और इतना बुद्धिमान है कि मैं समर्पण कर सकूँ।

"और हमें उसके सामने जो साहस होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो हमारी सुनता है" (1 यूहन्ना 5:14)।

प्रार्थना परिस्थितियों को बदलती है, और प्रार्थना करनेवाले व्यक्ति को भी बदलती है। कभी-कभी सबसे गहरा उत्तर एक ऐसी इच्छा होती है जो परमेश्वर के साथ मेल में लाई गई हो।

प्रार्थना सभा देह की पाठशाला के रूप में

सामूहिक प्रार्थना विश्वासियों को एक-दूसरे के भार उठाना सिखाती है। जब एक व्यक्ति किसी बीमार बच्चे के लिये प्रार्थना करता है, तो दूसरा करुणा सीखता है। जब कोई कार्यकर्ता किसी ऐसे क्षेत्र के लिये प्रार्थना करता है जहाँ सुसमाचार नहीं पहुँचा, तो मण्डली का क्षितिज फैलता है। जब कोई कलीसिया मिलकर अपनी असफलता मान लेती है, तो घमण्ड का छिपना सम्भव नहीं रहता।

"तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो" (गलातियों 6:2)।

नी की सभाएँ प्रार्थना सभाओं को कलीसिया की सेवकाई का भाग मानती थीं, न कि असाधारण रूप से भक्त सदस्यों के लिये वैकल्पिक कार्यक्रम।

आधुनिक कलीसियाओं को शायद प्रार्थना के विषय में कम घोषणाओं और अधिक वास्तविक प्रार्थना की आवश्यकता है।

विश्वास और विवेकशीलता

परमेश्वर पर निर्भरता से साहस उत्पन्न होना चाहिए, न कि विवेकशीलता के प्रति तिरस्कार। यूसुफ ने अनाज इसलिए इकट्ठा किया कि परमेश्वर ने अकाल प्रकट किया था। नहेम्याह ने प्रार्थना की और पहरेदार भी बैठाए। पौलुस ने तूफ़ान में बच निकलने के लिये परमेश्वर पर भरोसा रखा, फिर भी मल्लाहों से भोजन करने को कहा।

जब योजना सेवक बनी रहती है, तब विश्वास और योजना मित्र होते हैं।

"युद्ध के दिन के लिये घोड़ा तैयार तो होता है, परन्तु जय यहोवा ही से मिलती है" (नीतिवचन 21:31)।

घोड़ा तैयार करो। यहोवा पर भरोसा रखो।

प्रार्थना, विश्वास, और परमेश्वर से चालबाज़ी करने का इनकार

नी का विश्वास का जीवन इवैंजेलिकल आत्मिकता की उस धारा से पोषित हुआ था जिसका प्रतिनिधित्व जॉर्ज मूलर और हडसन टेलर जैसे लोग करते थे। मूल धारणा यह नहीं थी कि मसीहियों को योजना बनाने या नौकरी करने से बचना चाहिए, बल्कि यह कि स्वयं परमेश्वर ही प्रावधान और मार्गदर्शन का अन्तिम स्रोत है। सेवकाई को पैसे की चिन्ता या दानदाताओं के साथ चालबाज़ी से संचालित नहीं होना चाहिए।

यीशु ने सिखाया, "तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएँ चाहिए" (मत्ती 6:32)। फिर उसने चेलों को पहले राज्य की खोज करने के लिये बुलाया। विश्वास का आरम्भ विश्वासी के निवेदन से पहले पिता के ज्ञान से होता है।

यह इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि "विश्वास से जीना" एक प्रदर्शन बन सकता है। कोई सेवकाई ज़ोर-शोर से यह प्रचार कर सकती है कि वह धन नहीं माँगती, जबकि नाटकीय कहानियों के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से दबाव बनाती रहे। कोई अगुवा हर आर्थिक जोखिम को आत्मिक साहस समझ सकता है। नी का सबसे सशक्त सिद्धान्त भावुक, आदर्शीकृत दरिद्रता नहीं, बल्कि निर्भरता है।

निर्भरता में साधारण साधन भी सम्मिलित हो सकते हैं। पौलुस कभी भेंटें स्वीकार करता था और कभी तम्बू बनाता था। फिलिप्पियों ने उसे सहारा दिया; कुरिन्थियों ने एक विशेष सन्दर्भ में उसे सहायता लेने से इनकार करते देखा। कोई भी एक आर्थिक ढंग विश्वास

का सार्वभौमिक प्रमाण नहीं बन जाता। प्रश्न यह है कि क्या पैसा आज्ञाकारिता पर शासन करता है।

प्रार्थना को भी स्वयं चालबाज़ी से मुक्त रहना चाहिए। नी ने विश्वासियों को सिखाया कि वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करें और विश्वास में लगे रहें। पवित्रशास्त्र हियाव को प्रोत्साहित करता है: "यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो हमारी सुनता है" (1 यूहन्ना 5:14)। यह शर्त प्रार्थना की सामर्थ्य की सीमा नहीं, बल्कि उसकी सुरक्षा है। मसीही प्रार्थना परिणामों को बलपूर्वक पाने के लिये आत्मिक तकनीक का प्रयोग करने के बजाय पिता की इच्छा को खोजती है।

यह प्रतिज्ञाओं पर "दावा करने" की विकृत समझ से बचाता है। बाइबल की प्रतिज्ञाओं के सन्दर्भ होते हैं। कुछ सिद्धान्त रूप में सार्वभौमिक हैं; अन्य विशेष वाचाओं, व्यक्तियों या परिस्थितियों से सम्बन्धित हैं। विश्वास ध्यान से पढ़ता है। वह किसी वाक्य को केवल इसलिए नहीं झपट लेता कि वह इच्छा से मेल खाता है।

गतसमनी में यीशु सर्वोच्च आदर्श देता है: "हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो" (लूका 22:42)। अधीनता विश्वास को कमज़ोर नहीं करती। जब मनचाहा परिणाम नहीं मिलता, तब यह पिता की बुद्धि पर विश्वास है।

नी के अपने दुःखभोग इस सिद्धान्त को वज़न देते हैं। उन्होंने चंगाई के लिये प्रार्थना की और क्षयरोग से उल्लेखनीय स्वास्थ्य-लाभ का अनुभव किया, परन्तु उन्होंने ऐसा कोई धर्मविज्ञान नहीं बनाया जिसमें विश्वासयोग्य विश्वासियों को बीमारी से छूट की गारंटी हो। उनके बाद के जीवन में बार-बार दुर्बलता आई और अन्त में लम्बा कारावास। विश्वास का जो धर्मविज्ञान केवल छुटकारे की व्याख्या करता है, वह क्रूस का अर्थ नहीं समझा सकता।

प्रार्थना नी के देह के सिद्धान्त से भी जुड़ी थी। सामूहिक प्रार्थना केवल एक कमरे में की गई बहुत सी निजी प्रार्थनाएँ नहीं है। विश्वासी सुनते हैं, सहमत होते हैं, भार उठाते हैं, और मिलकर परखना सीखते हैं। प्रेरितों के काम बार-बार कलीसिया को निर्णायक मोड़ों पर प्रार्थना करते हुए दिखाता है: धमकियों के बाद, मिशनरियों को भेजने से पहले, कारावास के समय, और अगुवों को नियुक्त करते समय।

"जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ" (मत्ती 18:20) को प्रायः सामान्य रूप से सभाओं पर लागू किया जाता है, यद्यपि इसके तात्कालिक सन्दर्भ

में सामूहिक विवेक और अनुशासन सम्मिलित हैं। बड़ा सत्य बना रहता है: मसीह अपने इकट्ठे हुए लोगों के साथ उपस्थित है।

विश्वास का सिद्धान्त आधुनिक नियंत्रण की प्रवृत्ति को भी सम्बोधित करता है। रणनीतिक योजनाएँ निर्भरता के विरुद्ध परिष्कृत बचाव बन सकती हैं। पूर्वानुमान, आरक्षित निधियाँ, जोखिम-सूचियाँ और आकस्मिक योजनाएँ बुद्धिमानी के साधन हैं, परन्तु इनमें से कोई भी भविष्य को सुरक्षित नहीं कर सकता। याकूब उन विश्वासियों को चेतावनी देता है जो कल के विषय में यह कहे बिना आत्मविश्वास से बोलते हैं, "यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे" (याकूब 4:15)।

इसलिए परिपक्व मसीही गम्भीरता से योजना बनाता है और योजनाओं को हल्के हाथ से थामता है। विश्वास स्प्रेडशीट का न होना नहीं है; यह उनकी पूजा करने से इनकार है। यह चिकित्सा से इनकार करना नहीं है; यह चिकित्सा के द्वारा परमेश्वर पर भरोसा रखना है। यह धन जुटाने से बचना नहीं है; यह छल और दबाव से इनकार करना है। यह किसी विशेष परिणाम की अपेक्षा इसलिए करना नहीं कि इच्छा तीव्र है; यह साहस से माँगते हुए उत्तर को समर्पित कर देना है।

नी का जीवन कलीसिया को आर्थिक साहस से भी गहरी स्वतंत्रता के लिये बुलाता है: इस धारणा से स्वतंत्रता कि परमेश्वर का काम अन्ततः हमारे नियंत्रण पर निर्भर है।

क्रान्ति, सताव और शिष्यता की कीमत

एक नए युग की दहलीज़ पर चीन

वॉचमैन नी की सार्वजनिक सेवकाई का अन्तिम दशक राष्ट्रीय विपत्ति और क्रान्ति की पृष्ठभूमि में बीता। उनके निर्णयों को समझने के लिए इतिहास को उल्टी दिशा से पढ़ने के प्रलोभन से बचना होगा। 1949 की साम्यवादी विजय किसी धार्मिक जीवनी में एक पाद-टिप्पणी की तरह नहीं आई थी। उसने पूरी सामाजिक व्यवस्था को ही बदल डाला।

चीन जापानी आक्रमण, दूसरे चीन-जापान युद्ध की तबाही, और राष्ट्रवादियों तथा साम्यवादियों के बीच फिर से छिड़े गृहयुद्ध को झेल चुका था। नगर एक हाथ से दूसरे हाथ में जाते रहे। महँगाई ने लोगों की जमा-पूँजी नष्ट कर दी। परिवार उजड़ गए। राजनीतिक निष्ठाएँ जीवन-मरण का प्रश्न बन सकती थीं।

मसीहियत विशेष रूप से असुरक्षित स्थिति में थी, क्योंकि आधुनिक मिशन-कार्य—चाहे अनजाने में ही सही—पश्चिमी साम्राज्यवादी घुसपैठ के युग के साथ उलझ गया था। मिशनरियों ने स्कूल, अस्पताल, विश्वविद्यालय और कलीसियाएँ स्थापित की थीं, परन्तु विदेशियों के विशेषाधिकारों और असमान सन्धियों के कारण क्रान्तिकारी राष्ट्रवादियों के लिए मसीहियत को साम्राज्यवाद की सांस्कृतिक भुजा के रूप में चित्रित करना आसान हो गया था।

इसलिए साम्यवादी वैचारिक नियन्त्रण के तीव्र होने से पहले ही चीनी मसीही अगुवों के सामने एक वास्तविक समस्या खड़ी थी: कलीसिया यह कैसे दिखाए कि मसीह कोई विदेशी सम्पत्ति नहीं है?

नी ने दशकों तक देशी, आत्मनिर्भर और स्वशासी कलीसियाओं के पक्ष में तर्क दिए थे। एक अर्थ में, वे इस नए संसार के लिए मिशन पर निर्भर अनेक संस्थाओं से अधिक तैयार थे।

परन्तु एक स्वीकार्य चीनी कलीसिया की राज्य की परिभाषा में धीरे-धीरे ऐसी राजनीतिक निष्ठा और संगठनात्मक नियन्त्रण शामिल होने वाले थे, जिन्हें नी का कलीसिया-सम्बन्धी धर्मविज्ञान सहज रूप से आत्मसात नहीं कर सकता था।

1949 और जनवादी गणराज्य

1 अक्टूबर 1949 को माओ त्से-तुंग ने जनवादी चीन गणराज्य की घोषणा की। अब साम्यवादी दल के पास वह राजकीय तन्त्र था जिसके द्वारा वह व्यापक सामाजिक परिवर्तन का लक्ष्य साध सकता था।

नई सत्ता ने मसीही आराधना को तुरन्त पूरी तरह समाप्त नहीं किया। इसके बजाय, धार्मिक नीति अभियानों, वार्ताओं, देशभक्त संगठनों, प्रचार और बढ़ते हुए नियमन के द्वारा आकार लेती गई।

प्रोटेस्टेंट अगुवे ऐसी चर्चाओं में शामिल हुए जो त्रि-स्व देशभक्ति आन्दोलन (थ्री-सेल्फ पैट्रियॉटिक मूवमेंट) की ओर ले गईं; इस आन्दोलन ने विदेशी साम्राज्यवादी सम्बन्धों को तोड़ते हुए स्वशासन, स्वावलम्बन और स्व-प्रचार पर बल दिया।

विडम्बना तीखी थी। ये "त्रि-स्व" विचार ऊपर से उन धारणाओं से मिलते-जुलते लगते थे जिन्हें नी लम्बे समय से सिखाते आए थे। परन्तु एक ही शब्दावली बिलकुल भिन्न अधिकारियों की सेवा कर सकती है।

नी के लिए देशी कलीसियाई जीवन इसलिए था कि कलीसिया पर विदेशी मिशनों के बजाय मसीह शासन करे। राज्य के लिए, विदेशी शक्तियों से धार्मिक स्वतन्त्रता राजनीतिक सुदृढ़ीकरण का एक अंग बन गई।

निर्णायक प्रश्न यह नहीं था कि कलीसियाएँ चीनी हों या नहीं। प्रश्न यह था कि अन्तिम प्रभुता किसके हाथ में है।

छोड़ जाएँ या लौट आएँ

जैसे-जैसे दबाव बढ़ा, कुछ मसीही अगुवे मुख्य भूमि चीन छोड़कर चले गए। नी के पास ऐसे अवसर और अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्क थे जिनके सहारे वे बाहर रह सकते थे। 1950 में वे हांगकांग गए, जहाँ सहकर्मियों ने उनसे सावधानी बरतने का आग्रह किया।

वृत्तान्त एक स्वर से उन्हें विदेश में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा बचाए रखने के बजाय मुख्य भूमि पर लौटने का चुनाव करते हुए दिखाते हैं। इन वर्षों में उनके द्वारा लिए गए विशेष राजनीतिक निर्णयों के बारे में कोई कुछ भी सोचे, यह निर्णय चीनी कलीसियाओं के साथ उनकी एकात्मता को प्रकट करता है।

खतरा आने पर चरवाहा आसानी से झुण्ड को छोड़कर नहीं जाता।

यीशु कहते हैं, "अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है" (यूहन्ना 10:11)। इस वचन का उपयोग यह आग्रह करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए कि खतरे में पड़े हर अगुवे को अपनी जगह पर ही बने रहना है; जब सताव का भय हुआ तो पौलुस नगरों से भाग निकला, और यीशु ने चेलों से कहा कि जब एक नगर में उन्हें सताया जाए तो वे दूसरे में भाग जाएँ। पवित्रशास्त्र बुलाहट के अनुसार भागने और ठहरने, दोनों की अनुमति देता है।

नी का विश्वास था कि ठहरना ही उनका कर्तव्य है।

इस निर्णय की कीमत उन्हें अपने शेष स्वतन्त्र जीवन से चुकानी पड़ी।

सहयोग, देशभक्ति और अस्पष्टता

साम्यवादी शासन के अधीन नी के प्रारम्भिक वर्षों के ऐतिहासिक वृत्तान्त तुरन्त प्रतिरोध की किसी सरल कथा में फिट नहीं बैठते। हाल का शोध बताता है कि नी और असेम्बली हॉल ने सार्वजनिक देशभक्ति प्रदर्शनों में भाग लिया और नई सत्ता के कुछ पहलुओं का समर्थन व्यक्त किया, विशेषकर कोरियाई युद्ध के समय के आसपास।

इस विषय को सावधानी से लेना चाहिए। बाद के प्रशंसक शायद ऐसे नायक को पसन्द करें जिसने साम्यवादी सताव को तुरन्त पहचान लिया हो और आरम्भ से ही राज्य का विरोध किया हो। परन्तु प्रमाण अधिक जटिल हैं।

चीनी मसीही तेज़ी से बदलते राजनीतिक वातावरण के भीतर जीवित रहने का प्रयत्न कर रहे थे। कुछ को आशा थी कि राष्ट्रीय विषयों पर सहयोग करने से आत्मिक कार्य की स्वतन्त्रता बची रह सकती है। कुछ ने साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रवाद या सामाजिक सुधार के कुछ पहलुओं का सच्चे मन से स्वागत किया। कुछ ने दबाव में आकर काम किया। उद्देश्य अलग-अलग थे और बदल भी सकते थे।

नी स्वयं लम्बे समय से मसीहियत को दलगत राजनीति से अलग रखने का प्रयत्न करते आए थे। क्रान्तिकारी परिस्थितियों में उन्हें फिर से विचार करना पड़ा कि कहीं तथाकथित

राजनीतिक तटस्थता के पीछे अनजाँची निष्ठाएँ तो नहीं छिपी हैं।

रोमियों 13 शासन करनेवाले अधिकारियों के अधीन रहने की आज्ञा देता है। "हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे" (रोमियों 13:1)। मसीही केवल इसलिए अराजकतावादी नहीं हो जाते कि शासक अविश्वासी हैं।

परन्तु रोमियों 13 राज्य को परमेश्वर नहीं बना देता। प्रकाशितवाक्य 13 दिखाता है कि जब राजनीतिक सत्ता वह माँगती है जो परमेश्वर का है, तब वह पशु-समान हो जाती है। प्रेरितों के काम 5:29 सीमा-रेखा खींचता है: "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।"

रोमियों 13 और प्रकाशितवाक्य 13 के बीच विवेक करना कलीसिया के सबसे कठिन राजनीतिक कार्यों में से एक है।

मसीही घोषणापत्र और त्रि-स्व का दबाव

1950 के दशक के आरम्भ में चीनी प्रोटेस्टेंट मसीहियत को विदेशी मिशन-प्रभाव से अलग करने और कलीसियाओं को नई राजनीतिक व्यवस्था के अनुरूप ढालने के संगठित प्रयास हुए। एक "मसीही घोषणापत्र" और उभरता हुआ त्रि-स्व देशभक्ति आन्दोलन इसके मुख्य साधन बन गए।

मसीही अगुवों ने अलग-अलग ढंग से प्रतिक्रिया दी। कुछ इस विश्वास के साथ उत्साह से जुड़ गए कि समाजवाद के अधीन एक सच्ची चीनी कलीसिया फल-फूल सकती है। कुछ ने सावधानी से सहयोग किया। वांग मिंगदाओ जैसे अन्य लोगों ने आगे चलकर राज्य-प्रायोजित कलीसियाई ढाँचों का अधिक खुलकर विरोध किया।

नी की स्थिति इस बात से जटिल हो गई कि उनका आन्दोलन पहले से ही प्रबल देशी सिद्धान्तों को मूर्त रूप देता था। वे इस बात से सहमत हो सकते थे कि कलीसियाएँ विदेशी नियन्त्रण से मुक्त हों, और साथ ही इस निहितार्थ को अस्वीकार कर सकते थे कि उनके आत्मिक जीवन पर राज्य का नियन्त्रण हो।

यह एक बार-बार आने वाले राजनीतिक प्रलोभन को दर्शाता है: कोई सरकार वैध नैतिक भाषा अपनाकर उसका उपयोग अवैध उद्देश्यों के लिए कर सकती है। "स्वतन्त्रता," "एकता," "शान्ति," "न्याय," "देशभक्ति," और "सुरक्षा" अच्छे शब्द हैं। उनका नैतिक मूल्य इस पर निर्भर करता है कि सत्ता उनका उपयोग कैसे करती है।

मसीहियों को नारों को नहीं, नीतियों को परखना चाहिए।

निन्दा-अभियान

साम्यवादी राजनीतिक अभियान अधिकाधिक सार्वजनिक आलोचना, अंगीकार, आरोप और वैचारिक पुनर्गठन पर निर्भर होते गए। धार्मिक समुदाय भी इससे अछूते नहीं रहे। सदस्यों पर दबाव डाला जा सकता था कि वे अपने अगुवों की निन्दा करें और उनके कथित अपराधों का भण्डाफोड़ करें।

ऐसे अभियान कलीसियाई संगति के लिए विनाशकारी थे। भरोसे, आत्मिक अधिकार और साझे बलिदान पर बना एक आन्दोलन अचानक ऐसे वातावरण में धकेल दिया गया जहाँ सार्वजनिक आरोप स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और जीवन को तय कर सकता था।

यीशु ने चेतावनी दी थी कि सताव स्वाभाविक सम्बन्धों को भी तोड़ सकता है: "भाई को भाई ... मरने के लिये सौंपेंगे" (मरकुस 13:12)।

कलीसिया को सीखना पड़ा कि जब भय एक राजनीतिक हथियार बन जाता है, तब एकता महँगी पड़ती है।

नी के विरुद्ध बाद में लगाए गए आरोपों का मूल्यांकन करने के लिए यह सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण है। कुछ आरोप ऐसे विषयों से जुड़े थे जिनका शायद कोई तथ्यात्मक आधार रहा हो; अन्य आरोप प्रतिक्रान्ति जैसी वैचारिक श्रेणियों के ढाँचे में गढ़े गए थे। दमनकारी व्यवस्थाओं के अधीन किए गए सार्वजनिक "अंगीकारों" को न्यायालय के पारदर्शी प्रमाण की तरह नहीं लिया जा सकता, और न ही सब आरोपों को केवल इसलिए खारिज किया जाना चाहिए कि राज्य दमनकारी था।

ऐतिहासिक ईमानदारी की माँग है कि जहाँ प्रमाण विवादित हों, वहाँ अनिश्चितता को स्वीकार करके थामे रखा जाए।

व्यापार राजनीतिक बोझ बन जाता है

नी की पहले की दवा-व्यवसाय में भागीदारी ने अब राज्य को जाँच के लिए आर्थिक आधार दे दिया। समाजवादी परिवर्तन के भीतर निजी उद्यम, कर-व्यवहार, स्वामित्व, श्रम-सम्बन्ध और वित्तीय गतिविधियों का अधिकाधिक राजनीतिकरण होता जा रहा था।

जिन कार्यों को पहले कलीसियाई विवाद या व्यापारिक झगड़ा माना जाता था, उन्हें अब आर्थिक अपराध या प्रतिक्रान्तिकारी आचरण के रूप में फिर से प्रस्तुत किया जा सकता था।

सेवकाई, व्यापार, पारिवारिक सम्बन्धों और राजनीतिक सन्देह के इस मेल ने नी को असुरक्षित बना दिया।

यह प्रसंग एक व्यापक सीख भी देता है: जो सेवकाई-अगुवे व्यापार में लगते हैं, उन्हें ऐसी सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था चाहिए जो शत्रुतापूर्ण जाँच को भी झेल सके। आत्मिक सच्चाई दस्तावेज़ों का विकल्प नहीं है।

"जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो" (रोमियों 12:17)।

पारदर्शिता अविश्वास नहीं है। वह मसीह की गवाही की सुरक्षा है।

1952 में गिरफ़्तारी

अप्रैल 1952 में नी को गिरफ़्तार कर लिया गया। कुछ वृत्तान्त इस गिरफ़्तारी को मंचूरिया में हुई बताते हैं, और इसे व्यापार-सम्बन्धी आरोपों से जोड़ते हैं। इस गिरफ़्तारी ने कलीसियाओं से उस शिक्षक को छीन लिया जिसके चारों ओर आन्दोलन का बहुत-सा स्थानान्तरीय नेतृत्व घूमने लगा था।

उस समय उनकी आयु अड़तालीस वर्ष थी।

उनके आसपास कोई नहीं जान सकता था कि वे फिर कभी एक स्वतन्त्र मनुष्य के रूप में नहीं जीएँगे।

यह आघात अवश्य ही बहुत बड़ा रहा होगा। नी ने विश्वासियों को सिखाया था कि वे सौंपे गए अधिकार को पहचानें, सहकर्मियों के साथ तालमेल से काम करें, और सेवकाई को ग्रहण करें। अब आन्दोलन को यह पता लगाना था कि क्या उसका जीवन तब भी चलता रह सकता है जब उसका सबसे प्रभावशाली सेवक लुप्त हो जाए।

सच्ची बाइबल-आधारित कलीसिया को किसी अगुवे के हट जाने के बाद भी टिके रहने में समर्थ होना चाहिए, क्योंकि उसका सिर मसीह है।

पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों से कहा कि उसके जाने के बाद खतरे आएँगे, और उसने उन्हें "परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को" सौंप दिया (प्रेरितों के काम 20:32)।

प्रेरित के चले जाने पर भी परमेश्वर और उसका वचन बने रहते हैं।

मुकद्दमे से पहले का लम्बा अन्तराल

नी का औपचारिक सार्वजनिक मुकद्दमा गिरफ़्तारी के कई वर्ष बाद चला। एक सत्तावादी क्रान्तिकारी व्यवस्था के अधीन हिरासत में आधुनिक उदार अपेक्षाओं—शीघ्र सुनवाई, खुले प्रमाण, स्वतन्त्र वकील, और राजनीतिक अभियानों से न्यायपालिका की पृथकता—का पालन नहीं होता था।

इस अन्तराल के दौरान राज्य ने मसीही सम्पर्क-जालों पर दबाव बढ़ा दिया। अगुवों और सहकर्मियों की जाँच हुई। सभाओं पर कड़ी निगरानी रखी गई। सार्वजनिक निन्दा नियन्त्रण के राजनीतिक रंगमंच का हिस्सा बन गई।

कलीसियाओं के लिए अनिश्चितता किसी ज्ञात दण्ड से भी कठिन हो सकती है। जब कोई स्पष्ट क्षितिज दिखाई नहीं देता, तब भी रिहाई की आशा जीवित रहती है।

भजन संहिता ऐसी प्रतीक्षा के लिए शब्द देती है: "हे परमेश्वर, तू कब तक? क्या सदैव मुझे भूला रहेगा?" (भजन संहिता 13:1)।

बाइबल का विश्वास यह प्रश्न पूछने की अनुमति देता है।

1956 का सार्वजनिक मुकद्दमा

1956 में नी को एक प्रतिक्रान्तिकारी गुट के प्रमुख के रूप में सार्वजनिक रूप से दोषी ठहराया गया और पन्द्रह वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया। राज्य की प्रस्तुतियों में आर्थिक कदाचार, राजनीतिक अपराधों और यौन अनैतिकता के आरोप शामिल थे। इस कार्यवाही ने बहुत-से अनुयायियों को तोड़कर रख दिया।

एक जीवनी को इन आरोपों से कैसे निपटना चाहिए?

उसे न तो उन्हें मिटाना चाहिए और न ही बिना परखे दोहराना चाहिए।

बाद के कुछ जीवनी-स्रोत तर्क देते हैं कि गम्भीर व्यक्तिगत दुराचार के प्रमाण पर्याप्त थे। आन्दोलन से जुड़े वृत्तान्त प्रायः मनगढ़न्त आरोपों, ज़बरदस्ती और राजनीतिक सताव पर बल देते हैं। क्रान्तिकारी राज्य के तरीके सार्वजनिक अंगीकारों और वैचारिक मुकद्दमों पर अविश्वास करने का ठोस कारण देते हैं। साथ ही, सत्य के प्रति मसीही निष्ठा का अर्थ है कि हम केवल इसलिए हर आरोप को असम्भव घोषित नहीं कर सकते कि नी को सताया गया था।

सबसे ज़िम्मेदार निष्कर्ष अधिक सीमित है: इसमें कोई सन्देह नहीं कि नी को स्वतन्त्र धार्मिक नेतृत्व को अधीन करने के एक व्यापक साम्यवादी अभियान के अन्तर्गत निशाना बनाया गया और कैद किया गया। हर नैतिक और वित्तीय आरोप का ठीक-ठीक सत्य विभिन्न स्रोतों और परम्पराओं के बीच विवादित बना हुआ है।

जहाँ इतिहास निश्चितता नहीं दे सकता, वहाँ मसीही प्रशंसा को निश्चितता की आवश्यकता नहीं है।

जब किसी अगुवे की प्रतिष्ठा ढह जाती है

अनुयायियों के लिए, किसी प्रिय अगुवे पर लगे आरोप उस अगुवे से भी बड़ा आत्मिक संकट खड़ा कर देते हैं। यदि पवित्रता सिखाने वाले शिक्षक पर गम्भीर पाप का आरोप लगे, तो उसके सिखाए हुए सत्य का क्या होगा?

पौलुस एक निर्णायक सिद्धान्त देता है: "परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे" (रोमियों 3:4)।

मसीही सत्य सन्देशवाहक की नैतिक सिद्धता पर निर्भर नहीं है।

इससे पाखण्ड को छूट नहीं मिलती। अगुवों से लेखा लिया जाना चाहिए। परन्तु पवित्रशास्त्र इसलिए सत्य है कि परमेश्वर सत्य है।

दाऊद ने गम्भीर पाप किया, फिर भी उसने पश्चाताप से पहले और बाद में प्रेरित भजन लिखे। पतरस ने मसीह का इन्कार किया और फिर से बहाल किया गया। कलीसिया को ख़ज़ाने और मिट्टी के बरतन के बीच भेद करना सीखना होगा, परन्तु इस भेद का उपयोग दुराचार को छिपाने के लिए किए बिना।

यदि कोई अगुवा पाप करता है, तो सत्य की माँग है कि उसे उजागर किया जाए और पश्चाताप हो। यदि किसी अगुवे पर झूठा आरोप लगाया जाता है, तो सत्य की माँग है कि उसका बचाव किया जाए। दोनों ही स्थितियों में प्रभु मसीह ही बना रहता है, अगुवा नहीं।

चैरिटी नी

नी की पत्नी चैरिटी चांग ने उनकी बुलाहट की कीमत में भागीदारी की। स्वयं उनके सम्बन्ध में विवाह से पहले कई वर्षों का विलम्ब रहा था। चैरिटी शिक्षित और सक्षम थीं, और बाद में

उन्होंने राजनीतिक सन्देह के घेरे में आए एक राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध मसीही अगुवे की पत्नी होने के परिणाम सहे।

उन्हें भी गिरफ़्तारी और सताव का अनुभव हुआ। नी के कारावास के दौरान वे जेल के बाहर के साधारण मानवीय जीवन से उनके गिने-चुने सम्पर्कों में से एक बनीं।

प्रसिद्ध मसीही पुरुषों की कहानियाँ प्रायः उनकी पत्नियों को सहायक पात्रों तक सिमटा देती हैं। एक अधिक ईमानदार जीवनी यह याद रखती है कि सेवकाई की यात्राएँ, विवाद और कारावास ऐसी कीमतें उत्पन्न करते हैं जिन्हें जीवनसाथी भी चुकाते हैं।

पौलुस लिखता है कि "यदि एक अंग दुःख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं" (1 कुरिन्थियों 12:26)। विवाह इस सत्य को पीड़ादायक रूप से अक्षरशः सच बना देता है।

बताया जाता है कि नी ने बाद में जो विचार व्यक्त किए, उनसे इस बात पर खेद झलकता है कि उनकी यात्राओं और सेवकाई के वर्षों में चैरिटी ने कितना अकेलापन सहा था। यदि यह सही है, तो ऐसा खेद उन्हें मानवीय बना देता है। मसीही बुलाहट वैवाहिक उत्तरदायित्व को रद्द नहीं करती।

नी के बिना कलीसियाएँ

नी के हटाए जाने से मसीही सभाएँ समाप्त नहीं हुईं। कुछ मण्डलियाँ राज्य-मान्यता प्राप्त ढाँचों में चली गईं; अन्य उनसे बाहर चलती रहीं; सताव ने विश्वासियों को तितर-बितर कर दिया। आन्दोलन के विकेन्द्रीकृत ढर्रों ने उसे अनेक रूपों में बने रहने में सहायता दी।

यह जीवित बचे रहना नी की कहानी की ऐतिहासिक विडम्बनाओं में से एक है। राज्य ने शिक्षक को तो चुप करा दिया, परन्तु शिक्षा को आसानी से चुप नहीं करा सका। छपी हुई रचनाएँ पहले ही फैल चुकी थीं। चेलों ने चेलों को प्रशिक्षित किया था। साधारण विश्वासी जानते थे कि एक साथ कैसे इकट्ठा हों।

पौलुस ने कैद में से लिखा, "परमेश्वर का वचन कैद नहीं" (2 तीमुथियुस 2:9)।

यह वाक्य नी के अन्तिम बीस वर्षों पर एक आदर्श-वाक्य के रूप में अंकित हो सकता है।

कारावास में सरकार के अधीन रहना

हाल का शोध नी को कैद में रहते हुए एक प्रकार की अधीनता का पालन करते हुए प्रस्तुत करता है। जान पड़ता है कि उन्होंने जेल-जीवन को लगातार शारीरिक या प्रशासनिक विद्रोह में नहीं बदला। वे नियमों का पालन करते रहे, परन्तु मसीही विश्वास को त्याग देने की अन्तिम माँग को उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

यह उनकी अधिकार-सम्बन्धी शिक्षा की एक परिपक्व समझ से मेल खाता है। मसीही ऐसे ढाँचों के अधीन रह सकते हैं जिनका वे नैतिक रूप से समर्थन नहीं करते। पतरस ने सताए गए विश्वासियों से कहा कि वे परमेश्वर से डरते हुए सम्राट का सम्मान करें (1 पतरस 2:17)।

परन्तु जहाँ धर्मत्याग आरम्भ होता है, वहाँ अधीनता समाप्त हो जाती है।

यह भेद कठिन और महँगा है। या तो हर बात का विरोध करना, या हर बात मान लेना अधिक आसान है। मसीही विवेक प्रायः संकरे मार्ग पर चलता है: जहाँ सम्भव हो सहयोग करो, और जहाँ टकराव अनिवार्य हो जाए वहाँ परमेश्वर की आज्ञा मानो।

शिष्यता की कीमत ठोस बन जाती है

किसी सम्मेलन में यीशु के शब्द प्रेरणादायक लग सकते हैं: "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपका इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 16:24)।

1956 तक नी को किसी दृष्टान्त की आवश्यकता नहीं रह गई थी।

अब क्रूस का अर्थ था कारावास का दण्ड, सार्वजनिक अपमान, अपनी पत्नी और कलीसियाओं से अलगाव, और उनकी सार्वजनिक आवाज़ का लुप्त हो जाना।

इसमें से कुछ भी यह सिद्ध नहीं करता कि वे हर विवादित कार्य में सही थे। दुःख उठाना सैद्धान्तिक या नैतिक सिद्धता का प्रमाण-पत्र नहीं है। परन्तु दुःख यह अवश्य प्रकट करता है कि जब विश्वास के सांसारिक प्रतिफल लुप्त हो जाते हैं, तब भी वह टिका रहता है या नहीं।

नी दशकों से प्रचार करते आए थे कि मसीह ही जीवन है, कि स्वयं को झुकना होगा, कि मृत्यु के बाद पुनरुत्थान आता है, कि विश्वासी मसीह में बैठते हैं, उसके जीवन के द्वारा चलते हैं, और उसकी विजय में खड़े रहते हैं।

अब इन सत्यों को गुमनामी में परखा जाना था।

पन्द्रह वर्ष का दण्ड जो बीस वर्ष बन गया

औपचारिक दण्ड पन्द्रह वर्ष का था। यदि वह निर्धारित समय पर समाप्त हो जाता, तो नी शायद 1960 के दशक के अन्त में बाहर आ जाते। परन्तु सांस्कृतिक क्रान्ति और लगातार बनी रही राजनीतिक माँगों ने वह द्वार बन्द कर दिया।

वृत्तान्त बताते हैं कि रिहाई इस शर्त से बँधी थी कि वे विश्वास का त्याग करें, या किसी अन्य प्रकार से अधिकारियों को ऐसे ढंग से सन्तुष्ट करें जिसे नी स्वीकार नहीं करते। प्रशासनिक प्रक्रिया ठीक-ठीक जो भी रही हो, वे 1972 में अपनी मृत्यु तक कैद में ही रहे।

पन्द्रह वर्ष बीस वर्ष बन गए।

"प्राण देने तक विश्वासयोग्य रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा" (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

शायद ही कोई वचन इससे कम लाक्षणिक सुनाई दे सकता था।

अगला अध्याय उन छिपे हुए वर्षों में प्रवेश करता है। अभिलेख खण्डित है। यह स्वयं कहानी का एक हिस्सा है। जिस व्यक्ति की सेवकाई शब्दों पर बनी थी, उसे मौन में धकेल दिया गया, और कलीसिया के सामने यह प्रश्न छोड़ दिया गया कि क्या कोई जीवन तब भी प्रचार कर सकता है जब प्रचारक के पास कोई मंच न रहे।

क्रान्तिकारी विचारधारा के अधीन मसीही

माओवादी चीन में साम्यवाद आर्थिक नीतियों के एक समूह से कहीं बढ़कर था। वह इतिहास, वर्ग, निष्ठा, सामाजिक परिवर्तन और मानव-नियति की व्याख्या करने वाली एक सम्पूर्ण व्यवस्था प्रस्तुत करता था। व्यवहार में, दल अधिकाधिक ऐसी वैचारिक अनुरूपता की माँग करने लगा जो विवेक को छूती थी।

इसलिए मसीहियों का सामना केवल किसी नापसन्द सरकार से नहीं, बल्कि परम वास्तविकता के एक प्रतिद्वन्द्वी विवरण से था।

कलीसिया ने अनेक शासनों के अधीन ऐसे ही दबावों का सामना किया है। रोम तब तक धर्मों को सहन कर सकता था जब तक कैसर के प्रति निष्ठा पवित्र-धार्मिक रूप न ले ले। राष्ट्रवाद कलीसियाओं से राष्ट्रीय नियति को पवित्र मानने की माँग कर सकते हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृतियाँ आर्थिक लालसा को आराधना की तरह काम करने वाला बना सकती हैं।

"तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर" (मत्ती 4:10)।

जब भी कोई राज्य या विचारधारा परम निष्ठा की माँग करती है, तब पहली आज्ञा के राजनीतिक परिणाम होते हैं।

दबाव में सार्वजनिक अंगीकार

राजनीतिक अभियानों ने अंगीकार को वैचारिक पुनर्गठन के एक साधन के रूप में इस्तेमाल किया। मसीही अंगीकार का सामान्य अर्थ परमेश्वर और समुदाय के सामने स्वेच्छा से सत्य कहना है। ज़बरदस्ती करवाया गया अंगीकार कुछ और ही है।

यह भेद तब महत्त्वपूर्ण हो जाता है जब इतिहासकार ऐसे शासनों द्वारा तैयार किए गए अभिलेखों की व्याख्या करते हैं जो आरोप लगाने को पुरस्कृत और असहमति को दण्डित करते हैं।

एक हस्ताक्षरित बयान प्रमाण हो सकता है, पर अचूक प्रमाण नहीं। भय बदल देता है कि लोग क्या कहते हैं। पूछताछ सन्दर्भ बदल देती है। सार्वजनिक तमाशा प्रेरणाएँ बदल देता है।

इसलिए सत्य के प्रति मसीही प्रतिबद्धता भोलेपन या स्वचालित अस्वीकृति के बजाय स्रोतों की धैर्यपूर्ण आलोचनात्मक जाँच की माँग करती है।

जब भय कलीसिया को बाँट देता है

सताव प्रायः व्यक्तियों को अलग-थलग करके सफल होता है। यदि विश्वासियों को यह विश्वास दिला दिया जाए कि बाकी सब ने समझौता कर लिया है, तो साहस कमज़ोर पड़ जाता है।

इसलिए इब्रानियों की पत्री आज्ञा देती है, "एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें ... पर एक दूसरे को समझाते रहें" (इब्रानियों 10:25), और यह ऐसे सन्दर्भ में है जो शीघ्र ही दुःख और धीरज की बात करता है।

जब सार्वजनिक सभाएँ असम्भव हो जाती हैं, तब संगति सिमटकर फुसफुसाई गई प्रार्थना, स्मरण किए गए पवित्रशास्त्र, या इस ज्ञान तक रह सकती है कि अनदेखे विश्वासी

विश्वासयोग्य बने हुए हैं।

जब सम्पर्क टूट जाता है, तब भी देह बनी रहती है।

देशभक्ति, राजनीतिक दबाव और परमेश्वर के राज्य के बीच कलीसिया

1949 में साम्यवादी विजय ने चीनी मसीहियों को तेज़ी से बदलते नैतिक और राजनीतिक परिदृश्य के भीतर ला खड़ा किया। विदेशी मिशनों को—उचित या अनुचित रूप से—साम्राज्यवादी सत्ता से जोड़ा जाता था। नई सरकार राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, वैचारिक निष्ठा और बढ़ते हुए सार्वजनिक तालमेल की माँग करती थी। मसीही अगुवों को यह विवेक करना था कि विदेशी प्रभुत्व को कैसे अस्वीकार करें, अपने देश से प्रेम कैसे करें, नागरिक जीवन में सहयोग कैसे करें, और फिर भी मसीह के प्रति कलीसिया की परम निष्ठा को कैसे बनाए रखें।

देशी कलीसियाई जीवन पर नी के पहले के आग्रह ने उनके आन्दोलन को एक लाभ दिया। ये सभाएँ किसी विदेशी मिशन-संस्था की शाखाएँ मात्र नहीं थीं। फिर भी स्वतन्त्रता से राजनीतिक दबाव दूर नहीं हुआ। राज्य की चिन्ता विदेशी धन से आगे बढ़कर स्वयं धर्म के अधिकार तक पहुँचती थी।

नया नियम कोई सरल राजनीतिक सूत्र नहीं देता। पौलुस शासकों के लिए प्रार्थना करने की आज्ञा देता है और रोमियों 13 में शासन करनेवाले अधिकार को सार्वजनिक व्यवस्था के लिए एक सेवक कहता है। पतरस विश्वासियों से राजा का सम्मान करने को कहता है। फिर भी प्रेरितों के काम में लिखा है कि प्रेरितों ने कहा, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है" (प्रेरितों के काम 5:29)। प्रकाशितवाक्य दिखाता है कि जब साम्राज्य स्वयं आराधना की माँग करता है, तो वह पशु-समान बन जाता है।

इसलिए मसीही राजनीतिक आज्ञाकारिता वास्तविक है, पर सीमित है। सरकार के पास वैध अधिकार है; विवेक पर उसके पास ईश्वरीय अधिकार नहीं है। राज्य विश्वास को खतरे में डाले बिना यातायात को नियन्त्रित कर सकता है। वह अपराध को दण्ड दे सकता है। परन्तु जब वह मसीह के इन्कार, झूठी आराधना, निर्दोष लोगों के साथ विश्वासघात, या सुसमाचार के दमन की आज्ञा देता है, तब परमेश्वर की आज्ञा मानना एक महँगा प्रतिरोध बन जाता है।

नी की स्थिति उन व्यापक राजनीतिक अभियानों से और भी जटिल हो गई जिनमें सार्वजनिक आरोप और अंगीकार वैचारिक पुनर्गठन के साधन थे। ऐसी परिस्थितियों में दी गई गवाहियों का सावधानीपूर्ण ऐतिहासिक मूल्यांकन आवश्यक है। कुछ आरोपों में सच्चाई हो सकती है; दमनकारी व्यवस्थाएँ हर आरोप को झूठा नहीं बना देतीं। परन्तु तीव्र राजनीतिक दबाव में की गई सार्वजनिक निन्दा को ऐसे भी नहीं पढ़ा जा सकता मानो वह न्यायालय का साधारण प्रमाण हो।

नी की जीवनी में यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उन पर गम्भीर नैतिक और वित्तीय आरोप लगाए गए थे। एक ज़िम्मेदार वृत्तान्त को न तो उन्हें मिटाना चाहिए और न ही बिना किसी शर्त के उन्हें स्थापित तथ्य के रूप में दोहराना चाहिए। उनके दवा-व्यवसाय को लेकर पहले का कलीसियाई विवाद वास्तविक था। बाद के साम्यवादी आरोप ऐसे राजनीतिक वातावरण में उभरे जो स्वतन्त्र धार्मिक अधिकार को नष्ट करने के लिए रचा गया था। इतिहासकार को प्रमाण, प्रचार, गवाही, व्याख्या और जो अज्ञात रह जाता है—इन सबके बीच भेद करना होगा।

राजनीति के प्रति नी का स्वयं का बदलता रुख भी सूक्ष्म दृष्टि की माँग करता है। वे 1949 से आगे प्रतिरोध के कोई अपरिवर्तनीय आदर्श मात्र नहीं थे। अनेक चीनी मसीहियों की तरह, उन्होंने नई सरकार के अधीन जीने के मार्ग खोजे और कुछ अवसरों पर सत्ता के समर्थन में सार्वजनिक अभिव्यक्तियों में भाग भी लिया। हाल का शोध इस बात पर बल देता है कि उन्होंने राजनीतिक पूर्वाग्रह पर मनन किया और मसीही पहचान को त्यागे बिना अधीनता का मार्ग निकालने का प्रयत्न किया। यह जटिलता उनके अन्ततः कैद किए जाने को कम नहीं, बल्कि अधिक शिक्षाप्रद बनाती है।

दबाव में पड़ी कलीसिया प्रायः राज्य के द्वार बन्द करने से पहले ही भीतर से दरकने लगती है। भय सम्बन्धों को बदल देता है। कुछ विश्वासी दूसरों से अधिक समझौता करते हैं। कुछ लोग सतर्क मसीहियों पर कायरता का आरोप लगाते हैं; अन्य लोग विरोध करने वाले मसीहियों पर गैर-ज़िम्मेदारी का आरोप लगाते हैं। परिवारों और मण्डलियों को यह जाने बिना निर्णय लेने पड़ते हैं कि अगला महीना क्या लेकर आएगा।

पौलुस का निर्देश अत्यावश्यक हो उठता है: “जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो” (रोमियों 12:18)। “जहाँ तक हो सके” वाली शर्त स्वीकार करती है कि मेल सदा हमारे वश में नहीं होता। फिर भी मसीही इस बात के लिए उत्तरदायी हैं कि वे किस आत्मा से काम करते हैं।

नी का क्रूस का धर्मविज्ञान इस दौर के लिए एक सहारा था। कलीसिया किसी भी साधन से अपने आप को बचाए नहीं रखती। जब सम्पत्ति, प्रतिष्ठा और संगठन खो जाते हैं, तब भी मसीह अपनी गवाही को सम्भाले रख सकता है। यह दृढ़ विश्वास राजनीतिक निष्क्रियता की सलाह नहीं है। यह घबराहट से मुक्ति है।

क्रान्ति के बाद चीनी मसीहियत उल्लेखनीय रूप से लचीली सिद्ध होने वाली थी। ढाँचे ढहा दिए गए, अगुवे कैद कर दिए गए, विदेशी सेवक निकाल दिए गए, और सार्वजनिक गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगा दिए गए, फिर भी मसीही जीवन लुप्त नहीं हुआ। बीज भूमि के नीचे चला गया।

नी उस कहानी के भावी विस्तार को नहीं जान सकते थे। उनकी अपनी दृश्य सेवकाई अपने अन्त के निकट पहुँच रही थी। परन्तु जिस धर्मविज्ञान का उन्होंने प्रचार किया था—कि पुनरुत्थान का जीवन वहीं प्रकट होता है जहाँ स्वाभाविक साधन चुक जाते हैं—उसकी परीक्षा अब ऐसी परिस्थितियों में होने वाली थी जिन्हें सम्मेलन का कोई भी दृष्टान्त दोहरा नहीं सकता था।

बेड़ियों में बीस वर्ष

मौन की सेवकाई

वॉचमैन नी चीन के सबसे जाने-माने स्वदेशी मसीही शिक्षकों में से एक के रूप में जेल गए। बीस वर्ष बाद, सार्वजनिक सेवकाई में लौटे बिना ही, उनकी मृत्यु होनी थी। यह विरोधाभास लगभग असहनीय है। जिस मनुष्य की बुलाहट ही प्रचार करना, लिखना, प्रशिक्षण देना, यात्राएँ करना और विश्वासियों को इकट्ठा करना थी, उससे वे लगभग सभी बाहरी साधन छीन लिए गए जिनके द्वारा वे सेवा करते आए थे।

किसी जीवनी-लेखक के लिए जेल के ये वर्ष बताना भी सबसे कठिन है। सार्वजनिक अभिलेखों को उसी राज्य ने गढ़ा है जिसने उन्हें कैद किया था। परिवार की स्मृतियाँ बहुमूल्य अंश तो सुरक्षित रखती हैं, परन्तु हर वर्ष का पुनर्निर्माण नहीं कर सकतीं। बाद के भक्तिमय वृत्तान्त कभी-कभी मौन को अनुमानों से भर देते हैं। इसलिए ऐतिहासिक नम्रता आवश्यक है।

नी के कारावास के दैनिक आत्मिक ताने-बाने के विषय में हम उससे कम जानते हैं जितना पाठक चाहेंगे।

शायद यह अभाव अपने आप में उचित ही है। नी ने सिखाया था कि मसीही जीवन को इस बात से नहीं मापा जाता कि वह कितना दिखाई देता है। उनकी अन्तिम सेवकाई वहाँ हुई जहाँ लगभग कोई श्रोता उसे देख नहीं सकता था।

यीशु पिता के विषय में कहते हैं, “तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा” (मत्ती 6:4)। जेल ने नी की शिष्यता के बड़े भाग को परमेश्वर के सामने एक गुप्त जीवन में बदल दिया।

जेल का श्रम और साधारण दिन

नी के बन्दी-जीवन में जेल भी सम्मिलित थी और श्रम-द्वारा-सुधार के शिविर भी। वर्षों के साथ ब्योरे बदलते रहे, परन्तु उनका जीवन ऐसे अधिकारियों के नियन्त्रण में था जो उनके आने-जाने, संवाद, काम, भोजन, चिकित्सा और परिवार से सम्पर्क, सब पर नियन्त्रण रखते थे।

वीरता की कल्पना पूछताछ के नाटकीय क्षणों पर टिकी रहती है। परन्तु लम्बा कारावास प्रायः साधारण दिनों से बनता है: आदेश पर जागना, जो दिया जाए वही खाना, सौंपा गया श्रम करना, शोर और असुविधा सहना, समाचार की प्रतीक्षा करना, बीमारी को सँभालना, और वर्षों को ओझल होते देखना।

ऐसी एकरसता एक कठोर आत्मिक परीक्षा हो सकती है। संकट में उत्तेजना मिलती है; दोहराव धीरज माँगता है।

इब्रानियों में लिखा है, "तुम्हें धीरज रखना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ" (इब्रानियों 10:36)।

बाइबल का धीरज कोई निष्क्रिय स्वभाव नहीं है। यह विलम्ब के बीच विश्वासयोग्य बने रहने का बल है।

नी ने परमेश्वर की बाट जोहने के विषय में प्रचार किया था। जेल ने इस पाठ को घण्टों और महीनों से बढ़ाकर दशकों तक फैला दिया।

मंच के बिना मसीह

सार्वजनिक सेवकाई चुपचाप सेवक के लिए इस बात का प्रमाण बन सकती है कि परमेश्वर प्रसन्न है। निमन्त्रण, मन-फिराव, पुस्तकों की बिक्री, बढ़ती सभाएँ और आभारी श्रोता सेवक को आश्वस्त करते हैं कि उसका जीवन उपयोगी है।

जेल ने यह प्रतिक्रिया छीन ली।

जब एक प्रचारक प्रचार नहीं कर सकता, तब वह क्या है?

परिस्थितियों के यह प्रश्न पूछने से पहले ही नी के धर्मविज्ञान के पास इसका उत्तर था। "क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है" (फिलिप्पियों 1:21)। यह पद यह नहीं कहता कि मेरे लिये जीवित रहना सफल सेवकाई है।

यह भेद उनके अन्तिम वर्षों के सबसे सामर्थी पाठों में से एक है। बुलाहट का महत्त्व है, परन्तु मसीह बुलाहट से भी गहरा है। जो व्यक्ति अपनी पुरानी सेवा नहीं कर पाता, वह आत्मिक रूप से मूल्यहीन नहीं हो जाता।

यह बात बीमारी, विकलांगता, सेवानिवृत्ति, किसी की देखभाल में लगे रहने, बेरोज़गारी, बुढ़ापे और हर उस दौर से बात करती है जब सार्वजनिक उपयोगिता सिमट जाती है। विश्वासी की पहली बुलाहट उत्पादकता नहीं, बल्कि मसीह का होना है।

लेखक बँधा है, संसार पढ़ रहा है

जिन वर्षों में नी कैद में थे, उनकी शिक्षा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर फैल गई। टिप्पणियों और सन्देशों का अनुवाद और प्रकाशन हुआ। *सामान्य मसीही जीवन* (The Normal Christian Life) को चीन से बहुत दूर तक पाठक मिले। बाद के संग्रह उनकी सेवकाई को संसार भर के इवैंजेलिकल, करिश्माई, ब्रदरन, मिशनरी और स्वतन्त्र कलीसियाई दायरों तक ले गए।

यह विरोधाभास पौलुस की याद दिलाता है: "जिसके लिये मैं कुकर्मी के समान दुःख उठाता हूँ, यहाँ तक कि कैद भी हूँ; परन्तु परमेश्वर का वचन कैद नहीं" (2 तीमुथियुस 2:9)।

नी यात्रा नहीं कर सकते थे, पर उनके शब्द यात्रा करते रहे।

इस घटना को ऐसे रूमानी रंग में नहीं रंगना चाहिए मानो प्रभाव के लिए कारावास आवश्यक हो। स्वतन्त्रता अच्छी है, और सताव बुरा है। परन्तु परमेश्वर का विधान किसी अत्याचारी के चुप कराने के प्रयास को एक भिन्न प्रकार के विस्तार में बदल सकता है।

जेल की कोठरी भौगोलिक रूप से छोटी होती गई, जबकि नी के पाठकों का दायरा भौगोलिक रूप से विशाल होता गया।

बन्धनों के बीच पत्राचार

पारिवारिक पत्रों से नी के जीवन की केवल सीमित झलक मिलती थी। किसी अधिनायकवादी शासन के अधीन जेल के पत्राचार के विषय में यह नहीं माना जा सकता कि उसमें वह सब कुछ होगा जो एक कैदी कहना चाहता है। शब्दों पर निगरानी रखी जा सकती

है, उन्हें सांकेतिक बनाया जा सकता है, संयमित किया जा सकता है, या उन्हें केवल अनुमति-प्राप्त विषयों तक सीमित रखा जा सकता है।

इस कारण विश्वास की संक्षिप्त अभिव्यक्तियाँ विशेष रूप से अर्थपूर्ण हो जाती हैं, और साथ ही यह हमें चेतावनी भी देता है कि हम मौन का अति-अर्थ न निकालें।

मसीही इतिहास में ऐसे अनेक बन्दी विश्वासी हुए हैं जिनके पत्र साधारण भाषा में असाधारण धीरज प्रकट करते हैं। स्वयं पौलुस ने नये नियम के कुछ सबसे स्नेहपूर्ण शब्द कैद में रहते हुए लिखे।

"प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो" (फिलिप्पियों 4:4) किसी छुट्टी मनाने की जगह से नहीं लिखा गया था।

दुःख में आनन्द शोक का इनकार नहीं है। यह शोक के भीतर मसीह की उपस्थिति है।

अधीनता, पर विश्वास से मुकरना नहीं

हाल के विद्वत्तापूर्ण वृत्तान्त इस बात पर बल देते हैं कि नी सामान्यतः जेल के नियमों के अधीन रहे, पर उन्होंने मसीहियत को त्यागने से इनकार किया। यह मेल उन विषयों से मेल खाता है जिन्हें वे वर्षों से सिखाते आए थे।

अधिकार के अधीन रहना निरपेक्ष नहीं है। पौलुस ने अपने कानूनी अधिकारों की दुहाई दी; पतरस ने उन आदेशों को मानने से इनकार किया जो परमेश्वर के विरुद्ध थे। फिर भी मसीही किसी अन्यायी व्यवस्था की अनेक माँगों का पालन कर सकते हैं, बिना उस व्यवस्था को परम अधिकार सौंपे।

नी का बताया जाने वाला यह इनकार कि वे अपना विश्वास वापस नहीं लेंगे, निर्णायक सीमा-रेखा बन जाता है।

यीशु पूछते हैं, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" (मरकुस 8:36)।

मसीह के इनकार से खरीदी गई स्वतन्त्रता नी के लिए बहुत महँगी होती।

सांस्कृतिक क्रान्ति

1966 में माओ ने सांस्कृतिक क्रान्ति आरम्भ की, एक विशाल राजनीतिक और सामाजिक अभियान, जिसने धर्म, पारम्परिक संस्कृति, बुद्धिजीवियों और क्रान्ति के कथित शत्रुओं पर आक्रमण तीव्र कर दिए। कलीसियाएँ बन्द कर दी गईं, धार्मिक वस्तुएँ नष्ट कर दी गईं, विश्वासियों को अपमानित किया गया, और मसीही अगुवों पर फिर से सताव आया।

जब यह अभियान आरम्भ हुआ, तब तक नी चौदह वर्ष हिरासत में बिता चुके थे। यह आशा कि उनकी पन्द्रह वर्ष की सज़ा सामान्य रीति से रिहाई तक पहुँचेगी, अब वैचारिक कट्टरता के राष्ट्रव्यापी वातावरण की छाया में दब गई।

उनकी पत्नी चैरिटी और अन्य सम्बन्धियों ने भी दुःख उठाया। वृत्तान्त पूछताछ और सार्वजनिक अपमान का वर्णन करते हैं।

सताव शायद ही कभी केवल बन्दी व्यक्ति पर पड़ता है। परिवार भी उसकी सहायक सज़ाएँ भुगतते हैं।

इब्रानियों का लेखक लिखता है, "कैदियों की ऐसी सुधि लो, कि मानो उनके साथ तुम भी कैद हो" (इब्रानियों 13:3)। यह पद एकजुटता को पहचानता है: कैदी का दुःख मसीह की देह तक फैल जाता है।

जब सज़ा पूरी हो जाए पर जेल नहीं

नी की पन्द्रह वर्ष की सज़ा 1967 में पूरी हो जानी चाहिए थी। फिर भी वे बन्दी बने रहे।

कुछ स्रोत बताते हैं कि यदि वे मसीही विश्वास को त्याग देते तो उन्हें रिहाई मिल सकती थी। बाद के हर वृत्तान्त में प्रशासनिक ब्योरे ठीक-ठीक आए हों या नहीं, बड़ा तथ्य निश्चित है: वे मुक्त नहीं किए गए, और उन्होंने स्वयं को मसीही कहना नहीं छोड़ा।

लगातार बनी हिरासत धीरज का अर्थ ही बदल देती है। एक कैदी अपनी रिहाई की तिथि तक दिन गिन सकता है। पर जब वह तिथि आ जाए और द्वार बन्द ही रहे, तब समय मन पर बिलकुल भिन्न रूप से बीतने लगता है।

नीतिवचन कहता है, "जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तो मन निराश होता है" (नीतिवचन 13:12)।

बाइबल के नायक भी टलती हुई आशा की पीड़ा से अछूते नहीं हैं।

नी की विश्वास-सम्बन्धी शिक्षा को मनचाहे परिणाम पाने तक सीमित नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनका अपना जीवन सबसे स्पष्ट मनचाहे परिणामों में से एक—स्वतन्त्रता—को पाए बिना ही समाप्त हुआ।

जब उत्तर नहीं में था, तब भी विश्वास बना रहा।

जेल में बीमारी

नी गम्भीर स्वास्थ्य समस्याओं से पहले से जूझते आए थे। जेल के बाद के वर्षों में उन्हें भारी शारीरिक दुर्बलता रही, विशेषकर हृदय-रोग। लोकप्रिय वृत्तान्तों में चिकित्सा सम्बन्धी ब्योरे भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु उनके गिरते स्वास्थ्य की बात भली-भाँति प्रमाणित है।

जिस देह के विषय में उन्होंने कभी सिखाया था कि उसे परमेश्वर की सेवा का साधन बनना चाहिए, वह दिन-ब-दिन और दुर्बल होती गई।

पौलुस एक दूसरे अर्थ में देह को "हमारा बाहरी मनुष्यत्व" कहता है, जब वह कहता है, "यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है" (2 कुरिन्थियों 4:16)।

यह पद देह का तिरस्कार नहीं है। पौलुस पुनरुत्थान की बाट जोहता है। परन्तु वह पहचानता है कि शारीरिक क्षय भीतरी नवीनीकरण को रद्द नहीं कर सकता।

वृद्ध मसीहियों और दीर्घकालिक रोग से ग्रस्त लोगों के लिए यह सुसमाचार की शान्त प्रतिज्ञाओं में से एक है। देह सिमट सकती है, जबकि मसीह के साथ संगति गहरी होती जाती है।

चैरिटी की मुलाकातें

जब अनुमति मिलती, तब चैरिटी की मुलाकातें व्यक्तिगत जुड़ाव देती थीं। सेवकाई की यात्राओं के कारण उनका विवाह पहले ही लम्बे वियोग सह चुका था। जेल ने इस वियोग को बुलाहट की कीमत से बदलकर राज्य द्वारा थोपा गया अभाव बना दिया।

ऐसी खबरें हैं कि बाद में नी को इस बात का खेद था कि चैरिटी ने अपने वैवाहिक जीवन का इतना बड़ा भाग अकेले बिताया; चाहे ठीक-ठीक शब्दों की सदा पुष्टि न हो सके, ये खबरें

मनन के योग्य हैं। मसीही सेवकाई उन्हीं सम्बन्धों को निगल सकती है जिनकी देखभाल करने के लिए पवित्रशास्त्र अगुवों को बुलाता है।

अध्यक्षों के लिए पौलुस की योग्यताओं में घराने के प्रति विश्वासयोग्यता सम्मिलित है। बात यह नहीं कि परिवार बुलाहट से ऊपर एक मूर्ति बन जाए, बल्कि यह कि सेवकाई को उपेक्षा के बहाने के रूप में अनन्त काल तक प्रयोग नहीं किया जा सकता।

यदि नी ने सचमुच खेद अनुभव किया, तो उसे एक निर्दोष छवि बचाने के लिए छिपाने के बजाय सिखाने देना चाहिए।

पवित्रता में देर से सीखे गए पाठ भी सम्मिलित हैं।

चैरिटी की मृत्यु

चैरिटी की मृत्यु नी से पहले हो गई। यह समाचार उन तक कैद में पहुँचा, और इसके साथ पुनर्मिलन की वह सांसारिक आशा समाप्त हो गई जो रिहाई से मिल सकती थी।

जेल में शोक सामान्य रीतियों के बिना का शोक है। न कोई साझा घर होता है, न अन्तिम संस्कार के लिए इकट्ठा होना, न परिवार के साथ लम्बी बातचीत, न कब्र पर जाने की स्वतन्त्रता। हानि उस हानि के भीतर आ पहुँचती है जो पहले से मौजूद है।

पवित्रशास्त्र शोक को कभी इसलिए तुच्छ नहीं मानता कि पुनरुत्थान सत्य है। यीशु लाज़र की कब्र पर रोए, यद्यपि वे जानते थे कि वे आगे क्या करने वाले हैं।

पौलुस मसीहियों से कहता है, "ऐसा न हो, कि तुम औरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं" (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)। वह यह नहीं कहता कि वे शोक नहीं करते। आशा शोक का क्षितिज बदलती है, उसकी वास्तविकता नहीं।

नी के लिए, पुनरुत्थान-जीवन के रूप में मसीह अब केवल धर्मविज्ञान नहीं था, बल्कि वही एकमात्र भविष्य था जिसमें अन्ततः दाम्पत्य पुनर्मिलन की कल्पना की जा सकती थी।

विश्वास की एक घोषणा

नी की मृत्यु के बाद परिवार के वृत्तान्तों में एक संक्षिप्त लिखित अंगीकार सुरक्षित है, जो पुष्टि करता है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है, कि वह पापियों के लिए मरा और मरे हुओं में से जी उठा, और कि नी उस पर विश्वास करते हुए मरे। इसके विभिन्न अंग्रेज़ी अनुवाद प्रचलित हैं,

इसलिए किसी जीवनी को हर अनूदित शब्द के विषय में निश्चितता का दिखावा नहीं करना चाहिए।

इसका सार अचूक है: मसीह, प्रायश्चित्त, पुनरुत्थान, मृत्यु तक विश्वास।

यह अंगीकार इसलिए ध्यान खींचता है कि इसमें नी की विशिष्ट शब्दावली में से कुछ भी नहीं है। आत्मा और प्राण का कोई विश्लेषण नहीं। एक-नगर-एक-कलीसिया का कोई सिद्धान्त नहीं। अधिकार पर कोई जटिल शिक्षा नहीं। मृत्यु की दहलीज़ पर विश्वास अपने मूल तत्त्वों में है।

"पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया ... और ... तीसरे दिन जी भी उठा" (1 कुरिन्थियों 15:3-4)।

केन्द्र अडिग रहता है।

30 मई 1972

वॉचमैन नी की मृत्यु 30 मई 1972 को, लगभग बीस वर्ष के कारावास के बाद, आनहुई प्रान्त में हुई। वे अड़सठ वर्ष के थे।

उनके अन्तिम घण्टों की ठीक-ठीक परिस्थितियों का वर्णन बाद के वृत्तान्तों में अलग-अलग ढंग से किया गया है; कुछ कहते हैं कि उनकी मृत्यु तब हुई जब उन्हें चिकित्सा के लिए ले जाया जा रहा था। जो बात विवाद से परे है, वह यह है कि उनकी मृत्यु राज्य की हिरासत में हुई—उन कलीसियाओं से अलग, जिनकी उन्होंने सेवा की थी, और उस पत्नी से भी, जिसकी मृत्यु उनसे कुछ ही समय पहले हो चुकी थी।

कोई विजयी वापसी-सम्मेलन नहीं हुआ।

इकट्ठे हुए अनुयायियों के सामने कोई अन्तिम उपदेश नहीं।

अपनी पुस्तकों को संशोधित करने, आलोचकों को उत्तर देने, विवादित आरोपों को स्पष्ट करने, या जेल ने उन्हें जो सिखाया उसका सार बताने का कोई अवसर नहीं।

इतिहास प्रायः हमें वह अन्त नहीं देता जो हम स्वयं लिखते।

क्या वे शहीद थे?

बहुत से मसीही नी को शहीद कहते हैं। यह शब्द व्यापक अर्थ में ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग हो सकता है जो मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता के कारण दुःख उठाता और मरता है। इस अर्थ में, उनके दशकों के कारावास और विश्वास न छोड़ने के इनकार के कारण विश्वासी स्वाभाविक रूप से उन्हें शहीद के रूप में सम्मान देते हैं।

ऐतिहासिक रूप से, उनके कारावास में राजनीतिक और आर्थिक आरोप भी सम्मिलित थे, केवल मसीही होने का सीधा-सा आरोप नहीं। फिर भी स्वतन्त्र धार्मिक नेतृत्व के विरुद्ध साम्यवादी राज्य का अभियान ही निर्णायक पृष्ठभूमि था।

धार्मिक सताव को पहचानने के लिए हर विवादित आरोप का निपटारा करना आवश्यक नहीं।

मसीही कलीसिया को "शहीद" शब्द का प्रयोग कृतज्ञता और गम्भीरता दोनों के साथ करना चाहिए। शहादत शहीद के हर मत या हर कार्य को पवित्र नहीं ठहरा देती। पतरस और पौलुस सन्त थे, पर प्रेरितीय प्रेरणा के बाहर वे अचूक नहीं थे। विश्वासयोग्य दुःख उठाना दुःख उठाने वाले से आगे मसीह की ओर संकेत करता है।

बन्द द्वार का धर्मविज्ञान

नी ने विजय सिखाई थी। जेल पराजय जैसी दिख सकती थी।

उन्होंने मसीह की देह के विषय में सिखाया था। वे देह से अलग कर दिए गए।

उन्होंने सेवकाई सिखाई थी। उनकी सेवकाई को चुप करा दिया गया।

उन्होंने विश्वास सिखाया था। रिहाई नहीं आई।

उन्होंने चंगाई सिखाई थी। उनकी देह क्षीण होती गई।

उन्होंने अधिकार सिखाया था। अधिकार ने उन्हें कैद कर दिया।

उन्होंने पुनरुत्थान सिखाया था। उनकी मृत्यु हो गई।

ठीक यहीं मसीही धर्मविज्ञान नारों से बढ़कर कुछ बनता है। पुनरुत्थान का अर्थ यह नहीं कि विश्वासी मृत्यु से बच जाते हैं। इसका अर्थ है कि मृत्यु अन्तिम नहीं है। विजय का अर्थ यह नहीं कि सताने वाले कोठरी पर ताला नहीं लगा सकते। इसका अर्थ है कि कोई जेल विश्वासी को मसीह से अलग नहीं कर सकती।

रोमियों 8 में पौलुस का चरम-बिन्दु यहाँ उपयुक्त है: "न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य ... हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी" (रोमियों 8:38-39)।

नी की कोठरी उसी प्रतिज्ञा के भीतर थी।

दुःख का छिपा हुआ फल

हम यह नहीं माप सकते कि नी के जेल के वर्षों ने उनके आस-पास के लोगों में कितना आत्मिक फल उत्पन्न किया। साथी कैदियों और पहरेदारों के विषय में कहानियाँ प्रचलित हैं, परन्तु प्रमाण खण्डित हैं। इतिहासकार को बढ़ा-चढ़ाकर कहने से बचना चाहिए।

फल के एक रूप को हम माप सकते हैं: उनका दुःख उनकी शिक्षा के ग्रहण किए जाने से अभिन्न हो गया। पाठकों का सामना केवल क्रूस के सिद्धान्त से नहीं, बल्कि एक ऐसे शिक्षक से हुआ जिसने लम्बे समय तक हानि सही थी।

इससे हर सिद्धान्त सही नहीं हो जाता। पर यह सन्देश को अस्तित्वगत वज़न देता है।

गेहूँ का दाना भूमि में पड़ चुका था।

जेल से परे स्वतन्त्रता

मसीही आशा किसी कैदी की राख पर समाप्त नहीं होती। "यदि हम विश्वास करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा" (1 थिस्सलुनीकियों 4:14)।

मसीही अंगीकार के अनुसार, नी की अन्तिम स्वतन्त्रता चीनी जनवादी गणराज्य ने नहीं दी। वह मसीह में पुनरुत्थान की आशा थी।

इस दावे को राजनीतिक इतिहास से सत्यापित नहीं किया जा सकता; यह उस विश्वास से सम्बन्धित है जिसका नी ने अंगीकार किया।

एक धर्मनिरपेक्ष जीवनी मृत्यु का वर्णन कर सकती है। एक मसीही जीवनी को यह भी बताना चाहिए कि नी क्यों विश्वास करते थे कि मृत्यु अन्तिम अध्याय नहीं है।

अब उनका जीवन विरासत में बदल गया—पुस्तकों, कलीसियाओं, शिष्यों, विवादों, अनुवादों, प्रशंसकों, आलोचकों और महाद्वीपों में फैले आत्मिक वंशजों का एक उत्तर-जीवन।

वह मनुष्य चला गया था। उनके उठाए प्रश्न बने रहे।

समय का आत्मिक अर्थ

बीस वर्ष इतना लम्बा समय है कि एक शिशु वयस्क हो जाए, राजनीतिक आन्दोलन उठें और गिरें, और मण्डलियों में पीढ़ियाँ बदल जाएँ। जेल के समय को उसकी नैतिक गम्भीरता खोए बिना एक अनुच्छेद में समेटा नहीं जा सकता।

नी 1950 के दशक के आरम्भ में, महान छलांग (ग्रेट लीप फ़ॉरवर्ड) और सांस्कृतिक क्रान्ति से पहले, हिरासत में गए, और उनकी मृत्यु उस वर्ष हुई जिस वर्ष राष्ट्रपति निक्सन ने चीन की ऐतिहासिक यात्रा की। उनके बन्दी-जीवन के बाहर पूरा देश उनके चारों ओर बदल गया।

बाइबल में प्रतीक्षा केवल नाटकीय छुटकारों से नहीं, बल्कि वर्षों से मापी जाती है। अब्राहम ने इसहाक की प्रतीक्षा की। यूसुफ ने मिस्र में प्रतीक्षा की। इस्राएल ने बँधुआई में प्रतीक्षा की।

"मेरे दिन तेरे हाथ में है" (भजन संहिता 31:15)।

यह अंगीकार तब महँगा पड़ता है जब हमारे दिन प्रशासनिक रूप से किसी और मनुष्य के हाथों में भी हों।

संसार द्वारा भुलाए गए, परमेश्वर द्वारा स्मरण किए गए

यूसुफ ने पिलानेहारों के प्रधान से विनती की थी कि वह उसे स्मरण रखे, "फिर भी पिलानेहारों के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रखा; परन्तु उसे भूल गया" (उत्पत्ति 40:23)।

जेल ओझल हो जाने का भय उत्पन्न कर सकती है। सार्वजनिक आन्दोलन चलते रहते हैं; नये अगुवे उभरते हैं; मित्र मर जाते हैं; समाज भूल जाता है।

मसीही आशा कहती है कि परमेश्वर का स्मरण भिन्न है। "परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम ने उसके नाम के लिये इस रीति से दिखाया" (इब्रानियों 6:10)।

एक विश्वासी इतिहास द्वारा भुलाया जा सकता है, और फिर भी परमेश्वर द्वारा स्मरण किया जाता है।

यह जेल में दिए गए नी के सबसे महत्त्वपूर्ण उपदेशों में से एक हो सकता है, यद्यपि उन्होंने इसे कभी सार्वजनिक रूप से नहीं सुनाया।

जो हम नहीं जानते

ईमानदार जीवनी को मौन की रक्षा करनी चाहिए। हम नहीं जानते कि जेल में नी ने क्या-क्या सोचा। हम हर परीक्षा, सन्देह, बातचीत या आत्मिक विजय को नहीं जानते। कहानी को सन्तोषजनक बनाने के लिए हमें वीरतापूर्ण प्रसंग नहीं गढ़ने चाहिए।

जो अज्ञात है, वह उनकी मानवता की रक्षा करता है।

विश्वासयोग्यता के लिए यह आवश्यक नहीं कि वे हर दिन स्वयं को बलवान अनुभव करें। एलिय्याह निराश हुआ। यिर्मयाह ने विलाप किया। पौलुस ने भय को जाना।

धीरज का अर्थ है इन सब के बीच मसीह का बने रहना।

उपयोगिता की अन्तिम परीक्षा के रूप में जेल

1952 में नी की गिरफ़्तारी ने बुलाहट और परिस्थिति के बीच एक क्रूर विरोधाभास खड़ा कर दिया। उन्होंने दशकों तक शिक्षा देने, प्रकाशन करने, यात्राएँ करने, कलीसियाओं को व्यवस्थित करने, सेवकों को प्रशिक्षित करने और सिद्धान्त-सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर देने में बिताए थे। जेल ने इनमें से लगभग सभी गतिविधियाँ छीन लीं। जिस मनुष्य की पहचान मसीही सेवा से गहराई से बँधी थी, वह ऐसे वर्षों में प्रवेश कर गया जिनमें दिखाई देने वाली सेवा पर कठोर रोक थी।

यही एक कारण है कि उनका अन्तिम दौर चीनी राजनीतिक इतिहास की विशेष बातों से परे भी बोलता है। बहुत से मसीही अन्ततः इसी प्रश्न के किसी छोटे रूप का सामना करते हैं। जब भूमिका छिन जाए, तब क्या बचता है? बीमारी किसी का करियर समाप्त कर देती है। सेवानिवृत्ति अधिकार छीन लेती है। माता या पिता दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं। एक सेवक अपना मंच खो देता है। एक व्यापारिक अगुवा अब उस कमरे में नहीं रहता जहाँ निर्णय लिए जाते हैं। यदि उपयोगिता ही पहचान बन गई हो, तो कार्य का खोना स्वयं का खोना बन जाता है।

नी की अपनी शिक्षा ने एक उत्तर तैयार कर रखा था: विश्वासी की पहली पहचान मसीह में है, न कि किसी कार्यभार में। "क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है" (कुलुस्सियों 3:3)। छिपा हुआ जीवन भी जीवन ही है।

जेल के वर्षों को रूमानी रंग नहीं देना चाहिए। कैद अभाव है। नी अपनी पत्नी चैरिटी से लम्बे समय तक और उन समुदायों से अलग रहे जिनकी उन्होंने सेवा की थी। उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। राजनीतिक व्यवस्था अनुरूपता चाहती थी और प्रतिरोध तोड़ने के लिए दण्ड का प्रयोग करती थी। विस्तृत और विश्वसनीय अभिलेखों के अभाव का अर्थ है कि बाद के प्रशंसकों को ऐसे प्रेरणादायक दृश्य गढ़ने से बचना चाहिए जिनका कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता।

जो ज्ञात है, वही पर्याप्त सामर्थी है। नी लगभग दो दशक तक कैद में रहे। उन्हें सार्वजनिक सेवकाई में फिर से बहाल नहीं किया गया। जीवन के अन्तिम दौर में उन्होंने कोई विजयी दौरा नहीं किया। 1972 में कैद में ही उनकी मृत्यु हो गई।

धर्मविज्ञान की दृष्टि से, यह बुलाहट के विषय में होने वाली बहुत-सी मसीही बातचीत में छिपी एक धारणा को उजागर करता है: कि विश्वासयोग्यता को दिखाई देने वाले रूप में उत्पादक बने रहना चाहिए। इब्रानियों 11 इस सौदे को ठुकरा देता है। कुछ लोगों ने विश्वास के द्वारा "राज्य जीते" और "प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ प्राप्त कीं"; दूसरों को यातनाएँ दी गईं, वे कैद किए गए, कंगाल हुए और मार डाले गए, और अपने पार्थिव रूप में "उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली" (इब्रानियों 11:33-39)। यह अध्याय दोनों समूहों को विश्वासयोग्य कहता है।

जब नी को चुप करा दिया गया, तब उनका अन्तरराष्ट्रीय प्रभाव वास्तव में बढ़ा। पहले प्रचार किए गए सन्देश अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं में प्रसारित हुए। सामान्य मसीही जीवन उन पाठकों तक पहुँची जिनका चीनी कलीसियाई इतिहास से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। यह विडम्बना उनके धर्मविज्ञान से मेल खाती है: सेवक बँधा था, जबकि वचन यात्रा कर रहा था।

पौलुस ने कैद में से लिखा, "परमेश्वर का वचन कैद नहीं" (2 तीमुथियुस 2:9)। नी के पास पौलुस के समान कोई धर्मशास्त्रीय कैद-पत्री रचने की स्वतन्त्रता नहीं थी, परन्तु यह सिद्धान्त दूसरे ढंग से सत्य सिद्ध हुआ। छपे हुए सन्देशों ने वे सीमाएँ पार कीं जिन्हें उनकी देह पार नहीं कर सकती थी।

नी से जुड़ा बताया जाने वाला अन्तिम नोट बीमारी और मृत्यु के बावजूद मसीह में अटल विश्वास प्रकट करता था। इसकी सामर्थ वाक्पटुता में कम और निरन्तरता में अधिक है। जिस

शिक्षक ने जीवन भर कहा कि मसीह पर्याप्त है, वह अन्त तक पहुँचकर भी मसीह का अंगीकार कर रहा था।

यहाँ जीवनी-लेखक को संयम रखना चाहिए। हम जेल में नी के भीतरी जीवन का हर क्षण नहीं जानते। विश्वासयोग्य मसीही भी निराशा, उलझन, भय और शोक का अनुभव कर सकते हैं। दृढ़ बने रहने के लिए निर्बाध भावनात्मक विजय आवश्यक नहीं। भजन संहिता ऐसे विश्वासियों से भरी है जो पूछते हैं कि परमेश्वर अनुपस्थित क्यों प्रतीत होता है।

स्वयं यीशु ने पुकारकर कहा, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46)—वे भजन संहिता 22 को उद्धृत कर रहे थे। मसीही धीरज निर्विकार संयमवाद नहीं है। यह अन्धकार के बीच भी परमेश्वर का बने रहना है।

जेल नी के सेवकाई और जीवन के बीच किए गए भेद की अन्तिम परीक्षा बन गई। यदि मसीह केवल उनकी सेवकाई के पीछे की सक्षम करने वाली सामर्थ होता, तो सेवकाई का खो जाना सब कुछ खाली कर सकता था। यदि मसीह जीवन था, तो एक कोठरी भी अन्ततः केन्द्र को नहीं हटा सकती थी।

इससे कोठरी अच्छी नहीं हो जाती। इसका अर्थ है कि कोठरी सर्वोपरि नहीं थी।

वॉचमैन नी की विरासत

वह शिक्षक जो अपनी स्वतन्त्रता से अधिक जीवित रहा

वॉचमैन नी की मृत्यु 1972 में हुई, और वे यह नहीं जान पाए कि उनके लेख कितनी दूर तक पहुँचेंगे। उनकी सार्वजनिक सेवकाई बीस वर्ष पहले ही समाप्त हो चुकी थी, फिर भी उनका प्रभाव नई भाषाओं, सम्प्रदायों, देशों और पीढ़ियों में प्रवेश कर रहा था।

उनकी पुस्तकें इवैंजेलिकल घरों, मिशनरी प्रशिक्षण कार्यक्रमों, करिश्माई संगतियों, ब्रदरन मण्डलियों, स्वतन्त्र कलीसियाओं और स्थानीय कलीसिया आन्दोलन से सीधे जुड़े समुदायों में आम हो गईं। जो पाठक आधुनिक चीनी इतिहास के विषय में बहुत कम जानते थे, उनका सामना भी "मसीह जीवन के रूप में," "सामान्य मसीही जीवन," "बैठो, चलो, खड़े रहो," "बाहरी मनुष्य का टूटना," और "आत्मा का मुक्त होना" जैसे वाक्यांशों से हुआ।

हाल के शोध इस बात पर बल देते हैं कि उनकी रचनाओं की यह स्वीकृति विश्व भर में कितनी उल्लेखनीय रूप से विविध रही है। नी की रचनाओं ने ऐसे पाठकों को भी आकर्षित किया है जिन्होंने कलीसिया के विषय में उनकी शिक्षा को कभी नहीं अपनाया, और ऐसे विश्वासियों को भी जो उन्हें लगभग केवल एक भक्तिपूर्ण शिक्षक के रूप में जानते हैं।

बीसवीं सदी के बहुत कम चीनी मसीही अगुवों को विश्व भर में ऐसा साहित्यिक उत्तर-जीवन मिला है।

विश्वव्यापी मसीहियत में एक चीनी स्वर

सदियों तक मसीही पुस्तकों का प्रवाह चीन की ओर मुख्यतः पश्चिम से पूर्व की ओर चलता रहा। नी इस धारा के उलटने का एक भाग बन गए। एक चीनी शिक्षक, जो पश्चिमी इवैंजेलिकल स्रोतों से गहराई से प्रभावित था परन्तु चीनी कलीसिया के अनुभव में से लिखता था, वापस पश्चिमी भाषाओं में अनुवादित हुआ और फिर संसार भर में पहुँचाया गया।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह महत्त्वपूर्ण है। मसीहियत कोई पश्चिमी धर्म नहीं है जिसे किसी एक सांस्कृतिक केन्द्र से स्थायी रूप से निर्यात किया गया हो। यह विश्वास मध्य पूर्व में आरम्भ हुआ, अफ्रीका, एशिया और यूरोप में फैला, और सदा से संस्कृतियों के माध्यम से अनुवादित होता आया है।

नी का अन्तरराष्ट्रीय प्रभाव मसीहियत के उस आधुनिक संसार का एक चिह्न बना जो दिन-प्रतिदिन अधिक बहुकेन्द्रीय होता जा रहा है।

एक राष्ट्र की कलीसिया दूसरे राष्ट्र की कलीसिया से ग्रहण करती है।

देह के विषय में पौलुस की भाषा पूरे संसार पर लागू होती है: "आँख हाथ से नहीं कह सकती, 'मुझे तेरा प्रयोजन नहीं'" (1 कुरिन्थियों 12:21)।

जो पश्चिमी मसीही कभी स्वयं को मुख्यत: भेजनेवाले समझते थे, उन्होंने अधिकाधिक यह पाया कि उन्हीं कलीसियाओं से शिक्षक निकल रहे हैं जिन्हें स्थापित करने में उन्होंने सहायता की थी।

विश्वव्यापी क्लासिक के रूप में सामान्य मसीही जीवन

नी से जुड़ी सब रचनाओं में *सामान्य मसीही जीवन* (The Normal Christian Life) सबसे अधिक प्रसिद्ध हुई। रोमियों 5-8 की इसकी व्याख्या ने एक सदा बनी रहनेवाली पास्टरीय समस्या का उत्तर दिया: ऐसे मसीही जो क्षमा को तो समझते हैं, परन्तु थका देनेवाले आत्म-प्रयास के सहारे जीते हैं।

इस पुस्तक की सामर्थ्य कुछ हद तक इसकी स्पष्टता में है। जानना, मानना, सौंपना (Know, Reckon, Present)। मसीह हमारे लिये मरा; हम मसीह के साथ मर गए। जो परमेश्वर ने पूरा कर दिया है, उसे स्वयं गढ़ने का प्रयत्न छोड़ दो। भीतर वास करनेवाले मसीह में से जीओ।

बहुत भिन्न धर्मवैज्ञानिक परम्पराओं के पाठक नी की व्यापक व्यवस्था के हर तत्व को स्वीकार किए बिना भी इससे लाभ उठा सकते थे।

इस पुस्तक की सीमाओं को भी स्वीकार करना चाहिए। इसकी विजय की भाषा को ऐसे समझा जा सकता है मानो वह एक ऐसे सहज पवित्रीकरण की प्रतिज्ञा करती हो जिसका समर्थन नये नियम के निरन्तर आत्मिक युद्ध वाले खण्ड नहीं करते। जो पाठक सिद्धतावाद

की ओर झुके होते हैं, वे "विश्राम" को एक नया मापदण्ड बना सकते हैं जिस तक वे पहुँच नहीं पाते।

परिपक्व पठन रोमियों 6 को गलातियों 5, 1 यूहन्ना 1 और जीवन भर की बढ़ोतरी के साथ जोड़ता है। पाप की प्रभुता से स्वतन्त्रता वास्तविक है; सतर्कता और पश्चाताप की आवश्यकता बनी रहती है।

बैठो, चलो, खड़े रहो

नी की तीन क्रियाएँ सम्भवतः शिक्षक के रूप में उनकी सबसे यादगार उपलब्धि हैं। वे इफिसियों का ऐसा सार प्रस्तुत करती हैं जो पौलुस के क्रम को पकड़ लेता है।

बैठो: उद्धार अनुग्रह और मसीह के साथ एकता में आरम्भ होता है।

चलो: अनुग्रह बदला हुआ आचरण उत्पन्न करता है।

खड़े रहो: विश्वासी मसीह की विजय के आधार पर बुराई का सामना करते हैं।

यह ढाँचा ठीक इसीलिए मूल्यवान बना रहता है क्योंकि यह तीन विकृतियों से बचाता है: अनुग्रह के बिना संघर्ष, आज्ञाकारिता के बिना अनुग्रह, और मसीह-केन्द्रित भरोसे के बिना आत्मिक युद्ध।

इसकी स्थायी उपयोगिता नी के एक वरदान को दर्शाती है: वे जटिल धर्मविज्ञान को ऐसे आत्मिक चित्रों में बदल सकते थे जिन्हें हर कोई अपने साथ ले जा सके।

मसीह जीवन के रूप में

नी की सबसे गहरी विरासत कोई कलीसियाई ढाँचा या मनोवैज्ञानिक प्रारूप नहीं है। वह यह आग्रह है कि मसीह स्वयं मसीही जीवन की विषय-वस्तु है।

"मसीह जो हमारा जीवन है" (कुलुस्सियों 3:4)।

यह बल मसीहियत को मात्र नैतिकता बना देने का विरोध करता है। विश्वासी केवल दूर से यीशु की नकल नहीं करते; आत्मा के द्वारा वे उसके जीवन में सहभागी होते हैं।

यह आत्मिक उपभोक्तावाद का भी विरोध करता है। हर आवश्यकता का उत्तर कोई नई तकनीक नहीं है। अन्ततः परमेश्वर अपना पुत्र देता है।

पौलुस कहता है, “उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धार्मिकता, और पवित्रता, और छुटकारा” (1 कुरिन्थियों 1:30)।

नी के सबसे सशक्त पृष्ठ मसीह को बड़ा और स्वयं को छोटा करते हैं।

यह ऐसी विरासत है जिसे सुरक्षित रखना उचित है।

क्रूस और स्वाभाविक बल

क्रूस पर नी की शिक्षा ने प्रतिभाशाली मसीहियों को यह पूछने की चुनौती दी कि सेवकाई कहाँ से आती है। स्वाभाविक योग्यता आत्मिक सामर्थ्य के समान नहीं है।

आधुनिक कलीसिया को इस चेतावनी की आवश्यकता है। नेतृत्व की व्यवस्थाएँ बुद्धिमत्ता, आकर्षक व्यक्तित्व, संवाद-कौशल, रणनीतिक दृष्टि और उद्यमी क्षमता को तो पहचान सकती हैं, परन्तु नम्रता, कोमलता, संयम और परमेश्वर पर निर्भरता को चूक सकती हैं।

यीशु का राज्य बार-बार दिखाई देनेवाले मापदण्डों को उलट देता है।

“धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं” (मत्ती 5:3)।

एक अगुवा भीतर से अटूटा रहते हुए भी एक बड़ी सेवकाई खड़ी कर सकता है। विस्तार आत्मिक अधिकार का प्रमाण नहीं है।

इसलिए बाहरी मनुष्य के विषय में नी का सन्देश व्यक्तिगत ब्रांडों और डिजिटल मंचों के इस युग में प्रासंगिक है। पहुँच जितनी बड़ी होगी, क्रूस की आवश्यकता भी उतनी ही बड़ी होगी।

टूटेपन की भाषा का जोखिम

साथ ही, आधुनिक पाठकों को “टूटेपन” के दुरुपयोगी प्रयोगों को अस्वीकार करना होगा।

नम्रता का परमेश्वर का कार्य अधिकारवादी अगुवों को सौंपा नहीं जा सकता। किसी पास्टर को यह अधिकार नहीं कि वह सदस्यों को तोड़ने के लिये उन्हें अपमानित करे। कोई जीवनसाथी आत्मिक भाषा का उपयोग करके दुर्व्यवहार के आगे झुकने की माँग नहीं कर सकता। कोई समुदाय प्रश्नों को केवल इसलिए “विद्रोह” नहीं कह सकता कि अगुवों को वे असुविधाजनक लगते हैं।

यीशु सांसारिक शासकों के विषय में कहता है, “वे उन पर प्रभुता करते हैं ... पर तुम में ऐसा नहीं है” (मरकुस 10:42-43)।

नी को आज फिर से अपनाने का कोई भी प्रयास अधिकार की हर शिक्षा के साथ इस वाक्य को रखे।

आत्मा, प्राण और देह पर पुनर्विचार

नी का त्रिभागी मानव-विज्ञान उनकी सबसे अधिक विवादित विरासतों में से एक बना हुआ है। कुछ पाठकों को यह स्पष्टता देनेवाला और जीवन बदल देनेवाला लगता है। दूसरे इसे अत्यधिक कठोर और पवित्रशास्त्र की विविध भाषा में अपर्याप्त रूप से आधारित मानते हैं।

हाल के अकादमिक अध्ययन ने यह उजागर किया है कि नी के धर्मविज्ञान में मानवीय आत्मा कितनी केन्द्रीय थी, और उन्होंने इस भेद को पहले के मसीही लेखकों से आगे कितनी रचनात्मकता से विकसित किया।

एक सन्तुलित मूल्यांकन पूरे मानचित्र को स्वीकार किए बिना भी कई अन्तर्दृष्टियों की पुष्टि कर सकता है:

मनुष्य में परमेश्वर की ओर उन्मुख एक आत्मिक आयाम है। नया जन्म पवित्र आत्मा का कार्य है। स्वाभाविक भावना और बुद्धि आत्मिकता की नकल कर सकती हैं। विश्वासियों को विवेक की आवश्यकता है। पूरे व्यक्ति को परमेश्वर के पवित्र करनेवाले कार्य के अधीन आना चाहिए।

साथ ही, बाइबल हमसे यह माँग नहीं करती कि हम हर भीतरी घटना को आत्मा, प्राण या देह के रूप में वर्गीकृत करें। मन और भावनाएँ आत्मिक जीवन की शत्रु नहीं हैं। मनुष्य एक समन्वित प्राणी है।

कसौटी फल है।

स्थानीय कलीसिया का दर्शन

नी की कलीसिया-विज्ञान ने हज़ारों चीनी विश्वासियों को ऐसे कलीसियाई जीवन की कल्पना करने में सहायता दी जो मिशनरियों पर स्थायी निर्भरता से मुक्त हो। उन्होंने स्थानीय नेतृत्व,

स्वदेशी आर्थिक सहायता, साधारण सदस्यों की सेवकाई, साप्ताहिक प्रभु-भोज, और मसीह की एक ही देह पर बल दिया।

इन सिद्धान्तों ने कलीसियाई जीवन के एक ऐसे रूप में योगदान दिया जो तीव्र राजनीतिक उथल-पुथल में भी टिका रह सका।

फिर भी एक-नगर-एक-कलीसिया के सिद्धान्त ने अलगाववादी प्रवृत्तियों को भी जन्म दिया। जो आन्दोलन सम्प्रदायों को अस्वीकार करता है, वह स्वयं एक ऐसा सम्प्रदाय बन सकता है जो यह नाम स्वीकार करने से इनकार करता है। कलीसिया के अद्वितीय उचित "आधार" का प्रतिनिधित्व करने के दावे आन्दोलन के बाहर के सच्चे विश्वासियों को छोटा ठहरा सकते हैं।

इसलिए नी की सबसे अच्छी कलीसियाई विरासत किसी एक शासन-व्यवस्था से अधिक व्यापक है: उन सबको ग्रहण करो जिन्हें मसीह ग्रहण करता है, हर सदस्य को कार्य करने के लिये तैयार करो, व्यक्ति-पूजा को अस्वीकार करो, दृश्य एकता की खोज करो, और मसीह को सिर बनाओ।

विटनेस ली और स्थानीय कलीसियाएँ

मुख्य भूमि चीन के बाहर विटनेस ली नी की संगठनात्मक और धर्मवैज्ञानिक धारा के सबसे प्रभावशाली उत्तराधिकारी बने। ताइवान में और बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका में सेवकाई के द्वारा ली ने एक विश्वव्यापी नेटवर्क विकसित किया जिसे सामान्यतः स्थानीय कलीसियाएँ कहा जाता है।

समर्थक ली को नी के दर्शन को विश्वासयोग्यता से आगे बढ़ाने और विस्तार देनेवाले के रूप में देखते हैं। आलोचकों का तर्क है कि कुछ महत्त्वपूर्ण बल अधिक केन्द्रीकृत या अलगाववादी हो गए। यह इतिहास जटिल है और नी पर केन्द्रित किसी जीवनी की सीमा से आगे तक जाता है।

यहाँ महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नी की विरासत केवल साहित्यिक नहीं रही। वह संस्थागत और अन्तरराष्ट्रीय बन गई।

इसका अर्थ यह है कि नी के मूल्यांकन प्रायः उनके अनुयायियों से जुड़े बाद के विवादों में उलझ जाते हैं। ऐतिहासिक निष्पक्षता की माँग है कि जो नी ने स्वयं सिखाया, उसे उनके कारावास के बाद हुए विकासों से अलग करके देखा जाए।

एक संस्थापक अपने उत्तराधिकारियों को प्रभावित तो करता है, परन्तु आगे चलकर वे जो कुछ बनते हैं, उस सब पर उसका नियन्त्रण नहीं होता।

चीनी घरेलू कलीसिया की कहानी

यह सोचना लुभावना है कि नी से लेकर माओ के बाद चीन में अपंजीकृत कलीसियाओं की असाधारण बढ़ोतरी तक एक सीधी रेखा खींची जाए। सच्चाई इससे अधिक विविध है। चीनी घरेलू मसीहियत में अनेक परम्पराएँ, अगुवे, क्षेत्र और नेटवर्क सम्मिलित हैं जिन्हें "लिटिल फ्लॉक" (छोटा झुण्ड) तक सीमित नहीं किया जा सकता।

फिर भी, नी का आन्दोलन एक महत्त्वपूर्ण धारा था। इसकी विकेन्द्रीकृत सभाएँ, साधारण विश्वासियों का नेतृत्व, स्वदेशी आर्थिक व्यवस्था, कण्ठस्थ की गई शिक्षा, और आत्मिक जीवन पर बल ऐसी परिस्थितियों में अनुकूल सिद्ध हुए जिनमें कलीसिया के औपचारिक ढाँचे बन्द किए जा सकते थे।

जब भवन लुप्त हो जाते हैं, तब घरों में इकट्ठा होना जाननेवाले विश्वासी कलीसिया बने रहते हैं।

"जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ" (मत्ती 18:20)।

यह पद घरेलू कलीसिया की शासन-व्यवस्था निर्धारित नहीं करता, परन्तु यह व्यक्त करता है कि मसीह की उपस्थिति भवनों पर निर्भर नहीं, वरन् उनसे स्वतन्त्र है।

बोली गई सेवकाई से संकलित पुस्तकें

पाठकों को समझना चाहिए कि नी के नाम से प्रकाशित अनेक अंग्रेज़ी पुस्तकें उपदेशों, सम्मेलन-नोट्स, पत्रिकाओं और बाद के सम्पादकीय संकलनों से तैयार की गईं। यह आवश्यक नहीं कि उन्होंने हर खण्ड को उसी पुस्तक-रूप में लिखा हो जिसमें पाठक अब उसे पाते हैं।

व्याख्या के लिये यह महत्त्वपूर्ण है। एक बोले गए सन्देश में ऐसे नाटकीय विरोधाभास हो सकते हैं जिन्हें कोई लेखक एक व्यवस्थित ग्रन्थ में सीमित करके कहता। सम्पादकीय निर्णय शीर्षकों, संरचना और बल को प्रभावित कर सकते हैं।

इसलिए गम्भीर पाठकों को विभिन्न रचनाओं की शिक्षाओं की तुलना करनी चाहिए और अलग-थलग वाक्यों पर बड़े सिद्धान्त खड़े करने से बचना चाहिए।

यह वही सिद्धान्त है जो हम किसी भी प्रभावशाली शिक्षक पर लागू करते हैं: सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण है।

विवाद और नैतिक आरोप

कोई भी उत्तरदायी आधुनिक जीवनी 1940 और 1950 के दशकों में नी पर लगाए गए व्यावसायिक आचरण और यौन व्यवहार सम्बन्धी गम्भीर आरोपों की अनदेखी नहीं कर सकती। इस विषय में स्रोत तीव्र रूप से असहमत हैं कि इनमें से कितना तथ्य के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

साम्यवादी राज्य द्वारा बलपूर्वक निन्दा-अभियानों और वैचारिक दिखावटी मुकदमों का उपयोग सन्देह को आवश्यक बना देता है। साथ ही, आन्दोलन के आधिकारिक वृत्तान्तों के बाहर के कुछ जीवनी-स्रोत यह तर्क देते हैं कि दुराचरण के प्रमाण राज्य द्वारा पूरी तरह गढ़े गए आरोपों से परे भी विद्यमान थे।

इस पुस्तक ने वहाँ निश्चितता घोषित न करने का निर्णय लिया है जहाँ प्रमाणों का इतिहास अब भी विवादित है।

मसीही प्रत्युत्तर बचाव करनेवाली नायक-पूजा नहीं होना चाहिए। यदि आरोप झूठे थे, तो सत्य को छिपाव की आवश्यकता नहीं। यदि उनमें से कोई सच था, तो अनुग्रह इनकार की माँग नहीं करता।

पवित्रशास्त्र के नायकों को सँवारकर प्रस्तुत नहीं किया गया है। नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद, पतरस और अन्य अपनी असफलताओं के उजागर होने के साथ ही दिखाई देते हैं। सत्य बताने की बाइबल की तत्परता उसकी नैतिक सामर्थ्य का भाग है।

एक परिपक्व विरासत ईमानदारी को सह सकती है।

अधिकार: अन्तर्दृष्टि और खतरा

आत्मिक अधिकार पर नी की शिक्षा ने सम्भवतः उनके सब सिद्धान्तों में सबसे बड़ा व्यावहारिक लाभ और सबसे बड़ी सम्भावित हानि, दोनों उत्पन्न किए हैं।

लाभ यह है कि यह स्वायत्त व्यक्तिवाद का एक आवश्यक सुधार है। मसीही समुदायों के सदस्य होते हैं, प्राचीनों का आदर करते हैं, सुधार ग्रहण करते हैं, दूसरों के साथ तालमेल से काम करते हैं, और अधीनता सीखते हैं।

खतरा अधिकारवाद है।

कोई भी सिद्धान्त जो विश्वासियों को अगुवों के निर्देशों को व्यवहार में परमेश्वर की वाणी के बराबर मानने के लिये प्रोत्साहित करता है, दुर्व्यवहार के लिये परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है।

बाइबल के सुरक्षा-उपाय स्पष्ट हैं:

अगुवे झुण्ड पर प्रभुता न जताएँ। प्राचीनों को डाँटा जा सकता है। प्रेरितों की शिक्षा को भी पवित्रशास्त्र के आधार पर परखा जा सकता है। जब आज्ञाएँ टकराती हैं, तब विश्वासी मनुष्यों की नहीं, परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं। विवेक का स्वामी केवल मसीह है।

आत्मिक अधिकार वास्तविक है, परन्तु वह क्रूस पर चढ़ाया गया अधिकार है।

धर्मवैज्ञानिक मौलिकता और उधार

नी ने बहुत व्यापक रूप से पढ़ा और ब्रदरन, केज़िक, पवित्रता-आन्दोलन, भक्ति-साहित्य, सहस्राब्दी-पूर्ववादी और अन्य लेखकों के विचारों को आत्मसात किया। विद्वानों ने उनकी रचनाओं और पश्चिमी लेखकों की रचनाओं के बीच समानताएँ खोजी हैं।

इससे न तो ठोकर खानी चाहिए और न इसकी अनदेखी करनी चाहिए। धर्मविज्ञान का इतिहास उधार, अनुवाद, संश्लेषण और अनुकूलन से भरा है। ऑगस्टीन ने अपने पूर्ववर्तियों को पढ़ा। धर्मसुधारकों ने ऑगस्टीन को पढ़ा। वेस्ली ने दूसरों की रचनाओं का सम्पादन करके उन्हें फिर से प्रकाशित किया। मिशनरी मसीहियत विशेष रूप से अन्तरराष्ट्रीय है।

नैतिक प्रश्न श्रेय देने का है; ऐतिहासिक प्रश्न रचनात्मकता का।

नी का महत्त्व हर घटक का आविष्कार करने में कम, और चीनी मसीहियत के भीतर विचारों को इस प्रकार जोड़ने, तीव्र करने, अनुवादित करने और लागू करने में अधिक है कि उससे एक टिकाऊ धर्मवैज्ञानिक संसार बन गया।

वे असाधारण सामर्थ्य वाले संश्लेषक थे।

जो नी ने स्पष्ट देखा

कई दृढ़ विश्वास स्थायी कृतज्ञता के योग्य हैं।

उन्होंने देखा कि मसीहियत मसीह है, न कि केवल मसीह के विषय में सिद्धान्त।

उन्होंने देखा कि अनुग्रह प्रयास से पहले आता है।

उन्होंने देखा कि मसीह के साथ एकता पवित्रीकरण को बदल देती है।

उन्होंने देखा कि कलीसिया श्रोताओं का समूह नहीं, वरन् एक देह है।

उन्होंने देखा कि साधारण विश्वासी याजक और सेवक हैं।

उन्होंने देखा कि बाहर से आई मसीहियत को विश्वव्यापी कलीसिया की एकता खोए बिना स्वदेशी बनना चाहिए।

उन्होंने देखा कि स्वाभाविक प्रतिभा पवित्र आत्मा का स्थान नहीं ले सकती।

उन्होंने देखा कि क्रूस पापी के साथ-साथ सेवक पर भी लागू होता है।

उन्होंने देखा कि दुःख किसी विश्वासी को परमेश्वर के उद्देश्य से बाहर नहीं कर देता।

ये अन्तर्दृष्टियाँ बताती हैं कि पाठक बार-बार उनकी ओर क्यों लौटते हैं।

जहाँ नी को सुधार की आवश्यकता है

प्रशंसा के लिये विवेकपूर्ण परख भी आवश्यक है।

आत्मा और प्राण के बीच उनके भेद पवित्रशास्त्र की सटीकता से आगे बढ़ सकते हैं।

उनका स्थानीय कलीसिया का सिद्धान्त अलगाववादी बन सकता है।

अधिकार पर उनकी शिक्षा को खतरनाक रूप से पदानुक्रमिक ढंग से लागू किया जा सकता है।

उनकी विजय की भाषा को ऐसे समझा जा सकता है मानो वह पाप के साथ निरन्तर संघर्ष को हल्का करती हो।

भीतरी आत्मिक अन्तर्ज्ञान पर उनकी निर्भरता के साथ सामूहिक विवेक, मनोवैज्ञानिक जटिलता और बुद्धि के साधारण साधनों पर अधिक बल दिए जाने की आवश्यकता है।

उनके आन्दोलन का प्रबल, संस्थापक-केन्द्रित नेतृत्व यह प्रश्न उठाता है कि क्या उसका व्यवहार सदा मसीह के अधीन एक देह के उसके सिद्धान्त से मेल खाता था।

ये बातें कहना उन्हें छोटा करना नहीं है। यह उन्हें वैसे ही पढ़ना है जैसे वे चाहते थे कि पवित्रशास्त्र पढ़ा जाए: गम्भीरता से।

नी और पवित्रशास्त्र

नी का जीवन बाइबल के चारों ओर निर्मित था। उन्होंने पवित्रशास्त्र को कण्ठस्थ किया, उसका अध्ययन किया, उसकी तुलना की, उसे सिखाया, और पवित्रशास्त्र-केन्द्रित सामग्री प्रकाशित की। वे विश्वास करते थे कि पवित्र आत्मा विश्वासियों के लिये वचन को जीवित बना देता है।

इसलिए पाठक उन्हें जो सबसे बड़ा सम्मान दे सकते हैं, वह यह है कि वे उनकी पुस्तकों को बाइबल के अधीन रखें।

बिरीया के लोगों ने "बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें ऐसी ही हैं कि नहीं" (प्रेरितों के काम 17:11)।

यह दृष्टिकोण खुलेपन और परख को एक साथ जोड़ता है।

नी को तत्परता से पढ़ो। पवित्रशास्त्र से परखो। जो अच्छा है उसे थामे रहो।

पहरुए का चित्र

नी का चुना हुआ नाम, तुओशेंग, पहरुए के खड़ताल की उस ध्वनि का स्मरण कराता था जो सोनेवालों को जगाने के लिये पुकारती है। अंग्रेज़ी नाम वॉचमैन (पहरुआ) ने उसी बुलाहट को व्यक्त किया।

यह चित्र उनकी सेवकाई पर सटीक बैठने लगा। उन्होंने मसीहियों को पुकारा कि वे दूसरों से उधार लिए धर्म, आत्म-प्रयास, साम्प्रदायिक घमण्ड, स्वाभाविक बल और आत्मिक निष्क्रियता की नींद से जागें।

यहेजकेल का पहरुआ खतरे के प्रति सजग खड़ा रहता है। पौलुस कहता है, "हे सोनेवाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी" (इफिसियों 5:14)।

नी की आवाज़ कभी-कभी कठोर हो सकती थी, क्योंकि जब नगर सोता है तो पहरुए फुसफुसाते नहीं।

फिर भी अन्तिम सन्देश चेतावनी नहीं था। वह मसीह था।

अन्तिम सरलता

एक जटिल जीवन के अन्त में, नी के तकिये के नीचे मिली बताई जानेवाली अन्तिम घोषणा सबसे सरल मसीही अंगीकार पर केन्द्रित थी: यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है; वह पापियों के लिये मरा; वह जी उठा; नी उस पर विश्वास करते हुए मरे।

यह सरलता हमें विरासत की बातों को क्रम देने में सहायता करती है।

आत्मा, प्राण और देह गौण हैं।

स्थानीयता गौण है।

कलीसिया का प्रशासन गौण है।

भविष्यवाणी सम्बन्धी योजनाएँ गौण हैं।

टूटेपन की भाषा भी गौण है।

मसीह केन्द्र है।

पौलुस कहता है, "मैंने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ" (1 कुरिन्थियों 2:2)।

एक जीवन जिससे सीखें, जिसकी यान्त्रिक नकल न करें

जीवनियाँ पाठकों को नकल करने के लिये ललचाती हैं। परन्तु परमेश्वर को एक और वॉचमैन नी की आवश्यकता नहीं है। उनकी विशेष बुलाहट बीसवीं सदी के चीन के लिये थी।

सही प्रश्न यह नहीं है कि मैं उनकी सेवकाई को कैसे दोहराऊँ? प्रश्न यह है कि उनका जीवन मेरी अपनी बुलाहट के लिये विश्वासयोग्यता के किन रूपों पर प्रकाश डालता है?

शायद वह मसीह पर और गहरी निर्भरता है।

शायद वह विरासत में मिले कलीसियाई ढाँचों पर प्रश्न उठाने का साहस है।

शायद वह पहचान के बिना सेवा करने की तत्परता है।

शायद वह सुधार ग्रहण करना सीखना है।

शायद वह पवित्रीकरण में आत्म-प्रयास को अस्वीकार करना है।

शायद वह देह में अपना स्थान खोजना है।

शायद वह तब भी खड़े रहना है जब आज्ञाकारिता महँगी पड़ती है।

वचन जो बँधा नहीं

नी का जीवन जेल की दीवारों के पीछे समाप्त हुआ, परन्तु उनकी शिक्षा ने उन दीवारों को पार कर लिया।

यह अन्ततः प्रकाशन की विजय नहीं है। यह मसीही इतिहास के एक बार-बार दोहराए जानेवाले नमूने की गवाही है: अधिकारी गवाहों को बन्दी बना सकते हैं, परन्तु उनकी गवाही को आसानी से बन्दी नहीं बना सकते।

पौलुस का वाक्य आज भी उपयुक्त है: "परमेश्वर का वचन कैद नहीं" (2 तीमुथियुस 2:9)।

पुस्तकें बची रहीं। कलीसियाएँ बदलते रूपों में बची रहीं। प्रश्न बचे रहे। सुसमाचार बचा रहा।

मसीह, सच्चा मापदण्ड

वॉचमैन नी के विषय में अन्तिम निर्णय कैसे दिया जाना चाहिए?

सन्त घोषित करने के रूप में नहीं।

अस्वीकार करने के रूप में भी नहीं।

वे एक वरदान-प्राप्त, जटिल, विवादित और गहरे प्रभावशाली चीनी मसीही अगुवे थे, जिनकी आत्मिक अन्तर्दृष्टियों ने लाखों की सहायता की है, और जिनके आन्दोलन और शिक्षाओं में ऐसे तनाव भी हैं जिन्हें सावधानी से परखने की आवश्यकता है।

उनका जीवन कलीसिया को स्मरण कराता है कि परमेश्वर मिट्टी के बरतनों का उपयोग करता है।

यह सत्य हमें दो भूलों से बचाता है। परमेश्वर जो कुछ बरतन के द्वारा देता है, उसे बहुमूल्य समझने के लिये हमें यह दिखावा करने की आवश्यकता नहीं कि बरतन निर्दोष है। न ही बरतन इतना आकर्षक बन जाना चाहिए कि हम धन को भूल जाएँ।

"हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे" (2 कुरिन्थियों 4:7)।

नी ने इस पद का प्रचार शब्दों से किया। उनके जीवन ने, अपनी सारी प्रतिभा, संघर्ष, दुःख, चुप्पी और अनुत्तरित प्रश्नों के साथ, इसका फिर से प्रचार किया।

अन्तिम शब्द पहरुए का नहीं, वरन् उस प्रभु का है जिसके लिये वह पहरा देता रहा। "यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है" (इब्रानियों 13:8)।

एक आन्दोलन की विरासत बनाम एक मनुष्य की विरासत

नी की विरासत कई परस्पर-व्यापी रूपों में विद्यमान है। चीन में ऐतिहासिक "लिटिल फ्लॉक" (छोटा झुण्ड) है। विटनेस ली से प्रभावित बाद के स्थानीय कलीसिया नेटवर्क हैं। ऐसे स्वतन्त्र पाठक हैं जो नी की भक्तिपूर्ण शिक्षा को स्वीकार करते हैं परन्तु उनकी कलीसियाई शासन-व्यवस्था को अस्वीकार करते हैं। ऐसे विद्वान हैं जो विश्वव्यापी मसीहियत के एक व्यक्तित्व के रूप में उनका अध्ययन करते हैं। ऐसे सताए गए चीनी विश्वासी हैं जो उन्हें मुख्यत: विश्वास के कारण बन्दी बने व्यक्ति के रूप में स्मरण करते हैं।

इन विरासतों को एक में नहीं मिला देना चाहिए।

किसी बाद के संगठन की आलोचना अपने आप नी की आलोचना नहीं है, यद्यपि संस्थापक संस्था के मूल स्वभाव को आकार देते हैं। *बैठो, चलो, खड़े रहो* (Sit, Walk, Stand) को उद्धृत करनेवाला कोई भक्तिपूर्ण पाठक इससे बाद की हर स्थानीय कलीसिया प्रथा का समर्थन नहीं कर रहा होता।

ऐतिहासिक सटीकता ही निष्पक्ष आलोचना को सम्भव बनाती है।

सेलिब्रिटी पास्टरों के युग के बाद नी को पढ़ना

इक्कीसवीं सदी की कलीसिया ने प्रमुख मसीही अगुवों का बार-बार पतन देखा है। इसलिए नी का जीवन वरदान-प्राप्त शिक्षकों के साथ एक अधिक परिपक्व सम्बन्ध का निमन्त्रण देता है।

विवेक को त्यागे बिना वरदान ग्रहण करो।

मूर्ति बनाए बिना सीखो।

ऐसी व्यवस्थाएँ बनाओ जो किसी एक व्यक्तित्व पर निर्भर न हों।

असफलता के विषय में सत्य बोलो।

स्मरण रखो कि सुसमाचार पतरस के इनकार और दाऊद के पाप के बाद भी बना रहा, क्योंकि सुसमाचार परमेश्वर का है।

"मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे" (1 कुरिन्थियों 3:21)।

वॉचमैन नी का आदर करने का सबसे स्वस्थ ढंग शायद यही पद है।

स्थायी निमन्त्रण

सारे मूल्यांकन के बाद भी नी एक सरल निमन्त्रण पर बल देते हैं: मसीहियत को स्वयं के बल पर चलाने का प्रयत्न छोड़ दो।

मसीह के पास लौट आओ।

उसमें बने रहो।

जो उसने किया है, उसे ग्रहण करो।

अपने आप को परमेश्वर को सौंपो।

आत्मा के अनुसार चलो।

देह से प्रेम करो।

क्रूस को स्वीकार करो।

जब बुराई विरोध करे, तब खड़े रहो।

जब दिखाई देनेवाले परिणाम विफल हो जाएँ, तब पुनरुत्थान पर भरोसा रखो।

"तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में" (यूहन्ना 15:4)।

यदि नी की पुस्तकें पाठकों को वहाँ तक ले जाती हैं, तो उन्होंने अपना सर्वोत्तम उद्देश्य पूरा कर दिया है।

इक्कीसवीं सदी की कलीसिया को वॉचमैन नी से क्या ग्रहण करना चाहिए?

किसी प्रभावशाली मसीही को पढ़ने के सबसे सरल ढंग, दोनों ही गलत हैं। एक है सन्त घोषित करना: हर अन्तर्दृष्टि इसलिए अधिकारपूर्ण बन जाती है क्योंकि शिक्षक ने दुःख उठाया और फल लाया। दूसरा है अस्वीकार करना: कोई धर्मवैज्ञानिक भूल, विवादित आरोप, या बाद का कोई अस्वस्थ विकास हर बात की अनदेखी करने का कारण बन जाता है। नी इन दोनों में से किसी भी व्यवहार के योग्य नहीं हैं।

नया नियम एक बेहतर सिद्धान्त देता है: "सब बातों को परखो जो अच्छी है उसे पकड़े रहो" (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)। परखना और पकड़े रहना साथ-साथ चलते हैं।

तो फिर पकड़े रहने योग्य क्या है?

पहला, मसीह केवल मसीहियत का आरम्भ नहीं, वरन् उसकी निरन्तर विषय-वस्तु है। "मसीह हमारा जीवन" की ओर नी का बार-बार लौटना नैतिकतावाद के विरुद्ध एक आवश्यक सुधार बना हुआ है। कलीसियाएँ मन-फिराव के लिये अनुग्रह का प्रचार कर सकती हैं और फिर विश्वासियों को चिन्तित आत्म-सुधार के सहारे जीना सिखा सकती हैं। नी पवित्रीकरण को फिर से मसीह के साथ एकता की ओर मोड़ते हैं।

दूसरा, मसीह का पूरा किया हुआ कार्य मसीही प्रयास से पहले आता है। बैठो, चलो, खड़े रहो का क्रम पास्टरीय दृष्टि से आज भी बुद्धिमानी भरा है। अनुग्रह में प्राप्त पहचान आज्ञाकारिता उत्पन्न करती है और प्रतिरोध के लिये सुसज्जित करती है। जब यह क्रम उलट जाता है, तब विश्वासी आसन कमाने के लिये चलते हैं और उस विजय को स्थापित करने के लिये लड़ते हैं जिसे मसीह पहले ही जीत चुका है।

तीसरा, स्वाभाविक वरदान आत्मिक उपयोगिता के समान नहीं है। समकालीन कलीसिया प्रायः संवाद-प्रतिभा, उद्यमी ऊर्जा, बुद्धिमत्ता, आकर्षक व्यक्तित्व और सांस्कृतिक पहुँच को पहचानने में कुशल होती है। नी पूछते हैं कि क्या क्रूस ने सेवक की उन वरदानों को अपने अधिकार में रखने और प्रदर्शित करने की लालसा से निपटा है। चरित्र का स्थान विस्तार नहीं ले सकता।

चौथा, कलीसिया श्रोतासमूह या ब्रांड नहीं, वरन् मसीह की देह है। नी की विशेष स्थानीय कलीसिया शासन-व्यवस्था विवाद का विषय बनी हुई है, परन्तु मसीही विभाजन और दर्शक-मात्र सेवकाई के विरुद्ध उनका विरोध गम्भीर ध्यान के योग्य है। अगुवों का काम पवित्र लोगों को सिद्ध करना है। हर विश्वासी का देह में एक स्थान है।

पाँचवाँ, विश्वास का अर्थ है परमेश्वर पर व्यावहारिक निर्भरता। यह योजनाओं, बजट, दवाइयों, विशेषज्ञता या संस्थाओं को समाप्त नहीं करता। यह उन्हें अन्तिम मानने से इनकार करता है। आधुनिक कलीसियाओं के पास ऐसे संसाधन हो सकते हैं जिनकी नी कल्पना भी न कर पाते, फिर भी उन्हें नी के इस प्रश्न की आवश्यकता है: क्या हम वह कर रहे हैं जिसका आरम्भ परमेश्वर ने किया है, या केवल वह जो हमारी मशीनरी सम्भव बनाती है?

छठा, दुःख ऐसा स्थान बन सकता है जहाँ मसीह को जाना जाता है, पर इससे दुःख अपने आप में अच्छा नहीं बन जाता। नी का जीवन क्रूस की भाषा को अमूर्त बने रहने नहीं देता। फिर भी उनकी कहानी का उपयोग कभी भी पीड़ितों से यह कहने के लिये नहीं किया जाना

चाहिए कि वे रोके जा सकनेवाले दुर्व्यवहार को सहते रहें। क्रूस परमेश्वर के प्रति स्वेच्छा से की गई आज्ञाकारिता है, मनुष्यों द्वारा दी गई हानि के आगे विवश होकर झुकना नहीं।

किन बातों को अधिक सावधानी से परखा जाना चाहिए?

नी के आत्मा-प्राण-देह के भेद विवेक में सहायता कर सकते हैं, परन्तु जब उन्हें एक सटीक बाइबलीय मनोविज्ञान माना जाता है, तब वे अत्यधिक कठोर बन जाते हैं। सौंपे गए अधिकार पर उनकी शिक्षाओं में व्यवस्था, नम्रता और विद्रोह के विषय में सच्ची बाइबलीय चिन्ताएँ हैं, परन्तु यदि उनका उपयोग बिना प्रश्न किए आज्ञापालन की माँग के लिये किया जाए, तो वे खतरनाक बन सकती हैं। हर मानवीय अगुवा पवित्रशास्त्र के अधीन रहता है, देह के प्रति उत्तरदायी है, और उसे दूसरों पर प्रभुता जताने से मना किया गया है।

उनकी कलीसिया-विज्ञान दृश्य एकता की एक उदात्त इच्छा को व्यक्त करती है, परन्तु यदि किसी एक प्रशासनिक प्रारूप को किसी नगर में कलीसिया की एकमात्र वैध अभिव्यक्ति माना जाए, तो वह अलगाववादी बन सकती है। दूसरे विश्वासयोग्य मसीहियों को अवैध घोषित करके एकता को बनाए नहीं रखा जा सकता।

अन्तिम समय और प्रतिफल से सम्बन्धित नी की कुछ शिक्षाओं को भी स्वचालित रूप से अपनाने के बजाय सावधान व्याख्या की आवश्यकता है। एक भक्तिपूर्ण शिक्षक महत्त्वपूर्ण नमूनों को पहचान सकता है, फिर भी यह आवश्यक नहीं कि उसका हर व्यवस्थित निष्कर्ष समान रूप से सुदृढ़ हो।

अन्त में, उनके ऐतिहासिक जीवन को मानवीय बने रहने देना चाहिए। हाल के शोध ने उन प्रसंगों में सन्दर्भ जोड़ा है जिन्हें पहले की जीवनियाँ कभी-कभी सरल बना देती थीं: विविध मसीही लेखकों पर उनकी निर्भरता, उनके मानव-विज्ञान का विकास, व्यवसाय और सेवकाई से जुड़े तनाव, राजनीति के साथ उनका बदलता सम्बन्ध, और साम्यवादी अभियानों के अन्तर्गत लगाए गए आरोपों की जटिलता। अधिक ऐतिहासिक यथार्थवाद आत्मिक सराहना को नष्ट नहीं करता। वह सराहना को अधिक परिपक्व बनाता है।

अन्तिम कसौटी मसीह है। पौलुस ने कुरिन्थियों को वरदान-प्राप्त सेवकों के इर्द-गिर्द बँट जाने के लिये डाँटा, क्योंकि "सब कुछ तुम्हारा है। क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा ... और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है" (1 कुरिन्थियों 3:21-23)। शिक्षक वरदान हैं, स्वामी नहीं।

वॉचमैन नी को इसी भावना से ग्रहण करना सबसे उत्तम है। उन्होंने जो देखा उसके लिये हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं, उन्होंने जो दुःख उठाया उससे सीख सकते हैं, जहाँ

उनके सूत्रीकरण पवित्रशास्त्र से आगे निकल गए वहाँ प्रश्न कर सकते हैं, और उनके नाम के इर्द-गिर्द अपनी पहचान गढ़ने से इनकार कर सकते हैं।

उनका सबसे स्थायी निमन्त्रण किसी आन्दोलन से भी सरल है: आत्मनिर्भरता के अन्त तक पहुँचो और मसीह की पर्याप्तता को खोजो।

जिस युवक ने वॉचमैन नाम चुना था, वह सोते हुए मसीहियों को जगाना चाहता था। उनके जन्म के एक सदी से भी अधिक समय बाद, यह पुकार आज भी वहाँ गूँजती है जहाँ विश्वासी गतिविधि को जीवन, व्यक्तित्व को अभिषेक, संगठन को देह, ज्ञान को वास्तविकता, या नियन्त्रण को विश्वास समझ बैठते हैं।

"हे सोनेवाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी" (इफिसियों 5:14)।

पहरुआ मर जाता है। मसीह बना रहता है।

परिशिष्ट A: वॉचमैन नी की पच्चीस मूल शिक्षाएँ

नीचे दी गई शिक्षाएँ जीवनी का विकल्प नहीं हैं। वे उन विषयों को एक साथ इकट्ठा करती हैं जो पन्द्रह अध्यायों में पहले से बुने हुए हैं, ताकि पाठक आत्मिक और बाइबल-आधारित सन्दर्भ के रूप में उनकी ओर लौट सकें। हर विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि नी की केन्द्रीय अन्तर्दृष्टि उसकी सम्भावित विकृतियों से अलग दिखाई दे, और अन्तिम भार पवित्रशास्त्र पर रखा जाए।

1. मसीह ही मसीही जीवन है

वॉचमैन नी की आत्मिकता का सबसे सरल सार यह है कि मसीहियत स्वयं मसीह है। विश्वासी यीशु से केवल सिद्धान्त, सद्गुण, नियम या आत्मिक साधन ही प्राप्त नहीं करता; वह स्वयं यीशु को प्राप्त करता है।

पौलुस लिखता है, “मसीह जो हमारा जीवन है” (कुलुस्सियों 3:4)। नी इस वाक्यांश को भक्तिपूर्ण कविता से बढ़कर मानते थे। मसीह केवल वह आदर्श नहीं है जिसकी ओर मसीही बढ़ता है। पवित्र आत्मा के द्वारा वही विश्वासी के नये जीवन का स्रोत है।

इससे आत्मिक आवश्यकता को देखने का ढंग बदल जाता है। एक मसीही धीरज माँगता है। नी पूछते हैं कि क्या स्वयं मसीह को धीरज के रूप में ग्रहण किया जा सकता है। एक मसीही विजय माँगता है। नी विजयी मसीह की ओर संकेत करते हैं। एक मसीही पवित्रता माँगता है। पौलुस कहता है कि मसीह “हमारे लिये ... पवित्रता” ठहरा (1 कुरिन्थियों 1:30)।

यह अन्तर्दृष्टि टुकड़ों में बँटी मसीहियत का विरोध करती है। आत्मिक गठन तकनीकों का बाज़ार बन सकता है—प्रार्थना के लिये एक विधि, चिन्ता के लिये दूसरी, परीक्षा के लिये तीसरी, अगुवाई के लिये चौथी। व्यावहारिक विधियाँ सहायक हो सकती हैं, परन्तु उनमें से कोई भी मसीह में बने रहने का स्थान नहीं ले सकती।

यीशु कहते हैं, "मुझसे अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)।

खतरा निष्क्रियता का है, यदि "मसीह मुझ में जीवित है" का अर्थ ऐसे लगाया जाए मानो मनुष्य अब न चुनाव करता है, न अनुशासन रखता है, न आज्ञा मानता है। पौलुस, जो कहता है "मसीह मुझ में जीवित है," तुरन्त आगे जोड़ता है, "मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ" (गलातियों 2:20)। मसीह के साथ एकता विश्वासी को मिटा नहीं देती; वह उसके जीवन के स्रोत और केन्द्र को बदल देती है।

इसलिए व्यावहारिक प्रश्न यह नहीं है, "मैं आत्मिक रूप से आत्मनिर्भर कैसे बन सकता हूँ?" प्रश्न यह है, "मेरे जीवन का हर भाग मसीह पर निर्भर कैसे बना रह सकता है?"

2. मसीह का लहू शुद्ध विवेक देता है

नी बार-बार यीशु के लहू की ओर लौटते थे, जो दोष-भाव के लिये परमेश्वर का उत्तर है। परमेश्वर तक मसीही की पहुँच बीते कल के प्रदर्शन की गुणवत्ता पर नहीं, बल्कि मसीह के बलिदान के मूल्य पर टिकी है।

"उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (1 यूहन्ना 1:7)।

यह शिक्षा विशेष रूप से उन मसीहियों के लिये थी जो स्वीकार्य अनुभव करने का कोई कारण ढूँढ़ने के लिये लगातार अपने आप को जाँचते रहते हैं। जब वे आत्मिक रूप से बलवन्त अनुभव करते हैं, तो परमेश्वर के पास भरोसे के साथ आते हैं। जब वे असफल होते हैं, तो तब तक पीछे हटे रहते हैं जब तक उनमें इतना पछतावा न उपज आए कि वे लौटने के योग्य अनुभव करें।

नी इसे आत्म-धार्मिकता का एक सूक्ष्म रूप मानते थे। यदि पहुँच का आधार लहू है, तो हमारा दुःख भी कोई अतिरिक्त भुगतान नहीं बन सकता।

इब्रानियों कहता है कि विश्वासियों को "यीशु के लहू के द्वारा ... पवित्रस्थान में प्रवेश करने का साहस" है (इब्रानियों 10:19)।

इसलिए साहस भावनात्मक होने से पहले वस्तुनिष्ठ है।

इसे सस्ते अनुग्रह में नहीं बदलना चाहिए। वही 1 यूहन्ना, जो शुद्ध किए जाने की बात करता है, ज्योति में चलने और पाप मान लेने की आज्ञा भी देता है। शुद्ध विवेक ऐसा विवेक नहीं है जिसे अब पवित्रता की चिन्ता नहीं रही। वह ऐसा विवेक है जो जानता है कि शुद्धि कहाँ मिलती है।

नी का यह ज़ोर विश्वासियों को दो विपरीत भूलों से छुड़ा सकता है: दण्ड के भय से पाप को छिपाना, और अनुग्रह पर ढिठाई से भरोसा करके पाप को सहते रहना। लहू हमें ज्योति में बुलाता है।

3. पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया

नी पापों की क्षमा को आदम में पापी की पुरानी पहचान के साथ परमेश्वर के गहरे व्यवहार से अलग करके देखते थे। उनका प्रमुख पाठ रोमियों 6:6 था: "हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया"।

उनके लिये क्रिया का काल महत्त्वपूर्ण था। पौलुस विश्वासी को यह आज्ञा नहीं देता कि वह पर्याप्त प्रयास से पुराने मनुष्यत्व को क्रूस पर चढ़ाए। वह उस बात की घोषणा करता है जो परमेश्वर ने मसीह के साथ एकता में कर दी है।

यह नी की सबसे अधिक मुक्त करनेवाली अन्तर्दृष्टियों में से एक है। मसीही अक्सर इस धारणा के साथ पाप से लड़ते हैं कि पुराने स्वामी के पास अब भी निर्विवाद अधिकार है। रोमियों 6 प्रभुत्व के परिवर्तन की घोषणा करता है।

"जो मर गया, वह पाप से मुक्त हो गया है" (रोमियों 6:7)। "तुम पर पाप की प्रभुता न होगी" (रोमियों 6:14)।

स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि परीक्षा का होना समाप्त हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि विश्वासी पाप के उचित दास के रूप में परीक्षा का सामना नहीं करता।

एक विकृत पठन सिद्धतावाद की ओर बह सकता है, मानो रोमियों 6 को समझनेवाले मसीही को कभी गम्भीर संघर्ष का अनुभव ही नहीं होना चाहिए। व्यापक नया नियम विश्वासियों को सतर्कता, पाप मान लेने और निरन्तर आत्मा के अनुसार चलने के लिये बुलाता है।

इसका परिपक्व प्रयोग पहचान है: मैं अब पुराने राज्य का नहीं हूँ। मैं मसीह में परमेश्वर के लिये जीवित हूँ। इसलिए मैं अपने अंगों को पुराने स्वामी को सौंपने से इनकार करता हूँ।

4. जानना, मानना, सौंपना (Know, Reckon, Present)

नी अक्सर रोमियों 6 को तीन चरणों में व्यवस्थित करते थे।

पहला, जानना: "हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया" (रोमियों 6:6)। पवित्रीकरण हमारी भावनाओं से बाहर के एक तथ्य से आरम्भ होता है।

दूसरा, मानना: "तुम भी अपने आपको पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो" (रोमियों 6:11)। विश्वास परमेश्वर की घोषणा से सहमत होता है।

तीसरा, सौंपना: "अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो" (रोमियों 6:13)। अनुग्रह समर्पित कर्म की ओर ले जाता है।

यह क्रम पासबानी दृष्टि से बहुत सामर्थी है। यदि सौंपना पहले आ जाए, तो समर्पण आत्मिक जीवन उत्पन्न करने का प्रयास बन जाता है। यदि मानना जानने से अलग हो जाए, तो विश्वास केवल सकारात्मक सोच बन जाता है। यदि जानना कभी सौंपने तक न पहुँचे, तो सिद्धान्त निष्प्राण पड़ा रहता है।

ये तीन चरण तथ्य, विश्वास और आज्ञाकारिता को एक साथ रखते हैं।

इससे यह भी स्पष्ट होता है कि नी व्यवस्थावाद और निष्क्रियता दोनों का विरोध क्यों करते थे। विश्वासी मसीह के साथ एकता उत्पन्न नहीं करता, परन्तु यह एकता ऐसा जीवन उत्पन्न करती है जो सक्रिय रूप से परमेश्वर को सौंपा गया हो।

5. अनुग्रह काम से पहले आता है

नी का शब्द "बैठो" इफिसियों 1-3 का सार था। मसीही को चलने की आज्ञा देने से पहले पौलुस घोषणा करता है कि परमेश्वर ने हमें "मसीह यीशु में ... स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया" (इफिसियों 2:6)।

बैठना ग्रहण करने का प्रतीक है। बैठा हुआ व्यक्ति अपने से बाहर की किसी वस्तु के सहारे टिका रहता है।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है ... और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे" (इफिसियों 2:8-9)।

फिर भी अगला पद कहता है कि विश्वासी "मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए" (इफिसियों 2:10)। अनुग्रह भले कामों से प्रतिस्पर्धा नहीं करता; वह उन्हें सही क्रम में रखता है।

यह सिद्धान्त मन-फिराव से कहीं आगे तक पहुँचता है। मसीही अक्सर सेवकाई में अपनी पहचान के आधार के रूप में कामों की ओर लौट जाते हैं। जब वे फलदायी होते हैं तो स्वीकार किए हुए अनुभव करते हैं, और जब सीमित होते हैं तो असुरक्षित। नी का "बैठो" उन्हें स्मरण दिलाता है कि सबसे गहरी मसीही स्थिति पहले ग्रहण की जाती है, बाद में निभाई जाती है।

खतरा यह है कि विश्राम को आलस्य का बहाना बना लिया जाए। बाइबल का विश्राम सक्रिय निर्भरता है। पौलुस औरों से बढ़कर परिश्रम कर सकता था और फिर भी कह सकता था कि इसका स्रोत परमेश्वर का अनुग्रह था।

पहले बैठो। फिर उस आसन से काम करो।

6. पवित्र आत्मा मसीही जीवन का स्रोत है

नी केवल इच्छाशक्ति से उत्पन्न मसीही गतिविधि पर भरोसा नहीं करते थे। उनका विकल्प पवित्र आत्मा के द्वारा जीवन था।

"जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया" (रोमियों 8:2)।

वे इसे एक नई शासन करनेवाली सामर्थ्य के रूप में वर्णन करते थे। शरीर को सुधारकर आत्मिक जीवन नहीं बनाया जा सकता। आत्मा वह प्रदान करता है जो विश्वासी के पास स्वाभाविक रूप से नहीं है।

पौलुस की आज्ञा निरन्तर चलनेवाली है: "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे" (गलातियों 5:16)।

चलने में बार-बार की निर्भरता निहित है। बीते कल का अनुभव आज के लिये कोई स्वतंत्र भण्डार नहीं बना देता।

आत्मा से भरे जीवन की सबसे अच्छी परख कोई असामान्य अनुभूति नहीं, बल्कि वह फल है जिसका नाम पौलुस लेता है: प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, और दया, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम (गलातियों 5:22-23)।

नी के बाद के तकनीकी भेद इस सरलता से ध्यान हटा सकते हैं। पवित्र आत्मा का काम मसीह की महिमा करना और विश्वासियों में मसीह का चरित्र गढ़ना है।

7. क्रूस स्वाभाविक बल से निपटता है

नी क्रूस को केवल स्पष्ट पाप का ही नहीं, बल्कि धार्मिक आत्मनिर्भरता का भी परमेश्वर का उत्तर मानते थे। एक मसीही स्वाभाविक प्रतिभा से भी परमेश्वर की सेवा कर सकता है।

पौलुस पूछता है, "क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?" (गलातियों 3:3)।

शरीर नैतिक, सुव्यवस्थित, वाक्पटु और महत्त्वाकांक्षी हो सकता है। उसकी पहचान करानेवाली विशेषता परमेश्वर से स्वतंत्र रहना है।

नी की टूटेपन की भाषा इसी छिपे हुए स्रोत को उजागर करना चाहती थी। परमेश्वर ऐसी परिस्थितियाँ आने दे सकता है जिनमें स्वाभाविक बल अपर्याप्त सिद्ध हो, ताकि सेवक पुनरुत्थान पर निर्भर रहना सीखे।

पौलुस कहता है, "जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ" (2 कुरिन्थियों 12:10)।

इस शिक्षा के कारण मसीहियों को यह नहीं मान लेना चाहिए कि योग्यता बुरी है। वरदान वरदान ही हैं। प्रश्न यह है कि वे स्वामी हैं या सेवक।

टूटा हुआ मन प्रतिभा पर भरोसा किए बिना प्रतिभा के साथ सोच सकता है। टूटा हुआ व्यक्तित्व नियंत्रण की आवश्यकता के बिना साहस से अगुवाई कर सकता है। टूटी हुई इच्छा स्वयं पर शासन करने का अधिकार समर्पित करने के बाद दृढ़ता से कार्य कर सकती है।

8. गेहूँ के दाने को भूमि में पड़ना ही है

यीशु कहते हैं, "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है" (यूहन्ना 12:24)।

नी ने इस दाने को क्रूस के द्वारा जीवन के मुक्त होने के चित्र के रूप में प्रयोग किया। बाहरी छिलका बीज की रक्षा करता है, परन्तु उसे बन्द भी रखता है। फलदायी होने के लिये मृत्यु आवश्यक है।

यीशु के तात्कालिक सन्दर्भ में यह पद सबसे पहले उनकी अपनी मृत्यु की ओर संकेत करता है। मसीही प्रयोग उसी से निकलता है: चेले क्रूस पर चढ़ाए गए प्रभु के पीछे चलते हैं।

"जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है" (यूहन्ना 12:25)।

यह शिक्षा आत्म-रक्षा की प्रवृत्ति का सामना करती है। हम स्वाभाविक रूप से अपनी प्रतिष्ठा, सुख-सुविधा, नियंत्रण और समझे जाने के अधिकार की रक्षा करते हैं। परमेश्वर हमें प्रेम में इन्हें छोड़ देने के लिये बुला सकता है।

परन्तु दाने के इस चित्र से कभी दुर्व्यवहार को उचित नहीं ठहराया जाना चाहिए। मानवीय अगुवे इसलिए नियुक्त नहीं किए गए कि वे अपमान के द्वारा दूसरों को तोड़कर खोलें। क्रूस सत्य और प्रेम के अधीन परमेश्वर का काम है।

सच्चे टूटेपन का फल अधिक मसीह-समानता है, घटा हुआ व्यक्तित्व नहीं।

9. प्रकाशन का अर्थ है यह देखना कि पवित्रशास्त्र क्या कहता है

नी मानसिक ज्ञान और आत्मिक प्रकाशन में भेद करते थे। वे किसी सिद्धान्त को वर्षों तक पढ़ सकते थे और फिर उस क्षण की बात करते थे जब उन्होंने उसे "देखा"।

पौलुस प्रार्थना करता है कि विश्वासियों की "मन की आँखें ज्योतिर्मय हों" (इफिसियों 1:18)।

नी ऐसे पाठों का प्रयोग प्रकाश मिलने का वर्णन करने के लिये करते थे: पवित्र आत्मा प्रकट किए गए सत्य को भीतर से समझ में आनेवाला बना देता है।

यह ऐसे नये सिद्धान्तों की अनुमति नहीं है जो पवित्रशास्त्र को लाँघ जाएँ। इस भक्तिपूर्ण अर्थ में प्रकाशन का अर्थ है उस बात का महत्त्व देखना जिसे परमेश्वर पहले ही प्रकट कर चुका है।

एक विश्वासी यह जान सकता है कि मसीह में कोई दण्ड की आज्ञा नहीं, और फिर भी ऐसे जी सकता है मानो दण्ड ही उसकी पहचान हो। प्रकाश मिलने से वह सत्य जीवन में वास्तविक भार पा लेता है।

इसकी सुरक्षा वस्तुनिष्ठ पवित्रशास्त्र है। जो भीतरी अन्तर्दृष्टि बाइबल का खण्डन करती है, वह गहरा प्रकाशन नहीं है।

10. मसीही को परमेश्वर की बाट जोहना सीखना चाहिए

नी के ऊर्जावान स्वभाव को प्रतीक्षा के अनुशासन की आवश्यकता थी। मार्गरेट बार्बर ने उन्हें यह सिखाने में सहायता की कि कोई अच्छा विचार अपने आप परमेश्वर की वर्तमान आज्ञा

नहीं होता।

"जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे" (यशायाह 40:31)।

प्रतीक्षा करना टालमटोल नहीं है। यह मार्गदर्शन के स्थान पर गतिविधि को रखने से इनकार है।

अगुवों को प्रतीक्षा करना अक्सर कठिन लगता है, क्योंकि कार्य करने से अगुवाई का दिखाई देनेवाला प्रमाण मिलता है। फिर भी पवित्रशास्त्र में ऐसे समय हैं जिनमें परमेश्वर देरी के द्वारा अपने सेवकों को तैयार करता है।

मूसा दशकों तक मिद्यान में रहता है। दाऊद अभिषेक और सिंहासन के बीच प्रतीक्षा करता है। व्यापक सेवकाई से पहले पौलुस के जीवन में छिपे हुए समय आते हैं।

प्रतीक्षा यह पूछती है कि क्या हम परमेश्वर की समय-सारणी पर उतना ही भरोसा करते हैं जितना उसके लक्ष्य पर।

खतरा आत्मिकता का भेष धरे हुए जड़ता का है। जब आज्ञाकारिता स्पष्ट हो जाती है, तब प्रतीक्षा समाप्त हो जाती है।

11. कलीसिया मसीह की देह है

देह के विषय में नी की "दूसरे मन-फिराव" की भाषा उनके सबसे गहरे विश्वासों में से एक को व्यक्त करती है: मसीही केवल एक अकेले व्यक्ति के रूप में मसीह का नहीं है। वह मसीह के लोगों का भी है।

"इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो" (1 कुरिन्थियों 12:27)।

एक अंग महत्त्वपूर्ण भी है और अपूर्ण भी। आँख का वास्तविक कार्य है, परन्तु देह से अलग हुई आँख परिपक्व स्वतंत्रता नहीं है; वह टूटा हुआ सम्बन्ध है।

इस अन्तर्दृष्टि ने अकेली आत्मिकता को चुनौती दी। एक विश्वासी व्यक्तिगत प्रार्थना और बाइबल अध्ययन का आनन्द ले सकता है, फिर भी सुधार स्वीकार करने, अपराध क्षमा करने या अन्य मसीहियों के साथ मिलकर काम करने में असमर्थ रह सकता है। नी कहते कि ऐसी आत्मिकता ने अभी देह को नहीं सीखा है।

देह प्रसिद्ध व्यक्तियों पर केन्द्रित सेवकाई को भी सुधारती है। सार्वजनिक शिक्षकों में मसीह का सारा भण्डार नहीं समाया है। शान्त विश्वासियों के पास ऐसे वरदान हैं जिनकी

आवश्यकता दिखाई देनेवाले अगुवे को है।

पौलुस कहता है कि जो अंग निर्बल दिखाई देते हैं, वे आवश्यक हैं (1 कुरिन्थियों 12:22)।

खतरा सामूहिकतावाद का है, जहाँ समूह विवेक को दबा देता है। बाइबल का देह-जीवन सदस्यता और मसीह के प्रति व्यक्तिगत उत्तरदायित्व दोनों को सुरक्षित रखता है। हाथ देह का है, परन्तु सिर मसीह है, संस्थागत व्यवस्था नहीं।

व्यावहारिक प्रश्न यह है: क्या मैं साथी विश्वासियों को मुख्यतः उपभोक्ता, प्रतिस्पर्धी, समस्याएँ समझता हूँ, या मसीह के अंग जिनसे मैं जुड़ा हूँ?

12. हर विश्वासी याजक और सेवक है

नी पादरी और साधारण सदस्यों के बीच कठोर विभाजन का विरोध करते थे। उनका विश्वास था कि नया नियम पूरी कलीसिया को याजकीय सेवा के लिये बुलाता है।

पतरस लिखता है, "तुम भी आप जीविते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर" (1 पतरस 2:5)।

इसका अर्थ यह नहीं कि हर मसीही की बुलाहट एक जैसी है, या प्रशिक्षित अगुवों की आवश्यकता नहीं। नया नियम प्राचीनों, शिक्षकों, सुसमाचार प्रचारकों और अन्य वरदानों को मान्यता देता है। परन्तु अगुवे पवित्र लोगों का स्थान नहीं लेते, बल्कि उन्हें तैयार करते हैं।

इफिसियों कहता है कि अगुवे इसलिए दिए गए हैं "जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए" (इफिसियों 4:12)।

नी की सभाओं ने सबकी सहभागिता वाली सभाओं के द्वारा इसे दृश्य बनाने का प्रयास किया। सुव्यवस्थित आराधना-सभाओं वाली आधुनिक कलीसियाएँ भी इस सिद्धान्त को फिर से पा सकती हैं, यदि वे सदस्यों को चेले बनाने, प्रार्थना करने, सुसमाचार सुनाने, उचित रूप से सिखाने, दुःख उठानेवालों की देखभाल करने, दान देने, सेवकाइयों की अगुवाई करने और मंच के बाहर अपने वरदानों का प्रयोग करने के लिये तैयार करें।

परिपक्व कलीसिया वह नहीं जिसमें सबसे प्रभावशाली पेशेवर लोग हों। परिपक्व कलीसिया वह है जिसमें देह काम करती है।

13. स्थानीय कलीसियाओं को एक देह को प्रकट करना चाहिए

नी का एक-नगर-एक-कलीसिया का विश्वास नये नियम की इस भाषा से निकला: "कलीसिया ... जो कुरिन्थुस में है," "थिस्सलुनीकियों की कलीसिया," और ऐसे ही अन्य वाक्यांश। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कलीसिया की पहचान का व्यावहारिक आधार सम्प्रदाय नहीं, बल्कि स्थान होना चाहिए।

इस प्रस्ताव के पीछे की आत्मिक अन्तर्दृष्टि सामर्थी है: किसी स्थान का हर सच्चा विश्वासी एक ही देह का है, चाहे सब एक ही छत के नीचे इकट्ठे हों या न हों।

"एक ही देह है, और एक ही आत्मा" (इफिसियों 4:4)।

परन्तु व्यावहारिक नियम अधिक विवादास्पद है। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से यह माँग नहीं करता कि हर नगर में केवल एक आधुनिक प्रशासनिक मण्डली हो। बड़े नगर, घरेलू कलीसियाओं के नेटवर्क, अलग-अलग भाषाओं के समुदाय और सेवकाई की भिन्न आवश्यकताएँ इस नमूने को जटिल बना देती हैं।

यह सिद्धान्त तब साम्प्रदायिक बन सकता है जब कोई एक संगति यह दावा करे कि नगर में केवल वही "कलीसिया" है, और अन्य सही विश्वास रखनेवाले विश्वासियों को ऐसा माने मानो वे अवैध आधार पर खड़े हों।

इसलिए नी से मिली सबसे स्वस्थ विरासत कोई कठोर नगर-आधारित कलीसियाई व्यवस्था नहीं, बल्कि यह इनकार है कि कलीसिया का नाम-ठप्पा मसीह में सदस्यता से अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाए।

क्या मसीही गम्भीर साम्प्रदायिक विश्वास रखते हुए भी एक दूसरे को भाई-बहन के रूप में पहचान सकते हैं? उन्हें ऐसा करना ही होगा।

14. केवल मसीह ही कलीसिया का सिर है

नी का कलीसिया-सम्बन्धी दर्शन अन्ततः मसीह के सिर होने पर टिका है।

"वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है" (कुलुस्सियों 1:18)।

मानवीय अगुवों के पास सौंपा गया उत्तरदायित्व होता है, कभी पूर्ण स्वामित्व नहीं। प्राचीन "परमेश्वर के उस झुण्ड" की रखवाली करते हैं, अपने निजी झुण्ड की नहीं (1 पतरस 5:2)।

इससे मसीही अधिकार को गरिमा भी मिलती है और सीमा भी। अगुवे सिखा सकते हैं, सुधार सकते हैं, व्यवस्था कर सकते हैं और वास्तविक निर्णय ले सकते हैं। परन्तु वे न तो वह माँग सकते हैं जिसे मसीह मना करता है, और न वह मना कर सकते हैं जिसकी मसीह अनुमति देता है, मानो विवेक उनकी सम्पत्ति हो।

कलीसिया को अगुवों का आदर करने और मसीह के स्थान पर अगुवों को बैठा देने में भेद करना चाहिए।

अधिकार पर नी का अपना बाद का ज़ोर इस सुरक्षा को विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण बनाता है। सौंपे गए अधिकार का सिद्धान्त तभी सुरक्षित है जब वह सौंपा गया अधिकार उसके प्रति स्पष्ट रूप से उत्तरदायी बना रहे जिसने उसे सौंपा है।

यीशु का आदर्श सेवा है: "मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे" (मरकुस 10:45)।

जब भी अधिकार क्रूस के आकार का दिखना बन्द कर देता है, वह सिर से भटक चुका होता है।

15. आत्मिक अधिकार को परमेश्वर के अधीन ग्रहण करना चाहिए

नी दृढ़ता से सिखाते थे कि वैध अधिकार के विरुद्ध विद्रोह परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह को प्रकट कर सकता है। उन्होंने बाइबल के ऐसे वृत्तान्तों का सहारा लिया जिनमें सेवकों ने पदों का आदर किया, तब भी जब पदधारी दोषपूर्ण थे।

आधुनिक व्यक्तिवाद को इस सुधार की आवश्यकता है। मसीही हर बात में स्वयं-नियुक्त अन्तिम अधिकारी नहीं हैं। वे शिक्षा, सुधार, पारिवारिक उत्तरदायित्व, नागरिक कानून और कलीसियाई अगुवाई को स्वीकार करते हैं।

इब्रानियों कहता है, "अपने अगुओं की मानो; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे ... तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते" (इब्रानियों 13:17)।

परन्तु बाइबल की अधीनता की सीमाएँ हैं। प्रेरितों ने उन अधिकारियों की आज्ञा नहीं मानी जिन्होंने सुसमाचार की गवाही देने से मना किया: "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है" (प्रेरितों के काम 5:29)।

दाऊद ने शाऊल को मारने से इनकार किया, परन्तु शाऊल के भाले की पहुँच में बने रहने से भी इनकार किया। पौलुस सरकार के अधीन रहा और रोमी कानून की दुहाई भी दी।

पतरस ने प्राचीनों से कहा कि वे झुण्ड पर प्रभुता न जताएँ।

इसलिए नी की अधिकार-सम्बन्धी शिक्षा को चार सुरक्षाओं के साथ ग्रहण करना चाहिए: अगुवे से ऊपर पवित्रशास्त्र, संस्था से ऊपर मसीह, अगुवों का उत्तरदायित्व, और पाप करने की आज्ञाओं से विवेक की सुरक्षा।

अधिकार भण्डारीपन है, स्वामित्व नहीं।

16. मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के साथ संगति का स्थान है

नी की त्रिभागी शिक्षा ने मनुष्य की आत्मा को व्यक्ति के उस आयाम के रूप में पहचाना जो परमेश्वर की ओर उन्मुख है। उन्हें रोमियों 8:16 जैसे पाठों में इसका समर्थन मिला: "पवित्र आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं"।

उनका व्यावहारिक उद्देश्य मसीहियों को यह सिखाना था कि परमेश्वर के साथ संगति भावना से गहरी और तर्क से बढ़कर है। पवित्र आत्मा विश्वासी में वास करता है और परमेश्वर के साथ वास्तविक सहभागिता लाता है।

यह ज़ोर प्रार्थना को नया कर सकता है। मसीहियत केवल किसी दूर के परमेश्वर के बारे में सही बातें सोचना नहीं है; यह आत्मा में जीवन है।

फिर भी पाठकों को मनुष्य की आत्मा को ऐसा रहस्यमय नियंत्रण-कक्ष बनाने से बचना चाहिए जिसकी हर छाप अपने आप ईश्वरीय मानी जाए। पवित्रशास्त्र विश्वासियों को सब बातों को परखने के लिये बुलाता है।

पवित्र आत्मा भीतरी छापों के साथ-साथ पवित्रशास्त्र, नवीकृत विचार, बुद्धि, समुदाय, विवेक और परमेश्वर के विधान के द्वारा भी काम करता है।

लक्ष्य आत्मा का स्थान ढूँढ़ने में निपुणता नहीं है। लक्ष्य परमेश्वर के साथ संगति है।

17. प्राण और आत्मा में भेद करना चाहिए, परन्तु उसे अति-व्यवस्थित नहीं करना चाहिए

इब्रानियों कहता है कि वचन "प्राण, आत्मा को ... अलग करके" छेदने में समर्थ है (इब्रानियों 4:12)। नी ने इसे मनोवैज्ञानिक जीवन और आत्मिक जीवन के बीच एक विस्तृत भेद में विकसित किया।

उनकी पासबानी अन्तर्दृष्टि मूल्यवान है: कोई विचार परमेश्वर की ओर से हुए बिना भी चतुर हो सकता है, कोई भावना पवित्र हुए बिना भी तीव्र हो सकती है, और कोई संकल्प विश्वास हुए बिना भी दृढ़ हो सकता है।

परन्तु बाइबल "प्राण," "आत्मा," "हृदय," और "मन" शब्दों का प्रयोग काफ़ी हद तक एक-दूसरे पर छाते हुए अर्थों में करती है। इतिहास में मसीहियों ने मनुष्य की संरचना के विषय में द्विभागी और त्रिभागी दोनों विचार रखे हैं।

इसलिए नी की प्रणाली को एक सहायक नमूने के रूप में लेना चाहिए, न कि ऐसी अन्तिम शारीरिक रूपरेखा के रूप में जिसकी माँग हर पद करता हो।

सबसे सुरक्षित परख नैतिक और मसीह-केन्द्रित है: क्या यह प्रेरणा पवित्रशास्त्र से मेल खाती है? क्या यह मसीह को ऊँचा उठाती है? क्या यह आत्मा का फल उत्पन्न करती है? क्या यह बुद्धिमानी की सलाह के सामने टिक सकती है?

आत्म-निरीक्षण से अधिक अच्छा भेद वचन करता है।

18. शुद्ध विवेक महत्त्वपूर्ण है

नी परमेश्वर और मनुष्यों के सामने निर्दोष विवेक बनाए रखने पर बहुत ज़ोर देते थे।

पौलुस कहता है, "इससे मैं आप भी यत्न करता हूँ, कि परमेश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे" (प्रेरितों के काम 24:16)।

इसका अर्थ है कि जब पाप प्रकट हो, तो तुरन्त प्रतिक्रिया दी जाए। पाप मान लो। जहाँ सम्भव हो, हानि की भरपाई करो। गुप्त समझौते से इनकार करो।

शुद्ध विवेक प्रार्थना और सेवकाई में स्वतंत्रता देता है, क्योंकि विश्वासी किसी छिपे हुए दोहरे जीवन की रक्षा नहीं कर रहा होता।

परन्तु विवेक को सुसमाचार के अधीन चलना चाहिए। कोमल मन वाले मसीही अति-शंकालुता में पड़ सकते हैं, और ऐसी बातों के लिये दोषी अनुभव कर सकते हैं जिन्हें परमेश्वर ने मना नहीं किया। दूसरे लोग बार-बार की अवज्ञा से अपने विवेक को सुन्न कर सकते हैं।

इब्रानियों शुद्धि को सेवा से जोड़ता है: मसीह का लहू "तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से ... शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीविते परमेश्वर की सेवा करो" (इब्रानियों 9:14)।

लक्ष्य अन्तहीन आत्म-निरीक्षण नहीं है। लक्ष्य परमेश्वर के सामने स्वतंत्र सेवा है।

19. विश्वास परमेश्वर के चरित्र पर टिकता है, स्वयं विश्वास पर नहीं

नी के "विश्वास के सिद्धान्त" ने उन्हें आवश्यकताओं की पूर्ति और मार्गदर्शन के लिये परमेश्वर पर निर्भर रहना सिखाया। जब विश्वास परिणाम पाने की तकनीक बन जाता है, तो इस शिक्षा का हृदय अक्सर छूट जाता है।

बाइबल का विश्वास अपने से हटकर देखता है।

अब्राहम ने "विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की, और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी सामर्थी है" (रोमियों 4:20-21)।

विश्वास का बल प्रतिज्ञा करनेवाले की विश्वासयोग्यता से आता है।

जो विश्वासी लगातार पूछता रहता है, "क्या मैं पर्याप्त दृढ़ता से विश्वास करता हूँ?" उसने विश्वास को एक नया कर्म बना दिया है। बेहतर प्रश्न यह है, "परमेश्वर कौन है, और उसने वास्तव में क्या प्रतिज्ञा की है?"

विश्वास आश्चर्यजनक प्रबन्ध तक ले जा सकता है; वह अभाव में सन्तोष तक भी ले जा सकता है। पौलुस ने बढ़ना भी सीखा और घटना भी।

निर्णायक बात विश्वास का विषय है, उसकी भावनात्मक तीव्रता नहीं।

20. प्रार्थना परमेश्वर के उद्देश्य के साथ सहयोग है

नी प्रार्थना को उस काम में सहभागिता मानते थे जो परमेश्वर पृथ्वी पर करना चाहता है।

"तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10)।

प्रार्थना परमेश्वर को सूचना देना या उससे अपनी बात मनवाना नहीं है। यह मनुष्य की इच्छा को ईश्वरीय उद्देश्य के साथ संगति में लाना और यह माँगना है कि परमेश्वर का राज्य प्रकट हो।

इससे मध्यस्थता को गम्भीरता मिलती है। पौलुस ने कलीसियाओं से प्रार्थना करने को कहा कि वचन के लिये द्वार खुलें और वह साहस से बोल सके। परमेश्वर प्रभुता के साथ मिशन का संचालन करता है, और साथ ही प्रार्थना को एक साधन के रूप में ठहराता है।

नी के कुछ अधिक कठोर कथन ऐसे लग सकते हैं मानो परमेश्वर तब तक कार्य नहीं कर सकता जब तक मनुष्य अनुमति न दें। पवित्रशास्त्र परमेश्वर की सम्प्रभुता को हम पर निर्भर

नहीं बनाता। फिर भी पवित्रशास्त्र निःसन्देह प्रार्थना को परिणाम लानेवाली मानता है।

"तुम्हें इसलिए नहीं मिलता, कि माँगते नहीं" (याकूब 4:2)।

यह रहस्य मसीहियों को प्रार्थना करने के लिये प्रेरित करे, न कि पहले हर तत्त्व-मीमांसा के प्रश्न को सुलझाने के लिये।

21. आत्मिक युद्ध मसीह की विजय में स्थिर खड़े रहना है

बैठो, चलो, खड़े रहो (Sit, Walk, Stand) में नी का अन्तिम शब्द जीतना नहीं, बल्कि खड़े रहना है। यह अन्तर विश्वासी को भय और घमण्ड दोनों से बचाता है।

"इसलिए स्थिर रहो" (इफिसियों 6:14)।

मसीह पहले ही प्रधानताओं और अधिकारों से ऊपर उठाया जा चुका है। विश्वासी आत्मिक बल के द्वारा विजय उत्पन्न करने का प्रयास करने के बजाय मसीह की विजय के भीतर से विरोध करता है।

इससे आत्मिक युद्ध बहुत साधारण बन जाता है। हथियार हैं सत्य, धार्मिकता, शान्ति, विश्वास, उद्धार, पवित्रशास्त्र और प्रार्थना। सच्चा मसीही हथियारबन्द है। क्षमा करनेवाली कलीसिया शैतान का सामना करती है। जो विश्वासी मसीह के लहू में विश्राम करते हुए दोष लगाए जाने को अस्वीकार करता है, वह स्थिर खड़ा रहता है।

नी की शिक्षा तब सबसे अधिक बाइबल-सम्मत होती है जब वह दुष्टात्माओं के प्रति आकर्षण के बजाय मसीह पर ध्यान बनाए रखती है। नये नियम में दुष्ट आत्माएँ वास्तविक हैं, परन्तु प्रेरित दुष्टात्मिक संसार की सूची बनाने की अपेक्षा मसीह का प्रचार करने और पवित्र कलीसियाएँ गढ़ने में कहीं अधिक समय लगाते हैं।

मसीही को अन्धकार से डरने की आवश्यकता नहीं। न ही उसे उसके विचार में डूब जाना चाहिए।

22. दुःख पुनरुत्थान की पाठशाला बन सकता है

नी के जीवन ने पुनरुत्थान के विषय में उनकी शिक्षा को असाधारण भार दिया। गम्भीर बीमारी, सेवकाई से बहिष्कार, राजनीतिक उथल-पुथल, जेल और शोक ने उन्हें बार-बार ऐसी सीमाओं तक पहुँचाया जिन्हें वे प्रतिभा से पार नहीं कर सकते थे।

पौलुस वर्णन करता है: “हमने अपने मन में समझ लिया था, कि हम पर मृत्यु की सजा हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न रखें, वरन् परमेश्वर का जो मरे हुओं को जिलाता है” (2 कुरिन्थियों 1:9)।

उद्देश्य भरोसे का स्थानान्तरण है।

इस शिक्षा को दुःख का महिमामण्डन नहीं करना चाहिए। मसीही खतरे से भाग सकते हैं, चंगाई ढूँढ़ सकते हैं, अन्याय को चुनौती दे सकते हैं और हानिकारक परिस्थितियों को बदल सकते हैं। बुराई इसलिए भली नहीं बन जाती कि परमेश्वर उसे छुड़ाकर उपयोग में ला सकता है।

परन्तु दुःख जीवन के झूठे स्रोतों को उजागर कर सकता है। जब प्रतिष्ठा चली जाती है, तो क्या मसीह पर्याप्त है? जब स्वास्थ्य जवाब दे देता है, तो क्या मसीह पर्याप्त है? जब सेवकाई छिन जाती है, तो क्या मसीह पर्याप्त है?

पुनरुत्थान का विश्वास कहता है कि परमेश्वर की सामर्थ्य उस बिन्दु से सीमित नहीं होती जहाँ स्वाभाविक सम्भावना समाप्त होती है।

नी के जेल में बीते बीस वर्ष इसे किसी सम्मेलन के विषय से कहीं बढ़कर बना देते हैं।

23. बाहरी मनुष्य को टूटना ही है ताकि मसीह प्रकट हो सके

नी की “बाहरी मनुष्य” की भाषा उस आत्म-रक्षक, स्व-निर्देशित स्वाभाविक व्यक्ति का वर्णन करती है जो मसीह के जीवन में बाधा डाल सकता है। उस बाहरी छिलके के “टूटने” का अर्थ है हठीले आत्म-शासन का अन्त।

इस चित्र को उसके फल से परखा जाना चाहिए। सच्चा टूटापन व्यक्ति को अधिक सिखाने योग्य, सच्चा, कोमल और प्रेम करने में सक्षम बनाता है। वह उसे मानसिक रूप से नष्ट या दुर्व्यवहार के अधीन रहनेवाला नहीं बनाता।

याकूब कहता है कि ऊपर से आनेवाला ज्ञान “मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया ... से लदा हुआ” होता है (याकूब 3:17)।

जिस व्यक्ति को सुधारा नहीं जा सकता, वह वरदानों से भरा होने पर भी कठोर बना रहता है। जो अगुवा क्षमा नहीं माँग सकता, वह क्रूस की बात तो कर सकता है, पर उसे अपनी प्रतिष्ठा के निकट आने नहीं देता।

नी की यह धारणा मसीही अगुवाई के लिये विशेष रूप से मूल्यवान है। स्वाभाविक आकर्षण चरित्र के गढ़े जाने से कहीं अधिक तेज़ी से श्रोता-समूह खड़ा कर सकता है। परमेश्वर की रुचि केवल इसमें नहीं कि कोई सेवक कितना कुछ कर सकता है। वह उस सेवक को गढ़ता है जिसके द्वारा उपलब्धि आती है।

परन्तु लक्ष्य कभी भी अपने आप में टूटापन नहीं है। दाना इसलिए मरता है कि फल लाए।

24. कलीसिया को स्वदेशी और फिर भी सार्वभौमिक होना चाहिए

नी चाहते थे कि चीनी कलीसियाएँ स्थायी विदेशी आर्थिक और संगठनात्मक नियंत्रण से स्वतंत्र हों। इसने उन्हें एक व्यापक स्वदेशी-कलीसिया आन्दोलन के भीतर रखा, जबकि उन्होंने इस सिद्धान्त को एक विशिष्ट कलीसिया-विज्ञान सम्बन्धी आधार दिया।

पौलुस ने कलीसियाएँ स्थापित कीं और स्थानीय प्राचीन नियुक्त किए। मिशनरी कार्य का उद्देश्य था कि वह परिपक्व होकर स्थानीय उत्तरदायित्व में बदल जाए।

साथ ही, मसीह की देह सार्वभौमिक है। विदेशी नियंत्रण से स्वतंत्रता को विदेशी विश्वासियों से अलगाव नहीं बनना चाहिए।

नया नियम दिखाता है कि कलीसियाएँ विभिन्न क्षेत्रों में एक दूसरे को दान देती थीं, यात्रा करनेवाले सेवकों को ग्रहण करती थीं, पत्रियाँ आपस में बाँटती थीं और साझे मिशन में भाग लेती थीं।

परिपक्व सिद्धान्त है: पराधीनता के बिना परस्पर निर्भरता।

यह आज भी मिशन का एक बड़ा पाठ है। बाहर का धन सेवकाई को तेज़ कर सकता है और चुपचाप स्थानीय प्राथमिकताओं को बिगाड़ भी सकता है। बाहर की विशेषज्ञता अगुवों को सुदृढ़ कर सकती है और अनजाने में उन्हें अपने निर्णयों का स्वामित्व लेने से रोक भी सकती है।

स्वस्थ मिशन केवल यह नहीं पूछता, “हम क्या दे सकते हैं?” बल्कि यह भी, “हम किस स्थानीय क्षमता को बढ़ने में सहायता दे रहे हैं?”

25. अन्तिम कसौटी मसीह है, वॉचमैन नी नहीं

वॉचमैन नी के विषय में लिखी गई पुस्तक की सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षा यह है कि वॉचमैन नी मानदण्ड नहीं हैं।

पौलुस ने विश्वासियों से कहा, "तुम मेरी जैसी चाल चलो जैसा मैं मसीह के समान चाल चलता हूँ" (1 कुरिन्थियों 11:1)। यह शर्त निर्णायक है। मसीही अगुवों के पीछे केवल उतना ही चला जाता है जितना वे मसीह की ओर संकेत करते हैं।

नी की अन्तर्दृष्टियों को कृतज्ञता से ग्रहण करना चाहिए। उनकी विवादित शिक्षाओं को परखा जाना चाहिए। उनकी असफलताएँ, यदि प्रमाणित हों, तो स्वीकार की जानी चाहिए। उनके दु:ख का आदर होना चाहिए। इनमें से कोई भी कदम मसीही विश्वास के लिये खतरा नहीं है, क्योंकि मसीही विश्वास को कभी उन पर टिकना ही नहीं था।

"क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता" (1 कुरिन्थियों 3:11)।

यह प्रशंसक और आलोचक दोनों की रक्षा करता है। प्रशंसक को हर कार्य का बचाव करने की आवश्यकता नहीं। आलोचक को हर अन्तर्दृष्टि को इसलिए त्यागने की आवश्यकता नहीं कि शिक्षक अपूर्ण था।

मिट्टी का बरतन चटक सकता है; धन मसीह ही बना रहता है।

नी के पूरे जीवन को पढ़ने का शायद यही सबसे उपयुक्त तरीका है।

परिशिष्ट B: अध्याय-दर-अध्याय अध्ययन और मनन मार्गदर्शिका

यह मार्गदर्शिका व्यक्तिगत मनन, छोटे समूहों, नेतृत्व दलों या पंद्रह सप्ताह के पठन-पाठ्यक्रम के लिए तैयार की गई है। इन प्रश्नों का उद्देश्य वॉचमैन नी को भक्ति का विषय बनाना नहीं है। ये उनके जीवन और शिक्षा को एक दर्पण की तरह काम में लेते हैं, जिसमें पाठक पवित्रशास्त्र के अधीन अपनी शिष्यता को जाँच सकें।

अध्याय 1 - मसीह को समर्पित जीवन

केन्द्रीय विचार

मसीही विरासत एक वरदान है, परन्तु वह व्यक्तिगत नए जन्म का स्थान नहीं ले सकती। नी ऐसे परिवार में बड़े हुए जिसे प्रोटेस्टेंट मसीहियत ने छुआ था, फिर भी निर्णायक प्रश्न यह था कि क्या मसीह व्यक्तिगत रूप से उनके प्रभु बनेंगे।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

गलातियों 2:20; यूहन्ना 12:24; कुलुस्सियों 3:3-4; 2 कुरिन्थियों 4:7; मत्ती 16:24।

मनन

1. आपके मसीही जीवन के कौन-से भाग सचमुच व्यक्तिगत दृढ़ विश्वास हैं, और कौन-से ऐसी विरासत में मिली आदतें हैं जिन्हें आपने कभी गहराई से जाँचा ही नहीं? 2. कहाँ-कहाँ

स्वाभाविक बुद्धि, धन, व्यक्तित्व, पारिवारिक पृष्ठभूमि या सामाजिक स्थिति आपके भरोसे का स्रोत बनी हुई है? 3. आपके वर्तमान दौर में इसका क्या अर्थ होगा कि मसीह आपके जीवन का केवल एक महत्त्वपूर्ण भाग न रहकर "आपका जीवन" बन जाए? 4. परमेश्वर कहाँ आपसे गेहूँ के दाने के सिद्धांत को स्वीकार करने को कह रहा हो सकता है—नियंत्रण छोड़ देना, ताकि प्रेम और फलवन्तता बढ़ सके? 5. नी के जीवन के किन पहलुओं की प्रशंसा सावधानी से करनी चाहिए, उन्हें आदर्श बनाए बिना?

नेतृत्व में प्रयोग

संस्थाएँ अकसर अपने उद्देश्य-कथन तब विरासत में पाती हैं जब स्थापना के समय का जोश फीका पड़ चुका होता है। पूछिए कि क्या आपकी कलीसिया या सेवकाई में अब भी वह आत्मिक वास्तविकता है जिसने मूल रूप से उसकी संरचनाओं को जन्म दिया था। संस्थागत स्मृति परमेश्वर पर वर्तमान निर्भरता के समान नहीं है।

प्रार्थना

परमेश्वर से मसीह के ऐसे जीवित, वर्तमान ज्ञान के लिए माँगिए जो विरासत में मिली शब्दावली से अधिक गहरा हो, और ऐसे अनुग्रह के लिए जिससे आप अपने स्वाभाविक बल को उसके शासन के अधीन कर सकें।

अध्याय 2 - वॉचमैन नी का मन-फिराव

केन्द्रीय विचार

मन-फिराव अनुग्रह का पाया जाना और स्वामित्व का हस्तान्तरण है। मसीह सेंत-मेंत उद्धार देता है और पूरे मनुष्य पर अपना दावा करता है।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

प्रेरितों के काम 2:36; इफिसियों 2:8-10; रोमियों 12:1; 2 कुरिन्थियों 5:17; प्रेरितों के काम 24:16; रोमियों 6:6-13।

मनन

1. क्या उद्धार के विषय में आपकी समझ मसीह के प्रभुत्व से अलग हो गई है? 2. क्या कोई ठोस गलतियाँ हैं जिन्हें सुधारना मन फिराने की माँग है? 3. क्या आप समर्पण को परमेश्वर की कृपा कमाने के साथ गड्डमड्ड कर देते हैं? 4. आपकी कौन-सी महत्त्वाकांक्षाएँ परमेश्वर के हाथ में सौंपना आपके लिए सबसे कठिन है? 5. क्या आप परिणाम का अनुमान लगा पाने से पहले ही आज्ञा मानने को तैयार हैं?

नेतृत्व में प्रयोग

मसीही संस्थाओं को अपराध-स्वीकार और क्षतिपूर्ति को सामान्य बात बनाना चाहिए। वरिष्ठता से क्षमा माँगने की आवश्यकता कम नहीं होती। जिस संस्कृति में अगुवे अपनी गलती स्वीकार नहीं कर सकते, वह अन्त में सत्य को पदानुक्रम के अधीन कर देगी।

प्रार्थना

उद्धार के वरदान के लिए मसीह का धन्यवाद कीजिए, फिर जीवन के उन क्षेत्रों को फिर से उसे सौंपिए जिन्हें निजी सम्पत्ति मानने की परीक्षा आपको सबसे अधिक होती है।

अध्याय 3 - विश्वास से चलना सीखना

केन्द्रीय विचार

परमेश्वर काम में सेवक का उपयोग करने से पहले भी और करते समय भी उसे गढ़ता है। विश्वास परमेश्वर के चरित्र पर टिका रहता है; आत्मिक सेवकाई स्वाभाविक बल से गढ़ी नहीं जा सकती।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

यूहन्ना 5:19; 2 कुरिन्थियों 12:9-10; इफिसियों 1:17-18; इब्रानियों 11:1; यशायाह 40:31; 2 कुरिन्थियों 1:9; यूहन्ना 7:17।

मनन

1. किसे यह अनुमति है कि वह आपके सम्बन्ध को जोखिम में डाले बिना आपको सुधार सके? 2. क्या आपके ऐसे मार्गदर्शक हैं जो मसीह से इतने प्रभावित हों कि आपके वरदानों से अधिक प्रभावित न हों? 3. कहाँ आपकी व्यस्तता परमेश्वर की बाट जोहने से बचने का साधन बन जाती है? 4. किन मसीही लेखकों ने आपको गढ़ा है, और क्या आप उन्हें पवित्रशास्त्र से परख रहे हैं? 5. आपके जीवन की कौन-सी निर्बलता केवल सफलता में बाधा डालने के बजाय आपको निर्भरता सिखा रही हो सकती है?

नेतृत्व में प्रयोग

अत्यधिक क्षमता वाले अगुवों को ऐसी शासन-व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है जो प्रभाव बढ़ने के साथ ईमानदार असहमति को बनाए रखें। संकट के आने से पहले ही उत्तरदायित्व की व्यवस्था बनाइए।

प्रार्थना

परमेश्वर से माँगिए कि वह आपको सीखने योग्य बनाए, सेवा में आपके उद्देश्यों को शुद्ध करे, और निर्बलता को कड़वाहट के बजाय निर्भरता में बदल दे।

अध्याय 4 - युवा प्रचारक और लिटिल फ्लॉक

केन्द्रीय विचार

कलीसिया मसीह की है, न कि किसी संस्थापक, विदेशी मिशन, सम्प्रदाय या पेशेवर पादरी-वर्ग की। हर विश्वासी को देह में सहभागी होने के लिए बुलाया गया है।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

प्रेरितों के काम 2:42; कुलुस्सियों 1:18; 1 कुरिन्थियों 1:12-13; 1 पतरस 2:5, 9; इफिसियों 4:12; 1 कुरिन्थियों 10:17।

मनन

1. क्या आपकी कलीसिया की संरचना साधारण मसीहियों को सेवा करने के लिए तैयार करती है, या मुख्यतः उन्हें केवल ग्रहण करनेवाला बनना सिखाती है? 2. कौन-सी साम्प्रदायिक या संस्थागत पहचानें मसीह में संगति से अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई हैं? 3. बाहरी नियंत्रण से स्वतंत्रता कहाँ अस्वस्थ अलगाव बन सकती है? 4. क्या आपकी मण्डली में धन का उपयोग स्थानीय परिपक्वता को बढ़ाता है या लम्बे समय की निर्भरता को? 5. यदि आपका सबसे प्रमुख अगुवा कल गायब हो जाए, तो कलीसिया कितनी अच्छी तरह चलेगी?

नेतृत्व में प्रयोग

नेतृत्व को कुछ हद तक इस बात से मापिए कि अगुवे के बिना कितनी सेवकाई चलती है। स्वस्थ संस्थापक ऐसी संस्थाएँ बनाते हैं जो उनकी अनुपस्थिति में भी टिकी रह सकें।

प्रार्थना

प्रार्थना कीजिए कि आपकी स्थानीय कलीसिया मसीह के सिर होने, विश्वासियों के याजकपद, मतभेदों के बीच नम्रता और पूरी देह के प्रति सच्चे प्रेम को प्रगट करे।

अध्याय 5 - सामान्य मसीही जीवन

केन्द्रीय विचार

पाप के प्रति परमेश्वर का उत्तर क्षमा से भी बड़ा है। विश्वासी मृत्यु और पुनरुत्थान में मसीह के साथ जुड़े हुए हैं, और उन्हें जानने, मानने और अपने आपको परमेश्वर को सौंपने (Know, Reckon, Present) के लिए बुलाया गया है।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

रोमियों 5:8-19; रोमियों 6:5-14; रोमियों 7:19-25; रोमियों 8:1-14; कुलुस्सियों 3:4; यूहन्ना 15:4-5।

मनन

1. क्या आप परमेश्वर से मुख्यत: प्रयास, असफलता, दोष-भावना और फिर से समर्पण के चक्रों के द्वारा सम्बन्ध रखते हैं? 2. जब पवित्रीकरण आत्म-सुधार के बजाय मसीह के साथ एकता से आरम्भ होता है, तो क्या बदल जाता है? 3. किन पापों को आप अब भी ऐसे मानते हैं मानो उन्हें आप पर प्रभुता करने का उचित अधिकार हो? 4. आपकी देह, दिनचर्या, यौनिकता, आर्थिक मामलों और महत्त्वाकांक्षाओं के लिए "अपने आपको ... परमेश्वर को सौंपो" का क्या अर्थ है? 5. क्या आप अनुशासन से बचने के लिए अनुग्रह का, या अनुग्रह से बचने के लिए अनुशासन का सहारा ले रहे हैं?

नेतृत्व में प्रयोग

कलीसियाएँ अनजाने में अनुग्रह से धर्मी ठहराए जाने और चिन्ता से पवित्रीकरण का प्रचार कर सकती हैं। जाँचिए कि कहीं सेवकाई की संस्कृति लोगों को मसीह पर निर्भरता सिखाने के बजाय बलवन्त दिखने के लिए तो पुरस्कृत नहीं करती।

प्रार्थना

परमेश्वर ने मसीह में जो कुछ पूरा किया है, उसके लिए उसका धन्यवाद कीजिए। उसकी घोषणा को सत्य मानिए और जीवन के विशिष्ट क्षेत्रों को उसे सौंपिए।

अध्याय 6 - बैठो: मसीह में हमारी स्थिति

केन्द्रीय विचार

मसीही अनुग्रह से आरम्भ करता है। मसीह में स्थान योग्य चाल-चलन और आत्मिक संघर्ष से पहले आता है।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

इफिसियों 1:3-23; इफिसियों 2:1-22; इफिसियों 3:12-21।

मनन

1. कहाँ आप इसलिए परिश्रम कर रहे हैं कि स्वीकार किए जाने का अनुभव करें, न कि इसलिए कि आप स्वीकार किए जा चुके हैं? 2. इफिसियों में वर्णित किन आत्मिक आशीषों को आप आदतन ऐसे माँगते हैं मानो परमेश्वर ने कुछ दिया ही न हो? 3. पिता के पास सुरक्षित पहुँच आपके प्रार्थना-जीवन को कैसे बदल देगी? 4. क्या आपकी पहचान आपकी उत्पादकता के साथ ऊपर-नीचे होती रहती है? 5. देह का अंग होना "उसके साथ बैठाया" (मसीह के साथ) की व्यक्तिवादी व्याख्या को कैसे बदल देता है?

नेतृत्व में प्रयोग

चिन्तित अगुवा चिन्तित संस्था बनाता है। जो अगुवे जानते हैं कि उनकी पहचान परिणामों पर निर्भर नहीं है, वे सच बोलने, अधिकार बाँटने और धैर्यपूर्ण निर्णय लेने के लिए अधिक स्वतंत्र होते हैं।

प्रार्थना

इफिसियों में घोषित अनुग्रह में जान-बूझकर विश्राम कीजिए, और ज्योतिर्मय आँखों के लिए माँगिए, ताकि आप देख सकें कि परमेश्वर ने मसीह में क्या-क्या दिया है।

अध्याय 7 - चलो: हमारे द्वारा जिया गया मसीह का जीवन

केन्द्रीय विचार

अनुग्रह साधारण सम्बन्धों में दिखाई देने लगता है। योग्य चाल को नम्रता, सच्चाई, क्षमा, पवित्रता, बुद्धि, प्रेम और आत्मा से भरे आचरण से मापा जाता है।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

इफिसियों 4:1-32; इफिसियों 5:1-21; गलातियों 5:16-25; 1 यूहन्ना 4:20।

मनन

1. इस समय कौन-सा सम्बन्ध आपकी आत्मिकता की सबसे अच्छी परख है? 2. क्या आपके शब्द सुननेवालों पर अनुग्रह करते हैं? 3. कहाँ क्रोध या कड़वाहट अब भी अनसुलझी पड़ी है? 4. क्या आप आत्मिक अनुभव को आत्मिक फल समझने की भूल कर रहे हैं? 5. किस साधारण ज़िम्मेदारी को सार्वजनिक सेवकाई से कम आत्मिक मानने की परीक्षा आपको हुई है?

नेतृत्व में प्रयोग

अगुवों को उनके सम्बन्धों के फल से उतनी ही गम्भीरता से परखिए जितनी गम्भीरता से उनके रणनीतिक प्रदर्शन से। जो अगुवा किसी संस्था को बढ़ाते हुए लोगों को चोट पहुँचाता है, वह अपनी बुलाहट के योग्य चाल नहीं चल रहा है।

प्रार्थना

आत्मा से माँगिए कि वह आपकी बोली, सम्बन्धों, काम, यौनिकता, पारिवारिक जीवन और टकराव को सँभालने के ढंग में मसीह को प्रगट करे।

अध्याय 8 - खड़े रहो: आत्मिक युद्ध और विजय

केन्द्रीय विचार

आत्मिक युद्ध का अर्थ है सत्य, धार्मिकता, शान्ति, विश्वास, उद्धार, पवित्रशास्त्र और प्रार्थना के द्वारा मसीह की पूरी हो चुकी विजय में खड़े रहना।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

इफिसियों 6:10-20; कुलुस्सियों 2:15; रोमियों 8:31-39; 1 पतरस 5:8-9; याकूब 4:7-8।

मनन

1. क्या आप समस्याओं को आवश्यकता से अधिक आत्मिक रंग देते हैं, या आत्मिक बुराई को पहचानने में चूक जाते हैं? 2. कौन-से "जलते हुए तीरों" से आप सबसे अधिक डगमगाते हैं—भय, दोषारोपण, लज्जा, परीक्षा, निराशा? 3. क्या कोई छिपी हुई बेईमानी है जो सत्य में खड़े रहने की आपकी क्षमता को कमज़ोर करती है? 4. क्या आप लोगों को शत्रु मान रहे हैं, जबकि इफिसियों कहता है कि अन्तिम संघर्ष लहू और माँस से नहीं है? 5. आपके वर्तमान दबाव में घबराने के बजाय खड़े रहना कैसा दिखेगा?

नेतृत्व में प्रयोग

कलीसियाओं को आलोचकों या राजनीतिक विरोधियों को शैतानी ठहराने के लिए युद्ध की भाषा का उपयोग नहीं करना चाहिए। सत्य, उत्तरदायित्व और शान्ति भी हथियारों का भाग हैं।

प्रार्थना

इफिसियों 6 के हर तत्व को लेकर प्रार्थना कीजिए, और अन्धकार के भय पर नहीं, बल्कि मसीह की पर्याप्तता और प्रभुत्व पर ध्यान लगाइए।

अध्याय 9 - बाहरी मनुष्य का टूटना

केन्द्रीय विचार

परमेश्वर आत्मनिर्भर स्वाभाविक बल से निपटता है, ताकि मसीह का जीवन एक कोमल, सीखने योग्य और समर्पित व्यक्ति के द्वारा प्रगट हो सके।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

2 कुरिन्थियों 4:7-12; यूहन्ना 12:24-25; उत्पत्ति 32:24-31; 2 कुरिन्थियों 12:7-10; गलातियों 6:1।

मनन

1. आप किस बात का बचाव सबसे जल्दी करते हैं—प्रतिष्ठा, नियंत्रण, सुविधा, विशेषज्ञता, या समझे जाने के अधिकार का? 2. क्या आप पहले अपनी सफ़ाई दिए बिना क्षमा माँग सकते हैं? 3. कहाँ निर्बलता ने पहचान के किसी झूठे स्रोत को उजागर किया है? 4. क्या किसी ने अस्वस्थ नियंत्रण को उचित ठहराने के लिए "टूटापन" की भाषा का उपयोग किया है? यीशु उस दुरुपयोग को कैसे सुधारता है? 5. क्या आप जैसे-जैसे परिपक्व होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे अधिक कोमल भी होते जा रहे हैं?

नेतृत्व में प्रयोग

आत्मविश्वास को आत्मिक परिपक्वता न समझिए। ऐसी संस्कृतियाँ बनाइए जिनमें क्षमा माँगना, प्रतिक्रिया देना और सुधार स्वीकार करना बल के सामान्य चिह्न हों।

प्रार्थना

परमेश्वर को आमंत्रित कीजिए कि वह घमण्ड और आत्म-रक्षा से निपटे, और साथ ही उससे माँगिए कि वह आपको झूठी नम्रता, निष्क्रियता और अधीनता के शोषणकारी रूपों से बचाए

रखे।

अध्याय 10 - आत्मा, प्राण और देह

केन्द्रीय विचार

नी की त्रिभागी शिक्षा का उद्देश्य विश्वासियों को आत्मिक जीवन और केवल स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक क्रियाओं में भेद करने में सहायता देना है, परन्तु उनकी श्रेणियों का उपयोग नम्रता से करना चाहिए, न कि उन्हें पवित्रशास्त्र पर कठोरता से थोपना चाहिए।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

1 थिस्सलुनीकियों 5:23; इब्रानियों 4:12; रोमियों 8:16; रोमियों 12:2; मरकुस 12:30; 1 यूहन्ना 4:1।

मनन

1. क्या आप तीव्र भावना को पवित्र आत्मा समझने की भूल करते हैं? 2. क्या आप तर्कपूर्ण विश्लेषण को अविश्वास समझने की भूल करते हैं? 3. पवित्रशास्त्र, बुद्धि, संगति और मनोविज्ञान भीतरी अनुभूतियों को परखने में कैसे सहायता कर सकते हैं? 4. क्या आप इस विषय में अत्यधिक आत्म-निरीक्षण करने लगे हैं कि कोई बात "प्राण" से आई या "आत्मा" से? 5. क्या आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व—मन, भावना, इच्छा, देह और आत्मिक जीवन—प्रेम की ओर पवित्र किया जा रहा है?

नेतृत्व में प्रयोग

आत्मिक अन्तर्ज्ञान का उपयोग कभी भी प्रमाण या उत्तरदायित्व को दरकिनार करने के लिए न कीजिए। "मुझे प्रभु की ओर से ऐसा लगता है" जैसे दावे परखे जाने के लिए खुले रहने चाहिए।

प्रार्थना

पवित्र आत्मा से माँगिए कि वह आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को नया करे, विवेक को पैना करे, और भीतरी विश्लेषण के बजाय मसीह को केन्द्र में रखे।

अध्याय 11 - कलीसिया और मसीह की देह

केन्द्रीय विचार

मसीही परिपक्वता सामूहिक है। मसीह सिर है, विश्वासी अंग हैं, अगुवे सेवक हैं, और एकता को सत्य या विवेक का त्याग किए बिना ग्रहण करना चाहिए।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

प्रेरितों के काम 9:4; कुलुस्सियों 1:18; इफिसियों 4:4-16; रोमियों 15:7; 1 पतरस 5:1-4; प्रेरितों के काम 5:29।

मनन

1. व्यावहारिक रूप में इसका क्या अर्थ है कि आप “एक दूसरे के अंग” हैं? 2. क्या आपकी कलीसिया में निर्बल या शान्त स्वभाव के अंगों को सचमुच आवश्यक माना जाता है? 3. एकता की पुकार कहाँ सत्य से बचने को छिपा सकती है? 4. सैद्धान्तिक दृढ़ विश्वास कहाँ घमण्ड भरे अलगाव में बदल सकता है? 5. कौन-सी सुरक्षा-व्यवस्थाएँ सौंपे गए अधिकार को प्रभुत्व जमाने में बदलने से रोकती हैं?

नेतृत्व में प्रयोग

बहु-सदस्यीय नेतृत्व में वास्तविक बहुलता होनी चाहिए। यदि किसी वरिष्ठ अगुवे के आस-पास हर कोई असहमति जताने से डरता है, तो वह संरचना केवल नाम की बहु-सदस्यीय है।

प्रार्थना

पूरी देह के प्रति प्रेम, मतभेद में नम्रता, दुर्व्यवहार के विरुद्ध साहस, और ऐसे अगुवों के लिए प्रार्थना कीजिए जो प्रधान रखवाले के समान हों।

अध्याय 12 - विश्वास, प्रार्थना और निर्भरता का जीवन

केन्द्रीय विचार

विश्वास परमेश्वर के चरित्र पर भरोसा रखता है; प्रार्थना उसके उद्देश्य में सहभागी होती है। इनमें से कोई भी परिणामों को नियंत्रित करने की तकनीक नहीं है।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

मत्ती 6:25-34; फिलिप्पियों 4:6-13, 19; याकूब 4:2; मत्ती 6:10; 1 यूहन्ना 5:14; 2 कुरिन्थियों 12:9।

मनन

1. कहाँ बुलाहट से अधिक धन आपके निर्णयों को चलाता है? 2. क्या आप विश्वास को आर्थिक सहायता पाने की किसी विशेष पद्धति से परिभाषित करते हैं? 3. कौन-सी अनुत्तरित प्रार्थना इस समय परमेश्वर के विषय में आपकी धारणा को परख रही है? 4. क्या आप साहस से प्रार्थना करने और परिणाम को सौंप देने के लिए तैयार हैं? 5. क्या आपके प्रार्थना-जीवन में धन्यवाद, विलाप, मध्यस्थता, सुनना और परमेश्वर के राज्य की चिन्ता शामिल है?

नेतृत्व में प्रयोग

“विश्वास-सेवकाई” को कम नहीं, बल्कि अधिक आर्थिक पारदर्शिता की आवश्यकता होती है। दाताओं पर दबाव डालने या कमज़ोर शासन-व्यवस्था को छिपाने के लिए कभी परमेश्वर के नाम का उपयोग न कीजिए।

प्रार्थना

ठोस आवश्यकताओं को पिता के सामने लाइए, उसकी देखभाल के लिए उसका धन्यवाद कीजिए, और मनचाहा उत्तर तथा अपनी समय-सारणी, दोनों उसे सौंप दीजिए।

अध्याय 13 - क्रान्ति, सताव और शिष्यता की कीमत

केन्द्रीय विचार

शासन के प्रति मसीही अधीनता वास्तविक है, परन्तु मसीह के प्रभुत्व से सीमित है। राजनीतिक व्यवस्थाएँ तब आत्मिक रूप से खतरनाक बन जाती हैं जब वे परम निष्ठा की माँग करती हैं या विवेक को नियंत्रित करना चाहती हैं।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

रोमियों 13:1-7; प्रेरितों के काम 5:29; मत्ती 4:10; यूहन्ना 10:11; मरकुस 13:12; 2 तीमुथियुस 2:9।

मनन

1. आप किन राजनीतिक मान्यताओं को केवल इसलिए आत्मिक रूप से तटस्थ मान लेते हैं कि वे आपको परिचित लगती हैं? 2. मसीही लोग राज्य को मूर्ति बनाए बिना शासकों का आदर कैसे कर सकते हैं? 3. जब वैध कानून और मसीह की आज्ञाकारिता आपस में टकराएँ, तब विश्वासियों को क्या करना चाहिए? 4. जब स्रोत राजनीतिक रूप से पक्षपाती हों, तब मसीही अगुवों पर लगे विवादित आरोपों का मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए? 5. क्या आपका विश्वास सार्वजनिक रूप से प्रतिष्ठा खो देने के बाद भी टिका रहेगा?

नेतृत्व में प्रयोग

कलीसियाओं को संकट आने से पहले ही राजनीतिक दबाव के लिए धर्मवैज्ञानिक तैयारी करनी चाहिए। रोमियों 13 और प्रेरितों के काम 5:29, दोनों की शिक्षा दीजिए—न विद्रोही तिरस्कार, न बिना प्रश्न किए अनुपालन।

प्रार्थना

शासन करनेवाले अधिकारियों, सताए जा रहे मसीहियों, साहस, सत्य, और मानवीय विरोधियों के प्रति घृणा से मुक्ति के लिए प्रार्थना कीजिए।

अध्याय 14 - बेड़ियों में बीस वर्ष

केन्द्रीय विचार

किसी विश्वासी का मूल्य उसकी दिखाई देनेवाली उपयोगिता से नहीं मापा जाता। जब स्वतंत्रता, सेवकाई, स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा और मनचाहे परिणाम लुप्त हो जाते हैं, तब भी मसीह पर्याप्त बना रह सकता है।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

फिलिप्पियों 1:21; 2 तीमुथियुस 2:9; इब्रानियों 10:36; रोमियों 8:38-39; भजन संहिता 31:15; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-14।

मनन

1. यदि आपका वर्तमान व्यवसाय आपसे ले लिया जाए, तो आप कौन हैं? 2. कौन-सी लम्बी देरी आपके धीरज को किसी छोटे संकट से अधिक परख रही है? 3. क्या आप शोक और अविश्वास में भेद कर पाते हैं? 4. पुनरुत्थान की आशा एक अधूरे-से दिखनेवाले जीवन का अर्थ कैसे बदल देती है? 5. कौन-सी छिपी हुई विश्वासयोग्यता तब भी मायने रखेगी जब कोई मनुष्य उसे कभी न देखे?

नेतृत्व में प्रयोग

आत्मिक पहचान को मंच से अधिक गहराई में स्थापित कीजिए। अगुवों को ऐसे दौरों के लिए तैयार कीजिए जब बीमारी, बढ़ती आयु, पारिवारिक कर्तव्य, सताव या संस्थागत परिवर्तन उनकी सार्वजनिक उपयोगिता को घटा दें।

प्रार्थना

कैद में पड़े मसीहियों को स्मरण कीजिए, और छिपे हुए स्थानों में विश्वासयोग्य रहने के लिए अनुग्रह माँगिए, जहाँ आज्ञाकारिता को तुरन्त कोई पहचान नहीं मिलती।

अध्याय 15 - वॉचमैन नी की विरासत

केन्द्रीय विचार

नी को एक मिट्टी के बरतन के रूप में ग्रहण कीजिए: उस धन के लिए कृतज्ञ रहिए, उनकी सीमाओं के विषय में ईमानदार रहिए, और मसीह तथा पवित्रशास्त्र को हर शिक्षक से ऊपर रखने के लिए दृढ़ रहिए।

फिर से पढ़ने योग्य पवित्रशास्त्र

2 कुरिन्थियों 4:7; प्रेरितों के काम 17:11; 1 कुरिन्थियों 3:11, 21; इब्रानियों 13:8; कुलुस्सियों 3:4।

मनन

1. नी की किस शिक्षा ने आपको मसीह को अधिक स्पष्टता से देखने में सबसे अधिक सहायता दी है? 2. किन शिक्षाओं के लिए सबसे मज़बूत बाइबलीय सुरक्षा-उपायों की आवश्यकता है? 3. मसीही लोग निंदक या मूर्तिपूजक बने बिना अपूर्ण शिक्षकों से लाभ कैसे उठा सकते हैं? 4. नी का बिना सोचे बचाव करने के बजाय उन्हें परखकर उनका आदर करने

का क्या अर्थ होगा? 5. यदि आप इस जीवनी से केवल एक विषय याद रखें, तो वह क्या होना चाहिए?

नेतृत्व में प्रयोग

कभी ऐसी मसीही संस्कृति न बनाइए जिसमें किसी अगुवे की आलोचना को मसीह की आलोचना माना जाए। नींव केवल यीशु मसीह है।

प्रार्थना

मानवीय शिक्षकों के द्वारा दिए गए हर सच्चे वरदान के लिए परमेश्वर का धन्यवाद कीजिए। विवेक, नम्रता, सच बोलने के साहस, और ऐसे जीवन के लिए माँगिए जिसका केन्द्र अन्ततः मसीह ही हो।

परिशिष्ट C: वॉचमैन नी के जीवन और समय का कालक्रम

नीचे दी गई तिथियाँ दिशा-बोध के लिए हैं; इनका यह दावा नहीं है कि नी के जीवन की हर घटना को समान सटीकता से तिथिबद्ध किया जा सकता है। चीनी नामों की अंग्रेज़ी वर्तनी अलग-अलग स्रोतों में भिन्न है, और आन्दोलन के कुछ इतिहास तथा अकादमिक अध्ययन घटनाओं की अलग-अलग व्याख्या करते हैं।

1903 - जन्म

वॉचमैन नी का जन्म 4 नवम्बर 1903 को ग्वांगडोंग प्रान्त के शान्तोउ में एक चीनी मसीही परिवार में होता है, जिसकी जड़ें फ़ुजियान प्रान्त के फ़ूझोउ में हैं। उनका जन्म-नाम सामान्यतः नी शूज़ू बताया जाता है। उनके दादा मसीही सेवक रह चुके थे, और इस प्रकार नी चीनी प्रोटेस्टेंट पारिवारिक इतिहास की तीसरी पीढ़ी का हिस्सा बनते हैं।

चीन अब भी छिंग राजवंश के अधीन है, यद्यपि साम्राज्यवादी शासन पतन के निकट पहुँच रहा है।

1911-1912 - क्रान्ति और गणराज्य

शिन्हाई क्रान्ति छिंग राजवंश को उखाड़ फेंकती है। चीन गणराज्य की स्थापना होती है। नी अभी बालक ही हैं, परन्तु उनकी पूरी युवावस्था एक ऐसे राष्ट्र में बीतेगी जो राजनीतिक व्यवस्था, आधुनिकीकरण, राष्ट्रवाद और विदेशी प्रभाव पर बहस कर रहा है।

1910 का दशक - मिशन स्कूल की शिक्षा

नी मिशनरी शिक्षण संस्थानों में पढ़ते हैं, जिनमें फ़ूझोउ के एंग्लिकन संस्थान भी सम्मिलित हैं। वे अंग्रेज़ी पर मज़बूत पकड़ प्राप्त करते हैं, जो आगे चलकर उन्हें पश्चिमी मसीही साहित्य के विशाल भण्डार तक सीधी पहुँच देती है।

बाद के विवरणों में उनकी बुद्धिमत्ता की व्यापक चर्चा होती है, परन्तु आरम्भ में वे विरासत में मिली मसीहियत में कोई गहरी व्यक्तिगत रुचि नहीं दिखाते।

1920 - मन-फिराव

सत्रह वर्ष की आयु में, चीनी सुसमाचार प्रचारक डोरा यू की प्रचार-सेवा के सम्बन्ध में नी का मन-फिराव होता है। उनकी माँ का नया हुआ विश्वास और उनका पश्चाताप भी उन पर गहरा प्रभाव डालता है।

इस मन-फिराव में महत्वाकांक्षा और जीवन-व्यवसाय को लेकर एक संघर्ष सम्मिलित है। नी मसीहियत को केवल क्षमा के रूप में नहीं, बल्कि मसीह की प्रभुता के प्रति समर्पण के रूप में समझने लगते हैं।

वे सक्रिय सुसमाचार-प्रचार और गहन बाइबल अध्ययन आरम्भ करते हैं।

1921 - बपतिस्मा और मार्गरेट बार्बर

नी अंग्रेज़ मिशनरी मार्गरेट ई. बार्बर के प्रभाव में आते हैं, जो फ़ूझोउ के निकट विश्वास का एक स्वतंत्र जीवन जीती हैं। नी और उनकी माँ अपने पहले के शिशु-बपतिस्मा को पर्याप्त मानने से इनकार करते हैं और विश्वासी का बपतिस्मा लेते हैं।

बार्बर एक प्रमुख मार्गदर्शक बन जाती हैं, जो नी का परिचय गहन-जीवन की शिक्षा, ब्रदरन साहित्य, विश्वास के सिद्धान्तों और क्रूस की एक कठोर आत्मिकता से कराती हैं।

1922-1923 - फ़ूझोउ की संगति और कलीसिया का आरम्भिक प्रयोग

नी लेलैंड वांग और अन्य युवा मसीहियों के साथ मिलकर सुसमाचार-प्रचार, घरेलू संगति, बाइबल अध्ययन, साप्ताहिक रोटी तोड़ने, और स्थापित साम्प्रदायिक ढाँचों से बाहर

कलीसियाई व्यवस्था के प्रयोगों में लग जाते हैं।

साम्प्रदायिक अलगाव, सेवा की प्राथमिकताओं और अगुवाई को लेकर मतभेद उभरते हैं। नी बहिष्कार का अनुभव करते हैं और अधिकार, संघर्ष तथा क्रूस के विषय में पीड़ादायक पाठ सीखते हैं।

1920 का दशक - प्रकाशन सेवा

नी मसीही पत्रिकाएँ, पर्चे, शिक्षण सामग्री और अन्ततः बड़ी रचनाएँ प्रकाशित करना आरम्भ करते हैं। छपा हुआ शब्द उन प्रमुख माध्यमों में से एक बन जाता है जिनके द्वारा उनका प्रभाव उन स्थानों से आगे फैलता है जहाँ वे स्वयं जा सकते हैं।

वे ब्रदरन, केज़िक, पवित्रता-आन्दोलन, भक्तिपरक, भविष्यद्वाणी-सम्बन्धी और मिशनरी साहित्य को व्यापक रूप से पढ़ते हैं।

1920 के दशक का मध्य - गम्भीर बीमारी

नी क्षयरोग से पीड़ित होते हैं और उन्हें असमय मृत्यु की सम्भावना का सामना करना पड़ता है। इसी अवधि में वे उस सामग्री पर गहनता से काम करते हैं जो आगे चलकर *आत्मिक मनुष्य (The Spiritual Man)* बनती है—आत्मा, प्राण, देह, क्रूस और आत्मिक अनुभव का एक विस्तृत विवेचन।

बीमारी पुनरुत्थान के जीवन पर और स्वाभाविक बल से परे निर्भरता पर उनके बल को और गहरा कर देती है।

1928 - शंघाई केन्द्र और विस्तार

नी की सेवा उत्तरोत्तर शंघाई पर केन्द्रित होती जाती है। उनकी शिक्षा से जुड़ी सभाओं का जाल फैलता है। बाहरी लोग "लिटिल फ्लॉक" (छोटा झुण्ड) और असेम्बली हॉल जैसे नामों का प्रयोग करते हैं।

नी इस विचार को अस्वीकार करते रहते हैं कि यह आन्दोलन एक सम्प्रदाय बन जाए; वे स्थानीय कलीसियाओं की भाषा को प्राथमिकता देते हैं।

1930 - मार्गरेट बार्बर की मृत्यु

बार्बर की मृत्यु हो जाती है। नी पर उनका प्रभाव स्मृति के द्वारा और उस मसीही साहित्य के द्वारा बना रहता है जिससे उन्होंने नी का परिचय कराया था। कुछ विवरण बताते हैं कि नी को उनके पुस्तकालय का एक बड़ा भाग प्राप्त हुआ।

1933 - अन्तरराष्ट्रीय यात्रा और ब्रदरन से सम्पर्क

नी चीन से बाहर यात्रा करते हैं, जिसमें ब्रदरन समुदायों से जुड़ी भेंटें भी सम्मिलित हैं। एक्सक्लूसिव ब्रदरन के साथ उनका सम्बन्ध अन्ततः इस प्रश्न पर टूट जाता है कि उनकी सीमाओं से बाहर के मसीहियों के साथ संगति और प्रभु-भोज में सहभागिता हो या नहीं।

यह अनुभव उनके इस दृढ़ विश्वास को मज़बूत करता है कि मसीह की देह को किसी एक संगति-घेरे तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

1934 - चैरिटी चांग से विवाह

एक लम्बे और उलझे हुए इतिहास के बाद—जिसमें नी ने विवाह की सम्भावना को समर्पित कर दिया था जबकि चैरिटी अविश्वासी बनी रहीं—चैरिटी के मसीह के प्रति समर्पण के पश्चात दोनों का विवाह होता है।

यह विवाह स्वयं सार्वजनिक विवाद का विषय बन जाता है, जब इस रिश्ते का विरोध करने वाला एक सम्बन्धी समाचार-पत्रों में नी की प्रतिष्ठा पर आक्रमण करता है। सेवा फिर से आरम्भ करने से पहले वे कुछ समय के लिए प्रत्यक्ष अगुवाई से पीछे हट जाते हैं।

1930 का दशक - स्थानीय कलीसियाओं के जाल का सुदृढ़ीकरण

सभाएँ बढ़ती जाती हैं। विटनेस ली एक महत्वपूर्ण सहकर्मी बन जाते हैं। नी स्थानीय कलीसिया की रीति, प्राचीनों, सेवकों, प्रेरितीय सेवा, प्रभु-भोज, आत्मिक वरदानों और स्थानीयता के आधार पर अधिक व्यवस्थित शिक्षा विकसित करते हैं।

वे उद्धार, प्रतिफल, राज्य और जय पाने वालों के विषय में भी शिक्षा देते हैं।

1937 - पूर्ण पैमाने का चीन-जापान युद्ध

मार्को पोलो पुल की घटना चीन और जापान के बीच पूर्ण पैमाने के युद्ध का आरम्भ बनती है। यह युद्ध भारी पीड़ा, विस्थापन, आर्थिक उथल-पुथल और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न करता है।

नी की सेवा पूरी तरह बदली हुई परिस्थितियों में जारी रहती है।

1938 - केज़िक और रोमियों 5-8 के सन्देश

नी यूरोप की यात्रा करते हैं और ब्रिटेन में केज़िक सम्मेलन में सम्मिलित होते हैं। इसी व्यापक अवधि में रोमियों 5-8 पर दिए गए सन्देश आगे चलकर उस अंग्रेज़ी संकलन का आधार बनते हैं जो *सामान्य मसीही जीवन (The Normal Christian Life)* के नाम से जाना जाता है।

उनकी शिक्षा एक व्यापक अन्तरराष्ट्रीय श्रोता-वर्ग तक पहुँचने लगती है।

1940 के दशक का आरम्भ - दवा का व्यवसाय और कलीसियाई संघर्ष

नी अपने भाई से जुड़े एक दवा-उद्यम में गहराई से शामिल हो जाते हैं; बताया जाता है कि इसका एक कारण आर्थिक संकट के समय मसीही सेवकों के लिए संसाधन जुटाना था।

इस संलग्नता से शंघाई के प्राचीनों के बीच बड़ा विवाद उत्पन्न होता है। आरोप और मतभेद व्यवसाय, सेवा और व्यक्तिगत आचरण से सम्बन्धित हैं। नी को लगभग छह वर्षों के लिए सार्वजनिक सेवा से अलग कर दिया जाता है।

इस अवधि की व्याख्या में स्रोतों में तीखा मतभेद है। आधुनिक विद्वत्ता इसे किसी छोटी-सी ग़लतफ़हमी के बजाय एक बड़े मोड़ के रूप में देखती है।

1945 - जापान के साथ युद्ध का अन्त

जापान की पराजय के साथ चीन-जापान युद्ध समाप्त होता है, परन्तु चीन शीघ्र ही राष्ट्रवादी और साम्यवादी सेनाओं के बीच गृहयुद्ध में लौट जाता है।

1948 - सार्वजनिक सेवा में पुनर्स्थापना

विटनेस ली और अन्य लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका के साथ नी सार्वजनिक सेवा में लौटते हैं। उनकी बाद की शिक्षा टूटेपन, देह-जीवन, समन्वय, अधिकार, समर्पण और बड़े पैमाने पर सुसमाचार-प्रसार पर विशेष बल देती है।

1948-1949 - तीव्र समर्पण और सुसमाचार-प्रचार की योजनाएँ

आन्दोलन सुसमाचार के विस्तार के लिए विश्वासियों और संसाधनों को जुटाता है। सम्पत्ति को "सौंप देने" और सुसमाचार के लिए प्रवास करने की शिक्षा उस समय की आतुरता को दर्शाती है।

ऐसी रीतियाँ क्रान्तिकारी प्रतिबद्धता को प्रकट करती हैं, पर साथ ही बाद में स्वेच्छा और केन्द्रीकृत अधिकार के विषय में प्रश्न भी उठाती हैं।

1949 - साम्यवादी विजय

माओ त्से-तुंग 1 अक्टूबर को चीनी जनवादी गणराज्य की घोषणा करते हैं। नई साम्यवादी सरकार राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन को नए सिरे से ढालना आरम्भ करती है।

लगभग 1950 तक, Christian History तथा अन्य स्रोत लिटिल फ्लॉक के जाल में लगभग 700 सभाओं और 70,000 अनुयायियों का वर्णन करते हैं, यद्यपि अनुमान भिन्न-भिन्न हैं।

1950 - हांगकांग और मुख्य भूमि पर वापसी

नी हांगकांग जाते हैं और उन्हें मुख्य भूमि चीन से बाहर रहने के अवसर मिलते हैं। वे यह विश्वास करते हुए लौटने का चुनाव करते हैं कि उन्हें चीनी कलीसियाओं के भविष्य में सहभागी होना चाहिए।

यह उनके जीवन के सबसे दूरगामी परिणामों वाले निर्णयों में से एक बन जाता है।

1950-1951 - मसीहियों का राजनीतिक पुनर्गठन

सरकार साम्राज्यवाद-विरोधी मसीही संगठन और उभरते हुए त्रि-स्व देशभक्त आन्दोलन (थ्री-सेल्फ़ पैट्रियॉटिक मूवमेंट) को बढ़ावा देती है। स्वदेशी कलीसिया के सिद्धान्तों से जुड़ा नी का अपना इतिहास राज्य के उद्देश्यों के साथ सहमति के कुछ बिन्दु भी उत्पन्न करता है और गहरे तनाव भी।

हाल की विद्वत्ता देशभक्तिपूर्ण प्रदर्शनों में उनकी भागीदारी और नई राजनीतिक व्यवस्था में रास्ता निकालने के उनके प्रयासों का उल्लेख करती है।

अप्रैल 1952 - गिरफ़्तारी

बताया जाता है कि मंचूरिया में रहते हुए नी को गिरफ़्तार किया जाता है, और उन पर व्यवसाय तथा राजनीति से जुड़े आरोप लगाए जाते हैं। उनकी गिरफ़्तारी आन्दोलन के सबसे प्रभावशाली, विभिन्न स्थानों में सेवा करने वाले शिक्षक को हटा देती है।

इसी अवधि में विदेशी मिशनरियों को भी चीन से निकाला जा रहा है।

1952-1956 - हिरासत और राजनीतिक अभियान

नी हिरासत में रहते हैं, जबकि साम्यवादी अभियान स्वतंत्र मसीही अगुवों और संगठनों की जाँच-पड़ताल को तीव्र कर देते हैं। सार्वजनिक निन्दा, वैचारिक स्वीकारोक्ति और आरोप राज्य-नियंत्रण के औज़ार बन जाते हैं।

1956 - सार्वजनिक मुक़दमा और पन्द्रह वर्ष की सज़ा

नी को एक प्रतिक्रान्तिकारी समूह के अगुवे के रूप में सार्वजनिक रूप से दोषी ठहराया जाता है और पन्द्रह वर्ष के कारावास की सज़ा दी जाती है। कार्यवाही में आर्थिक, राजनीतिक और नैतिक आरोप सम्मिलित हैं।

व्यवस्था का राजनीतिक स्वरूप इस अभिलेख का मूल्यांकन कठिन बना देता है। कुछ आरोपों पर तीखा विवाद है; कुछ बाद के स्रोतों का तर्क है कि व्यक्तिगत दुराचार के पीछे कुछ वास्तविक प्रमाण थे। ऐतिहासिक सावधानी आवश्यक है।

1950 के दशक का अन्त - महान छलांग (ग्रेट लीप फ़ॉरवर्ड)

चीन विनाशकारी महान छलांग में प्रवेश करता है, जिसके बाद भयावह अकाल पड़ता है। जब देश व्यापक सामाजिक और आर्थिक उथल-पुथल से गुज़रता है, नी कारावास में ही रहते हैं।

1966 - सांस्कृतिक क्रान्ति

सांस्कृतिक क्रान्ति आरम्भ होती है। पूरे चीन में धार्मिक गतिविधियों पर अत्यधिक दबाव डाला जाता है। कलीसियाएँ बन्द होती हैं, विश्वासियों और अगुवों को सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाता है, और राजनीतिक कट्टरता गहराती जाती है।

चैरिटी नी और परिवार के अन्य सदस्य भी सताव का अनुभव करते हैं।

1967 - सज़ा की औपचारिक अवधि पूरी

नी की सज़ा के पन्द्रह वर्ष पूरे हो गए होते, परन्तु उन्हें रिहा नहीं किया जाता। विवरण सामान्यतः बताते हैं कि मसीही विश्वास का त्याग करने से उनका निरन्तर इनकार उनके बन्दी बने रहने के कारणों में से एक था।

1960 के दशक का अन्त-1970 के दशक का आरम्भ - श्रम शिविर में निरन्तर बन्दीगृह

नी श्रम-द्वारा-सुधार की व्यवस्थाओं में बन्दी रहते हैं, जिनमें आनहुई प्रान्त का बन्दीगृह भी सम्मिलित है। उनका स्वास्थ्य गिरता जाता है, विशेषकर हृदय रोग के कारण।

परिवार के साथ सीमित पत्राचार ही इन वर्षों की थोड़ी-सी झलक देता है।

1971-1972 - चैरिटी की मृत्यु

चैरिटी की मृत्यु नी से पहले हो जाती है। इस क्षति से रिहाई के बाद पृथ्वी पर पुनर्मिलन की आशा नष्ट हो जाती है। विवरण बताते हैं कि नी गहरे शोक में डूब गए।

30 मई 1972 - मृत्यु

वॉचमैन नी की मृत्यु आनहुई प्रान्त में होती है, जब वे अब भी राज्य की हिरासत में हैं—अपनी गिरफ़्तारी के लगभग बीस वर्ष बाद। उनकी आयु अड़सठ वर्ष है।

उनके अन्तिम दिनों से मसीही विश्वास की एक संक्षिप्त लिखित घोषणा जुड़ी हुई है, जो मसीह के ईश्वरीय पुत्रत्व, पापियों के लिए उनकी मृत्यु, उनके पुनरुत्थान, और उन पर विश्वास करते हुए मरने के नी के संकल्प की पुष्टि करती है।

1972 के बाद - बढ़ता हुआ वैश्विक प्रभाव

नी की रचनाओं का अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद और प्रसार होता रहता है। उनकी आत्मिक शिक्षा उन कलीसियाओं से कहीं आगे तक प्रभावशाली बन जाती है जो सीधे उनके आन्दोलन से जुड़ी हैं।

चीनी मसीहियत के भीतर, लिटिल फ्लॉक और स्थानीय-कलीसिया की परम्पराएँ पंजीकृत और अपंजीकृत दोनों रूपों में बनी रहती हैं। विटनेस ली मुख्य भूमि चीन से बाहर स्थानीय कलीसियाओं का एक अन्तरराष्ट्रीय जाल विकसित करते हैं।

2026 - नए सिरे से अकादमिक ध्यान

पॉल एच. बी. चांग की पुस्तक *The Spiritual Person: An Intellectual Biography of Watchman Nee* ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित होती है, जो नी के धर्मवैज्ञानिक विकास, चीनी सन्दर्भ, विवादों और वैश्विक विरासत का एक प्रमुख हालिया विद्वत्तापूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करती है।

परिशिष्ट D: ऐतिहासिक पद्धति और स्रोतों पर टिप्पणियाँ

स्रोत आपस में असहमत क्यों हैं

वॉचमैन नी के जीवन का वृत्तान्त लिखना असाधारण रूप से कठिन है, क्योंकि अलग-अलग समुदायों ने उनकी अलग-अलग स्मृतियाँ सँजोकर रखी हैं।

उनके आन्दोलन से जुड़े स्रोत स्वाभाविक रूप से आत्मिक बुलाहट, सताव और उनकी सेवकाई की निरन्तरता पर ज़ोर देते हैं। आलोचनात्मक जीवनी-स्रोत अधिकार की संरचनाओं, विवादित व्यावसायिक तौर-तरीक़ों या नैतिक आरोपों पर ज़ोर दे सकते हैं। साम्यवादी अभिलेख एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था से निकले हैं जो सार्वजनिक निन्दा और वैचारिक स्वीकारोक्ति को नियंत्रण के औज़ारों के रूप में इस्तेमाल करती थी। पश्चिमी भक्तिपरक संस्करण प्रायः शिक्षा को जीवनी से लगभग पूरी तरह अलग कर देते हैं।

ज़िम्मेदार पाठक यह पूछने से पहले कि स्रोत क्या कहता है, यह पूछता है कि वह किस प्रकार का स्रोत पढ़ रहा है।

अकादमिक शोध

पॉल एच. बी. चांग का 2026 में ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित ग्रन्थ, *The Spiritual Person: An Intellectual Biography of Watchman Nee*, विशेष रूप से मूल्यवान है, क्योंकि वह नी के धर्मविज्ञान को गणतन्त्रकालीन चीन के इतिहास के भीतर रखता है और दिखाता है कि उनके प्रमुख विचार उनके जीवन-क्रम में किस प्रकार विकसित हुए। चांग के अध्यायों का क्रम इस प्रकार है: मन-फिराव, कलीसिया के आरम्भिक संघर्ष, नी की आत्मिक मानव-विज्ञान की रचना, नानजिंग का दशक, टूटापन, साम्यवादी युग का संघर्ष, और विश्वव्यापी विरासतें।

यह कृति व्याख्या से जुड़े सभी विवादों को समाप्त नहीं करती, परन्तु यह एक वर्तमान अकादमिक ढाँचा प्रदान करती है जो मुख्यतः भक्तिपरक उद्देश्यों से लिखी गई पुरानी जीवनियों को सुधारने में सहायक है।

डैनियल बेज़, लियान शी और चीनी मसीहियत के अन्य इतिहासकार भी स्वदेशी मसीही आन्दोलनों, जागृति, राष्ट्रवाद, युद्ध और क्रान्ति के लिए आवश्यक व्यापक सन्दर्भ प्रदान करते हैं। नी की किसी जीवनी को इसी व्यापक कहानी के भीतर पढ़ा जाना चाहिए, न कि इस प्रकार मानो एक ही व्यक्ति ने चीन की घरेलू कलीसियाओं वाली मसीहियत को जन्म दिया हो।

बायोग्राफ़िकल डिक्शनरी ऑफ़ चाइनीज़ क्रिश्चियैनिटी

Biographical Dictionary of Chinese Christianity में नी और उनसे जुड़े व्यक्तियों पर विस्तृत प्रविष्टियाँ हैं। यह उपयोगी तिथियाँ, पारिवारिक इतिहास, शिक्षा, कलीसियाई घटनाक्रम और उनके जीवन के उत्तरार्ध के विवरण देती है। नी पर इसकी अंग्रेज़ी प्रविष्टि व्यावसायिक और यौन दुराचार के विषय में कड़े दावे भी करती है।

क्योंकि ऐसे आरोप विवादित हैं, और क्योंकि ऐतिहासिक अभिलेख में ऐसी सामग्री भी सम्मिलित है जो साम्यवादी निन्दा-अभियानों के दौरान तैयार हुई थी, इसलिए यह पुस्तक उस प्रविष्टि के हर आरोप को निर्विवाद रूप से सिद्ध नहीं मानती। पर वह उन्हें अनदेखा भी नहीं करती।

गम्भीर आरोपों का अस्तित्व ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण है। हर एक आरोप के विषय में निश्चितता एक अलग बात है।

क्रिश्चियन हिस्ट्री इंस्टीट्यूट

बीसवीं शताब्दी के चीन पर क्रिश्चियन हिस्ट्री पत्रिका की सामग्री नी की भूमिका, लिटिल फ्लॉक (छोटा झुण्ड) के आकार, स्वदेशी कलीसिया के सिद्धान्तों, कारावास, और साम्यवाद के अधीन चीनी मसीहियत के व्यापक रूप से बचे रहने का सुलभ सार प्रस्तुत करती है।

ये स्रोत मसीही कलीसिया के प्रति सहानुभूति रखते हैं, और इनका सर्वोत्तम उपयोग तटस्थ अभिलेखीय विश्लेषण के रूप में नहीं, बल्कि अकादमिक शोध के साथ-साथ किया

जाना चाहिए।

आन्दोलन के स्रोत

लिविंग स्ट्रीम मिनिस्ट्री और स्थानीय कलीसियाओं से जुड़े प्रकाशन और जीवनियाँ मूल्यवान प्रत्यक्ष संस्मरण, समय-रेखाएँ, शिक्षा का इतिहास और पारिवारिक गवाही सँजोकर रखती हैं। वे एक ऐसी परम्परा का प्रतिनिधित्व भी करती हैं जो नी को एक केन्द्रीय आत्मिक पूर्वज मानती है।

ऐसे स्रोतों को न तो सहानुभूतिपूर्ण होने के कारण त्याग देना चाहिए, और न ही बिना तुलना किए स्वीकार कर लेना चाहिए। भीतर के लोग प्रायः ऐसे विवरण सँजो लेते हैं जो बाहर के लोगों से छूट जाते हैं। वे विवादित घटनाओं की व्याख्या रक्षात्मक ढंग से भी कर सकते हैं।

साम्यवादी युग के अभिलेख

राज्य के अभिलेख और सार्वजनिक मुक़दमों की सामग्री अनिवार्य हैं, क्योंकि वे दर्ज करती हैं कि अधिकारियों ने क्या आरोप लगाए और अभियान किस प्रकार चलाए गए। परन्तु उन्हें माओवादी राजनीतिक व्यवहार के प्रति सजग रहकर पढ़ना चाहिए। स्वीकारोक्ति, आरोप, वैचारिक श्रेणियाँ और सार्वजनिक मुक़दमे कानूनी उद्देश्यों के साथ-साथ राजनीतिक उद्देश्यों की भी पूर्ति करते थे।

दबाव में तैयार कराई गई हस्ताक्षरित स्वीकारोक्ति मूल्यहीन प्रमाण नहीं है, परन्तु वह किसी स्वतंत्र न्यायिक प्रक्रिया में दी गई गवाही के बराबर भी नहीं है।

नी के अपने लेखन

नी की प्रकाशित शिक्षाएँ उनके धर्मविज्ञान के लिए प्राथमिक प्रमाण हैं, परन्तु उनकी जीवनी के लिए जटिल प्रमाण हैं। उनकी अनेक कृतियाँ मौखिक सन्देशों और बाद की सम्पादकीय व्यवस्थाओं से संकलित की गई थीं। वे हमें बताती हैं कि नी ने क्या सिखाया, कभी-कभी यह भी कि उन्होंने उसे कब सिखाया, और उनके ज़ोर के बिन्दु किस प्रकार विकसित हुए।

उन्हें अपने-आप प्रत्यक्ष आत्मकथा के रूप में नहीं पढ़ा जाना चाहिए।

पारिवारिक गवाही

कारावास के वर्षों के लिए पारिवारिक संस्मरण विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि उस काल की सार्वजनिक जानकारी बहुत कम है। वे चैरिटी, मुलाक़ातों, पत्रों, स्वास्थ्य, और विश्वास की उस अन्तिम घोषणा की स्मृतियाँ सँजोकर रखते हैं जिसकी सूचना मिलती है।

स्मृति बहुमूल्य है, परन्तु चयनात्मक भी। दशकों बाद दोहराए गए सटीक शब्दों को उचित सावधानी के साथ लेना चाहिए, विशेषकर जब उनके कई अंग्रेज़ी अनुवाद प्रचलित हों।

पवित्रशास्त्र मानदण्ड के रूप में, इतिहास इतिहास के रूप में

यह जीवनी धर्मविज्ञान और मसीही व्यवहार को परखने के लिए पवित्रशास्त्र का उपयोग करती है। वह उन तथ्यात्मक ऐतिहासिक प्रश्नों का निर्णय करने के लिए पवित्रशास्त्र का उपयोग नहीं करती जिनके लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है।

उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 5:29 मसीहियों को बता सकता है कि सरकार की आज्ञा मानने की नैतिक सीमा कहाँ है। वह हमें यह नहीं बता सकता कि 1950 के दशक का नी के विरुद्ध कोई विशेष आरोप तथ्य के रूप में सच था या नहीं। वह प्रश्न ऐतिहासिक अनुसन्धान का विषय है।

इन दोनों कार्यों को आपस में उलझा देने से या तो बुरा धर्मविज्ञान उत्पन्न होता है या बुरा इतिहास।

एक कार्यकारी ग्रन्थ-सूची

पॉल एच. बी. चांग, *The Spiritual Person: An Intellectual Biography of Watchman Nee*। ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2026।

एंगस आई. किन्नियर, *Against the Tide: The Story of Watchman Nee*। व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली एक सहानुभूतिपूर्ण जीवनी, जो भक्तिपरक और वृत्तान्तात्मक परम्परा के लिए मूल्यवान है, और जिसकी तुलना बाद के शोध से की जानी चाहिए।

क्रिश्चियन हिस्ट्री इंस्टीट्यूट, *Christian History* अंक 98, "How the Church in China Survived and Thrived in the 20th Century" (चीन में कलीसिया बीसवीं

शताब्दी में कैसे बची रही और फली-फूली), जिसमें याडिंग ली द्वारा लिखा वॉचमैन नी का जीवनी-सार भी सम्मिलित है।

Biographical Dictionary of Chinese Christianity, प्रविष्टि "Nee, Watchman", साथ ही परिवार के सदस्यों और समकालीनों पर सम्बन्धित प्रविष्टियाँ।

लियान शी, *Redeemed by Fire: The Rise of Popular Christianity in Modern China*। येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2010।

डैनियल एच. बेज़, चीन में मसीहियत के इतिहास पर उनकी कृतियाँ, जो मिशनों, स्वदेशी कलीसियाओं, गणतन्त्रकालीन चीन और साम्यवादी काल के व्यापक सन्दर्भ के लिए हैं।

वॉचमैन नी से जुड़े चुने हुए लेखन और सन्देश-संग्रह, जिनमें वे सामग्रियाँ भी सम्मिलित हैं जो अंग्रेज़ी में *सामान्य मसीही जीवन* (The Normal Christian Life), *बैठो, चलो, खड़े रहो* (Sit, Walk, Stand), *आत्मिक मनुष्य* (The Spiritual Man), *सामान्य मसीही कलीसियाई जीवन* (The Normal Christian Church Life) और *आत्मा का मुक्त होना* (The Release of the Spirit) के नाम से जानी जाती हैं। इनका उपयोग धर्मवैज्ञानिक दिशा-बोध के लिए किया गया है, और इन्हें इनके सम्पादकीय इतिहास पर ध्यान देते हुए पढ़ा जाना चाहिए।

इंडियन रिवाइज़्ड वर्ज़न (IRV) हिन्दी, जिससे इस हिन्दी संस्करण के सभी पवित्रशास्त्र-उद्धरण लिए गए हैं (अंग्रेज़ी मूल में अमेरिकन स्टैंडर्ड वर्ज़न, 1901, का उपयोग हुआ है); इसे इसलिए चुना गया है क्योंकि यह एक औपचारिक और विश्वसनीय अनुवाद है जो विस्तृत व्याख्या के लिए उपयुक्त है, और अधिकांश हिन्दी कलीसियाएँ इसी को पढ़ती हैं।

पाण्डुलिपि समाप्त

यह AI द्वारा किया गया अनुवाद है, जिसकी किसी मूल भाषी द्वारा समीक्षा होना अभी बाकी है। यह लेखक का मूल पाठ नहीं है।

© Ochorus. Ochorus की मौलिक जीवनी। इसे निःशुल्क पढ़ें और साझा करें।

यह अनुवाद Ochorus ने तैयार किया है, जो मसीही क्लासिक पुस्तकों का एक निःशुल्क पुस्तकालय है।

Scripture quotations are from the Indian Revised Version (IRV), © 2017–2019 Bridge Connectivity Solutions, licensed under CC BY-SA 4.0 (https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/).

इसे ऑनलाइन, निःशुल्क पढ़ें: https://ochorus.com/hi/books/watchman-nee-a-life/

और निःशुल्क क्लासिक पुस्तकें: ochorus.com